

Government of Bengal

Final Report on the Khulna Settlement 1920—1926

by
L. R. FAWCUS, I.C.S.

Settlement Officer

CALCUTTA

Bengal Secretariat Book Depot
1927

Published by the Bengal Secretariat Book Depot, Writers' Buildings, Calcutta.

Agents in India.

Messrs, S. K. Lahiri & Co., Printers and Booksellers, College Street, Calcutta.

Messrs, Thacker, Spink & Co., Calcutta.

Customers in the United Kingdom and the Continent of Europe may obtain publications either direct from the High Commissioner's office or through any book-seller.

Table of Contents.

PART I.--THE LAND AND THE PEOPLE.

CHAPTER I. -- Physical features.

Boundaries and area.

| | | BOUNDA | RIES AND AI | REA . | | | | |
|---|----------------|------------|-------------|-------------|-------|-----|-------|-------|
| Subject. | | | | | | | PARA. | PAGE. |
| Boundaries | | • • | | | | | 1 | 1 |
| Administrative divisio | | •• | | •• | •• | | 2 | |
| J. C. | in and tireles | •• | •• | •• | •• | •• | 4 | • |
| • | Pav | SICAL WEAT | URES AND K | INTER OF SO | ., | | | |
| • | | SICAL PEAT | OREN AND R | INDS OF BO | | | | |
| Formation of the delta | u | • • | • • | • • | • • | • • | 3 | 1 |
| Swatch of no ground | | • • | • • | • • | • • | | 4 | 3 |
| Earth subsidence | | • • | | • • | • • | • • | Б | 3 |
| The bil system | | • • | • • | • • | • • | •• | 6 | 4 |
| River action | | • • | • • | • • | • • | • • | 7 | 5 |
| Embankments | | • • | • • | •• | •• | | 8 | 5 |
| Natural divisions | | • • | •• | • • | • • | • • | 9 | 6 |
| The Sundarbans | | • • | •• | •• | •• | •• | 10 | 7 |
| Soil | | • • | • • | • • | • • | • • | 11 | 8 |
| | | | | | | | | |
| | | R | IVER SYSTE | м. | | | | |
| The river courses | | | | • • | | • • | 12 | 8 |
| 1chhamati to Kobadal | | | | •• | •• | •• | 13 | 9 |
| Kobadak to Bhairab | • | •• | •• | | •• | • • | 14 | 10 |
| The central and caster | | •• | •• | •• | •• | | 15 | 11 |
| Madhumati-Baleswar | | •• | •• | •• | •• | •• | 16 | 13 |
| Atharobanki | | •• | •• | •• | | •• | 17 | 15 |
| Summary of river syst | | •• | •• | •• | | •• | 18 | 15 |
| Problems of Khulna ri | | | •• | •• | • • • | •• | 19 | 16 |
| 110000000000000000000000000000000000000 | | •• | •• | • • | •• | •• | 4,7 | . • |
| | | Cı | LIMATE. | | | | | |
| | | | | | | | | |
| Seasons | • • | • • | • • | • • | • • | • • | 20 | 16 |
| Storms and cyclones | • • | • • | • • | •• | • • | • • | 21 | 17 |
| Scarcity of 1921 | | • • | • • | •• | •• | • • | 22 | 18 |
| Rainfall | • • | • • | • • | • • | • • | • • | 23 | 18 |
| | | | | | | | | |
| | Co | MMUNICATI | ONS AND TR | ADE CENTR | ES. | | | |
| River communication | •• | | •• | | • • | | 24 | 19 |
| Steamer and boat route | ев | | | •• | | ٠. | 25 | 19 |
| Steamer services | | | | | .: | | 26 | 22 |
| Railways | • • | | | | • • | | 27 | 23 |
| Roads | • • | | • | • • | •• | • | 28 | 23 |
| Towns and markets | | | | | | | 29 | 23 |

CHAPTER II.—The employment of the land.

STATISTICS OF THE EMPLOYMENT OF THE LAND.

| | STATISTI | CS OF THE E | EMPLOYMEN | T OF THE LA | ND. | | | |
|--|-----------|-------------|------------|-------------|-----|-----|------------|-------|
| Subject. | | | | | | • | PARA. | PAGE. |
| Water | • | | •• | •• | • • | | 3 0 | 24 |
| Culturable and unculturable le | | •• | • • • | •• | •• | •• | 31 | 24 |
| Current fallow | • | | ••• | •• | | | 32 | 26 |
| Twice cropped areas | •• | ••• | •• | •• | | •• | 33 | 26 |
| •• | | • • • | • • | •• | •• | •• | 00 | -0 |
| | | Digres | BUTION OF | anone. | | | | |
| This is a second of the second | | 2715224 | BUITON ()F | CROIS. | | | | |
| Distribution of paddy land | •• | •• | •• | •• | • • | • • | 34 | 26 |
| Distribution of minor crops | • • | • • | •• | •• | • • | •• | 35 | 27 |
| Betel growing areas | •• | •• | • • | • • | •• | •• | 36 | 28 |
| Palms of economic value | •• | •• | • • | • • | •• | •• | 37 | 29 |
| Fruits and vegetables | •• | • • | • • | • • | • • | • • | 38 | 29 |
| Inedible products | • • | • • | • • | • • | • • | •• | 39 | 30 |
| | | | | | | | | |
| | | Ac | BRICULTURI | c. | | | | |
| Cultivation of paddy | | • • | | •• | •• | | 40 | 30 |
| Aman and Aus paddy | | • • | • • | | | | 41 | 30 |
| Bil paddy | | • • | | • • | • • | | 42 | 31 |
| Reclamation of Sunderbans pa | addy lane | d | | | | | 43 | 31 |
| Ram Sankar Sen's description | | | | | • • | | 44 | 31 |
| Embankments and sluices | | | | • • | • • | | 45 | 33 |
| Cultivation in the Sunderbans | | | | • • | • • | | 46 | 35 |
| Betel cultivation | • • | •• | •• | •• | | | 47 | 36 |
| | | | | | | | | |
| | | FI | SHERIES. | | | | | |
| Export trade of fish | | • • | | • • | | | 48 | 37 |
| Sea fishery | •• | •• | •• | •• | | • • | 49 | 37 |
| River fishery | •• | | | •• | • • | •• | 50 | 38 |
| Bil and tank fishery | •• | • • | | •• | • • | | 51 | 40 |
| Shrimp fishery | • • | •• | •• | •• | •• | •• | 52 | 41 |
| • | | • • • | | •• | •• | •• | 02 | 71 |
| | | Fore | st Produc | 116. | | | | |
| Sunderbans trees | | | | | | | | |
| Other forest produce | • • | •• | • • | • • | • • | • • | 5 3 | 41 |
| Other forest produce | •• | • • | • • | •• | • • | • • | 54 | 42 |
| | | | | | | | | |
| | | CHAPTER | III.—The | people. | | | | |
| | | Do | | | | | | |
| | | Po | PULATION. | | | | | |
| Variation in population | •• | •• | •• | • • | •• | • • | 55 | 48 |
| Density | • • | • • | •• | •• | •• | • • | 56 | 45 |
| Caste distribution | •• | • • | •• | •• | •• | •• | 57 | 46 - |
| Pods and Namasudras | • • | • | • • | ••• | •• | • • | 58 | 46 |
| Muhammadans | ι. | • • | • • | • • | • • | •• | 59 | 47 |
| Other castes | •• | • • | • • | • • | •• | •• | 60 | 48 |
| rengions | •• | • • | • • | • • | •• | • • | 61 | 48 |
| Occupation | •• | • • | • • | • • | ••. | • • | 62 | 48 |
| | | | | | | | | |

ECONOMIC CONDITIONS.

| | | ECONOM | IO CONDITI | ons. | | | | |
|--------------------------------|---------------|----------|------------|----------|---------|-----|----------|-----------|
| Subject. | | | | | | | PARA. | PAGE. |
| Typical families' budgets | . . | | • • | | | | 63 | 49 |
| Factors affecting economic co | | | | | • • | | 64 | 51 |
| Indebtedness of agriculturalis | | | | | • • | | 63 | 52 |
| ζ, | | | | | | | | |
| C | HAPTER I | V.— Fisc | a) History | and lacd | tenure. | | | |
| | | _ | | | | | | |
| | | Fisca | ь Нізтову | • | | | | |
| Early fiscal history | • • | • • | | • • | | | 66 | 53 |
| The Sarkars and parganas | | • • | | | • • | | 67 | 53 |
| The Jaighir lands | • • | •• | • • | • • | • • | •• | 68 | 55 |
| Mogul reassessments | •• | • • | • • | • • | • • | | 69 | 55 |
| The history of the Chanchra | Raj | • • | • • | • • | • • | | 70 | 56 |
| The Permanent Settlement | •• | •• | • • | • • | | • • | 71 | 57 |
| The assessment of the Isafpu | ır estate | • • | • • | • • | • • | • • | 72 | 58 |
| The smaller zamindaries | • • | • • | • • | • • | • • | • • | 73 | 59 |
| The Syedpur estate | • • | • • | • • | • • | • • | • • | 74 | 59 |
| The Mohsin endowment | • • | • • | • • | • • | | •• | 75 | 59 |
| The administration of the Sy | zedpur estate | | • • | • • | • • | | 76 | 61 |
| The Syedpur patni tenures | • • | • • | • • | • • | • • | • • | 77 | 63 |
| Sultanpur-Kharoria | • • | • • | | • • | • • | • • | 78 | 63 |
| The Resumption Regulations | ٠ | • • | • • | • • | • • | • • | 79 | 64 |
| The Revenue Survey | • • | •• | | • • | • • | • • | 80 | 64 |
| | s | VSTEM OF | LAND TE | 21111112 | | | | |
| | ., | 101101 | HAN, II, | · (NO. | | | | |
| Tenures in the older zamind | | • • | •• | • • | • • | • • | 81 | 64 |
| Abadkari tenures of the sout | h | •• | • • | • • | • • | • • | 82 | 65 |
| The eastern tenures | •• | • • | • • | • • | • • | • • | 83 | 65 |
| Original of abadkari tenancie | ·s | • • | • • | • • | • • | • • | 84 | 66 |
| Subinfeudation | | • • | • • | • • | • • | • • | 85 | 66 |
| Tenures by interpolation and | | • • | • • | • • | • • | • • | 86 | 67 |
| Tenures by promotion | • • | • • | • • | • • | • • | • • | 87 | 69 |
| Rent-free tenures | • • | • • | • • | • • | • • | •• | 88 | 69 |
| Cultivating tenants | | • • | • • | • • | • • | • • | 89 | 69 |
| Occupancy right of under-ra | _ | •• | • • | •• | • • | • • | • 90 | 70 |
| Customary rights of tenants | | •• | • • | • • | • • | • • | 91 | 71 |
| Non-resident raiyats | •• | • • | • • | • • | • • | • • | 92 | 72 50 |
| Eksona tenancies Utbandi | • • | • • | •• | • • | • • | • • | 93 | 72 72 |
| To | • • | •• | • • | • • | • • | • • | 94 | 73 |
| | • • | • • | •• | •• | • • | • • | 95 96 | 73 |
| | • • | • • | •• | • • | • • | • • | 97 | 73 |
| Abwans | •• | • • | •• | •• | • • | • • | 19 8 | 7.0 |
| | ST | ATISTICS | OF LAND T | ENURE. | | | | |
| Area in proprietors' direct p | ossession | | | • • | | | 98 | 74 |
| Area in tenure-holders' direc | | •• | •• | •• | | | 99 | 74 |
| Raiyati holdings | | ••• | | •• | • | | 100 | 75 |
| Under-raiyati holdings | | ••• | ••• | •• | • • | • | 101 | 75 |
| Incidence of rent | •• | •• | | •• | • | | 102 | 75 |
| Produce and rent-free tenan | | | ••• | •• | | | 103 | 76 |
| Land occupied for public pu | | | | | | • | 104 | 76 |
| Area outside the record | • | | | •• | • • | | 105 | 76 |

RELATIONS OF LANDLORDS AND TENANTS.

| | RELATIO | NS OF LAND | LORDS . | AND TENANT | н. | | | |
|------------------------------|------------------|---------------|---|---------------|----------|---|-------|-------|
| | | | | | | | PARA. | PAGE. |
| Subject. | | | | | | | | |
| Tenants' privileges | | | | | | | 106 | 76 |
| Ront receipts | • • | | | | •• | | 107 | 77 |
| Assistance given by land | | | | •• | • • | | 108 | 77 |
| Zamindari accounts | | •• | | ••• | •• | | 109 | 78 |
| zammaari accounts | •• | | • • | •• | •• | • • | | |
| | | | | | | | | |
| | | | | | | | | |
| | DADE 11 | T D.D | FOFNS | | ONE | | | |
| | PARI II | IHE PH | ESENI | OPERATI | UNS. | | | |
| | CHAPT | ER I.—Th | e Distr | ict Operation | 18. | | | |
| Inception proposals | | | | , | | | 110 | 79 |
| Omitted areas | | | | | | | 111 | 80 |
| Traverse | | | | | | | 112 | 80 |
| Initial difficulties and adv | vantages | | | | | | 113 | 80 |
| Special features of Sunde | • | | | | | | 114 | 81 |
| River boundaries of the c | | | | | | | 115 | 82 |
| Kistwar in jungle ureas | • • | | | | | | 116 | 82 |
| Kistwar in bil areas | • • | | | | | | 117 | 82 |
| Formation of villages | • • | | | | | | 118 | 82 |
| Kanungo Circle Officers | | | | | | | 119- | . 83 |
| Record of shares of estate | rs | | | | | | 120 | 83 |
| Mortgages by conditional | | | | | | | 121 | 83 |
| Experiment in bujharat a | | | | •• | | | 122 | 83 |
| Boundary marks | • • | | | | | | 123 | 83 |
| Recess work | • • | • • | | | | | 124 | 83 |
| Organisation of attestatio | | | | • • | | | 125 | 84 |
| Use of section 48, Bengal | | | | | | | 126 | 84 |
| Holdings sold in executio | • | | | | | | 127 | 84 |
| Illegal enhancements | •• | | | | | | 128 | 85 |
| Leases contravening secti | | | | • • | •• | | 129 | 85 |
| Protected interests under | | • | | •• | | | 130 | 85 |
| Commutation of produce | *** | | | •• | • • • | • | 131 | 86 |
| Final janch • | •• | | | • • • | ••• | •• | 132 | 86 |
| | •• | • • | •• | • • | •• | •• | 1.72 | 00 |
| | | | | | | | | |
| | | | | | | | | |
| • | CHAPTER III | History and | Problem | ns of the Sun | derhans | | | |
| · | | | | io or the oan | uerpans. | | | |
| | PRESENT AN | D PAST PR | mi.emg | OF SUNDERB. | A NYLI | | | |
| | | 2 1 11 3 1 11 | ,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,, | OF BONDERD | A.M.7. | , | | |
| | R | EVENUE AD | MINISTR | ATION. | | | | |
| | | | | | | | | |
| Definition of Sunderbans | | •• | • • | •• | • • | • • | 133 | 86 |
| Early assessment of the S | | •• | • • | • • | • • | • • | 134 | 88 |
| Henckell's scheme | • | • • | •• | • • | • • | • • | 135 | 88 |
| Henckell's taluks and kR | | • • | •• | | • • | • • | 136 | 88 |
| Opposition of the zamind | | • • | • | • • | • • | •• | 137 | 89 |
| The taluks after the Peri | nanent Settlemei | nt | • • | • • | • • | • • | 138 | 89 |
| Morrieson's survey | • • | • • | •• | • •• | •• | • • | 139 | 90 |

140

91

Smelt's operations

PRESENT AND PAST PROBLEMS OF SUNDERBANS-REVENUE ADMINISTRATION. -concld.

| | | | | | | | PARA. | PAGE. |
|----------------------------------|-------------|--------------|----------|-----------------------|------|-----|-------|-------|
| Subject. | | | | | | , | | |
| Appointment of Commissioner i | in the Sund | lerbans | • • | •• | | | 141 | 91 |
| Prinsep's survey | | | | • • | | | 142 | 92 |
| Government's rights in the Sun | derbans | • • | | | | | 143 | 92 |
| Resumption Regulations | | • • | | • • | • • | | 144 | 92 |
| Regulation III of 1828 and Gov | /ernment's | proprietary | right | • | | | 145 | 93 |
| The Dampier-Hodges' survey | • • | • • | | | • • | | 146 | 94 |
| The estates north of the Dampi | cr-Hodges | ' line | • • | •• | • • | | 147 | 95 |
| Resumptions | • • | • • | • • | | | | 148 | 96 |
| The Khonarmet Case | • • | • • | • • | •• | • • | • • | 149 | 97 |
| Resettlement of Sunderbans re- | sumed esta | tes during t | he prese | nt operations | | • • | 150 | 98 |
| Status of lessees | • • | • • | • • | • • | • • | | 151 | : 8 |
| Rate of rent and valuation of p | roprietors' | and tenure | -holders | ' <i>nij-dokhol</i> k | ınds | • • | 152 | 100 |
| Treatment of subordinate tenue | re-holders | | • • | • • | | | 153 | 101 |
| The revenue or rent payable by | the lessee | ·s | | | • • | • • | 154 | 105 |
| The kabuliyats of the lessees | • • | | | • • | • • | | 155 | 105 |
| The 99-year settlements of resu | med estate | ъ. | | • • | | | 156 | 106 |
| Waste Land Rules of 1825 | • • | • • | | | • • | | 157 | 106 |
| Waste Land Rules of 1829 | • • | | • • | | • • | | 158 | 107 |
| Waste Land Rules of 1853 | | | | | | | 159 | 107 |
| Reassessment of estates held un | nder the ru | des of 1853 | • - | | • • | • • | 160 | 108 |
| Commutation of existing grant | s to the te | rms of 1853 | • • | • • | | | 161 | 108 |
| Fee Simple Grant and Redemp | tion Rules | of 1863 | • • | • • | • • | | 162 | 109 |
| Large Capitalist Rules of 1879 | | • • | • • | • • | • • | | 163 | 109 |
| Small Capitalist Rules of 1879 | • • | • • | • • | • • | • • | | 164 | 111 |
| Raiyatwari settlements | | | | • • | • • | • • | 165 | 112 |
| Estates settled in perpetuity | • • | • • | • • | • • | • • | • • | 166 | 113 |
| History of the Sunderbans Cor | nmissioner | ship | | • • | • • | | 167 | 114 |
| Revenue survey of the Sunder | bans | • • | | • • | • • | | 168 | 114 |
| Topographical survey of the S | underbans | • • | | • • | • • | • • | 169 | 115 |
| Formation of villages | | | • • | •• | • • | • • | 170 | 115 |
| | Fori | EST AND SAL | л Арми | SISTRATION, | | | | |
| Early forest revenue | | | | | • • | | 171 | 116 |
| Construction of the reserved a | nd protecte | ed forests | | | | | 172 | 116 |
| Release of forest area | | | | | | | 173 | 117 |
| Working plan system and fore | st administ | tration | | | | | 174 | 118 |
| | | | | | | | 175 | 119 |
| Salt administration | • • | • • | • • | • • | •• | *** | | |
| Nimak Khalari mahals | | •• | •• | • • | •• | •• | 176 | 120 |
| | C | HAPTER II | 1.—Conc | clusion. | | | | |
| Boundary disputes | | | | | • • | | 177 | 120 |
| Junior Officers' training camp | • • • | | | | | | 178 | 121 |
| Necessity for overhauling Sun | derbans ac | lministrativ | o machii | nery in Khulr | а | | 179 | 121 |
| Possibility of revenue from fis | heries and | deforestatio | on • | | | • | 180 | 122 |
| Desirability of readjusting date | | | | | • | | 181 | 122 |
| | | | | | • • | •• | 182 | 122 |
| • | •• | • | •• | • • | •• | • | | |
| Gratia reddenda | | | | | • • | | 183 | 122 |

APPENDICES.

| | | PAGE |
|--|--------|------|
| Appendix I—Statistics of tenancies and rent | | 126 |
| Appendix II—Milan khasra | | 134 |
| Appendix III—Crop statement | | 136 |
| Appendix IV—Agricultural stock list | | 140 |
| Appendix VForms of kabuliyats sanctioned for use in the present operations | | |
| (a) Sunderbans talukdari lease | | 142 |
| (b) Sunderbans malguzari lease | | 144 |
| (c) Haoladari lease under the Small Capitalist Rules of 1879 | · • | 146 |
| Appendix VI—Statement of officers employed in Khulna Settlement | | 148 |
| Appendix VII—Important notifications— | | |
| (a) Notifications authorising the operations | | 153 |
| (b) Powers of Settlement Officer | | 153 |
| (c) Adoption of villages as units of survey | • • | 154 |
| Appendix VIII—Reprint of Chapters XIX, XX, XXI of Pargiter's History of the Sunderbans | | 154 |
| Appendix IX | | |
| (a) Government Estates of the Khulna Collectorate under resettlement of land revenue | | 164 |
| (b) Temporarily settled private estates of the Khulna Collectorate under resettlement of la | nd | |
| revenue | • • | 170 |
| (c) Government Estates of the Khulna Collectorate not taken up for settlement of la revenue | nd | 172 |
| (d) Temporarily settled private estates of the Khulna Collectorate not taken up for resett ment of land revenue | le- | 174 |
| (e) List of estates borne on the revenue roll of the Jessore district taken up in jamabandi the Khulna settlement | by | 176 |
| (f) List of villages situated in the Bakarganj district but comprised in Khulna Estate and tak up during the present operations | en | 176 |

MAPS.

- 1.—District of Khulna, on scale of 1 inch to 4 miles.
- 11.—District of Khulna, showing river system and water communications.
- III.—Government and Temporarily settled estates.

Final Report on the Khulna Settlement.

PART I.—THE LAND AND THE PEOPLE.

Chapter 1.—Physical features.

BOUNDARIES AND AREAS.

1. **Boundaries.**—The district of Khulna is in shape a rough parallelogram lying between 21° 38′ and 23° 1′ north latitude and between 88° 54′ and 89° 58′ east longitude. It is bounded—

North by the district of Jessore, South by the Bay of Bengal, East by the districts of Faridpur

and Bakarganj,

West by the 24-Parganas district.

The area within these boundaries is 4,675 square miles, of which 2,202½ square miles are reserved forest.

Administrative divisions areas.—The district was formed in 1882 out of the Khulna and Bagerhat subdivisions of Jessore and the Satkhira subdivision of the 24-Parganas. Khulna was originally a subdivision of Jessore created as the first subdivision in Bengal in 1842. Its jurisdiction then extended over the present Khulna Sadar subdivision and a great part of the present Bagerhat subdivision. Subsequently in 1863 Bagerhat was constituted a subdivision of Jessore. The Satkhira subdivision of the 24-Parganas district was created in 1861 out of the Joint Magistracy of Baraset. Since the fusion of the three subdivisions into the district of Khulna in 1882, the jurisdiction of the district has undergone little change: in 1913 a few square miles in the north eastern corner of the district were transferred to Faridpur by the adoption of the then mainstream of the Madhumati as the district boundary.

The district comprises the following police stations: the areas do not in-

clude the reserved forest.

| | Square miles. |
|------------|-----------------|
| Satkhira— | |
| Kalaroa | 89· 35 · |
| Tala | 130.21 |
| Satkhira | 140.94 |
| Debhata | 67.55 |
| Kaligunj | $127 \cdot 17$ |
| Shyamnagar | $175 \cdot 72$ |
| Asasuni | 157.92 |
| | • |
| Total | 888·8 6 |

| | Square miles. |
|---|------------------------|
| Sadar— | • |
| Phultala | 28.67 |
| Daulatpur | 34.34 |
| Terakhada | 8 2·64 |
| Khulna | 3 8·8 4 |
| Baitaghata | 96.61 |
| Dumuria | 177.69 |
| Paikgacha | 244.24 |
| Dacope | 110.32 |
| Total | 813:35 |
| Bagerhat— | |
| Mollahat | 95·4 8 |
| Fakirhat | $61 \cdot 43$ |
| Bagerhat | 125.49 |
| Kachua | $64 \cdot 34$ |
| Rampal | 194.65 |
| Morrellgunj | $169 \cdot 43$ |
| Sarankhola | 5 8- 6 0 |
| Total | 770.27 |
| District Total, excluding Sunderbans. | 2,472·13 |

Physical features and kinds of soil.

Formation of the delta.—The whole of the district is pure delta area formed by the action of Ganges water bringing down mud ground from the gneiss and limestone of the Himalayas mainly through two great channelsthe Bhagirathi and the Padma. The Bhagirathi is the original southward course of the Ganges and the Padma is a later east flowing branch of it. Some time during the 16th appears that the main century it volume of passed from Ganges water Bhagirathi to the Padma, but while Ganges was flowing ward to the sea through the Bhagirathi and its old mouths the Saraswati, the Adiganga, and the Jamuna it threw off from its left bank a mighty silt distributing river the "Bhairab" or terrible"; this river flowing south eastwards became the main source from which the delta area of Khulna district was built. On the west of the district the old Jamuna and on the east of the district the new volume of Gorai water

drawn from the Padma and passing through an ancient channel, the Barasia, under the new name of Madhumati, have aided in the work.

Apart from pure deltaic action, subsidence and elevation of the land from hypogeal causes has played a considerable part in the formation of particular physical features of the district; the process is a somewhat controversial matter, and will be alluded to in more detail later. The process of delta formation which is the main cause of the present aspect of the district is somewhat as follows. When a silt laden river reaches the sea its velocity is checked by the sea's resistance and unable to carry on the heavier and coarser silt, it lets it fall directly in front of its mouth. This is the natural cause of the "bars" in front of river mouths. Checked by this obstruction, the river branches and flows each side of it in the form of two streams and these streams. first mere currents flowing are at through the sea right and left of the river bar, soon form banks which confine the river's course between the bar and the new formed bank. of the formation of the banks is that so long as the river is flowing between banks of land, no transported silt can escape it but as soon as the river becomes a current bordered by still sea water, it is possible for silt to escape the current and fall into still water at the edge of it. The silt, which so falls, gradually builds up a bank in the sea on the edge of the river current.

This results in the original river being divided into two streams, each of these streams being bordered on one side by the river bar and on the other by the bank formed as described above. Thus in the sea at the mouth of a river the current and the silt have formed land traversed by two diverging streams; each of the streams themselves carries silt and each in turn performs the same operation where their waters mingle with the sea-, and so the process goes building up land composed of islands bordered by streams diverging in the shape of the Greek letter from which the delta takes its name. action at the same time'brings back silt on to the land so formed and helps in the work of building it up, thus producing the deltaic phenomenon that the land slopes downwards from the neighbourhood of the sea coast to the areas

situated at the extremity of tidal range. These processes account for the physical aspect of Khulna district, which is equally prominent to the traveller and the cartographer. By turning to the map of Khulna district attached to this report it will be clear to the eye how this process has gone on and is going on from the north of the district to the south.

To take one example of the many which will be evident, the rivers Kapotakshi and Kholpetua were beyond any doubt, the side channels left when the estuarine land which lies south of Pratapnagar was formed.

As an adjunct to these processes there is land building on the sea coast, but the materials are not the same. The power and length of the Ganges and Brahmaputra have triturated to fine mud the majority of the silt which they roll down from the mountains, by the time they reach the sea, but a coarse residue remains and is carried to the Bay of Bengal in the form of sand by such streams as have the power to do so (actually present in Khulna the Madhumati-Baleswar and to a less extent the Ichhamati-Kalindi are the only sand carrying rivers). This sand, together with sand formed by the wave trituration or chemical disintegration of submarine rocks, forms the bed of the Bay of Bengal. It does not, however, remain quiescent, but stirred up by monsoon storm winds and waves, is forced back on the coast, encroaching on the mud already deposited, and helping to buildup the land. The result of this action delta—forming combined with the action of the rivers produces a peculiar physical result in the south of the district. In several places there is a sandy beach with a south western aspect; behind this beach lies a rampart of sand dunes varying from a gentle slope to an almost perpendicular buttress twenty to thirty feet high; behind this again is a grassy plain running exactly parallel to the sea face about { a mile in depth; behind this again and parallel to it is a belt of mud with a stream meandering through it and overgrown with mud-loving species of trees such as mangroves; behind this belt, which is usually a quarter of mile deep, is a narrow grassy plain sloping up to grass covered ridges of sand which have behind them another grassy plain about half a mile in depth. These grassy ridges of sand with the narrow plain in

front and the broader plain behind are exact counterparts of the sandy beach with its dunes and backing of grassy plain, and there can be no doubt in the mind of one who has seen them that they represent an old sea shore in rear of and parallel to the existing shore, the muddy stream representing the old sea water line. In places also there is yet another similar series of mud belt, grassy dunes and plain in rear of the first, denoting a still older sea beach as much as two miles in rear of the existing one. These formations give an interesting picture of land building by sand combined with deltaic action of river silt. The process seems to be as follows: The usual bar forms, as described above, at the mouth of a southward flowing river; the ebb tides setting down the centre of the Bay of Bengal, i.e., south-west of the shores of Khulna district, tend to keep clear the channel on the western side of the bar and to allow land building to go on more rapidly in the stiller water east of the bar. The result is a long "bar" with south western aspect towards the open sea and with an alluvial bank parallel to it on its eastern side. foundations of this bar and bank are alluvial mud-, but while the building process is going on, the south western monsoon has stirred up and driven inland sand from the Bay of Bengal to cover up bar and bank alike; only in the channel east of the bar, where the current still flows, the sand is unable to settle, but is carried down to the point where the channel meets the sea. Its mouth is thus gradually choked up, and it soon becomes a trickle among mudflats which gradually silts up as its free course to the sea is closed. By this time the bar has risen so high that though the current of the channel has ceased, the sand from the ocean cannot now reach it. Mangroves and other mud-loving trees take root in this mud and the landscape described above is complete; the sandy shore with its dunes sloping down to the muddy creek is the old bar, invariably facing the south-The muddy jungle is the remains of the old eastern channel and the grassy area in rear of that is the old east bank: for where sand has been deposited grass alone grows.

4. Swatch of no ground.—It has been suggested that the reason for the south western aspect of every such formation

in the district is that the ebb tide sels towards the "Swatch of no ground i' a vast depression in the bed of the Bay of Bengal where the soundings suddenly drop from less than ten fathoms to over 200. The Swatch lies approximately in the centre of the head of the Bay about 15 miles from the coast, but its connection with tidal action is by no means established. The explanation that it is caused by the scour of the tides would be satisfactory if the tides of the Bay made up the sides and ebbed down the centre of the Bay. That they do not do so is obvious to anyone who has lain off the coast of Khulna in a launch: the tide comes in flood from the centre of the Bay and ebbs back the way it came. Colonel Gastrell (who carried out the revenue survey of Jessore district), writing in 1868 clings strongly to the idea that the causes of the Swatch of no ground are identical with the causes of the great bil area which stretches from the 24-Parganas district across the north of Khulna and Bakarganj. This great length however contrasts strongly with the known length of the Swatch of no ground which is not above five leagues, and the fact that the great bil depression is probably to a great extent due to hypogeal causes does not seem to warrant the conclusion that an earthquake or subsidence of very limited intensity is responsible for the Swatch. The most recent hypothesis, that of Mr. Addams-Williams, is to the effect that the Swatch of no ground represents the original bed of the Bay of Bengal in the only place where it is not covered by masses of silt deposit from the old course of the Ganges on the west and the present Ganges, Bramaputra and other rivers on the east. To the objection that the central delta building river, the Bhairab, should have filled in this area with silt, Mr. Addams-Williams replies by pointing out that while the western Ganges was active, there was a great concentration of silt deposit in the west of the Bav—which was, as it were, switched over to the eastern side of the Bay by the change of the course of the Ganges to the Padma. In the intervening area the action of the Bhairab was less concentrated and hence the formation of the under sea plinth was retarded in the central portion.

5. Earth subsidence.—The parallel lines of sand dunes referred to above give rise to an interesting problem

which affects the whole physiography of the district and therefore justifies the somewhat detailed account which I have given of them. How is it that Rennell's maps show that coastal erosion has gone on between 1770 and 1906, the date of the last survey of the seaface, whereas the existence of the parallel lines of sand dunes, once piled up on the verge of the sea, make it certain that land building from the seaward has gone on there?

Various explanations of the above phenomenon may be offered. The accuracy of Rennell's coastal survey is not above suspicion; it is related that he ascertained coastal distances by observing the difference in time between the flash and report of a gun fired in a boat moored off the coast. This, however, would hardly account for the great difference between the coastal outline of Rennell's map and that of the topographical survey of 1906. The apparent solution lies in the phenomenon of periodical earth subsidence which has, in all probability, exercised a vast influence on the physical geography and consequently on the whole history of Khulna district. The building action of the sea and the rivers goes on for ever, but if, at intervals, a subsidence of the earth takes place, the building action is checked and submersion of coastal areas equivalent in result to erosion takes place. If, then, after the inland lines of dunes had been formed during a period of earth quiescence, a period of subsidence took place during the period within which Rennell's survey fell, a subsequent survey would certainly show, as did the survey of 1906—that there had been apparent erosion since Rennell's time-in spite of the fact that old lines of sand proved more ancient retrocession of the ocean in the same area.

The subsidence of the Sunderbans is a subject dear to the heart of antiquarians and historians of Khulna district, for on this assumption they account for the traces of ancient civilisation in the heart of muddy jungle where no man could now live. That these remains do exist is an undoubted fact; I have seen the remains of palatial buildings and temples not only in newly reclaimed land, but actually many miles within the muddy mangrove swamps of the reserved forest; without agreeing with the writers who hold that the existence of these buildings is a definite proof of the theory

that a once populous Sunderbans has become uninhabitable owing to earth subsidence, it is still fair to say that their existence fits in well with the above theory.

A far stronger proof of earth subsidence lies in the fact that wherever extensive excavations are made in Sunderbans area, fragments of trees are found (often in the position they must have occupied while growing) many feet below the existing ground level. In Calcutta a sundri tree has been found no less than 30 feet below the present ground level which differs but little from the water level of the Ganges delta. sundri tree will not flourish unless its roots are uncovered by water at least for a portion of the day; hence there would appear to have been an earth subsidence of 30 feet since the period when that tree was growing. Had the ground not gradually sunk as more and more silt was piled upon it, we should have a gigantic delta piled high above sea level.

The bil system.—This is direct and clear proof of earth subsidence, and on the strength of this proof, it is fair to regard such subsidence as an explanation of the phenomena of the coastal erosion, and the depopulation of the Sunderbans referred to above. Another result of the greatest economic importance in the north of the district which may be attributed to earth subsidence is the long chain of bils stretching from the 24-Parganas in the west to Mokimpur pargana in the east and continuing in the shape of the Madaripur bil route. This chain of bils is almost continuous and is broken only by the high fringing the rivers which cross the bil area in a transverse direction from north to south; moreover in the 24-Parganas in the west and in Faridpur and Bakargani districts in the east similar bils exist. The origin of these bils may be attributed with reasonable certainty to earth subsidence; they cannot be natural pockets due to silt laden rivers building . up their own banks and so enclosing vast areas of low land; if this were their origin the same phenomenon would have occurred throughout the delta wherever rivers are or were active and silt laden. They are however confined to a long and comparatively narrow strip running from east to west of the above-mentioned districts. In a tank recently excavated in the high land adjacent to one of these

bils, a section of the bank showed the following strata:--

Ground level—5 feet dry sandy soil.

- " 5—10 feet wet sand.
- ., 10-15 feet mud.
- ,, 15—20 feet caked mud with fissures.
- " 20—21 feet vegetable peaty debris.
- ., 21—23 feet mud with tree remains
- ,, 23—24 feet vegetable peaty debris.
- ,, 24—26 feet mud with tree remains.
- , **26—29** feet vegetable peaty debris.

Below 29 feet clear sand.

In this area therefore—below the sandy soil and mud heaped up by recent spill action of the neighbouring river two stages of forest growth have existed only to sink to a level where tree growth could not exist and was supplanted by aquatic vegetation which flourishes now in these bils; the same thing has occurred in the bils themselves for the inhabitants report, quite, credibly, that fragments of large trees exist and are found from time to time deep down below the surface: moreover according to Major Jack in his Settlement Report of Bakarganj district, . brick foundations, skulls and ancient coins have been found in the Bhandaria and Swarupkati bils. The conclusion appears to be that these bil areas are strips of land particularly liable—perhaps for seismic reasons—to swift subsidence, and may be compared to the bils produced in Rangpur and Mymensingh by the great earthquake of 1897. subsidence has gone on recently is clear from the fact that the bils are now more extensive than they were in Rennell's time, in areas where the river courses have not appreciably changed. We have seen above that intensive earth subsidence is the probable explanation of coastal changes since Rennell's time, and the extension of the bil tract points to a parallel extensive subsidence in the north of the district.

7. River action.—This earth subsidence by its direct action on the physical aspects of the district, is itself a considerable factor in the economic conditions of the district: another factor of great importance is the phase of deltaic action

which produces the swamps of a growing Wherever silt laden rivers flow through a low-lying tract, they naturally deposit a large amount of silt on the adjacent land. This forms a sort of rampart at the edge of the river lessening gradually by a slope more or less gentle into the interior and creating a natural barrier to penetration of more silt except at spring tides or during the high water of the monsoon. As a result water-logged saucershape depressions are found between the courses of the rivers. As however silt laden water penetrates during spring tides and monsoon floods as well as by khals or channels communicating between the river and the interior, this latter area is eventually very gradually raised until it is above flood level. Deltaic action may then be said to be Should however the amount complete. of silt in the river be very considerable, it not only deposits it upon the neighbouring land but raises its own bed and eventually runs as it were upon a sort of silt formed viaduct and finds a fresh course in the adjacent low land which it proceeds to build up in the same way. It may be taken as an axiom therefore that rivers carrying a great volume of silt change their course frequently; if the volume of silt is lessened action or earth building still goes on but the river remains comparatively stable. In Khulna district the courses of the majority of the rivers are comparatively stable, but deltaic action or land building is still going on; hence almost throughout the district we find water-logged saucers or pockets lying behind the high banks which fringe the river courses. These are termed "bils", the same name as is used for the great marshy stretches described above as due to earth subsidence —but in origin and in nature they are totally different. The great northern chains of bils are deep and impenetrable ---rarely yielding a crop except the extreme edges; the ordinary village "bils" are only water-logged in the rains, and are the source of the crop of aman or winter rice. But to grow the rice crop the land must be free from the inundations which occur from time to time as the result of spring tide or storm wave, and if the adjacent river tarries salt water, it is essential that even the normal tidal water should be excluded from the growing crop.

8. **Embankments.**—With these objects in view man has anticipated nature;

Finally in the extreme south of the district between the muddy forest and the sea lie the open grassy tracts with rows of sand dunes described in some detail above. From an economic point of view they have some interest owing proposals \mathbf{of} Member of the Board of Revenue (Sir Charles Stevenson-Moore) to utilize these areas as grazing grounds like the prè salé of Normandy. The profusion of excellent "doob" grass led to the suggestion, but with deference to the high authority from which it emanated. it may be objected that the scarcity of potable water, the difficulty of communications and the danger of tigers' depredations are all against the scheme.

The fauna and flora of this littoral area differ both from those of the deep jungle and of the cultivated tracts. The comparative dryness of soil is reflected by the prevalence of such western Bengal and Orissa plants as Mitreola Oldenlandiodes and Mitrasacme Alsinoides, of the Papilionidae Hector and Junonia Orithya and of the birds Cisticola Cursitans and Turnix Pugnax.

Soil.—As is to be expected in a district which is entirely deltaic in origin the soil is to a great extent of uniform character varied mainly by a greater or smaller admixture of sand. As long as the delta-building rivers had direct connection with the Ganges, they brought down a considerable admixture of sand which they deposited along with finer alluvial mud. The resulting soil was of a light sandy character suitable when first deposited for growing pulses, oil seeds, and melons, and after enrichment by vegetable detritus, suitable for fruit trees and betel vines. Soil of this nature exists in the older upland areas of the north of the district and in the vicinity of the only two rivers which now carry Ganges water, viz., the Ichhamati and the Madhumati-Baleswar. The soil deposited by rivers whose head waters are closed is either surface deposit or fine alluvion brought down by more active rivers and distributed by connecting channels on the flood tide: in either case it is fine tenacious hud often argillaceous in character. This soil is generally prevalent throughout the district and is the main source of the paddy crop. In ancient bil areas the decayed vegetation produces a stratum of black soil known and disliked as

"jobe mati". It is almost sterile unless enriched by a considerable admixture of alluvial soil, and even so, produces very inferior crops. Deep borings reveal the presence of this stratum in many places in the district, but fortunately it only crops out in a few marshy areas sufficiently near the surface to interfere with cultivation.

RIVER SYSTEM.

The river courses.—Its system is to Khulna what veins and arteries are to the body; it carries the imports and exports essential to the economic life of the district and disseminates the progress which builds up its moral welfare: the lines of ancient prosperity and culture run across the map of Khulna where its most ancient rivers ran. But in attempting a description of this river system, there are pitfalls to be met in the multiplicity of the river names which makes a lucid ' account a matter of great difficulty. As the rivers change their courses and wax or wane in accordance with the laws of delta building, their names change with them. A vivid example of this lies in front of the eyes of anyone living in Khulna town. The river which runs eastward opposite to the bazar is generally termed the Atharobanki and the small khal which leaves this river near Alaipur is known as the Alaipur khal. But every one who uses these names knows that the river and khal in question are the true river Bhairab, and many of the older people have seen the Bhairab service of steamers plying down the khal where now small boats at times can hardly pass. The name Bhairab has in fact passed out of current use within the last few years, and given place to the names Atharobanki and Alaipur khal. Another source of confusion lies in the fact that two reaches of the same river have different names. and even in many cases one reach has two names. No doubt as bands of settlers came down the rivers and made their small clearings on the river banks, each band gave the river a name of their own devising; if one small colony waned in prosperity and was reinforced by members of another colony, the members of each original community would refer to the river by the name they knew. These names have persisted to the confusion of all concerned in the geography of the Sunderbans: not the least among

the sufferers are those of us whose duty it is to locate boundaries from the names of rivers mentioned in old documents.

Therefore in attempting a description of the waterways of Khulna, it is necessary to premise that the names adopted in many cases will not and cannot tally with those adopted elsewhere whether in description or in maps. An effort has been made to give the rivers the names most frequently used at the present day; in the case, however, of specific lists of rivers, e.g., those notified under the Canals Act, the names and spelling employed in those lists have been preserved, though they do not tally with current usage. The river system of the district broadly speaking flows from north to south. Originally it served to build up the delta with Ganges silt, but owing to the closing of the head waters of most of the rivers, they now carry little but drainage of surface and bil water: only the Ichhamati-Jamuna and the Madhumati-Baleswar are at the present day spill channels of Ganges water. Of these two by far the greater volume is carried by the Madhumati-Baleswar which lies in the extreme east of the district. This fact exemplifies the hydrographical axiom of Bengal that the Ganges water is ever seeking an outlet to the sea further and further eastward and is abandoning its western channels. The reason of this is a matter of considerable controversy; of the various explanations offered the most natural is to ascribe it to deltaic action. The Ganges has been since the 16th century an eastward flowing river in this part of Bengal; hence its land building action must travel gradually from west to east and the land traversed by its more westernly effluents must be built up to a greater degree than that traversed by the easternly ones. building up of the land, ipso facto, entails the silting up of the effluent rivers when their spill area is cut off, and by now all' of the old rivers which flow through Khulna district, except the two mentioned above, have lost their delta building functions and are little but an elaborate system of surface drainage.

13. Ichhamati To Kobadak.—The most westernly of the southward flowing effluents of the Ganges within this district is the Ichhamati river. It was probably originally a southward flowing branch of the Bhairab, which met the

old Jamuna mouth of the Ganges some, where in the north-east of the present Basirhat subdivision whence the combined streams flowed southwards to the Bay of Bengal.

At present the Ichhamati takes off from the Matabhanga south of the place where the Bhairab leaves the latter, and joins the moribund Jamuna Tibi in Basirhat subdivision, bounding in its southward course, the extreme north-west corner of Khulna district adjacent to the villages of Chandanpur and Chanduria. Thence, leaving this district again, it flows through the 24-Parganas district as far as the village of Radhanagar in the south of Satkhira police-station from where it continues as the district boundary of Khulna and the 24-Parganas till at a point not far westward of Kaliganj it releases the imprisoned Jamuna to flow down its old course in a moribund state past the palace of King Pratapaditya whose war vessels once rode it, and to revive again into a considerable river before entering the Bay of Bengal. After throwing off the Jamuna, the westernly branch of the Ichhamati takes the name Kalindi, and under this name continues as the district boundary till it meets the Raymangal far in the This river, and in succession the Beary, Soya, and Haribhanga rivers form the district boundary as far as the sea.

The next main river of the district is the Kobadak—a name said to be derived from Kapot-aksha, i.e., the eye of a This river was once connected. dove. with the Ganges by the Bhairab and Matabhanga in Nadia district but the connection is entirely gone now, and the Kobadak carries nothing, but surface drainage. Its volume of water is however still considerable, and for the majority of its length within the district, it forms the boundary of Satkhira and Sadar subdivisions. Its high banks attest its age and former vigour and many of the principal villages of the district (e.g., Kumira, Tala, Kapilmuni, Raruli, Bardal, Chandkhali) are situat-Between the Ichhamati and ed on it. the Kobadak in the north of the district lies the great bif tract known as the Boyra Bil, the drainage of which feeds a minor river system. The Habra and the Sobnali or Gutiakhali river carry this bil water southward in parallel courses as far as the neighbourhood of Asasuni

where the Gutiakhali turns westward and joins the Habra near Uzirpur through a nearly silted up channel, and the two together flow southward under the alternative names of Gutiakhali or Golghasia river. the point at Asasuni From the Gutiakhali turns westward to meet the Habra, it throws off the Marichap river which flows in an easternly direction to meet the Kobadak at Bardal, but before reaching there, it throws off the Kholpetua southward and receives the Betna from the north. The Kholpetua flows southward and meets the Golghasia, i.e., the united Gutiakhali and Habra near Pratapnagar; the Golghasia and Kholpetua flow southward as the Kholpetua and near Kobadak Forest station on the northern confines of the Sunderban reserved forest they meet Kobadak. Thenceforward under name of Arpangasia the united rivers flow southward till they meet the sea in the Barapanga estuary. The Betna referred to above as flowing southward into the Marichap is a silting up river killed by deltaic action, but still of some importance from the fact that Kalaroa, Jhaudanga, Buddhata and other important villages are situated on its banks. The course of the above river system is from north to south; but since the trade routes from Calcutta to Eastern Bengal run east and west, it has always been of importance to secure a waterway which avoided the tedious southern detour through the Sunderbans. The first step was taken by a Collector of the 24-Parganas by name Goodlad who in 1795-96 cut a khal to join the Jamuna at Kaliganj with the Banstola khal which flows westward from the Golghasia. This enabled merchant boats to come from the Ichhamati into the Golghasia and proceed north eastward viâ the Gutiakhali and Marichap to the Kobadak. This khal from Kaliganj to its junction with the Banstola was originally known as Goodlad's khal, but that name has long been displaced by the name of Kekshiali khal. on in order to avoid the southern detour by the Banstola into the Golghasia, a straight khal was cut from the junction of the Kekshiali and Banstola khals to the Habra river, near Uzirpur, at the point where the Gutiakhali joins it. This khal is known now as cut No. 1 or the Uzirpur Katakhal; as long as the Gutiakhali khal was navigable, the Katakhal was of great value as a trade

route, but since the silting up of the former between Asasuni and Uzirpur, the latter has lost its importance.

Kobádak to Bhairab.—East of the Kobadak the next great river of the district is the Bhairab. This river was undoubtedly of the greatest importance in the central delta, and there is good reason to believe that it began the delta building work in this area as a spill channel from the left bank of the Ganges before the latter river changed its course from south to east; how far the Bhairab itself was concerned in the change of the Ganges course in the 16th century is a moot point, and its discussion lies outside the scope of this report. After the change was effected, the offtake of the Bhairab was from the right bank of the Ganges and it flowed south eastwards past Jessore and Khulna into the Baleswar and Haringhata estuary, building up the delta with Ganges silt. Later on both the Jalangi and Matabhanga opened out in a southernly direction across its course carrying its waters away to the south or south-west, and robbing it of its ancient vigour till by the middle of last century it was only recognized as an effluent of the Marabhanga; eventually, so far has it lost its identity that its course between the Matabhanga and Tahirpore where it gives off the Kobadak is generally considered to be part of the Kobadak. connection of the Bhairab-Kobadak with the Matabhanga was destroyed, it is related, by the cutting of a channel across the neck of the loop in the Matabhanga from whence the Bhairab-Kobadak is given off; the Matabhanga deserted the loop and the two rivers were deprived of their head waters.

Since 1874 the upper Bhairab has revived, but between the Matabhanga and Basantia in Jessore the river is still dead, and in the dry weather is little more than a string of muddy depres-Southward of Basantia it regains life owing to the influx of water from the Narail bil area, which is fed from the spill of the Gorai and Madhumati; most of this water pasess into the Bhairab through three channels, the Afra, the Majudkhali and the Atai, the former in Jessore and the two latter in Khulna district. Fed by these rivers the-Bhairab flows as a broad stream past Daulatpur, Senhati Phultala, Khulna as far as Alaipur where for reasons to be described later it dies, and continues as a shallow khal as far as Jatrapore. Here it used to take a great bend northwards and describe nearly a complete loop before passing southward to Bagerhat; the neck of this loop was cut through not long before 1876 and the western and northern reaches of the loop are now only visible as a small khal. The eastern reach however brings down a copious supply of the bil water spilled south of Mollahat by the Atharobanki and carried down by a branch of the Chitra river to the old loop of the Bhairab. Thence as far as Bagerhat the river flows with ample volume, but before it reaches the Madhumati-Baleswar at Kachua most of it's water passes southward through the Daratana, leaving its ancient course almost dry. attempt has been made to shorten the route from Bagerhat to Kachua by cutting through the neck of a loop in the river, but this cut, known as the Kachua cut, has not proved a success and is only navigable for boat traffic at high tide. The sudden death of the river at Alaipur is primarily due to the forcing back of the Bhairab current by the Atharobanki which, as will be explained below. only began to develop in the first half of last century; this however did not entirely kill the river for it was navigable to steamers within living memory. final causes of the river's death between Alaipur and Jatrapore are probably the restricting of the flow of bil water by the embanking of the Kaliganga which runs from the northern bil tract into the Bhairab near Mansa, and also to the cutting of the neck of the Jatrapore loop in the early seventies of last century, which shifted the tidal meeting ground to a point where it could not be kept free from silting by the northern The revival of the river at bil water. Jatrapore as pointed out above is due to the influx of bil water from the north and its subsequent death between Bagerhat and Kachua is due to the opening out of the Daratana river which leads the Bhairab water southward through a course which bears many names before its joins the Panguchi at Morrellganj. The great villages and trade centres situated on the banks of the Bhairab attest its former greatness; and it was along its banks that the first colonizer of the Sunderbans, Khan Jehan Ali, built his road to Bagerhat more than 450 years Between the Bhairab and the Kobadak the great bil area of the north of the district is continued and like the

Habra and Gutiakhali in Satkhira spbdivision, numerous effluents, too, numerous to particularise, carry the bil water southward till they unite in the Sipsa river which flows southward from the neighbourhood of Soladana to join the Pasur at the head of the Marjata estuary. One of many rivers which traverses this bil tract requires mention; the Bhadra used to flow from the Kobadak near Trimchini in Jessore, but, like the Kobadak and Bhairab, has silted in its upper reaches and now flows southward as a drainage carrier till it joins the Pasur in the Sunderban forest. banks many flourishing villages were founded, including in Khulna district the trade centres of Chuknagar and Dumuria, and the village which gave its name to Sahos pargana. The tract between the Kobadak and Bhairab is better off in respect of east and west communication than the Satkhira tract between the Ichhamati and Kobadak. The main arteries are the Chandkhali khal and Menus river which join the Kobadak to the Sipsa: thence the Dhaki Creek leads to the Bhadra river which in turn is connected by the Chunkuri khal with the Pasur, and so with the Bhairab at Khulna. An alternative route from the Sipsa to the Bhadra is ria the Sutarkhali khal which fringes the Sunderban reserved forest and inspite of an inconsiderable width is of considerable depth and is much used by boats coming from the south. South of the Chandkhali khal the Koyra river and the Shakbaria khal afford navigable routes from the Kobadak to the Sipsa and north of Chandkhali two artificial channels known as Cut No. 2 and the Boalia or Sitagunge khal connect the Kobadak with the Sipsa system near Paikgachha. Villagers on the banks of the Kobadak south of these artificial cuts are bitter against them, saying, with good reason I believe, that the fresh water of the Kobadak flows through them into the Sipsa and leaves the crops of southern villages at the mercy of the salt tides from the It is a fact that in recent year the sea. erop failures in the area south of these cuts have been numerous while the villages on the banks of the Sibsa system have enjoyed a good crop. This was a considerable factor in the Jamabandi proceedings of these groups of villages and will be referred to in detail in connection with those proceedings.

15. The central and eastern rivers. From the point opposite Khulna town

where the Bhairab turns from its southernly course to an eastward direction, the Rupsa river flows southward and continues as a large river for about three miles till it is joined by a small khal called the Narayankhali thenceforward it continues as the Kajibacha or Kachipata river till it meets the Pasur flowing from the north-east; thenceforward, as a mighty river under the name Pasur, it flows southward to At present from Khulna town southward to the sea the same river appears to bear four names Bhairab, Rupsa, Kajibacha and Pasur; the origin of these names was as follows: The Pasur was a river draining the swamps of Hogla pargana east of Khulna and flowing southward to the sea; a similar river the Kajibacha drained the swamps west of Daulatpur and flowed southwards as a small river parallel to the Pasur ultimately joining it near Chalna. One Narayan Ghosh cut a channel connecting the head water of the Pasur with the Kajibacha and another khal was cut by one Rup Shaha connecting the Bhairab at Khulna town with the point where Narayan's khal met the -Kajibacha. Thus through the khal of Rup Shaha (now the Rupsa river) and the khal of Narayan Ghosh (now the Narayankhali khal) the Bhairab and Pasur water Kajibacha swellflowed into ${
m the}$ ing it to a mighty river at the expense of the Bhairab and Pasur. This is the river which flows from the Bhairab and Rupsa rivers and after its junction with the attenuated Pasur river near Chalna continues as the Pasur to the sea. main cross channels which connect this river with the bil area between the Bhairab and Kobadak and its southward effluents are the Solemari which joins it Baitaghata, the Jhabjhabia which joins it nearly opposite to its junction with the old Pasur, and the Chunkuri khal which flows from the Bhadra and joins it at Chalna. Further south in the Sunderban forest it receives the waters of the Bhadra and the Sipsa. has been made above of a branch of the Chitra river feeding the Bhairab at the Jatrapur loop. This Chitra apparently flows from the Atharobanki at Nagorkandi, and after throwing off the Kaliganga runs by a somewhat devious course to the old Madhumati at Chitalmari giving off on the way the There is no branch alluded to above. apparent connection at present between this river and the Chitra in Jessore which discharges into the Atharobanki at

Chagladaha from the north after flowing past Terakhada police station, but there is little doubt that they were originally the same stream intersected at present by a reach of the Atharobanki. from the fact that the comparative continuity of their courses roughly parallel to the Bhairab and the similarity of names argue their identity, it is very significant that the lower Chitra river before it reaches the Madhumati is the definite boundary of the lands of parganas Chirulia and Selimabad, for from this fact we can deduce that it was a stream of considerable importance at a very remote period. It is unlikely that a local stream a few miles long would have this importance, which is easily explainable on the supposition that it was then a part of the long delta building Chitra. A similar argument applies to the Nalua river in Mollahat thana whose dead course bounds Mekimpur pargana. It was undoubtedly a considerable river in ancient times and its deterioration has been going on up till recent years, when its bed has entirely dried up for a considerable part of its It is currently reported that the drying up of the Nalua has seriously affected the health of the locality and its re-excavation is one of the local sanitary projects consistently advocated by the present able Chairman of the District Board, Rai Amrita Lal Raha Bahadur. The area between the Pasur on the west. the Madhumati-Baleswar on the east and the Bhairab on the north is almost entirereclaimed Sunderban land. name of its principal parganas Madhudia or Madhya dwip (middle island) and Hogla (the great Sunderban reed) point to a time when it was a swampy tract at the edge of the Bay of Bengal intersected by channels which represented the remains of a silting estuary. When reclamation began, sufficient sweet Ganges water came down these channels from the north to make large marginal embankments unnecessary; hence unlike the areas west of the Pasur, natural deltaic action has built up the land leaving only the central depressions which as explained above are its inevitable concomitants. So long as the river channels were sufficiently deep to carry off the rain and flood water, the lands bore good crops, and this area has been notably free from the famine and scarcity due to crop failure which have visited the district from time to time. Now, however, during the last decade the rivers have received more silt than they can carry,

and their beds have been raised above the levels of the central depression. marginal embankments patharis," as they are called in this part of the district, have prevented the rivers making the lateral shift which they would have done if untramelled, hence the heightened rivers are now unable to drain the water accumulating in the deltaic pockets or bils. The result is that the areas are liable to flooding, and crops are thereby damaged, but as the water is sweet and as growing paddy can stand a considerable amount of immersion in sweet water, the damage caused to these areas is insignificant as compared with that suffered by the saline tracts in Paikgachha and neighbouring There are however certain lowthanas. lying tracts where the drainage problem is becoming acute, and concerted action under the recent Agricultural and Sanitary Improvement Act seems very necessary. Efforts in this direction have •been made by the Laha Estate in respect of the areas adjacent to the Manikkhola river, and certain Government estates notably Teliganti and Kaker Bil require immediate attention.

Mention has already been made of the river Daratana which carries the Bhairah water southward from Bagerhat. At the time of the Revenue Survey this river did not exist; the Putimari was thrown off from the Bhairab near Bagerhat to flow southward more or less in its present course. Subsequently a direct channel to the south was formed by the opening of the Daratana which now flows from the Putimari a mile below its junction with the Bhairab to the junction of the Chhavbanki khal with the river which runs southward to Morellganj under a variety of names, of which the Keora is in most general use. it unites with the Bishkhali and continues to the Baleswar as a large river, under the name Panguchi. The Bish khali flows southward from a bend in the Baleswar river and was, only a few years ago, the main artery of traffic from the northern reaches of that river to Morrell-It has silted up with amazing speed recently, and where I travelled in a large steam-launch in 1920 I can now (in 1925) cross the river almost dry footed at low tide. In a similar way the Manikkhola river has silted up; this river leaves the Keora river a few miles south of the Chhavbanki khal referred to above, and joins the Bhola river. used to carry the drainage water of the fertile Sunderban estates which border it, but its silting up has jeopardised the crops and is an acute problem for Government and the Government lessees. As noted above, the Laha Babus have taken the initiative in respect of the Phulhata estate which they hold on a long lease, and though the proceedings have dragged on in a tantalising fashion since the estate was inspected as long ago as 1920 by an officer of the Irrigation department, it is to be hoped that attention having been directed to the matter. more vigorous action will ensue in this The Bhola river flows out of the Putimari near Khondkarber estate and continuing in a southern direction becomes the boundary between the Khaolia Barisal estates of Sarankhola policestation and the reserved forest. Putimari, as already stated, takes its origin from the Bhairab at Bagerhat and flows southward to join the Chachan river near the present Chandpie forest station; it is often called the Chilla Chandpie River in its lower reaches. Though now not a large river, it has a special importance from the fact that for a considerable part of its course it forms the boundary between the Sunderban estates and the lands of pargana Hogla and the so-called parganas (in reality Henckell's Taluks) of Ballabhpur and Gokulnagar. The Chachan river is a cross stream flowing from the Pasur river and forming the northern boundary of the reserved forest; after Putimari, it takes the joining the Kharma khal--a name of silting khal which once gave access to river steamers from the Pasur to the Bhola, but new is hardly traversable by a small launch at the beight of the tide. Two other rivers drain the swamps south of the Bhairab and flow southward parallel to the Putimari; these are the Kumarkhali and the Dandkhali which join at Rampal and thenceforward flow in a south westernly direction to the Pasur as one river the Mangla. northern reaches of these rivers are silting up and a launch journey by the Daudkhali from Rampal to Gaurambha which was possible in 1922 is now out of the question. Λ few miles south of the junction of the Mangla and the Pasur the Chilla river leaves the Pasur and flows in a south-easternly direction to the Putimari ferming the boundary between the Sunderban estates' lands and the lands of pargana Hogla.

16. Madhumati-Baleswar.—The above description comprises all the main rivers

of the district, except the Atharobanki and the Madhumati-Baleswar, which have been incidentally referred to. these rivers at present carry a very large proportion of the sweet Ganges water, which enters the district, some further description of them is necessary. The Madhumati can fairly be called the most important river in the district at the present day and has therefore a great influence on the physiography and the economic condition of the eastern portion of the district. It derives its waters from the Ganges through Gorai: the latter is not a river of this district, but in its capacity of feeder of the Madhumati, its history belongs to the history of the district. Early in the nineteenth century the well known change in the course of the Brahmaputra, which deserted its eastward channel and found an outlet into the Ganges near Goalundo, drove back a considerable amount of Ganges water into the Gorai. The waters of the Gorai leaving the Ganges at Kustia had previously flowed southward through a channel called the Barasia, and through the Nabaganga both of which are shown in Rennell's map as parallel southward continuations of the Gorai, uniting not far from Lohagara. South of their junction the river is shown as the Madhumati. When however the volume of Gorai water was augmented, these southward effluents proved too small. The Gorai then found its way southward through another small channel called the Alangkhali, parallel to the Barasia. enlarging it to such an extent that it became the main channel, and received the name Madhumati which had previously only been applied to the southern reaches of the river. This change of name has given rise to much confusion in the past for which Westland in his History of Jessore is mainly responsible. categorically states that "the recent formation of this great river (the Madhumati) is not a mere matter of argument or probability. It is a fact perfectly well known in the vicinity being almost within the recollection of persons now living" (this was written in 1874). This sentence of Westland has been used as an argument that the Madhumati did not exist at the time of the Permanent Settlement, a fact which, if proved. would have an important consequence point of view; a revenue for if the Madhumati did not exist then no diara resumption could be legally undertaken in the bed of this river on the

basis of the revenue survey maps. however certain that the Madhumati south of Kalna near Lohagara did exist at the time of the Permanent Settlement: what happened thirty years or so later was the enlarging of the Alangkhali and the adoption of the name Madhumati for this part of the river, and it is to this fact that Westland refers in the paragraph quoted above. Several cogent proofs of this fact are available; firstly Rennell's map prepared between 1764 and 1772 shows the Madhumati as a considerable river south of Kalna; it could not have entirely died by 1793 and been reborn at the period referred to by West-Secondly in a subsequent paragraph Westland substantially corrects the impression given by his misleading reference to the recent formation of this great river; he states that "the new channel obtained the name Madhumati (honey flowing), that being the name by which the lower part of it, that below the point where it received the Nabaganga in the marsh just alluded to (the Mokimpur marsh), used to be called " This sentence makes his true meaning clear; the "recent formation" definitely to the enlargement of the channel of the Alaugkhali. Thirdly it appears that a series of alluvial resumption cases were started between 1816 and 1846 in 'the area south of Kalna, but were dropped, not on the ground that there was no river there at the time of the Permanent Settlement, but on grounds that the river in its career through the pargana washed away land from some villages and added lands to others and therefore it would be unjust to assess the accretions. This principle is now obsolete, but its citation at the time shows elearly that quite shortly after the beginning of the nineteenth century, the existence of a large and active river at the time of the Permanent Settlement was fully believed It may therefore be safely assumed on the three grounds stated above, that the enlargement of the Gorai early in the nineteenth century resulted in the cutting of a great river where the small Alangkhali khal had been, but that south of the junction of the Alangkhali and the Barasia the only result was the increasing of the volume of an already pre-existing Madhumati river

On this point—aliquando dormitat Homerus—even Mr. Addams-Williams seems to have been led astray by Westland whom he quotes. Mr. Addams-Williams (History of the Rivers of the Gangetic Delta, pages 52 and 53) states that the lower reaches of "the Barassi appear from Rennell's map to have followed much the same course as the Madhumati does now; it continued to the sea through the Ballisur and Hariinghata estuary". In this sentence he overlooks the fact that in Rennell's map the name "Madhumatty" is given to the river immediately south of Kalna. The point that the Madhumati actually did exist from Rennell's time has been emphasised here as important Diara proceedings were not long ago held up on the strength of the misleading statement of Westland referred to above.

It is not very clear at what point the Madhumati takes the name of Baleswar in its southward course. The name appears in Rennell's map just north of Kachua; it is possible that the mouth of very ancient river Chitra (the existence of which as a pargana boundary is referred to above) marked the spot where the river changed from the "honey flowing" to the "lord of strength".

Athárobánki A direct result of the increase in volume of the Madhumati was the formation of the Atharobanki river which now joins the Madhumati with the Bhairab near Alaipur and forms the northern boundary of the district for a considerable distance. This river was existence in Rennell's time, and in a navigation map of 1821 prepared by J. A. Schalch, it is shown as a very small river. Comparison of Schalch's map with the revenue survey maps would seem to show that in 1821 the Atharobanki was about half the width which it had reached by the time of the revenue survey (about 1857) and occupied a materially different course. There is therefore every reason to believe that about the time the volume of Gorai water increased, the Atharobanki channel formed as an outlet for some of the surplus Gorai-Madhumati water, carrying it into the Bhairab at Alaipur. It is from this point (as referred to above) that the Bhairab river has shrunk to a small khal until it receives fresh life from the bil drainage waters near Jatrapur, and this shrinkage can be primarily attributed with reasonable certainty to the action Madhumati-Atharobanki of driving back the Bhairab water into the Rupsa channel. It is worth noting that in the map attached to Gastrell's report of the revenue survey of this area the Atharobanki is given the alternative

name of Chitra; this in an added argument in favour of the continuity of the old Chitra referred to above.

Summary of river system. following resumé gives the salient points of the river system of Khulna district. A little Ganges water still tomes down the Ichhamati on the western boundary of the district; but the main channel by which Ganges water is received is the Madhumati-Baleswar which forms for the majority of its course the eastern boundary of the district; no other river now carries Ganges water into the district throughout the year. As a result of this, all parts of the west and centre of the district which are not raised by deltaic action above flood level are subject to saline inundation, a danger enhanced as pointed out above by premature embankment. The old rivers Betna, Kobadak, Bhadra, etc., still flow in their courses; but as they have lost their connection with the Ganges, they serve rather as conduit pipes by which the salt water is carried upwards than as channels for distributing sweet water. In the height of the rains, the surface drainage of rain water and the increased volume of southward flowing water from the Ganges sweeten these rivers to some extent and mitigates damage done to crops by floods at that season; the amount of sweet water varies from year to year, and a year when salt water prevails in July and August gives rise to the gravest danger of local crop destruction and consequent scarcity. Certain rivers however notably the Sipsa and to some extent the Pasur draw their water from the great bil depression which runs from west to east across the north of the dis-These rivers always carry a considerable proportion of fresh water and the villages situated on their banks consequently suffer less from saline damage than those situated on the old effluents of the Ganges. Both these classes of rivers are alike in the fact that they do not carry any great quantity of silt, hence no great amount of deterioration in their courses is going on at present and alluvion and diluvion since the revenue survey has been comparatively But the embanking of the saline rivers with high and strong embankments with a view to keep out salt water from the crops has had the natural effect of confining the salt tide and so forcing it higher and higher up the rivers, thus necessitating further embankment work and creating a vicious circle of salt water leading to embankment and embankment

extending the salt water area. In the east of the district however the conditions are different. The salient factor is the silt laden sweet water of the Ganges which pours down through the Madhumati-Baleswar and its effluents. On the one hand this volume of fresh water drives back the salt tides and so saves the area from the dangers of excessive or premature embankment: on the other hand this area, particularly within the boundaries of the Bhairab on the north, the Pasur on the west, the Madhumati-Baleswar on the east and the reserved forest on the south, is becoming liable to flood owing to the deterioration of the rivers as drainage carriers by reason of the silt they still carry.

As regards navigation, the west and centre of the district are except in isolated spots in a comparatively stable condition, for not enough silt is carried to choke the rivers courses; but in the east deterioration of the rivers is going on apace and a single lustrum has changed the navigable channels to a considerable extent.

19. Problems of Khulna rivers. The problem of the rivers of Khulna is therefore twofold; firstly, how to keep the rivers alive and, secondly, how to keep the salt water or flood water out of the land, in other words the conservation of the rivers and the conservation of the fertility of the soil.

The first problem is pre-eminently the sphere of the irrigation authorities: but they have little concern with the second. The revenue administration is obliged to envisage both. The paramount object is admittedly to keep the rivers alive, for a moribund river is useless for navigation or for drainage and breeds the fatal anopheles. question seems to resolve itself into the adoption of one of two alternatives, the extension of the spill area of the rivers in order to free them from choking silt or reconnecting the dead rivers with a head water supply. Extension of tidal travel inland is efficacious from the point of view of navigation, for the action of the tides ensures an adequate channel, but the extension of tidal range involves the extension of the salt water to the detriment of agricultural prosperity. Spill area can only be extended by prohibiting embankments and tentative efforts have been made in that direction by the extension of the Embankment Act to the Sunderbans and by the executive orders restricting erection of

embankments in case of new leases of waste land until the land has reached the mean level of spring and neap tides. Further measures are obviously impossible as far as marginal embankments are concerned, but it is not only feasible but essential to envisage from an expert point of view the results of proposed new roads, railways and other similar works which would tend to restrict tidal spill. To prohibit marginal embankments in a saline area where there are already vested interests is equivalent to expropriation of large tracts, a policy for which Government has probably neither financial means nor inclination.

The other method is that of re-opening dead channels or opening up new channels in order to ensure a flow of head water. Nothing can be urged against this provided it is feasible; for it will deal equally effectively with the problem of the salt water in the west and centre, with the drainage problem in the east and with the questions of navigaand sanitation. The question whether it is feasible is for the experts -and the result of the test scheme of re-opening the head waters of the Bhairab or any similar scheme which may be taken up, will be awaited with the greatest interest, for upon its success or failure will hang much of the prosperity of Khulna district.

CLIMATE.

The seasons in Khulna Seasons. differ in no respect from those in other parts of Lower Bengal; but as is to be expected from its geographical position, Khulna enjoys a climate cooler and damper than that of the dry western districts, but suffers in this respect by comparison with Eastern Bengal. distinctive feature of the climate is the salt laden air which is prevalent throughout the year—but especially so when the south winds blow. From November to February when the temperature of the land air drops, the more stable sea preserves a belt of light warm air which rising upwards gives place to the heavier cold air of the land. This causes the current of cool air from the north which is the prevailing wind during those months. In February the suns rays,. gathering power, heat up the land but fail to affect the stable sea to the same The land air then becomes extent. hotter and lighter than the sea air, and as it-rises gives place to a current of air from the sea, which rushes up in the form

of the salt southernly winds which prevail from February to November. The wide estuaries and waterways of Khulna provide ample passage for this south wind which, though it impregnates the air with salt to an extent which damages fabrics and affects some constitutions, still affords a grateful coolness in the hottest months of the year.

cyclones.—Two Storms and types of storm are prevalent; one occurs in the form of short heavy rain accompanied by wind from the north-west, occurring towards dusk March, April and May. These storms are due to the excess of moisture brought up by the prevailing south winds, precipitated by the cold air and accompanied at times by heavy hail. They are usually of short duration, but often sufficiently severe to damage or sink country craft on the rivers, thereby causing loss of life. They also damage the ripening fruit trees, such as mango or litchi by stripping off the setting blossoms. The other types of storms are the dreaded cyclones of the equinox, which have played so great havoc in the district in the past. The mechanism of a cyclone has been described as a cylindrical vortex with its axis nearly vertical rolling along at a rate conjecturally dependant partly on the tilt and with an axial uprush of air to fill up a central depression—which depression is nevertheless maintained and might be intensified by the whirl, the energy being derived from the condensation of the It is of course the uprush of air which produces the cyclonic wind, and the above description embodies the well-known phenomenon that after the first onrush of wind a calm period ensues. while the centre of the vortex passes over the observer, and is followed by a further violent wind as the other side of the cylinder arrives.

The following list comprises the cyclones, which have visited the district during the last century, as far as can be ascertaized from reliable sources:—

May 14th and 15th, 1852.

October 5th, 1864.

November 1st, 1867.

May 16th and June 9th, 1869.

September 20th, 1872.

October 17th, 1909.

September 24th, 1919.

There was also a severe cyclone in 1876 which however affected Khulna to a less

degree than the adjacent district Bakar, ganj where one hundred thousand people were carried away by the immense tidal wave, which roared in from the Bay of Bengal and twenty-five thousand more fell victims to the cholera which broke out after the disaster. The evclones of 1909 and of 1919 are matters of comparafively recent memory: many districts were more or less affected, but a considerable measure of the disaster in both cases fell upon Khulna. The 1909 cyclone was preceded by a depression close to the Andaman Islands, which developed into a storm with a wind velocity of 77 miles This storm crossed the coast per hour. of Khulna about midnight on the 16th of October, reaching Sarankhola about 2 A.M. on the 17th, and extending to the northern of parts the district, Khulna town by 8 A.M. including and continuing to rage until about 2 A.M. on the 18th when it passed away to the north. The tidal wave which accompanied the storm swept up all the large rivers of Khulna on October 17th beginning at the sea at 11 A.M. and reaching its greatest height the same night; its destructive effects were mainly confined to the southern parts of the district, the northern parts merely experiencing an unusually high tide. The loss of life due to storm wind and tidal wave in Khulna district was estimated at 698 persons, of whom 500 were swept away by water in Sarankhola police station area which reaches nearer to the sea than any other deforested area of the district. This is a strong reinforcement to other arguments for preserving the reserved forest area of Khaolia Barisal Lot No. 7 which is direct. buffer between the Bay of Bengal and the inhabited parts of Sarankhola police The loss of cattle ascribed to this cyclone is 70,654, but this large figure is perhaps open to Damage to crops was however unexpectedly small; the rivers were brimming with rains water which counteracted the noxious effect of the salt sea water, and the paddy crop withstood its temporary immersion. In no part of the district was the damage to crops estimated at more than two annas of the whole, and many parts escaped entirely. No epidemic followed the cyclone and no relief measures beyond sporadic and temporary gifts of rice and clothes were found necessary.

The cyclone of 1919 developed from a storm in the Bay of Bengal and struck

othe coast of Khulna about 9 A.M. on September 24th; it entered the southern extremity of the cultivated area of the district about 4 P.M. and reached the north of the district between 9 and The storm wave which followed the hurricane appears to have been less violent than that of the 1909 cyclone, and it is probably for this reason that the deaths in the district only reached the figure of 432 as compared with 698 in 1909. The cattle mortality was reported at 28,029, a much smaller figure than that of the 1909 cyclone but, as stated above, the latter figures are not above suspicion.

Scarcity of 1921.—The damage to crops in Khulna district was considerable, for the cyclone came a month earlier than that of 1909, and hence found the crop less vigorous and able to withstand the force of wind and water. Paddy cultivation is late in the Sunderban tracts and transplantation does not take place till August or September; hence the still weakly seedlings in those areas mostly perished. Another more far reaching effect of the cyclone was the destruction of the embankments which are necessary to keep salt water out of "abads" or cultivated Sunderban immemorial custom By tenants as a rule repair these embankments annually, the work being done from November onwards throughout the This year however the cold weather. people, in many cases rendered homeless or suffering other severe loss, were in no mood to undertake the accustomed work and neither landlords nor local officers realised the necessity of concentrating on it before it was too late. Organised relief was given to the people throughout the cold weather, and they attempted to grow the crop of 1920 with makeshift patching of the embankments. This patch work was a failure partly because it was hurried and inadequate and still more because it was delayed until the water became very salt after the effects of the rains had passed away, and when the water is in this condition, the earth never binds sufficiently to make a secure embankment. Hence in certain tracts of the district particularly, in Paikgacha, Asasuni, police-stations Kaliganj and Shyamnagar there was much saline inundation in 1920; the crop was to a great extent destroyed and the patch work embankments fell to pieces.

By the hot weather of 1921 the two successive crop failures had turned a prosperous area into a region where poverty, want and almost starvation were felt. Relief measures became necessary, and though famine was not officially declared, it was necessary for some eight months, to distribute clothing and rice to the destitute and to organise relief work for those able to perform it. The favourable rains of 1921 helped to neutralize the effects of the saline inundation. A better harvest was produced, and the people, heartened by this and subsisting upon the relief distributed, succeeded in repairing the majority of the damaged embankments during the cold weather, though, as described elsewhere, in a few estates the increasing salinity of the Kobadak water has hindered all efforts at recultivation, and has rendered these estates a problem of some difficulty in the revenue administration of the district.

23.**Rainfall**—The district average annual rainfall for the last decade compiled by the Meteorological Office, Calcutta, amounted to 72.61 inches. wettest month of the year is July in which 13:21 is recorded as the average rainfall; this decreases month by month till January when 45 only is recorded; thenceforward the average rises steadily till it culminates again in July. The four wet months of the year are June, July, August and September, each of them having a rainfall nearly double that of the next wettest months. There is a wellknown saying in Bengal যদি বর্ষে মাথের শেষ, ধন্ম রাজার পুণ্য দেশ [If it rains towards the end of Magh (i,e), early in January), the King is rich and the country blessed]; this hardly applies to the majority of Khulna district for the aman paddy crop is reaped late in January and the early ploughing which requires showers in early January is impossible. Of far greater importance in the tracts subject to saline inundation is well distributed the cultivating rainfall throughout season in order to wash out the inevitable percolation from embankment breaches or storm tide water, and a failure of rain for two or three weeks during this period is liable to bring disaster to the erops. Showers in late October and November when the paddy is maturing are most beneficial, but anything in the nature of a storm is fatal for it beats down and destroys the ripening crop.

COMMUNICATIONS AND TRADE CENTRES.

24. River Communication.—The river system of the district described above forms the normal means of communication of a large percentage of the population. A census of the small boats in the district taken during the present operations shows a total of 37,383, i.e., about 1 per every twenty male persons: this is exclusive of the large merchandise boats which pass through the district and which it was impossible to enumerate. Small boats pass through every one of the innumerable channels which intersect the district-finding no obstacle even in the embankments at the mouths of the smaller khals--over which they are dragged like a Thames rowing boat over the rollers at a closed The smooth surface of the lock gate.

mud takes the place of the rollers and the boat is hoisted up and over with little exertion.

Steamer and Boat Routes .-Steamers and larger boats keep to certain defined routes which are known as the, "Steamer route", "Outer boat route" and "Inner boat route" respec-Government makes itself responsible for the supervision of these routes through the Eastern and Circular Canals Division of the Irrigation Branch of the Public Works Depart-The following rivers have been declared as channels under the Canals Act (Act V of 1864), and by the operation of this act the local officers of the above Department maintain channels in good order as far as financial restrictions permit:—

Steamer Route.

| Serial No. | Name of river of channel. | From. | To. | Length miles. | Notification. |
|---------------|---------------------------|---------------------------------------|---------------------------------------|------------------|---|
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 |
| 1 | Haribhanga River . | Junction with Terobanket River. | Junction with Soya River. | 7 | Notification No. 230, dated the 23rd July 1895. |
| 2 | Soya River . | Junction with Hari- bhanga River. | Junction with Beory Khal. | 3 | Ditto. |
| 3 | Beory (Bhiri) Khal | Junction with Soya River | Junction with Rayman- gol River. | 3 | Ditto. |
| . 4 | Raymangal River . | Junction with Beory Khal. | Junction with Atharo- banki River. | 2 | Ditto. |
| 5 | Atharobanki River . | Junction with Rayman- gal River. | Junction with Mandah River. | 12 | Ditto. |
| в | Jabuna River . | Junction with Atharo- banki River. | Junction with Firinghi Khal. | 3 | Ditto. |
| 7 | Firinghi Khal . | Junction with Jabuna River. | Junction with Malancha River. | 3 | Ditto. |
| 8 | Malancha River . | Junction with Firinghi Khal. | Junction with Araibanka | 7 | Ditto. |
| 9 | Araibanka | Junction with Malancha River. | Junction with Arpan- gasia River. | 2 | Ditto. |
| 10 | Arpangasia River . | Junction with Atharobanka. | Junction with Kole Khal | 9 | Ditto. |
| 11 | Kole Khal (Ghole Khal) | Junction with Arpangasia. | Junction with Shank- beria. | 11 | Ditto. |
| 12 | Shankberia River . | Junction with Kole Khal | Junction with Bojboja River. | 3 | Ditto. |
| 13 | ·Bojboja River . | Junction with Shank- beria River. | Junction with Satbari, River. | 2 | Ditto |
| 14 | Satbari River . | Junction with Bojboja River. | Junction with Oura Sibsa. | 3 | Ditto. |
| 15 | Oura Sibsa . | Junction with Satbari River. | Junction with Sibsa River. | •4 | Ditto. |

| Sorial No. | Name of river of channel. | · From. | To. | Longth miles. | Notification. |
|---------------|---------------------------|--|---|------------------|---|
| 1 | 2 | 3 | 4 | - 5 | 6 |
| 16 | Sibsa River | Junction with Oura Sibsa River. | Junction with Adashai Crook. | 2 | Notification No. 230, dated the 23rd July 1895. |
| 17 | Mankee River | Junction with Adashai Creek. o | Junction with Pasur | 9 | Ditto. |
| 18 | Pasur River | Junction with Mankee | Junction with Mirga- mari River. | \$ | Ditto. |
| 19 | Mirgamari River | Junction with l'asur | Junction with Solaganj | 6 | Ditto. |
| 20 | Solaganj | Junction with Mirga- mari River. | Junction with Aroobari River. | 4 | Ditto. |
| 21 | Aroobari River | Junction with Solaganj | Junction with Bhola River. | 5 | Ditto. |
| 22 | Bhola River | Junction with Aroobari River. | Junction with Manik- khola River. | 12 | Ditto. |
| 23 | Manikkhola River | Junction with Bhola River. | Junction with Ghosi- khali. | 7 | Ditto. |
| 24 | Ghosikhali River | Junction with Manik- khola River. | Junction with Jeebdhara River, | 2 | Ditto. |
| 25 | Jeebdhara River | Junction with Ghosi- khali. | Junction with Balui- bunia River. | 4 | Ditto. € |
| 26 | Baluibunia River | Junction with Jeebdhara River. | Junction with Panguchi | 3 | Ditto. |
| 27 | Panguchi River | Junction with Balui- bunia. | Junction with Baleswar River, | 3 | Ditto. |
| 28 | Baleswar River | Junction with Panguchi | Junction with Kocha River, | 3 | Ditto. |
| 29 | Atharobanki River | Junction with Bhairab at Alaipur. | Junction with Madhu- mati at Astail. | 20 | Notification No. 162, dated the 22nd July 1902. |
| 30 | Bhairab River | Junction with Rupsa River at Khulna. | Junction with Majoor- khali Khal. | 10 | Notification No. 7, dated the lst Sep- tember 1914. |
| 31 | Majoorkhali Khal | Junction with Bhairab | Junction with Atai | -1 | Ditto. |
| 32 | Atai | Junction with Majoor- khali Khal. | Junction with Mulor Khal. | 2 | Ditto. |
| ' | Gazi khal including | Junction with Mulor Khal | Gazirhat | 1 | Ditto. |
| 33 | Atai | Junction with Bhairab River near Solepur. | Junction with Majoor- khali Khal. | 83 | Ditto. |

Outer boat Route.

| 1 | Barakulia River (includ- ing Morrison's Cut and Kalindi). | Junction with Bara Kalagachhia. | Junction with Kalindi and up to Basantapur. | 24 | Notification No. 230, dated the 23rd July 1895. |
|-----|---|--------------------------------------|--|----|---|
| 2 | Banstala Khal | Junction with Coxali Khal. | Junction with Galghasia River. | 4 | Ditto. |
| 3 | Galghasia River | Junction with Banstala Khal. | Junction with Culputton River. | 51 | Ditto. |
| 4 | Culputtoa River | Junction with Galghasia River. | Junction with Kundra Gang. | 12 | Ditto. |
| 5 | Kobaduk River | Junction with Morichap River. | Junction with Chand- khali Khal, | 1 | Ditto. |
| 6 | Chandkhali Khal | Junction with Kobaduk River. | Junction with Minus River. | Б | Ditto. |
| ` 7 | Minus River | Junction with Chand- khali River. | Junction with Sibsa River. | 8 | Ditto. |

| Serial No. | Name of river of channel. | From. | To. | l₄ength miles. | Notification. |
|---------------|---|---|-------------------------------------|-------------------|---|
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 |
| 8 | Sibsa River | Junction with Menus River. | Junction with Dhaki River. | 1 | Notification No. 230, dated the 23rd July 1895. |
| 9 | Dhaki River | Junction with Sibsa River. | Junction with Bhudder River. | 6 | Ditto. |
| 10 | Chunapuri Khal (now called Chunkuri Khal). | Junction with Bhudder | Junction with Pasur River. | 3 | Ditto. |
| 11 | Kazibacha River | Junction with Pasur River at Chalna. | Junction with Baita- ghata Khal. | 10 | Ditto. |

Inner Bout Route.

| 1 | Jamuna River | Hasnatud | Kaliganj | 12 | Notification No. 230 dated the 23rd July 1895. |
|------|---|--|---|-----|--|
| 2 | Coxali Khal | Kaliganj | Cut No. 1 | 6 | Ditto. |
| 3 | Cut No. 1 | Coxali Khal | Asasuni Khal | 21 | Ditto. |
| 4 | Guntiakhali Khal or As- asuni Khal. | Cut No. 1 | Kundra Gang | 4 | Ditto. |
| 5 | Culputton River | From its junction with Kundra Gang at Asasuni. | Its junction with Meri- chup. | 1 | Ditto. |
| 6 | Morichap River | Its junction with Budh- hata Gang and Cul- puttoa River. | Its junction with Koba- duk River. | 3 | Ditto. |
| 7 | Kobaduk River | Its junction with Mori- chap River. | Its junction with Cut No. 2. | 2 | Ditto. |
| 8 | Cut No. 2 | Its junction with Koba- duk River. | Its junction with Aga Sibsa. | 3 | Ditto. |
| 9 | Aga Sibsa | Its junction with Cut No. 2. | To Soladana | 11 | Ditto, |
| . 10 | Deluti Gang | Its junction with Sibsa opposite Soladana. | Its junction with Bhudder River, | 5 | Ditto. |
| 11 | Bhudder River | Its junction with Deluti Gang. | Its junction with 6 Sur- khali Kata Khal (now called Bhudder) up to Teligati Khal. | 6 | Ditto. |
| 12 | Teligati Khal | Junction with Bhudder River. | Junction with Jhabjha- bia River. | 1 | Ditto. |
| 13 | Milemara Gang | Junction with Jhabjha- bia River. | Junction with Baita- ghata Khal. | 1 | Ditto. |
| 14 | Baitaghata Khal | Junction with Milemara Gang. | Junction with Kazibacha River. | 5 | Ditto, |
| 15 | Kazibacha River | Junction with Rupsa River at Narankhali. | Junction with Baita- ghata Khal. | 4 | Ditte. |
| 16 | Rupsa River | Junction with Kazibacha River at Narankhali. | Junction with Bhairab River at Khulna. | | Ditto. |
| 17 | Bhairab River (inc uding Alaipur Kha and Bemarta Khal). | Khulna | Alaipur and then via Jatrapur to Kochua and junction with Baleswar River. | €7 | Ditto. |
| 18 | Baloswar River | From Kochua | Pirojpur (Barisal). | • 7 | Ditto. |

Lit is however beyond the resources of a Government to keep pace with nature in a delta. Owing to the silting of the channels where delta forming is in progress, steamers no longer ply through all these channels. In 1918 the normal steamer route from Calcutta was (within the limits of Khulna district) as follows:—

Raymangal, Malancha,
Soya, Araibanki,
Beary Khal, Arpangasia,
Atharobanki, Shakbaria,
Jaboona, Bojboja,
Farinchi Khal, Satbari,

Aura Sipsa,

(as alternative to the last three rivers Shakbaria, Koyra, Aura Sipsa),

Sipsa, Chunkuri Khal,

Sutarkhali, Pasur,

Bhadra, Kajibacha,

Rupsa and hence to Khulna.

From Khulna onwards the large steamers bound for Eastern Bengal and Assam pass by the Bhairab and Atharobanki to the Madhumati on the eastern boundary of the district. There is alternative steamer route known as the Outer steamer route: it is a short cut Sunderbans through southern the between the junction of the Beary Khal and the Raymangal River as far as the mouth of the Chunkuri Khal where rejoins the main steamer route. used in the cold weather mainly when the tides are favourable. As it passes through the depths of the Sunderbans reserved forest not much is known about it; the list of rivers is officially given as Raymangal (proceeding south)-

Jaboona Kagga Doaneah,
Seebpore Khal, Kagga,
Malancha, Morzal,
Numsamudar, Pussur.

These names differ considerably from the names adopted in the topographical survey of the Sunderbans upon which the existing maps are based. According to that survey, the names of the rivers would read as follows:—

Raimangal River, Dobanki Khal. Salokati Khal. Kaga River. Malancha River. Hansraj River. Barapanga River. Hilsamari Khal. Pasur River.

These routes have been given in detail as they are not mere departmental or commercial matters, but are true indices to the process of delta formation in the district. In the west of the district where the rivers no longer carry Ganges silt, the routes notified in 1895 are practically identical with those used in 1918. From the Sipsa castward the influence of the Ganges water, brought through the Gorai and Madhumati, is felt; hence the channels shoal and change. two boats routes notified, the inner boat route is the normal route for merchandise boats through the district; the outer boat route represents an alternative course for large boats which would find difficulty in passing through the smaller channels of the inner route. River action has, of course, had less effect in such Of those notified, only, the Gutiakhali or Asasuni khal and the Bhairab river have undergone material change; both of them are too shallow for any navigation except at high tide. Chandkhali khal has deteriorated during the last few years; both at its western end, and near its junction with the Menus river it has silted rapidly, and it seems safe to prophecy that it will soon be impassable for large merchandise boats. Fortunately there is an alternative route which leads from the Kobadak less than a mile north of Chandkhali, whence boats can pass either into the Sipsa near Paikgachha via Cut No. 2 or back to the Menus river.

26. Steamer services.—Apart from these routes there are the following lines of steamers plying from Khulna:—

Khulna—Narayanganj via Barisal.

Khulna-Ellachar (Satkhira).

Khulna-Narail.

Khulna-Madaripur.

Khulna-Magura.

Khulna—Boalmari.

The steamer service from Calcutta to Cachar in Assam also touches at Khulna,

and there is also steamer connection between Jhikergachha in Jessore and Kapilmuni on the Kobadak, and between Chingrakhali (Hasanabad) in the 24-Parganas district and Kaliganj. In the east of the district a steamer service plies from Bagerhat to Hularhat in Bakarganj district, touching at Phulhatta, Morrellganj, Fashiatollah, and Rayanda before it finally leaves the district. It is unnecessary to describe the routes in detail, but all steamer stations existing at present have been shown on the 4" district map attached to this report. This map in conjunction with current steamer service time tables will give adequate information on the local steamer communications in the district.

27. Railways.—A section of the Eastern Bengal Railway, leaving the main line at Dum Dum Junction, connects Khulna with Calcutta. This line passes through Bongaon and Jessore and onters the north of district about 13 miles from Khulna. Within the district there are stations at Bejerdanga, Phultala and Daulatpur. By changing at Bongaon it is possible to join the main line at Ranaghat, thus saving the detour by Dum Dum or Sealdah, but the timings of the trains are at present inconvenient and entail a long wait at Bongaon.

A light railway, connected with Khulna station by a steamer ferry service runs from Rupsa East to Bagerhat. It practically follows the line of the Bhairab and thus taps the most prosperous and advanced area in the district.

28. Roads—The line of the Bhairab, alluded to above, is marked by the oldest road in the district. In the middle of the 15th century, before the days when Pratapaditya ruled in the Sunderbans, one Khan Jehan Ali described by legend as a soldier saint who obtained a jaighir of Sunderbans land from the King of Gour, entered the district from the north and following the line of the Bhairab. which he crossed at Sen's Bazar, marched with his army to Bagerhat where he founded a great mosque known as the Satgumbaz and built his own tomb which remains with its inscription intact to this day. Tradition relates that he came with a body of 60,000 diggers and built a great road as he marched. Traces of this road are still visible along the line of the Bhairab, and though it has been superseded by the railway from Rupsa East to Bagerhat which was built for a considerable distance directly along its alignment, from Bagerhat to Satgumbaz mosque, a distance of about three miles, it exists as a well used road. Apart from this ancient route, the roads in the district are few and of only local importance: in a delta area men travel by boats, and do not spend time and money on roads and bridges.

There is a partially metalled road running from Khulna to Jessore and thence to Calcutta; other metalled roads which means of communication as throughout the year are the road from Satkhira to Ellar Char Steamer Station, and from Satkhira to Bhomra; this latter road is the main means of communication between Satkhira and Basirhat in the 24-Parganas whence there is railway communication with Calcutta. Apart from the above roads practically every other road in the district can be called at the best a fair weather means of communication, and except in the extreme north and north-west of the district, are liable at any time to breaches from flood water or from the breaking of bridges.

Town and markets.—There are three municipalities within the district, namely, Khuina, Satkhira, and Debhata. Khulna is a flourishing though not very large municipality, owing its prosperity to a great extent to the situation of the town as the focus of the water routes to the jute and grain producing districts of Eastern Bengal. Satkhira is a smaller municipality owing its existence very. largely to the efforts and influence of the Roy Choudhury family of Satkhira: the provision of water-works in this unhealthy area has been most beneficial, and it is not too much to say that the upkeep of these water-works is the main raison detre of the municipality. Jungle and paddy fields occupy much of its area, and leopards are not infrequently Debhata found within its limits. the distinction of being almost the smallest municipality in Bengal. Its population in 1921 was only 5,570 as compared with 5,514 in 1881; it is difficult to find a. raison dêtre for the existence and continuance of so small a municipality. Unlike Khulna and Satkhira the third subdivisional headquarters Bagerhat is not a municipality; its local affairs are, managed by a Union Committee, one of

the three constituted in the district under the Local Self-Government Act of 1885. The other two were constituted in two of the most advanced areas of the district, Morrellganj and Raruli. the new Village Self-Government Act of 1919 numerous Union Boards have been the constituted throughout district. Like Co-operative Banks, they depend for their efficiency upon the existence of an individual member of unusual force of character: if the drains and paths of a village appear to be in good order, it fairly safe to infer that the local Cooperative Bank is working well. would be possible to divide the important villages and hats of Khulna district into The first class would intwo classes. clude the older centres of culture or business situated on the banks of the old rivers, such as the Bhairab, Bhadra, and Kobadak: these represent the earliest outposts of settlers and merchants who penetrated the swampy district along the courses of the rivers where their boats could ply and where the high banks were suitable for erection of dwellings.

Examples of these are Senhati, Fakirhat, Chuknagar, Dumuria, Rarufi, Tala, They are usually characterised by a resident population of educated men, and may be considered the centres of progress in the district. The second class are the great hâts which have sprung up recently at the confluences of rivers as water-borne trade has increased. are purely trade centres, far more so than the villages of the former class, but their importance begins and ends with their trade. Their permanent residents are confined to a few shopkeepers and perhaps the agents of the local zamindars, but on the hat days they become the scenes of busiest activity, where thousands of rupees worth of goods change hands in a few hours. Their size and importance is solely due to their situation. much easier for traders and villagers to bring goods by river than by road, and for this reason a hat situated at the confluence of two or more rivers invariably does greater business than one situated inland. Examples of this class of hat are Noabanki hat at the confluence of the Noabanki khal and the Kholpetua river, Chalna at the confluence of the Chunkuri khal and the Pasur river, and Bardal on the Kobadak river between the place where the Chandkhali khal and the Marichap river leave it.

Chapter II.—The Employment of the Land.

STATISTICS OF THE EMPLOYMENT OF THE LAND.

30. Water.—Out of a total area of 2,429 square miles for which statistics have been prepared during the present operations, 203 square miles or about 8 per cent., have been returned as water. This considerable figure is to be expected in a deltaic district; perhaps the most useful comment that can be made is to point out that except for a few small jalkars in khas mahals, Government is not deriving any revenue from the great majority of this area. The question of realising jalkar revenue from the Khulna rivers, particularly those situated within the reserved forest, was referred to the Board of Revenue of few years ago, but the proposals were negatived; the question might well be re-opened in the light of the detailed information collectled during the present operations. distribution of water in the various police-stations is shown in the detailed milan khasra statement given in Appen-Naturally the water area increases from north to south; the bils in the north of the district are sufficiently shallow to be, to a great extent, divided holdings where in favourable years bil paddy can be grown. Hence a large portion of these areas have been classified as under crops or as culturable fallow and not as water.

31. Culturable and unculturable land.—The land area of the district is classified as follows: for purposes of comparison similar figures for other districts of Bengal have been tabulated:—

| | | Percentage of | | | | | | | | | |
|-------------------------------------|----------|--|---|---|---|--|--|--|--|--|--|
| Districts. | | Area cultivated to total land area. | Area culturable but not cultivated to total land area. | Area uncultur- able to - total land area, | Area cultivated to total culturable. | | | | | | |
| Khuina | | 78 | 14 | 8 | 85 | | | | | | |
| Midnapore (evclu- ing Sadar West | d-). | 7H | 13 | 9 | 85 | | | | | | |
| Dacca | | 77 | 6 | 17 | 92 | | | | | | |
| Bakarganj | | 70 | 12 | 18 | 86 | | | | | | |
| Jennore c | •• | 78 | 12 | 10 | 87 | | | | | | |

There is a curiously close coincidence between the figures for this district and for the eastern area of Midnapore; the percentage of cultivated area is identical, and there is only one unit difference between the percentages of culturable but not cultivated land and unculturable land. In Dacca and Bakarganj the percentage of unculturable area is consider-

ably greater; probably in both cases a considerable area of forest was included in the statistics but in Khulna there is practically no land of this class outside the reserved forest.

The following statement shows the distribution of cultivated, culturable and unculturable area among the various police-stations; excluding water:—

| | Thana. | | | Area cultivated. | | Area culturable but not cultivated, | | Area unculturable. | | Percent. age of cultivat- ed to total | Total of areas in square |
|-------------|-------------------------------------|--|-----|---------------------|--------------|--|--------------|-----------------------|--------------|---------------------------------------|--------------------------------|
| | | | | 8q. m. | Per cent. | Sq. m. | Per cent. | 8q. m. | Per cent. | cultur- able. | miles. |
| Kalaroa | inneren i 2 referengen, mangagillar | AND IN STREET, AND ADDRESS OF THE PARTY OF T | | 73 | 84 | 6 | 7 | 8 | 9 | 92 | 87 |
| Satkhira | • • | | | 107 | 79 | 17 | 13 | 11 | 8 | 86 | 135 |
| Tala | | | | 80 | 64 | 31 | 25 | 14 | 11 | 72 | 125 |
| Debhata | • • | | | 31 | 48 | 23 | 36 | 10 | 16 | 57 | 64 |
| Kaliganj | | | | 79 | 65 | ; 24 | 20 | 19 | 15 | 76 | 122 |
| Syamnagar | | | | 120 | 74 | 23 | 14 | 20 | 12 | . 84 | 163 |
| Asasum | | | | 61 | 44 | 67 | 49 | 10 | 7 | 47 | 138 |
| Total of S | satkhiira su | bdivision | | 551 | 66 | 191 | 23 | 92 | 11 | 74 | 834 |
| Phultala | • • | | | 21 | 81 | 3 | 11 | 2 | 8 | 87 | 26 |
| Daulatpur | • • | •• | | 23 | 72 | 5 | 16 | 4 : | 12 | 82 | 32 |
| Terakhada | | | | 64 | 88 | 6 | . 8 | 3 | 4 | 92 | 77 |
| Dumuria | • • | | | 121 | 83 | 16 | 11 | 9 | ti | •• | 146 |
| Baitaghata | • • | • • | | 75 | 89 | 5. | 6 | 4 . | 5 | 94 | 84 |
| Paikgachha | | | | 183 | 88 | 15 | 7 | 10 i | 5 | 92 | 208 |
| Dacope | • • | | ٠٠, | 91 | 95 | 2 | 2 | 3 | 3 | 95 | 96 |
| Khulna | | | | 25 | 71 | 6 | 17 | 4 | 12 | 80 | 35 |
| Total of | Sadar subc | livision | •• | 607 | 86 | 58 | 8 | 39 | ti | 91 | 704 |
| Sarankhola | | • • | | 46 | 90 | 2 | 4 | 3 | 6 | 96 | 51 |
| Mollahat | | | | 57 | 84 | s | 12 | 3 | 4 | 88 | 68 |
| Kachua | | | | 51 | 85 | 4 | 7 | 5 | 8 | 93 | 60 |
| Fakirhat | | •• | | 42 | 73 | 10 | 17 | 6 | 10 | 81 | 58 |
| Rampai | | • • | | 160 | 90 | 10 | 6 | 7 | 4 | 94 | 177 |
| Morrellgani | | | | 139 | 90 | 10 | 6 | 7 | 4 | 93 | 156 |
| Bagerhat | | | | 89 | 75 | 20 | 17 | 9 | 8 | 81 | 118 |
| Total of | Bagerhat s | ubdivision | | 584 | 85 | 64 | 9 | 40 | 6 | 90 | 688 |
| District T | 'otal | | | 1,742 | 78 | 313 | 14 | 171 | s | 85 | 2,226 |

The salient feature of this statement is the low percentage of cultivated area in Satkhira subdivision as compared with Sadar and Bagerhat. That this is not only due to the great amount of unculturable area there, is clear from the figures showing the percentage of cultivated to total culturable area, which are 74 percent, in the case of Satkhira, and 91 and and 90 respectively in the case of Sadar

The deficiency lies and Bagerhat. Marainly in Debhata and Asasuni and can be definitely attributed to the influence of saline water which runs up the channels of the rivers whose head waters are dead, and concentrates in the dreary waste of the Boyra bil. Other areas where the percentage of cultivated to culturable area is low are the semi-urban police-stations of Daulatpur and Khulna, and Fakirhat where the high land on the banks of the Bhairab bears little or no crops. In the southern reclaimed area, e.g., Sarankhola and Rampal, the percentage of cultivated to culturable area is very high.

32. Current fallow.—The areas shown in the milan khasra statement (ride Appendix II) under the head of current fallow tell much the same story. Nearly 79,000 acres are shown under this head for Satkhira subdivision against 10,000 for Sadar and 9,000 for Bagerhat: the cause is undoubtedly saline infiltration. It is worth noting that the figures for Satkhira subdivision were collected a year earlier than those for Sadar, and two vear earlier than those for Bagerhat, and therefore represent a state of affairs when the district had not yet recovered from the effects of the evelone of 1919 which broke the embankments and from the scarcity which ensued in 1921. Nevertheless the phenomenon of the decline in cultivation in Satkhira cannot be wholly regarded as temporary; it is the beginning of the economic results of the death of the western rivers.

33. Twice cropped areas.—The twice cropped area in the district is very small, being only 38,849 acres or 3 per cent. of the net cropped area. The following table shows the area in acres of twice cropped land in each police-station: the areas are too small to be conveniently represented in square miles:—

| Thana. | | Area of Dofasli land |
|------------|--------|--|
| Kalaroa | • • • | $6.008 \cdot 57$ |
| Satkhira | • • • | 1,393.55 |
| Tala | ••• | 10,057.58 |
| Debhata | | 274 · 9 8 |
| Kaliganj | • • • | 570:34 |
| Shyamnagar | , (| 17.55 |
| Asasuni | | · 76·23 |
| | ~. | # ·· 1 · 4 · · · · · · · · · · · · · · · |

| • | fotal of Satkhira | suh- | |
|---|-------------------|------|--------------------|
| | division | | 18. 39 8·80 |

| Thana. | | Area of Dofasli land. |
|---------------------------------|------|--------------------------|
| Phultala | | 215.01 |
| Daulatpur | ••• | 478-19 |
| Terakhada | ••• | 8,072.66 |
| Dumuria | | 1,177.53 |
| Baitaghata | | 85.85 |
| Paikgachha | | 911:34 |
| Dacope | | 2.31 |
| Kbulna | | 966-21 |
| Total of Sadar division | sub- | 11.909-10 |
| Mollahat | ••• | 5,411-84 |
| Sarankhola | | 183 |
| Kachua | | 1,598-18 |
| Fakirhat | | 319-21 |
| Rampal | • | 26 61 |
| Morrellganj | | 69-83 |
| Bagerhat | ••• | 1,114-89 |
| Total of Bagerhat : division | | 8,541:39 |
| District Total | | 38,849-29 |

The only areas which have an appreciable quantity of twice cropped land are the northern police-stations of Kalaroa, Tala, Satkhira, Terakhada and Mollahat. Throughout the rest of the district, the aman paddy is practically the only crop grown.

DISTRIBUTION OF CROPS.

34. Distribution of paddy land.—The staple crop of the district is paddy. Out of an area of 11,15,048 acres under crops, no less than 1,026,146 acres or 92 per cent. are under paddy cultivation. Of this area the great majority amounting to 905,341 acres or 81 per cent., is under

winter rice and of the balance 80,315 or 7 per cent. are under aus paddy and 40,490 or 4 per cent, under boro paddy.

The following statement shows the distribution of these crops by police-stations:—

| Net crop Name of thana. Acre. | | Net crops | ped area. | Arc | ea under e | aux. | Area under aman. | | | Area under boro. | | | |
|---------------------------------|-------|-----------|-----------|---------|------------|---|------------------|-----------|---|------------------|------------|---|--|
| | | Acre. | Dec. | Acre. | Dec. | Percentage of net cropped area if exceeding 1 per cent. | • Aere. • | Dec. | Percentage of net cropped area if exceeding 1 per cent. | Acre | • Dec. | Percentage of net cropped area if exceeding 1 per cent. | |
| 1 | | 2 | 3 | | 5 | - 6 | | | 9 | 10 | - 11 | 12 | |
| | | | | 05 70.0 | | | | | | | | | |
| Kalaros | • • • | 46,137 | થમ | 25 722 | 91 | 35 1 | 16,544 | 94 | 36 | | | | |
| atkhira | •• | 64.74H | 42 | 14 069 | 78 | 21 | 48,325 | *2 | 72 | ' | ×A | | |
| lala | • • • | 50,987 | \$90; i | 16,780 | 42 | 31 | 21,927 | 17 | | 1 | | | |
| Debhata | | 19,645 | 36 | 1,453 | 37 | 7 | 16,877 | 17 | <u> </u> | | | . • | |
| Kaliganj | | i | 56 | 2 193 | 12 | 11 | 41,653 | 47 | ** | • • • • | | | |
| Syammagar | | 76,953 | 61 | 155 | 46 | i | 75,391 | 44 | ' | | | | |
| Assuni | | 34,434 | 32 | 1,442 | 55 | 4 | 34,128 | (#1 | · | . | | | |
| Phultala | | 13,032 | 1 17 | 423 | 22 | | 10,077 | | 77 | • | 69 | , | |
| Daulatpur | | 14,551 | ** | 607 | 41 | | 11.677 | | | 1 | 37 | | |
| l'eraklında | ' | 43,723 | 31 | 1.459 | 95 | | 31,346 | 59 | 72 | 13,365 | *3 | 36 | |
| Dumwrin | | 77,487 | 19 | 3,539 | 52 | 4 | 100,740 | iry | NG 1 | 12 | *3 | • • • | |
| Baitaghata | | 45,170 | : : | 581 | \ 2 | 1 | 45,518 | · ~4 | 95 ! | 40 | 45 | ٠ | |
| PaiRgachha | | 117.223 | 61 | 1,567 | 11 | | 110,062 | <u>52</u> | 94 : | | | | |
| Dancopi | | 55,445 | 21 | 7 | 47 | | 57,923 | 1912 | 99 | | | ٠. | |
| Khulna | | 16 118 | 76 | 603 | K 9 | ! . | 32,454 | 23 | 7.7 | 177 | 22 | | |
| Mollahat | | 1 06,675 | 11 | 3,559 | JA | 9 | 19,356 | 62 | Ass (| 11,437 | 24 | 31 | |
| Sarankimia | . ; | 29,333 | 1- | 621 | 1441 | . 2 | 27,8,60 | 52 | 95 (| | | | |
| Kachua | | 32,628 | 62 | 147 | 17 | | 26,666 | ** | -1 | 1,500 | 41 | 5 | |
| Fakirhnt | ٠. | 27,320 | 71 | 1.519 | 197 | 6 | 17,556 | 559 | r., ' | 1.516 | ≈ 9 | ā | |
| Rampal | . ! | 102,312 | os i | 311 | 15 | | 96,363 | 05 | 94 | | 44 | | |
| Morreligan | | 55,914 | ; 90 ; | 1.221 | 1~ | | 81,050 | 21 | 91 | | | | |
| Bagerliat | | 56,663 | -4 | 1,269 | 7.5 | 2 | 35,135 | 4:4 | 62 | 12,136 | 37 | 21 | |

The chief aus growing areas are the high lands in the north-west of the district mainly falling in police-stations Kalaroa, Tala and Satkhira. The reason for this is, of course, the fact that aus paddy is grown during the rains on comparatively high land; such land is mainly found in the north-west of the district where delta building has gone on longest. Boro paddy is grown in bils and swamps; hence it is mainly cultivated in the great sweet water bil tracts of Terakhada, Mollahat and Bagerhat police-stations. is particularly intolerant of salt water. hence the saline bil area of Boyra bil and the bils of recent Sunderban reclamation produce little or none of it. Included in the figures of boro paddy is the raida variety of bil paddy which is sown with boro paddy, but not reaped till the beginning of the cold weather. Aman paddy grows throughout the district except on the high lands which are only moist during the rains and in the bil tracts where the water is too deep for its cultivation. It flourishes best in the silt laden lands of the Sunderban tracts provided that they are sufficiently well embanked to keep out saline water which damages full grown paddy and is fatal to seedlings. The older lands in the north of the district produce a crop of winter paddy inferior to a good Sunderban crop, but generally satisfactory provided the land is moist till harvest time.

35. Distribution of Minor crops.— Excepting paddy very little food grain is grown. Wheat, barley, millet, maize and gram hardly exist, but pulses included under the general term kalai are grown as a cold weather crop in the high lands of Kalaroa and Tala and to some extent on the old high banks of the Bhairab and Kobadak rivers. The main varieties of pulse cultivated in this district are matar or field-pea (Pisum Arvense), kesari (Lathyrus Sativus) masuri or lentil (Lens (Phaseolus kalai mash Esculenta), Mungo) and mung (Phaseolus Radiatus) of two varieties, light known as sonamung and dark known as krishna-mung. The same areas produce a winter erop of mustard and rape which is used for manufacture of oil; this crop however is grown less in Kalaroa and more in Rampal than the winter crop of kalai. only other oil seed grown in the district is that of til, also known as sesamum or gingelly; this is almost confined to the bil areas of Terakhada and Mollahat where it is sown on the edge of the bils after the water has receded and the winter paddy The chief varieties of has been reaped. condiments and spices grown are, chillies. turmeric and dhunia or coriander. They are mainly grown on the high dry lands in north of Tala and Dumuria. amount of sugarcane grown in the district is negligible from a commercial point of view, and the same applies to cotton, inspite of repeated attempts to grow it, made particularly when the vogue for country-made products ran high in 1921 and 1922. Experiments in growing various kinds of cotton were made in the local agricultural demonstration plot, in the Clay Municipal Garden, and elsewhere in the district, but I think it is now generally admitted even by the most zealous advocate of countrymade products, that the pronouncement of Mr. Evans, the late Director of Agriculture, was correct when he stated that there was little prospect of producing in this district a cotton having sufficiently long staple for practical commercial purposes.

Jute is little more successful than cotton; ordinary Khulna jute is usually classed in Calcutta as "rejections". The Agricultural department turned their attention to the improvement of this cropalso, and experiments in growing a variety of Capsularis named Kakya Bombai and of Olitorius named Chinsura Green produced satisfactory results in the experimental garden at Khulna. This plot of ground is however far more naturally suited to jute growing than the majority of the land in the district, and though efforts were made to introduce the improved seed, the results have been sporadic and partially satisfactory at the best. I have however been told recently by the cultivators in the large Khas

Mahal Char Baniari that they have succeeded in producing a very profitable crop from the seeds of the Kakya Bombai strain provided by the Agricultural department: the Olitorius strain is reported to be less successful. Taking the district as a whole, only 6,480 acres are under jute, of which the majority is grown in the high land tracts of Mollahat, Satkhira, and Tala. The figure of 513 acres returned for Terakhada is surprisingly low as jute appears to flourish there. The figures for Satkhira and Tala were compiled in the cold weather of 1921-22 and those for Mollahat in 1923-24; for Terakhada alone of the jute producing areas, the figures were compiled in 1922-23, and I am inclined to think that an unfavourable season was responsible for the unexpectedly low return.

Tobacco is grown as a garden crop for home consumption and for sale in small quantities in local hâts. It flourishes only on the raised ground near homesteads, and I do not think that there is a possibility of growing it in sufficient quantities for commercial use.

Betel growing areas.—Betel is another garden crop which requires high land for its successful cultivation, and it is only grown, as a rule, where the population of Baruis or hereditary betel growers is fairly considerable. Out of a total of 18,771 members of this caste recorded in the Census of 1921 as inhabiting this district, 10,119 came from the two police-stations of Daulatpur and Bagerhat. Hence it is not surprising to find that out of a total acreage under betel cultivation of 1,335 for the district, 409 acres are in Daulatpur and 202 in Bager-I do not think it is a case of the distribution of caste depending on the suitability of the area for production of their peculiar crop; the crop seems to depend upon the existence of the caste in the locality. A betel garden is an artificial product and can be made a profitable source of income, given skilled labour, on any high ground where there is a fairly rich and non-saline loam. area of 1,335 acres for the district is slightly higher than the Jessore acreage of 1,208 acres given in Mr. Momen's recent Settlement Report: needless to say there is far more high land suitable for betel gardens in Jessore than in Khulna, and the Khulna figures point to intensive cultivation in a few special The following localities. figures

represent the areas under betel cultivation as found in recent Settlement operations:—

| | | | |
|------------|-------------------------------------|--|---------------------------------|
| District. | Net eropped area in acres. | Net area under Pan cultiva- tion in acres. | Percentage of net eropped area. |
| Dacca | 1,304,861 | 2,922 | · 223 |
| Mymensingh | 2,660,816 | 1,503 | -056 |
| Faridpur | 1,127,458 | 5,889 | .522 |
| Bakarganj | 1,553,376 | 1,332 | -085 |
| Tippera | 1,302,460 | 551 | -042 |
| Noakhali | 719,957 | 692 | -096 |
| Rajshahi | 1,238,514 | 965 | .077 |
| Jessore | 1,410,467 | 1,208 | -085 |
| Khulna` | 1,115,048 | 1,335 | -119 |
| | 1 | • | |

of economic **Palms** Supari or areca nut (Areca Catechu) is grown on almost all homestead land, but flourishes best in the older villages sites. It is rarely grown on land entirely devoted to its cultivation; one reason for this is said to be the prevalence of cyclones and cyclonic winds in the district which are especially fatal to this tall slender The last cyclone (i.e., that of 1919) did great damage to the trees in this district from which they have not yet recovered. According to the instruction of the Director of Statistics areas devoted to the cultivation of this tree are shown under the general heading "Other It is therefore drugs and narcotics". impossible to give the exact area devoted to this tree alone, but it may be presumed that the majority of the 5,344 acres shown under the above heading represents supari cultivation.

The date palm (Phoenix Sylvestris) is cultivated in the north of the district for the purpose of sugar manufacture. Like the supari tree, this palm also grows more frequently in small numbers round homesteads or cultivated lands than in compact groves or gardens solely devoted to its cultivation. In our statistics table it is classed, under the Director of Statistics rules, as "Sugar other than sugarcane", and it

may be safely said that the whole area of 5,661 acres recorded under that heading refers to land on which this tree is grown. As is to be expected, the northern police-stations of Satkhira, Kalaroa and Dumuria show the largest acreage.

Besides the supari and the date palms, two other palm trees, the cocoanut (Cocos Nucifera) and the palmyra palm (Borassus Flabelliformis) grow commonly in the district. No separate statistics have been collected in respect of these trees; the latter is of minor economic importance, and the former, though valuable for a number of purposes, is not grown on a commercial scale for oil, and hence, under orders of Government issued in 1922, no separate acreage is recorded in respect of it.

Fruits and vegetables.—Fruits and vegetables cover an area of 12,677 and 21,620 acres respectively. The mango is probably the commonest fruit tree in the district, but the fruit is of poor quality, having a decided stringy consistency and a flavour reminiscent of The litchi (Nephe.ium turpentine. Litchi) grows well wherever it is planted and bears a good crop of fruit for a short time in May. The plantain (Musa Sapientum) is found in every homestead, even in the reclaimed Sunderban area where fruit is generally scarce. however of inferior quality; the commonest variety is large and insipid and contains a number of seeds. Jack fruit (Artocarpus Integrifolia) grows wherever the mango is found; its fruit is relished here as elsewhere in Bengal. Pineapples (Ananas Sativa) well in the extreme north of the district, particularly in Phultala police-station: they do not grow in the salt marshy Among other fruit trees which are found sporadically and whose fruit is generally utilized for human consumption are bel tree (Aegle Marmelos), papaya (Carica Arborea), pomelo (Citrus Decumana), kamranga (Averrhoa Carambola) and guava (Psidium Guajava). The fruit of the ber tree (Zizyphus Jujuba) is commonly used for making a condiment called "acchar". Melons are grown where the soil is suitable, particularly on the sandy chars near the Madhumati.

Potatoes are grown sporadically throughout the district, but the acreage, under this crop is only 509 acres. This

might well be increased for this tuber appears to grow well on all high land. Its introduction into the district is comparatively recent, and it has not yet overcome the conservative tendencies of the The area on which onions are grown is even less; the acreage under this vegetable being only 371 acres, the majority of which is in the high lands of Kalaroa, Satkhira, Tala and Dumu-Other vegetables occupy an acreage of 21,620 acres, of which nearly a quarter falls in Bagerhat police-station alone: other areas where vegetables grow well are Morrellganj. Fakirhat, Kachua, Baitghata, Satkhira and Kalaroa.

The main vegetables grown in the district are brinjals (Solanum), varieties of kacchu [of which the arum (Colocasia Antiquorum), the ol kacchu (Tryphonium Trilobatum) and the man kacchu (Alocasia Indica) are commonest |, beans and gourds of several species including the following:—

Potol (Trichosanthes Dioica).

Kaddu (Cucurbita Pepo).

Ucche, Karela and Kakrol (varieties of Momordica).

Lau (Lagenaria Vulgaris).

Jhinga (Luffa Acutangula).

Mitha Kumra (Cucurbita Maxima).

Chal Kumra (Benincasa Cerifera).

Sasa or Khira (Cucumis Sativus).

An amaranth (Amaranthus Gangeticus), known as danta, is grown for the sake of its edible stem and in the north of the district the sweet potato (Ipomaea Batatas) is cultivated. The horse radish tree or sagina (Moringa Pterospermum) merits special mention both for the fact that its pods are largely cooked and eaten as vegetables and also for the beauty of its masses of white flowers which, with the dazzling red of the simul tree, are harbingers of spring.

39. Inedible products.—The main inedible products of the district are timber, bamboos, thatching grass and golpatta. The main source of timber and golpatta in the district is the reserved forest; some account of these products is given elsewhere. Outside the reserved forest use is made of the following trees for local industry, e.g., for fashioning ploughs, house rafters and rough furniture—babul

(Acacia Arabica), jack fruit (Artocarpas Integrifolia), simul (Bombax Malabaricum), mango (Spondias Mangifera) and palmyra palm (Borassus Flabelliformis): there is however no trade in these timbers on a large commercial scale. Bamboos are common in the drier and non-saline areas, where every household has its clump: in the southern areas they are rare or absent. Thatching grass grows well on high land in the north of the district; it is intolerant of salt and swamp and hence, like the bamboo, is absent from the newer reclaimed area. The main reeds used for commercial purposes are the hogla (Typha) and nal (Phragmites Karka). The former is the bull-rush and the latter is a long tough aquatic grass which grows in swamps: they are both used for making matting. or mat walls of houses: nal is also used for making baskets. In the Boyra bil and other large bils a grass or sedge with trigonous leaf grows commonly; it is known as "mele" grass and is valuable for making durable mats.

AGRICULTURE.

- 40. **Cultivation of paddy.**—The staple crop of the district is paddy; its cultivation falls into four distinct types as follows:—
 - (A) In the high lands of the north of the district (a) aman paddy and (b) aus paddy.
 - (B) In the bil areas of the north and central parts.
 - (C) In the reclaimed Sunderban lands.
- 41. Aman and aus paddy.—Cultivation of type A whether of aman or aus paddy differs in no respect from the cultivation of paddy in normal Bengal districts, and it seems unnecessary to describe in detail the process which may be found more or less elaborated in every Settlement report or gazetteer. The local varieties of paddy in this district are, as elsewhere, extremely numerous, and a list of all available kinds would be as unending as a modern florist's catalogue of chrysanthemums or tea-roscs. At a recent agricultural exhibition in Khulna, the following collection which may be taken as typical was sent by the

Manager of the Laha Estate at Morrell-ganj:---

Haldi Gottial. Magai Laksmibilas. Talmugur. Marichbonta. Lona Kharchi. Begunbichi. Ghunshi. Kerengel. Gandha Kashiry. Akandi. Bansphul. Bahari. Dariakuchee. Girbee. Khirarjali. Bainsmugur, Khirkon. Kalamanik. Matichal. Baleswar Bamankhir. Thormosra. Char Baleswar. Magurpankhi. Dudhluchi. Huglee. Pankhira. Lalgotal. Lakma. Nilkamal. Chor Birindi. Baiyarbagh. Laksmibilash. Machranga. Kalagota. Dhalagota.

Bil paddy.—In the great bil areas of the centre and north of the district wherever the water is not too salt, there is a special form of paddy cultivation known as the cultivation of boro and raida paddy. As the bils dry up in January seeds are sown in seed beds prepared in the mud left by the retreating water. At the same time fields are prepared by heaping together the vegetable debris of the bil into ridges enclosing tracts of mud and shallow water; into these fields the seedlings are transplanted when about twelve inches high. ploughing is done: the ground is simply prepared by freeing it of the water weeds which are used to build up the ridges. The boro seedlings ripen in May and are then cut, but the raida goes on growing, rising with the rising water till it is ready for harvest in November or December. The proportion of seed sown is only of raida to a of boro, but the outturn of erop is practically equal. The two combined crops produce not less than 30 maunds of paddy to the acre in a favourable season.

North of Bagerhat mainly in the Mollahat bil area a type of paddy known as "kurmani" is grown. When the deep water of the bils dries up in March and April, the seeds and marsh vegetation are burnt and the soil is worked with a spade. The paddy seed is then sown broadcast and is ready for harvest in

September or October. The produce of an acre of land in a favourable season is from 15 to 20 maunds of paddy.

Reclamation of Sunderbans paddy land.—Cultivation in reclaimed Sunderbans areas begins with reclamation; reclamation consists transforming into fertile land a muddy saline tract, interspersed with channels, and darkened by a growth of trees, more or less valuable in themselves, but precluding the growth of all other vegetation save a few species of rank under shrubs. At present owing to the policy of conserving the forest produce by reservation of the forest under the Forest department, no land is available for reclamation in this district nor has any considerable reclamation been undertaken since the deforesting of Lots 216, 224, 225 and 240 about 35 years ago. As however so large an area of the district consists of reclaimed land and this reclamation has been so important a factor in the agriculture of the district. I think it needs little apology for inserting verbatim the accompanying vivid account of the process by Ram Sankar Sen who saw it with his own eyes at a time (1873) when it was in full swing.

44. Rám Sanker Sen's description.—As soon as a Sunderban grant is settled with an applicant called talukdar, the land is apportioned by him amongst subordinate tenants called hawaladars, who undertake the clearance.

The talukdar advances money as takavi, which in some abads is repaid without interest in small instalments extending over a number of years. In others, where the grantee has capital and wants to see the clearance progressing rapidly, the amount thus laid out is never taken back. The takavi thus given varies from Rs. 100 to 300 for every 100 bighas of jungle land.

The hawaladars then engage men in gangs, headed over by a dafadar, who is paid at the rate of Rs. 7 or 8 per month. There are two seasons in which jungle clearance is undertaken; the first begins in January and ends in March, extending over two months, the second is a brief one, from 5th November to about the same date in December, the working hours being from 7°A.M. to 5 P.M. After the morning meal (nashta), the explorers, armed with bill-books (das) and axes, sally forth from their boats, come back for the midday meal, after which they go out again and return before dusk.

In each gang of 10 or 15 cutters, there is a faquir, who presides over their safety, for he is supposed to exercise a supernatural influence over tigers and wild beasts—a hallucination of which they are sometimes wofully disabused by the clean taking off of some of their party by tigers. After the trees have been felled, fire is given in March to the branches which have been lopped off, but the trunks remain on the ground until removed in the month of June by bawalis (wood-cutters).

After the land has been thus cleared, a spot is selected and paddy seed is spread on it in that month without any other process than that of scratching the virgin soil by means of a single-toothed scraper (achra) cut out of some twig of wood.

From the 15th July to the end of October, when the soil has been saturated and softened by rain as well as by the tidal water, transplanting from the seedbed goes on by means of a wooden peg (gochia) which is driven into the soil with the left hand, while a handful of the seedlings is stuck into the hole with the right. The transplanting thus done. the explorer leaves his fields and returns home. During his absence, they are watched over by men called shikaris. who are armed with guns, and who employ themselves in driving away wild animals and in killing them if possible. In Agran the cultivator comes once to have a view of his field in order to calculate upon the time when his crop will be fit for the scythe. In Pous (15th December) he returns again with a gang of dawals (grain-cutters) who flock from North Jessore, Nadia, Faridpur, and Pabna, and who cut away the upper half, leaving the stubble standing on the field to service as fuel for fire and as a manuring agency in the ensuing year. These take 1/5th share of the crop after treading out the corn from the sheaves. Fever and storms may prevent the planting of the first year's crop, when the cultivator returns home disappointed.

In the second year the branches which have sprung up at the roots of the stumps still standing on the fields and other jungle which might have grown are cut down and fire is given in March as before. The same process of spreading seeds in a nursery cleared by means of the scraper (achra) is repeated and transplanting by the peg-driving system still continues. This process is carried on for nearly five years, after which the

land having been thoroughly cleared admits of a plough being driven over it, although a harrow is not admissible before the tenth year on account of the roots and stumps which render the soil uneven, and which cannot be got rid of without repeated fires.

The first dhan sown is the ghunshee, a species of short and flat aman. During the various stages of its growth it is subject to constant ravages from wild beasts. The rhinoceros, the wild boar, buffalo, and deer injure the crop at all times from the seed-bed to its ripe state, while the monkey eats up the ears in the embryo. Flights of small birds known as baloe and orra pick out the grain in ear.

If the area cleared which has fallen to the share of a raiyat be too large for him to manage it is sub-let to others, who are either doalis, i.e., those who having a settled home at a distance make a temporary sort of abode in the clearance, or to pattanias, i.e., those who have no residence in the abad, but come to raise the crop for a year. For the first four or five years all these have to pay no rent, as the chief object is to keep the land clear of jungle.

I have omitted to mention that after the first clearance of the dense forest jungle the nal reed begins to spring up, and if neglected threatens to undo all the labor hitherto undergone. This new pest has therefore to be kept down with a firm and resolute hand until it is totally killed by constant and repeated uprootings. Instances are not wanting in which want of care in this respect has marred the labor of years and made clearances revert to jungle again. as regards forest jungle, there is an end of it when once cut down, but the case is quite different with the nal reed, which springs up with quadruple density after the first cutting, a fact which renders the explorer more afraid of the latter than of the former. The expenses of clearing forest jungle are estimated at Rs. 4, and of nal jungle at Rs. 2 per bigha.

The yield during the first seven years is abundant, being 13½ maunds a standard bigha, after which the fields take an average turn.

From the fifth year rent begins to be levied, being two annas at the first, and then rising in a graduated scale to Rs. 1-4 after the 15th year. Some abads levy no rent during the first three years

only. The above rates are for jungle-boori or abadkari raiyats. Tenants-at-will, who have had nothing to do with the clearances, pay at Rs. 1-8 per bigha at the maximum.

As the creeks which intersect the Sunderbans send forth their water to the large rivers, so there are numerous khals communicating with these creeks, which run far into the midst of the abads, the damming up of which is an important process in the reclamation scheme. The expenses are all borne by the talukdar, and the dams are erected in Kartik and Agran (November) in order to prevent the tides running up laden with salt water.

The method of erecting dams is somewhat peculiar, and may be here described. A quantity of nal and other reeds and creepers are heaped up over a bedding of twigs 8 or 9 feet long gathered from the jungle, over which a coating of earth is placed and trodden down. This compact mass is rolled up into a cylinder, when it takes the appearance of the trunk of a tree. When the tide has receded, a number of these cylinders are rolled down into the bed of the khal one over the other until the dam is on a level with the bank. A sluice is, however, erected for the egress of water from inland, for which purpose the trunk of a tal tree is sawn asunder, scooped out. rejoined, and placed below at right angles to the dam. A stopper made of a bundle of hav serves to close up the outer mouth of this conduit when the tide sets in, which is removed at ebb in order to allow the bil water to run out. This process is known as the hateabandi.

In April and May when the brackish water driven down by the rain and floods from the higher soils begins to give place to sweet water, these dams are broken up for the purpose of allowing it to run in.

So long as the cultivator does not require the services of his cattle in the abads, he lives on tongs, which are temporary sheds with a gable roof raised in the midst of the field, and built on platforms made of the nal reed. These temporary watch-towers are generally two-storied, the first floor, on which stands the sojourner's mud hearth, being about a man's height from the ground. In the second or uppermost storey, which is six feet above the first, is his bed-room, beyond the reach of the tiger which prowls beneath. The ascent is by means

of slender pieces of wood fixed horizon, tally to the posts at long distances which serve as steps. The total height of these sheds is about 15 feet from the ground, the thatch being made up of gol leaf.

When the clearance is sufficiently advanced, and the cultivator has need of his plough and yoke, he thinks of settling down in the place. A cowshed is the first indication of this desire, and as the land begins gradually to become raised by the spread of cowdung and the refuse fodder, he surrounds it with a ditch, on the sides of which he plants the bharanda (castor-oil plant), the plantain, and other shrubs of rapid growth. A family house with a kitchen shed now springs up, and in this manner the nucleus of a village is formed, although from the holdings being larger than usual, and from the sparseness of the population, the houses are wider apart.

As years roll on, the raivat covers his tenement with other profitable trees. The areca and cocoa are planted beneath the plantain; the date is first introduced. after which it propagates from the seed, and the tal shoots up of itself from the seeds thrown away by the first sojourners after the sap has been sucked from the The bamboo also finds a place in the third or fourth year, but generally it has had no footing yet, as its growth is not so rapid here. The jute, which is cultivated in very small plots adjoining the homestead, scarcely suffices for domestic use. And thus at the end of the 15th year the Sunderban colony standing on the brink of a broad creek. is a thriving village skirted by the graceful areca and cocoa in all the beauty of luxuriant growth, and a forest of plantains of gigantic size beneath which these young palms delight to flourish.

Embankments and sluices.-After the land has been reclaimed success of cultivation of a Sunderban abad depends upon three factors, firstly the maintenance of the embankments and sluices to prevent ingress of saline water and to ensure proper drainage, secondly an adequate rainfall well distributed till the end of the month of October, and thirdly the absence of severe flood or storm during the cultivating season. The importance of the latter factor lies in the fact that a breach of the embankments, caused by flood or storm, will give ingress to such a rush of water that the growing plants will inevitably be much damaged if the

water be fresh and irretrievably ruined if it be saline. The necessity of well distributed rainfall lies in the fact that however well the embankments and dams be constructed, some percolation of salt water is inevitable. Very common causes of such percolation are the holes made in the embankments by the large salt water crabs of the Sunderbans; such holes are locally known and feared as "gogs". Again if a strong wind blows when spring tides are at their height, the resulting wavelets dash over the embankments and cause a considerable accumulation of salt water in the interior. Salt water which enters by methods described the two damages the crop, but is not a serious menace if there is sufficient rain to ensure an admixture of fresh water with the salt.

regards the embankments and dams, they are nowadays the crux of Sunderban cultivation. It is clear from the above account of Ram Sankar Sen that in his day embankment work though important was not of such vital moment as it is to-day in saline areas. There are two good reasons for this; firstly as described above the silting up of the western effluents of the Ganges and the curtailment of spill area by embankments has added considerably to the salinity of the water in the east and centre of the district; secondly Ram Sankar Sen derived his experience mainly from the Sunderbans of Bagerhat subdivision where even to this day the fresh water of the Ganges brought through the Gorai and Madhumati-Baleswar renders protection from saline inundation of less moment than in the rest of the district. The protective work of an estate falls into three parts, viz.-

- (i) Construction of marginal embankments.
- (ii) Construction of cross embankments.
- (iii) Provision of sluices.

Marginal embankments vary in size according to the salinity of the water and the size and strength of the stream from which the land requires protection. Where the water is usually sweet or only brackish, e.g., throughout the area watered by the Madhumati-Baleswar—and in the upper reaches of other rivers, small embankments up to two feet high

are sufficient. These are locally known as "patharis" in the east of the district. Where however the water is salt either throughout the year or at all times except in the height of the rains, stronger and higher embankments are required. These vary from about two feet high at the edge of small khals to earthen ramparts eight feet high, fortified by bamboos in areas where the rivers are swift and strong. The usual custom in the Sunderbans is for the tenants to maintain the embankments by their own labour, receiving if necessary loans from their landlords. Other material help is given by the landlords in the shape of organising the labour; it is not unusual for a good deal of unofficial pressure to be put on the shirkers by the landlords' burkandazes, but little complaint is ever made in this respect for the people realise that the work is for the common good. In some estates, however, the landlords have taken upon themselves the whele responsibility for the maintenance of the embankments, and in return levy a substantial quid pro quo from the tenants either in the form of enhanced rents or of a special embankment cess The usual time for). embankment work is November and December; the water is low then, but still retains some admixture of the rains freshet. It is universally believed that when the water is thoroughly saline, i.e., in February and March, the earthwork will not bind properly.

Cross embankments are found in many of the larger estates. In such estates it is customary for the landlord to lease out large blocks of land to a substantial middle man, known as a gantidar who settles cultivating tenants on his block of land or "ganti". The interest of each gantidar is therefore confined to a particular part of the estate, and he usually concerts measures with his tenants for embanking his own ganti. Obviously if one out of several gantidars were to neglect his marginal embankments, the inrush of salt water would ruin the lands of all of them. To prevent this, cross-embankments are made by each gantidar, functioning, like the bulkheads of a vessel, as a means of localising the inrush of water. These cross-embankments are smaller than the marginal embankments for the force of the water inside the margins is, of course, less than that of the rivers current. Finally there is the question of damming the mouths of the numerous

khals which intersect reclaimed Sunderban land and of providing means for draining off the water accumulated by flood or rain in the interior. The damming of the mouths of the khals is undertaken in November and December at the same time as embankment work is done, and it is surprising how wide and swift a khal can be effectually blocked by the simple process of piling earth at its mouth. These khals are the natural drainage channels of the water which accumulates in the interior depressions of deltaic land, and it is necessary to provide outlets for this drainage. Experience has proved that the force of a stream draining through a sluice set in the embankment at the mouth of a large khal gradually wears away an embankment which would resist the pressure of confined water. It is therefore customary to cut a small by-channel called a "gova", which leads off the main khal and to set a sluice at its Sluices are of three main mouth. types---

- (a) Brick and concrete.
- (b) Teakwood box type.
- (c) Natural tree trunk.

The former kind are the most effective and enduring; but they are expensive to erect, and are therefore beyond the means of most Sunderban landlords in this district. They are more common however in the 24-Parganas district, where the lessees under the various Waste Land rules are in many cases well-to-do inhabitants of Calcutta. Teakwood sluices take the form of a long and somewhat narrow box open at one end and provided at the other end with a swinging lid, arranged to open on pressure from within and to close on pressure from without. This box is set lid outwards, at the mouth of the goya, and serves to drain out the water from the interior at low tide and to resist the pressure of the rising tide outside. sluice of this type costs from 400 to 600 rupees.

Tree trunk sluices are usually made of the "bain" tree (Avicennia Officinalis). The heart wood of this tree naturally decays faster than the outer part, and leaves a hollow shell one to two feet in diameter. This is provided with a lid at one end and used in identically the same way as a teakwood box sluice. They have however a much shorter life, usually of but one or two seasons, after which they require replacement. They cost from 60 to 80 rupees, in a market adjoining the Sunderbans.

Cultivation in the Sunderbans-The cultivating season in the Sunderbans does not begin till July; many of the raiyats have lands further north, and it is not until the cultivation there is at an end that they proceed to their Sunderban lands. Here they erect temporary houses in which they live till ploughing and transplanting of seedlings is over. This takes places as late as September, and the raivat then returns to his home in the north where he enjoys a month or two of leisure till his aman crop is ready there. This is reaped by the middle of December, and he then once more journeys southward in time for the reaping season which falls in January in the Sunderbans. Many tenants also have permanent houses in the Sunderban abads, but these are generally a poorer class who have migrated, bag and baggage, from the north to make a permanent home among the privations and the fertility of the Sunderbans. A few acres will not tempt a man to this sort of life; hence it is almost the universal rule in the Sunderbans for holdings to run large: the man who cultivates five acres in the north will cultivate fifty in the south. But when the crops ripen, the raivat cannot cope single-handed with the task of reaping them, and he has to turn for help to the labourers termed dawals who throng to the Sunderbans like hop-pickers to Kent, when the harvest is at hand. With their help the ample crop is reaped: the majority is sold to *beparis* or dealers unless, as often• happens, it is already pledged for a cash advance to meet the expenses of a wedding ceremony or litigation. These beparis collect the grain in boats and take it for sale in the great markets of the north. The raivat reserves for himself provision of food and seed corn, and if he holds his land on produce paying tenure, he also retains the amount stipulated to be paid to his landlord, whose agents appear at this season to collect their dues.

All rice in normal Sunderban abads is grown from transplanted seedlings; broadcast rice is grown only in very marshy areas. The procedure does not differ in any, material detail from that adopted for rice cultivation elsewhere: the sinc qua non is proper drainage of surplus water and exclusion of salt from

the land. When these conditions are attained, the produce of the silt covered land easily surpasses ordinary crops. The following figures represent the expenses and profits of cultivation of an acre of Sunderban paddy:—

| • | | Rs. | | Rs | . А. |
|----------------------------------|----|-----|--|--------|------|
| Produce of 35 m of paddy at R | | | Cost of seeds | 6 • | 0 |
| per maund | | 105 | Labour- | | |
| Straw | •• | 5 | (i) Ploughing, 25 men at annas 12 | | 12 |
| | | | (ii) Transplanting, 10 men at annas 12 | 7 | 8 |
| | | | (iii) Weeding, 5 men at Re. 1 | 5 | 0 |
| | | | (iv) Harvesting and threshing | 15 | 0 |
| | | | Rent and cess | 4 | 12 |
| | | | Incidental expenses | 3 | 0 |
| Total | | 110 | Total | 60 | 0 |

giving a clear profit of Rs. 50 per acre.

Betel cultivation.—Apart paddy cultivation, the only other form of cultivation which can in any sense be termed a special feature of the economic life of the district is the cultivation of the betel vine. As pointed out above, the percentage of the net cropped area of this district which is under betel cultivation considerably exceeds that of all neighbouring districts, except Dacca and Faridpur. Two varieties are grown, termed respectively mitha or sweet pan and jhal or pungent pan. The former grows mainly in Sadar and Satkhira subdivisions and the latter in Bagerhat. The plants are perennial and have a prolific life period of some fifteen years in the best soil and from six to ten in ordinary soil: they are grown on highland where the soil is enriched by vegetable detritus from neighbouring trees whose shade favours the cultivation. A supply of nitrogenous manure is necessary to maintain a plentiful supply of healthy leaves. The garden is prepared by raising the land to a level which precludes any chance of flooding or accumulation of stagnant water. It is then surrounded by bamboo posts to a height of some six or seven feet and a light roofing of jute sticks and thatching grass is constructed on the bamboos; a fencing of bamboo slips completes the enclosure or "baraz" as it is termed. The object of the enclosure is to protect the plants from extremes of temparature and from the violence of high The plants are propagated winds. cuttings twelve to eighteen

inches long, planted in the rainy season to a depth of two inches below the soil at intervals of six inches. After the cuttings strike, they are furnished with supports on which they grow till they reach the roof; they are then bent down and 'trained downwards and upwards again according to their growth. The roots are earthed up in ridges and enriched by powdered oil cake. When the plant is in full leaf, it can be plucked twice a month, but plucking is regulated to some extent by the state of the market.

The area under pan cultivation is usually reckoned in standard bighas which are approximately three to the acre. A bigha of land can produce up to 20 lakhs of leaves a year; the cost of its cultivation can be roughly estimated as follows:—

| lst | st Year— | | | | Rs. |
|-----|------------|---------|--------------|-------|------|
| | Cost of pr | eparing | g ground | | 80 , |
| | Cost of en | closure | and supports | ***** | |
| | Bamboos | 4 | • • | | 65 |
| | Straw | | | | 20 |
| | Rope | | | | 4 . |
| | Supports | | • • | | 15 |
| | Labour | • • | •• | • • | 30 |
| | Cost of pl | anting | | | |
| | Cutting, | say | • • | | 2 |
| | Labour | | • • | | 25 |
| | Manure | | • • | | 10 |
| | Rent of | land | | • • | 4 |
| | | | Total | | 255 |

2nd year.—The plants are now in bearing and require considerable skilled care and attention—

| | | | | $\mathbf{Rs}.$ |
|--------------|--------------|---|-----|----------------|
| manuring | | ining the pla nd effecting st baraz | | 300 |
| Unskilled la | | • • | | 50 |
| Straw for r | oof | • • | | 15 |
| Other mate | rials for re | pairing the ba | raz | 40 |
| Manure | • • | | | 50 |
| Rent | • • | • • | •• | 4 |
| | | Total | • • | 459 |

The total expenditure thus comes to Rs. 714 for the first two years and thereafter about Rs. 450 annually.

The garden comes into bearing during the second year; its produce is reckoned by the following measure:—

4 leaves = 1 ganda, 20 gandas = 1 pan. 64 pans or 5,120 = 1 kuri, which sells at Rs. 4.

The average annual yield of one bigha of land is, as stated above, 20,00,000 leaves or roughly 391 kuris, the price of which is Rs. 1,564. ing the total outlay for the first two years to be Rs. 714, the net profit, exclusive of interest on outlay, will be Rs. 850 at the end of the second year. and thereafter about Rs. 1,114 annually. Pan is exported from the district to Calcutta through middlemen, realise there about double the price they pay for it locally. The trade is therefore a lucrative one, but the quantity of leaves so exported is reported to be small.

Fisheries.

48. Export trade of fish.—Khulna's net work of rivers and expanse of bils teem with fish, and from the carliest times the occupation of a large number of the population has been the catching of the fish which form a staple article diet in the district. Improvement ofof communication by steamer and railroad and the introduction of a supply of ice has resulted in the establishment of a large export trade of fresh fish; the Calcutta fish markets are largely supplied with Khulna produce. There is also a considerable trade in dried fish, which is exported to areas, such as Chittagong and Burma where this form of diet is used.

Sea fishery.—The fisheries of the district may be divided into sea. river, bil and tank fishery. The sea fishery is conducted mainly by fishermen from Chittagong, who come annually to two places on the sea coast rone at the mouth of the Pasur and the other the mouth at of the Bangra river in the month of November, and remain there till the end of February. the period of their stay practically coinciding with the prevalence of the north wind, for only when the north wind blows can they safely venture out to sea. They establish colonies these places, building small huts and

marking off extensive drying grounds on the sand. Small but deep khals are used as anchorages for their boats, which have a capacity of some five hundred maunds, and are manned by about eight Their system rowers and a helmsman. of fishery is to proceed with large pocket shape nets to favourable shallows about nine miles from the coast where they affix the nets to long poles in a few fathoms of water. After one complete change of tide, ebb, and flow, the nets are taken up and the produce brought back to the drying ground, where they are spread out in the sun till thoroughly. dry and are then transported by carrier boats mainly to Chittagong where there is the greatest demand for dried fish. The usual business arrangement is for a fish merchant in Chittagong to advance a sum say Rs. 500 to a contractor, who remains at the fishery and exports fish to the value of this advance to the merchant in Chittagong, keeping as his profit the value of such fish as he catches over and above the stipulated The merchant and the contractor are both known as "bardars" and the fishermen who are employed by the latter are known as "gafurs". The pay of the latter varies from Rs. 30 to Rs. 70 for three months work. The fish is either sent in carrier boats by the contractor to the merchant or is supplied on the spot to an agent of the latter who arranges for the transport to Chittagong. In an average year the price of dried fish is from Rs. 10 to Rs. 12 per maund according to quality. if delivered on the spot, and about twice the price if delivered in Chittagong. Besides the Chittagong fishermen, Mugs visit the coast mainly for the dry shrimp trade, and a small party of Chinamen usually came annually for the purpose of obtaining the Chinese delicacy, sharks fins, which they export via Calcutta to Hangkow where they fetch the equivalent of about sixty rupees per maund.

The following fish are taken at the coastal fisheries:

Carcharias Limbatus. Zygæna Blochii.

These two sharks are commonly taken in the fishermen's nets. The latter is the hammer-headed shark, whose fins are dried and exported to Hangkow.

Pristis Zyrson vern: hangar. Pristis Cuspidatus vern: ashia. These are two saw-fish: their snouts are produced into long toothed processes, which are capable of inflicting very serious wounds on persons approaching them in the water.

Rhinobatus Halavi.

Rhinobatus Punctatus.

Narcine Timlei.

Astrape Diptervgia vern: dewa.

Trygon Sephen.

Trygon Varnak.

Trygon Zugei.

Petroplatea Micrura vern: phodomoni.

These are all rays or skates. Narcine Timlei and Astrape Dipterygia are the well known electric rays which are capable of inflicting electric shocks by means of organs situated on the side of the head. The genus Trygon includes the whip rays.

Chirocentrus Dorab.

Pellona Megaloptera

Raconda Russelliana.

Chatoessus Chacunda.

Engraulis Tati.

Engraulis Parava vern: fessa.

Coilia Dussumieri vern: "olua". "amadi".

Dussumieria Acuta.

Harpodon Nehereus.

This is the well known bombay duck or "bummalo" fish. It is usually sold dry for eating with curry; when fresh, it is among the best fish for the table, but it is extremely perishable, it is rarely found fresh in any market away from the coast. Enormous numbers of these fish are caught off the mouth of the Pasur river.

Belone Choram vern: "tutia".

Therapon Jarbua.

Pristipoma Maculatum.

Scatophagus Argus vern : rup chanda.

Drepane Punctata vern : Nanda.

Chrysophrys Datnia vern: datina. Quantities of this fish are caught on rods and lines close to the shore at the fishing villages.

Kurtus Indicus.

Polynemus Paradiseus.

This is the tapsi or mango fish, which ascends the rivers in the spring

and is considered among the best of table fish.

Polynemus Tetradaclylus vern: tera bhangon.

Polynemus Sextarius.

Sciaena Semiluctuosa vern: bhola.

Trichiurus Haumela.

Trichiurus Savala.

These are the long flat sided ribbon fish known as "churi" by the fishermen from their resemblance to a knife blade. They form a very considerable proportion of the catch on the coast; their shape makes them easy to dry.

Caranx Carangus.

Caranx Rottleri.

Stromateus Cinereus vern: chanda.

This fish is the pomfret, esteemed as a great delicacy for the table.

Cymbium Kuhlii. This fish is one of the seer fishes which are well known delicacies in Madras and other parts of India. It is not common off the coast of Khulna, but a few are caught among other commoner fish.

Bregmaceros Macclellandi.

Triacanthus Brevirostris,

Tetrodon Patoca.

Tetrodon Oblongus.

The two latter are globe fish, useless for eating, but remarkable for their power of distending their bodies into the shape of a globe.

of Khulna district covers an extensive area from the sweet water rivers in the north of the district to the estuarine rivers near the coast, yet there is little distinction in the fishes, most of whom range practically throughout, certain species being more common in the north and others in the southern salt water.

The following list of fishes is representative of the species found in these rivers: Carcharias Gangeticus vern: kamot.

This is the dreaded river shark, more feared, where it occurs than the crocodile. It attacks with a rush, often cleanly severing a man's arm or leg, and leaving its victim to bleed to death unless immediate help is obtained. The little bamboo enclosures which are seen along the edge of the Bhairab, where this shark abounds, are erected for the purpose of making river bathing safe.

Amphipnous Kuchia vern: cuchia, Muraenesox Talabon vern: kytee and Muraenesox Cinereus vern: bogi are the commonest eels found in the rivers.

The Siluridae or eatfish are represented by many species, all of which are edible and some extremely palatable. They are mostly bottom feeders and delight in muddy water. The following are the common forms: Plotosus Canius vern: kanmagur. This is the dreaded estuarine fish, whose pectoral spines are charged with an irritant poison. A man wounded by these spines suffers agonising pain for about twenty hours.

Clarius Magur vern: magur.

Entropiiethys Vacha vern: bacha.

Callichrous Bimaculatus.

Pseudeutropius Atherinoides.

Pseudeutropius Garua.

Pargasius Buchanani vern: pangas.

This fish grows to a large size and is easily caught, particularly in the Sunderban rivers. Boat loads of Pangas fish were caught for food by destitute rultivators during the scarcity of 1921.

Silundia Gangetica vern: silond.

Macrones Aor.

Macrones Gulio.

Macrones Vittatus.

These are the well known tengra fish, whose poisonous spines are a constant menace to persons wading bare-footed in khals. During the survey of the Boyra bil area in Satkhira Thana, where these fish are particularly prevalent, constant complaints of injury to our amins were received.

Arius Jatius.

Arius Gagoora.

Ostogeniosus Militaris.

Bagarius Yarrellii vern: bagar.

Gagata Cenia.

. Culpea Hisha vern: ilish.

This is the hilsa, the best known table fish in Bengal. In view of its value and popularity as food, it is strange that its life history has not yet been ascertained. The breeding grounds of its cousin the American shad were for a long time a mystery, and those of the hilsa have not yet been discovered. The fish appear in the upper reaches of the Khulna rivers in late spring and

early summer; they are then in excellent condition and fleets of small boats are employed for catching them, particularly on the Madhumati whose sweet water seems congenial to the fish. In late summer and autumn the supply of fish falls off, but in November they again become temporarily plentiful but are in inferior condition. same time small fish which appear to be hilsa fry are found among the catch of fine meshed nets on the rivers: during the winter the hilsa disappear. The inference from these facts is that there is a spring run of the fish towards the breeding grounds whence they return with the fry seawards in November, but nothing further is known. Whether they retire as high as the Ganges to breed, or whether they choose retired spots in the Ganges effluents neither scientist nor fisherman knows. The ascertainment of the breeding grounds and the conservation of the fry is an economic problem of no small impor-Bengal. Clupea tance in Chapra (vern: chapra), a small slypeid fish resembling the hilsa, is found in most of the rivers. Other small clypeids of various genera, notably Pellona, Chatoessus. Engraulis and Coilia are found in the salter rivers, and form a link between the river, estuarine, and sea piscifauna.

Notopterus Kapirat vern: pholi. Notopterus Chital vern: chital. Belone Cancila vern: cancle. Hemiramphus Limbatus. Hemiramphus Ectuntio.

Lates Calcarifer vern: bhekti or pathari is another well known table fish. It is most common in the estuaries and lower reaches of the rivers, but finds its way northward in the salter rivers to a considerable distance from the sea. Besides the bhekti other perches are found in similar localities all more or less palatable food. Among the commonest are members of the genera Serranus, Ambassis, Therapon, Pristipoma, Datnioides and Gerres. The following species have been identified:—-

Serranus Lanceolatus,

Ambassis Ranga vern: chanda kata.

Ambassis Nalua.

Therapon Jarbua.

Pristipoma Guoraca.

Datnioides Quadrifasciatus. Gerres Setifer.

Nandus Marmoratus.

Reference has been made above to the tapsi or mango fish, Polynemus Paradiseus; other members of the same genus found in the rivers are :---

> Polynemus Tetradactylus vern: teara bhangon.

Polynemus Indicus.

Members of the genera Sciaena and Sciaenoides are netted in large quantities. These are the fish, which are described in Calcutta as whiting, and palatable are considered extremely there: locally they are known as bhola, and, strange to say, are little appreciated: few fish can be bought more cheaply in village hâts.

The species identified appear to be—

Sciaena Belangeri.

Sciaena Cuja.

Scianenoides Pama.

The Gobiidae, generally known as bailli fish from their habit of lurking in the sand or mud, are well represented here and include --

> Gobio Giuris. Gobio Viridipunctatus. Apocryptes Lanceolatus. Apocryptes Bato.

Electris Fuscus.

Eleotris Butis.

Gobioides Rubicundus and the curious mudskippers (Periopthalmi and Boleopthalmi) whose pectoral fins have so far developed towards limbs that they can leave the water and propel themselves over the mud. They are pugnacious little fish; the males often provide a curious spectacle by elevating their brightly coloured dorsal fins and, as it were, squaring up to each other ready for battle. The mullets form a group of valuable fishes whose delicate white flesh is universally appreciated. The three forms generally found in the district are---

> Mugil Tade vern: bhangon. Mugil Carinatus vern: parsi. Magil Corsula vern: corsula.

The latter swim in shoals with their eyes elevated above the surface of the

water: many are taken by means of long pronged spears.

Flat fishes found in the rivers of the district include Cynoglossus Lingua and Cynoglossus Bengalensis. are less appreciated as food here than in Europe, a fact which is perhaps reflected in the local names kukur jib (dog's tongue) or bans patta (bamboo-leaf). Other fish found commonly in the Khulna rivers, more remarkable for their appearance than for their economic value include-

> Batrachus Gangena. Rhynchobdella Aculeata. Mastacembalus | Armatus vern: bans. Mastacembalus Pancalus.

Tetrodon Cutcutia vern: tepa.

Tetrodon Fluviatilis.

Bil and Tank fishery.—Just as the sea, estuarine and river fisheries are linked by the occurrence of certain throughout, species indiscriminately so also is there a connection between river and bil fisheries by the fact that certain species inhabit both and rivers and are commonly caught in Most of these have been referred to above among the river fishes, but a few are found so constantly in bils that they merit separate reference.

Sacchebranchus Fossilis vern: singhi. This fish is armed with extremely poisonous pectoral spines, but is much sought after by bil fishermen as its flesh is a favourite Bengali delicacy particularly appreciated by invalids.

Wallago Attn vern: boal. This is a predacions fish comparable to the pike in the havor it creates if it finds its way into a stock-pond.

Anabas Scandens vern: koi. This is the well known climbing perch; it is capable of living out of water for a very considerable time, and has the power of propelling itself over the land, and we are told, of climbing trees though I have never seen this. After the first few downpours of the monsoon, the koi fish desert the shallow bils where they have lived through the hot weather, and are often to be seen making their way through the wet grass and mud to the new pools formed by the advent of the rains. As a food the koi is more appreciated by Bengali than European palates. The same applies to Trichogaster Lalius, vern: colsi, a

smaller relation of the koi. The Ophiocephalidæ form a group of fish which are usually found in bils; they occur also in rivers and tanks, but avoid the lower reaches and estuaries of the rivers. There are four species in this district, viz., Ophiocephalus vern: sol, Ophiocephalus | Punctatus vern: taki or chang, Ophiocephalus Marulinus vern: gajal and Ophiocephalus Gachua vern: taki. The prevalence of these fish is reflected by the common village names Gazalia, Taki, Solpur, Solmari, etc. They are all good and nutritious as food; the sol is generally awarded preeminence in this respect and is among the best table fish in Bengal. They are all very tenacious of life and can live long out of water: they are reported to leave the water, at times, of their own The typical tank fish are accord. found among the Cyprinidae or carps. and it is with these fish that tanks are usually stocked. Most of them are also found at times in the upper reaches of rivers or in bils; they generally avoid the neighbourhood of the sea, but are taken at time's even on the coast. following are found commonly in the district :--

Labeo Calbasu vern : calbans.

Labeo Rohita vern : rohit or rohu.

Labeo Boga.

Labeo Gonius vern : gonia

Cirrhina Mrigala vern: mriga.

Cirrhina Reba vern : rayek.

Catla Buchanani vern : catla,

Barbus Sarana vern: sarpooti and other smaller members of the genus Barbus which are usually known as pooti fish.

Rasbora Daniconius vern: morla.

Rasbora Elanga vern: elang.

Rasbora Buchanani.

Rohtee Cotio.

Danio Spinosus.

Chela Bacaila vern : chela.

52. Shrimp fishery.—A very lucrative trade in dried shrimps has been established in the district and is carried on throughout the rainy season chiefly in Satkhira and Khulna subdivisions. Before the rains set in, drying stations

known as "kuthis" are established on the banks of rivers where shrimps abound. during the rains. The "kuthidar", as the man in charge of the enterprise is termed, arranges with local fishermen to supply him daily with their catch of shrimps. These are caught by stretching a long net, locally known as a "beuti" net, across the river when the ebb begins; the net is hauled at low tide and the catch is taken to the kuthi. Two methods are employed for preserving the shrimps. They are either fire dried on a mat platform within the kuthi, or are boiled and then sundried and husked. The shrimps are measured by baskets of a standard size, made of "hogla" reed (Typha Elephantina), a square cubit at the base and four cubits in length; two such baskets are estimated to contain a maund of fresh shrimps. About six fishermen are attached to cach kuthi and the average catch from June to October is about 30 baskets per month. usual destination of the fire dried shrimps is Chittagong, where they sell at an average price of Rs. 15 per maund, giving a profit to the kuthidar of about Rs. 25 per maund. The boiled shrimps are not consigned to their destination by the kuthidar, but are usually bought by a Rangoon broker at the kuthi. price varies with the season, but it generally leaves not less than Rs. 10 per maund On the basis of the above figures a conservative estimate of the profit to the kuthidar for dried shrimps is Rs. 120 per month or from 600 to 700 rupees per working season. The profit per maund, on the boiled shrimps is much greater than on the dried, but the demand is fluctuating and, as far as I can ascertain the staple trade is in the latter. The industry is a lucrative one and like all the fishing industry of the district is capable of development.

FOREST PRODUCE.

53. Sunderbans Trees.—A great source of wealth to the district is the produce of the reserved Sunderbans forest. The history of the circumstances which led to the creation of the reserved forest and the methods employed for obtaining revenue from it have been given elsewhere. The main natural products are timber, wax and honey, and lime produced from shells of molluses. The most important of the forest trees is the sundri (Hieritiera

Minor), a gregarious tree with dark red wood, which is in great demand, owing to its durable properties, for boat building. Though tolerant of salt water, it attains its greatest size in the east of the district where the fresh water of the Madhumati finds its outlet to the sea. The pasur (Carapa Moluccensis) is a large tree also providing excellent and durable timber. Unlike the sundri, the Pasur is a solitary and somewhat rare tree. It is used for posts and planks.

The amur (Amoora Cucullata) and dhundhul (Carapa Obovata) are trees closely related to the pasur, but of inferior quality. The latter and occasionally the former are used for making house posts and dhundhul is also sometimes used for preparing boards. Small amur trees are used for fuel and for making hooka stems; large quantities of these are prepared at Daulatpur near Khulna.

The bain tree (Avicennia Officinalis) is one of the largest of the Sunderban trees, attaining a height of 60 feet and a sufficiently large girth to make its often hollow trunk a serviceable sluice for draining away the accumulation water from embanked Sunderban lands. Nature helps in the process for the heart wood of the tree decays earliest, leaving a hollow shell eminently suited for a natural sluice pipe. The wood of the bain tree is used for planking and fuel; the flowers are small, yellow, and sweet smelling and afford a distinctive honey. Four species of mangroves are common, namely, Rhizophora Conjugata (garjan), Ceriops Roxburghiana (goran), Kandelia Rheedii (goria), Bruguiera Gymnorhiza (kankra), and a second species of Rhizophora (R. Mueronata) also occurs. These trees are all rich in tannin and the possibility of utilizing them for tanning purposes has been subject of a recent enquiry. Only kankra attains a sufficient size to be of any value as timber; they are generally used as firewood and the goran is commonly used for fencing and reinforcing mud walls; it also furnishes the poles used by fishermen for stretching their nets and other similar purposes, and a decoction of the sap of the same tree is used as a preservative dressing for nets. The gewa (Excoecaria Agallocha) is a hardy tree which thrives in the saltest areas; its young shoots are the first vegetation to appear among the masses of seeds and drift wood at the edge of the sea. Its wood is white, and forms a satisfactory timber when the trees are of sufficient size and is also employed for making match boxes: its sap is milky and poisonous, like that of a kindred tree, Sapium Indicum, which is used for poisoning fish. Small trees are used for making charcoal and the small round cakes of charcoal fuel known as "tikis"; musical instruments, e.g., the tobla, are fashioned from its wood.

The keora (Sonneratia Apetala) is one of the most striking trees in the forest, forming a lofty screen, reminiscent of great English willows, at the edge of many rivers. Deer are particularly partial to its leaves and browse them off as high as they can reach, thus producing a uniform abrupt dark line along the grove where the foliage has been bitten off. The wood is light but fairly serviceable; the fruit is edible though not palatable and is used as emergency food

The ora (Sonneratia Acida) is a similar but smaller tree used as fuel.

The shingra (Cynometra Ramiflora) is a leguminous tree with pretty white flowers, reminiscent of a may tree. It is the best wood for fuel in the Sunderbans.

The karauje tree (Pongamia Glabra) is a large tree which grows usually on high ground at the edge of rivers or on lines of old sand dunes where its thick leafage affords a grateful shade. Its chief economic use lies in the oil expressed from its seed pods.

There are two palms found in the Sunderban mud, the hental (Phoenix Paludosus) and the golpatta (Nipa Fruticans); the former resembles a dwarf date palm and furnishes rafters for house building; the latter, one of the most important Sunderban products, is used universally in areas adjacent to the Sunderbans for roofing houses. The compound leaves are interlocked on a frame work and form a durable, cool, and rain-proof thatch. The fruit of the golpatta is edible but insipid resembling that of the palmyra palm.

54. Other forest produce.—Honey and wax from wild bees' combs are collected mainly in the months of April and

May, and exported to Calcutta. The flavour of the honey varies greatly with the trees from which it is gathered.

Shells of two species of molluses known locally as "jhongra" and "jhinuk" are collected in the Sunderbans and brought up to Khulna where after decaying for a few days with an appalling odour they are converted into lime by burning.

Oysters are found in the extreme west of Khulna district near the sea facethey are edible, but by no means delicate in flavour. The question of utilizing their shells for lime is at present under investigation.

Chapter III.—The People.

POPULATION.

55. Variation in population.—The shape of the six principal Ganges deltaic districts is a rough quadrilateral having six compartments, three in an upper line and three in a lower line. The upper line is represented from west to east by Nadia, Jessore, and Faridpur, and the lower line by 24-Parganas, Khulna, and Bakarganj. The variation in population of the components of this area since 1872 is represented by the accompanying table.

The 24-Parganas from its proximity to Calcutta and its large industrial population presents anomalous features which make it impossible to bring it into line with the others; but apart from that district, the above chart points clearly to the fact that in the Ganges delta the ratio of population has a direct relation to the activity of the rivers. A good deal has been said in this report on the subject of the silting up of the westernly effluents of the Ganges; this need not be repeated here, but it is in consonance with the easternly trend of Ganges action that we find in the top row of the chart the population increases largely and steadily from the left compartment to the right. As regards the bottom line of the chart, omitting the anomalous district of the 24-Parganas, the same tendency is apparent; for Khulna, where jungle clearance since 1871 has come into operation far more than in Bakarganj, can only equal the latter district's percentage of increase, while the increase of Khulna over Jessore, though partly due to jungle reclamation, also undoubtedly corresponds to the increased activity of rivers within tidal range. Of the various factors upon which population depends, two of the most important are agricultural prosperity and public health. When therefore we find a direct relation between river activity and increase of

| | Petsons. | | | | | Variation Increase (+) Decrease (-) | | | | Net varia- | Percen- tage of increase | | |
|-----------|-----------|-----------|-------------------------------------|-----------|-----------|--|--------------------------------|-----------|----------------|---------------|-------------------------------------|--|---|
| • | 1921. | 1911 | 1901. | 1891. | Int. | 1872 | 1911-21. | 1901-11. | 1881- 1901. | 1881-91. | 1879-81. | tion in period 1872. 1921. Increase (+) Decrease (*) | decrease since 1872. Increase (+) Decrease |
| 1 | ··· | ., | | - 5- | | | | 9 | 30 | 11 | 12 | 13 | 14 |
| Nadia | 1,487,572 | 1,617,462 | 2,078 359 1,657,888 1,797,794 | 1,634,058 | 1,653,198 | | + 194,101 129,890 21,152 | 40,426 | | - 9,140 | + 109,323 + 161,236 + 483,667 | | 29 |
| | | | 1,249,055 | | i | | | : 113,364 | | | İ | • | |
| Faridour | 2,210,858 | 2,145 851 | 1,975,606 | 1,861,789 | 1,696,635 | 1,560,337 | 104,007 | ± 170,245 | - 113,817 | + 165,154 | - 136,298 | + 689,521 | +44.2 |
| Bakarganj | 2,623,756 | 2,421,782 | 2,288,013 | 2,150,512 | 1,897,847 | 1,884,697 | F 198,974 | + 136,769 | + 137,501 | + 259,665 | + 13,150 | +739,059 | + 39 · 4 |

The results of this may be summarised by the following chart showing percentage of increase or decrease since 1872:—

| · 'Nadia | Jossoro | Faridpur | | |
|-------------|---------|-----------|--|--|
| — ·29 | + 19·6 | +44·2 | | |
| 24-Parganas | Khulna | Bakarganj | | |
| + 66·2 | + 39·2 | +39·2 • | | |

population, it is not difficult to agree with Dr. Bentley when he attributes the decline of agriculture and the deterioration of public health, to the cessation of free river spill in the affected areas. "Briefly", he says in his recent report on Malaria and Agriculture in Bengal "it is the want of facilities for the ingress and egress of rain and flood water which is responsible both for a great decline of agriculture and the deterioration of the

public health which has accompanied it". Compared with the rivers of Nadia and to a less extent with those of Jessore the rivers of Khulna still carry large volumes of water which periodically Hence her population is flush the land. still on the upward grade, but in nature's good time she will have to suffer the travail of the emergence of upland from the embryo deltaic stage, and it is unlikely that this period will be long delayed. The opening up of the Sundarhans has been referred to above as a factor in the increase of Khulna's population. following table however makes it clear that the development has been to a great extent for the benefit of the inhabitants of the district and not of immigrants from outside, for the immigrant population though somewhat greater than the emigrant, forms a very small proportion of the total:—

| | | 1921 | 1911. | 1901. | | |
|---------------------|---------|-------------------|-----------|----------------|----------------|--|
| Khul s a. | Males. | es. Females Total | | Both sexes. | Both sexes. | |
| Actual population. | 757,524 | 695,510 | 1,453,034 | 1,366,766 | 1,253,043 | |
| Immigrants | 33,835 | 26,834 | 60,669 | 54,730 | 65,717 | |
| Emmigrants | 15,801 | 18,432 | 38,233 | 39,847 | 25,883 | |
| Natural population. | 743,490 | 687,108 | 1,430,598 | 1,351,883 | 1,213,209 | |

It is however to be remembered that the agricultural population of Khulna Sunderban tracts is in more senses than one a floating one, increasing in the cultivating season when men of other districts, chiefly from Barisal, come to cultivate the lands they hold here. Still more is this the case in the reaping season when not only do the Sunderban tenants come to their lands from other districts, but a host of landless labourers or "dawals" flock down from Faridpur and elsewhere to earn their food by cutting the plentiful Sunderban harvest. The immigrant population therefore depends largely on the season of the year, and a census taken during the harvesting season would result in a very large increase of immigrants. The census of 1921 was taken on the night of March 18th when the Sunderban harvest was over and the cultivating season had not Hence it may be assumed yet began. that the recorded number of immigrants did not include the temporary Sunderban immigrants, but comprised only the normal type of immigrant population.

The agencies which have been operative in the increase and decrease of population throughout the Ganges delta are equally manifested within the limits of Khulna district. The following table shows the increase and decrease of population in the several police-stations of the district:—

| Sub-division and police station. | Total popula- tion in | Tota pres | l populați clous cens | on of uses. | Percentage of variation |
|--|--------------------------------|--------------|--------------------------|----------------|-------------------------|
| Station, | 1921. | 1891. | 1901. | 1911. | 1911- 1921, |
| 1 | | 3 | 4 | 5 | 6 |
| Khulus | 16,049 | 1 | | | |
| Terakhada | 49,332 | | | | |
| Danlatpur | 45,724 | 142,015 | 154,907 | 159,870 | 47.0 |
| Palerhat | 31,875 | | | | |
| Phultala | 28,141 |] | 1 | | |
| Baitaghuta | 47,807 | 37,038 | 40,655 | 43,560 | +9.7 |
| Dumuria | 89,449 | 79,003 | 80,429 | 84,624 | 1.5-7 |
| Paikvachha | 110,362 | 1 | | | |
| Dacope | 49,699 | \$ 83,437 | 124,869 | 153,191 | + 4.5 |
| | - | | <u> </u> | | |
| Sadar subdivision | 468,438 | 341,493 | 400,860 | 441,245 | + 6 2 |
| | | | | | |
| Kalaroa | 72,416 | 79,775 | 71.743 | 73,661 | 1.7 |
| Tala | 96,615 | 91.044 | 93,030 | 95,241 | + 1 - 4 |
| Satkhira | 107,304 | 103,634 | 102.612 | 111,749 | 4.0 |
| Kaligani | 122,859 | 1 | | | • " |
| th omnosar | 51.996 | 158,437 | 163,102 | 204,367 | + 3 - 1 |
| Debhata | 35,793 | 1 | | | |
| Asasuni | 64,711 | 62,710 | 53,649 | 62,362 | 438 |
| | | | | | |
| Satkhira subdivi- sion | 551 694 | 495,600 | 4×9,142 | 547,380 | + 0 · 8 |
| Mollahat | 66,779 | 59,124 | 61,329 | 56,987 | + 17,-2 |
| Bagerhat | 86,271 | 1 | | | |
| F* 1 | 43,402 48,488 | 151,778 | 159,007 | 164,130 | 1 8.5 |
| 71 | 79,675 | 55,676 | 65,178 | 69,179 | 15.0 |
| | 83.013 | 30,010 | 09,178 | 00,179 | + 15 -2 |
| Sarankhola | 19,671 | 73,981 | 77,527 | 83,495 | † 23 ·0 |
| | | | | | |
| Bagerhat subdivi- sion. | 427,209 | 340,559 | 363,041 | 373,791 | + 14 - 3 |
| District total | 1,453,034 | 1,177,652 | 1,253,043 | 1,862,416 | + 6.7 |
| Sunderban forest | 5,603 | | | | |

The agency of river action can be clearly traced from this table. In Kalaroa and Satkhira alone, the two north westernly police-stations, the population has declined since 1911, just as in Nadia alone, the north westernly district of the six Gangetic districts referred to above.

there has been a similar decline. Again passing from west to east just as the percentage of increase grows from Nadia to Jessore and Jessore to Faridpur, so the percentage of increase, viz., 0.8 in the western subdivision of Satkhira increases to 6.7 in the central subdivision of Sadar and to 14:3 in the eastern subdivision of Bagerhat. In individual police-stations the same tendency is clearly manifested; the greatest decrease is in the extreme northwest, viz., Kalaroa, and the greatest increase in the extreme south-east, viz., Morrellganj and Sarankhola. The lesson of the deltaic districts applies equally to the local areas of Khulna, and it is safe to prophecy that if the Ganges water continues to seek outlet to the sea further and further east, as in all human probability it will, the conditions which now cause a decline of population only in the north-west of the district will prevail throughout. Whether in time the genius of the engineer will devise means for reflushing dead channels or the genius of the scientist will defeat the mosquito and other carriers of tropical disease is a question we cannot answer now, but in the answer to this question lies the entire future health and prosperity of this district.

56. **Density.**—The following statement shows the population and density of the subdivisions and their component police-stations as found at the census of 1921. For the purposes of this statement the areas as adopted in the Census Report have been adhered to; owing to subsequent changes of jurisdiction, these areas are no longer accurate, but they serve their purpose as a basis of estimating the density of the population in 1921

| | According to census of 1921. | | | |
|--------------------------|------------------------------|---------|----------|--|
| Name of volice-stations. | | | Density. | |
| 1 | | 3 | | |
| 1. Kaliganj | 214 | 122,859 | 574 | |
| 2. Tala | 141 | 96,615 | 685 | |
| 3. Kalaroa | 88 | 72,416 | 823 | |
| 4. * Satkhira | 138 | 107,304 | 778 | |
| 5. Asasuni | 122 | 64,711 | 530 | |
| 6. Debhata | 66 | 35,793 | 542 | |
| 7. Shyamnagar | 161 | 51,996 | 323 | |
| Satkhira subdivision | 930 | 551,694 | 593 | |

| | | Accordi | According to censes of 1921. | | | |
|----------------|---------------------------------------|--|--|----------|--|--|
| | Name of police stations. | Area in square mile- (as adopted in the census tables | Population caccording to census; | Density. | | |
| | | 2 | | 4 | | |
| × . | Phultala . | 30 | ::× 141 | 938 | | |
| 9. | Danlat§ur | 33 | 15,721 | 1,386 | | |
| 10. | Khulna | 3* | 47,924 | 1,261 | | |
| 11. | Terakhada | -3 | 19,332 | 594 | | |
| 12. | Dumuria | 152 | 89,449 | 491 | | |
| 13. | Baitaghata | 98 | 47,807 | 488 | | |
| 14. | Paikgacha . | 156 | 110,362 | 593 | | |
| 15. | Ducope | 115 | 49,699 | 432 | | |
| | | | | | | |
| | Khulna subdivision | 765 | 465,438 | 612 | | |
| | | | | | | |
| 16. | Mollahat | 94 | 66,779 | 710 | | |
| 17. | Fakirhat | 62 | 43,402 | 700 | | |
| 15 | Bage that | 195 | +6,271 | 690 | | |
| 19. | Kachua | 60 | 45 455 | ×11× | | |
| 20. | Rampal | 217 | 79,675 | 367 | | |
| ::1. | Morrellgunj | 118 | 53,013 | 551 | | |
| 22 | Satankhola | :17 | 19,671 | 532 | | |
| | | | | | | |
| | Page hat subdivision a | 785 | 427,299 | 579 | | |
| | | | | | | |
| | District total, excluding Sunderbans, | 2,403 | 1,447,431 | 595 | | |
| | | | | | | |
| > mi | derbais | 2,297 | 5,603 | 2 | | |
| | District Total | 4,730 | 1 459,084 | 307 | | |

The density of the whole district, excluding the scarcely inhabited reserved forest is 595 persons per square mile. For purposes of comparison, the following chart shows the density of population in the six districts of the Ganges delta:—

| Nadia 535 | Jessore 593 | Faridpur 949 |
|-----------------|-------------|---------------|
| 24 Parganas 541 | Khulna 595 | Bakarganj 752 |
| | | |

The same inferences as to the effect of the Ganges water upon the health and prosperity of the population can be drawn from this chart as have been drawn above from the chart illustrating increase in population; in addition it is clear that land annually fertilized by the silt-laden eastern distributaries of Ganges water can support a far greater population than the western areas where little silt is now distributed. The density of the southern group of districts in the chart is affected, in comparison with the northern group, by the

fact that they contain large stretches of sparsely populated Sunderban reclamation. It is interesting to compare with these figures the density of the whole of Bengal which is 579, of England which is 558, of Germany which is 269, and of France which is 188 persons per square mile.

Of individual police-stations the urban and semi-urban areas of Khulna and Daulatpur have the greatest density, and the reclaimed Sunderban areas of Rampal and Shyamnagar have the least. Kalaroa and Satkhira, the two police-stations where the population has declined between 1911 and 1921, show the high density of 823 and 778 respectively. In them the anabolism of delta building is complete and katabolism has just set in: the extent of the katabolism at the time of the next census will be an interesting index of the rate at which population declines when the rivers die.

57. **Caste distribution.**—The following castes and divisions of the people number more than one per cent. of the district total:—

| | | Hindu. | |
|--------------|-----|------------|-------------|
| Barui | | • • | 18,771 |
| Brahman | | • • | 37,650 |
| Chasi Kaibar | tta | • • | 26,805 |
| Kapali | | | 20,237 |
| Kayestha | | • • | 44,782 |
| Malo | | • • | 15,176 |
| Muchi | | • • | 21,751 |
| Namasudra | | | 227,844 |
| Napit | | | 20,268 |
| Pod | •• | | 151,953 |
| | Mu | ıhammadan. | |
| Jolaha | | | 19,921 |
| Pathan | • • | • • | 15,999 |
| Sheikh | • • | | 651,951 |

58. Pods and Namasudras.—As the deltaic area which is now Khulna district rose out of the sea, the first persons to penetrate its swampy forests were undoubtedly pre-Aryan hunters and fishers who alone could find a livelihood to their taste in its jungles and rivers. These tribes are now represented by the Pods and Namasudras, who form the bulk of the non-Muhammadan population of the district. The term Namasudras is a euphentism for the detested name of Chandals who were held in

lowest estimation of all the aboriginal tribes of Bengal by the invading Aryans. The Pods are represented to be an ancient offshoot of the Chandals who raised themselves in social status by adopting a new name. Both are darkskinned hardy races whose ancestral pursuits of hunting and fishing have rendered them peculiarly fit for the pioneer work of bringing the inhospitable Sunderban jungle under cultivation, but with the increase of cultivation they have largely abandoned their former vocations in favour of those of cultivator and boatman, and to some extent for those of craftsman and trader. Their distribution in the district is well marked but not easy to account for. The following table gives their distribution by police stations: --

| Police-stations. | Nama- sudras. | Pods, | |
|------------------|------------------|---------|---------|
| Khulna | | 6,106 | 498 |
| Terakhada | | 17,604 | |
| Daulatpur | | 5,663 | 412 |
| Phultala | | 2,130 | 223 |
| Baitaghata | | 19,888 | 6,949 |
| Damuria | | 19,993 | 7,346 |
| Paikgachha | | 12,696 | 31,139 |
| Dacope | | 5,695 | 32,707 |
| Kalaroa | | 427 | 46 |
| Tala | | 2,408 | 7,933 |
| Satkhira | | 7,034 | 7,202 |
| Kaliganj | | 9,156 | 15,829 |
| Shyanmagar | | 1,122 | 21,602 |
| Debhata | | 3,121 | 345 |
| Asasuni | | 4,481 | 15,318 |
| Mollahat | | 27,589 | |
| Bagerhat | | 11,408 | 306 |
| Fakirhat | | 7,140 | 45 |
| Kachua | | 16,000 | 4 |
| Rampal | | 27,373 | 3,928 |
| Morrellganj | | 16,451 | |
| Sarankhola | | 4,166 | • • |
| | | 227,651 | 151,432 |
| Sunderban forest | | 193 | 521 |
| District Total | | 227,844 | 151,953 |

It appears from this table that the Namasudras are most numerous in the north and east of the district and the Pods in the south and west. Supposing

in ancient times two streams of primitive inhabitants had followed the courses of the great delta building rivers the Jamuna and the Bhairah, the Pods along the former and the Namasudras along the latter, the present distribution of these castes within the district would be accounted for. It is certain that the Pods are essentially a Western Bengal and the Namasudras an Eastern Bengal race, for in the census of 1872 Pods were practically absent from Eastern Bengal but numbered 249,075 in the 24-Parganas and 21,562 in Jessore (the two districts adjacent to the old Jamuna course). while the Namasudras numbered 326,775 in Bakarganj and 271,325 in Jessore (where the old Bhairab flowed) but only 46,056 in the 24-Parganas.

During the present century the Namasudras have increased but the Pods have declined in numbers. The figures for the former were returned at 105,495 and for the latter 190,507 at the census of 1901. It is difficult to give a reason for this; to some extent the better health conditions associated with freer river action are in favour of the more easternly race, but it is also probable that the recent awakening of political consciousness among the Namasudras is partly responsible for the figures returned. The Namasudra is in fact proud of his easte; the Pod is ashamed of his, and has recently attempted to adopt the name of "Brata Khattriya" as a caste name in place of the name of Pod. No Namasudra would be likely to conceal his caste from the enumerator while Pods might well do so. This awakening of political consciousness among the Namasudras is a recent phenomenon which is not unlikely to have considerable political importance in the future. Already the Namasudras members have been returned to the Bengal Council, and the Namasudra candidate has been in evidence at the elections in this district. A less desirable feature of the awakening of this caste's consciousness is the communal tension between them and the Muhammadans which has been a source of anxiety to the district executive authorities for some years.

59. Muhammadáns.—Where the Pods and Namasudras cleared the way, converting jungle into paddy land, the hardy Muhammadan, often himself a recent convert to Islam, followed, and now forms a very considerable element in the cultivating population of the district. The following statement shows the

number of Muhammadans in each policestation returned as Sheikhs at the last census:—

| | Police-s | tations. | | Sheikhs. |
|---------------|----------|----------|-----|----------|
| Khulna | • • | | | 17,744 |
| Terakhada | | • • | . • | 22,135 |
| Daulatpur | | • • | | 18,477 |
| Phultala • | | | | 15,120 |
| Baitaghata | | | | 14,977 |
| Dumuria | | • • | | 36,968 |
| Paikgacha | | • • | | 43,444 |
| Dacope | | • • | | 8,552 |
| Kalaroa | | | | 49,488 |
| Tala | | | | 42,133 |
| Satkhira | | | | 53,988 |
| Kaliganj | | | | 58,134 |
| Shyamnagar | | | | 18,287 |
| Debhata | | • • | | 15,618 |
| Asasuni | • • | | | 27.309 |
| Mollahat | • • | | | 31,451 |
| Bagerhat | • • | • • | | 37,642 |
| Fakirbat | | | | 15,691 |
| Kachua | | | | 19,584 |
| Rampal | | | | 35,236 |
| Morrellganj | • • | | •• | 51,813 |
| Sarankhola | | • • | | 14,412 |
| | | | . А | 648,203 |
| Sunderbans f | orests | | | 3,748 |
| District Tota | ì | •• | | 651.951 |

The Sheikhs are normally cultivators; apart from them the number of Muhammadans in the district is not large, for the only other sections which number more than one per cent, of the population are Jolahas, who number 19,921, and the Pathans, who number 15,999. The Jolahas are the weavers, often spoken of as Karigars; they appear to have recently entered the district for in the census of 1881, they, only numbered 267, and at the present time are more or less confined to the north. The Pathans form the higher element among the Muhammadans; the fact that since 1901 the Jolahas have decreased and the Pathans have increased in numbers probably shows that the lower class Muhammadans are prone to usurp higher social status. A distinction is occasionally made between the Ashraf and Atraf

Muhammadans; the former term seems ಕರ connote Muhammadans while converted northern descent, Hindus or those who are descendants of an admixture of races are known by the latter name. Next in order of number come the literate castes of Kayesthas and Brahmans. As is to be expected, they are found chiefly in the older and more advanced tracts particularly along the banks of the Bhairab. The Kayesthas are mainly Dakshin Rarhis with an admixture of the Bangaja sub-caste in the south-west. The Brahmans Rarhi and Barendra, the former being more numerous than the latter.

Other Castes.—Of the other eastes prevalent in the district, the Barnis have been referred to in connection with betel vine cultivation. The Kaibarttas as elsewhere in Bengal are divided into two groups—Halia or cultivating Kaibarttas and Jalia or fishing Kaibarttas; they are found mainly in the north of the district and are probably late immigrants, as they are practically unknown as cultivators in the recent Sunderban reclamation. The Kapalis are found in much the same areas as the Kaibarttas; they are low caste cultivators and weavers. The Malos, Muchis and Napits respectively follow their caste professions of boatman, leather worker and barber throughout district.

61. **Religions.**—The distribution of religions in the district is shown in the accompanying table; there has been little variation in the proportion of Hindus to Muhammadans during the last 20 years, for at the census of 1921 the Hindus numbered 50:46 and the Muhammadans 49.41 of the total population. As regards the distribution by policestations, there is a considerable preponderance of Hindus in the areas most intersected by rivers while the Muhammadans preponderate in the drier policestations of Kalaroa, Phultala, Tala and The reason for this is the Satkhira. fact that the Pods and Namasudras have an inherited adaptability to a life among the swamps, while the Muhammadan is a cultivator of drier tracts. The only two Sunderban police-stations in which Muhammadans preponderate are Morrellganj and Sarankhola where they have migrated from Bakarganj. These areas, built up by Baleswar silt, are higher and less intersected with channels than other parts of the Sunderban reclamation, and have accordingly

proved a more congenial home to the Muhammadans. The main Christian settlements are in Rampal police-station.

| | | | · | |
|--|-----------|------------|------------------|------------------|
| Name of tha | , 118. | Hindus. | Muhamma dans. | Chris- tians. |
| Kaliganj | •• | 61,533 | 61,091 | |
| Tala | | 45,260 | 51,355 | |
| Kalaroa | | 17,976 | 54,162 | 278 |
| Satkhira | | 43,356 | 63,948 | |
| Asasuni | | 36,128 | 28,578 | 1 |
| Debhata | | 19,456 | 16,337 | |
| Shyammagar | | 28,935 | 22,696 | |
| | | DE 40 1 11 | | |
| Satkhira subdi | vision | 252,644 | 298,167 | 279 |
| | | | | |
| Phultala | | 9,706 | 18,435 | |
| Daulatpur | | 25,067 | 20,654 | • • |
| Khulna | | 27,162 | 20,503 | 256 |
| Terakhada | | 26,307 | 23,025 | • • • |
| Dumuria | ٠. | 47,790 | 41,646 | 6 |
| Baitaghata | | 31,060 | 16,747 | |
| Paikgachha | | 60,429 | 49,484 | |
| Dacope | | 40,540 | 8,805 | 354 |
| | | | | |
| Khulna subdiy | . ision | 268,061 | 199,299 | 616 |
| | | | | |
| Möllahat | | 32,238 | 34,539 | |
| Fakirhat | | 25,911 | 17,491 | . 2 |
| Bagerhat | | 46,783 | 39,479 | 6 |
| Kachua | | 26,901 | 21,584 | ••, |
| Kampal | | 40,945 | 37,427 | 1,303 |
| Morrellganj | | 27,054 | 55,959 | •• |
| Sarankhola | | 4,576 | 15,095 | •• |
| | | | | |
| Bagerhat subdiv | ision | 201,411 | 221,574 | 1,311 |
| | 1 | | | ties were . |
| Total | | 725,116 | 719,040 | 2,206 |
| | | | | |
| Sunderban forest included in any division. | | 1,745 | 3,847* | 11 |
| | | | | |
| Grand Total - | | 726,861 | 722,887 | 2,217 |

[•] In boats.

62. Occupation.—The following extract from the census tables of 1921 shows the various occupations in which over 1,000 persons in the district are employed. It decisively illustrates to

Pareons

what an extent Khulna people are dependent upon agriculture; out of a district total of 1,453,034, no less than 1,214,343 persons are dependent upon agriculture for their livelihood either as land-owners, cultivators, rent collectors, or labourers.

Fishermen with a total of 25,155 rank next to agriculturalists; this is the third highest district total of fishermen in the province and is exclusive of the 21,024 persons referred to below as dealers in Of other industrialists weavers rank third with a total of 14,024, which though low in comparison with several other districts, shows that the craft is a village industry considerable Among traders the dealers in fish numbering 21,024 far outnumber all others, the only ones to approach them being the betel and other vegetable produce dealers who number 12,486. number of grain dealers, viz., 5,020 is unexpectedly low for a paddy producing district and, I think, illustrates the fact referred to elsewhere in this report that cultivators and reapers resident outside the district carry off a very considerable amount of the produce of the Sunderban cultivation.

| Occupation. | | | Persons engaged in each occupa- tion. |
|--|-------------------------|-----------------|---|
| Income from rent of agriculty | ral land | | 63,794 |
| Ordinary cultivators | | | 1,040,597 |
| Agents, managers of landed rent collectors. | l estates, c | lerks, | 5,863 |
| Field labourers | | | 104,089 |
| Fruits, flowers, vegetable, I growers. | etel vine, | etc., | 5,408 |
| Wood cutters, firewood collec- | tors | | 2,986 |
| Fishing | | | 25,155 |
| Cotton sizing and weaving | | | 14,024 |
| Leather dressers | | | 3,820 |
| Carpenters, turners and joiner | rs, etc. | • • | 2,140 |
| Basket-makers | | | 3,039 |
| Blacksmith | | | 3,075 |
| Potters | | | 5,440 |
| Oil pressers | | | 2,317 |
| Rico-huskers | | | 3,242 |
| Sweet-meat makers | | | 1,253 |
| Washing, cleaning, dyeing | | | 1,421 |
| Barbers | | | 9,891 |
| Excavators and well-sinkers | | | 1,719 |
| Brick-layers, masons | • • | | 1,089 |
| Boat-makers | | | 1,354 |
| Workers in precious stones an | id metals | | 4,907 |
| Boat-owners, boatmen and to | wmen | | 4,789 |
| Labourers employed on roads | and bridg | œ | 1,041 |
| Palki-boarers | | | 4,776 |
| Railway employees (excluding | g coolies) | | 1,791 |
| Bank managers, money-lende insurance agents, money ch | rs exchang angers, b | e and rokers | 1,361 |
| and their employees. Trade in piece-goods, wool, co | atton pilk | | 4,594 |
| Trade III hiece-goods, woor, or | o o | • • | 7,00 |

| Occupation. | Person engageo in each occupa- tion. |
|---|--|
| Trade in skins and leather | 2,650 |
| Trade in wood, bamboo and thatch, etc. (excluding firewood). | 1,340 |
| Fish-dealers | 21,024 |
| Botol-leaf, vegetable, fruit sellers | 12,486 |
| Dealers in grain and pulse | 5,020 |
| Trade in hardware, cooking utensils, etc | 1,389 |
| Dealers in common bangles, bead, necklaces, fans, etc. | 1,053 |
| General store-keepers and shop-keepers | 2,119 |
| Police | 1,094 |
| Village watchmen | 2,282 |
| Service of the State (public administration) | 3,303 |
| Priests | 7,491 |
| Lawyers of all kinds | 1,668 |
| Lawyers, clerks, petition writers | 1,100 |
| Medical practitioners of all kinds (including dentists, oculists and veterinary surgeons). | 4,082 |
| Professors and teachers of all kinds | 3,960 |
| Music-composers and masters, players on all kinds of musical instruments, singers, actors, dancers. | 1,280 |
| Cooks, water-carriers, door-keepers, watch- men and other indoor servants. | 9,866 |
| General terms which indicate no definite occupation. | 6,815 |
| Cashiers, accountants, book-keepers, clerks, etc. | 2,723 |
| Labourers and workmen | 3,989 |
| Beggars, vagrants, etc | 6,917 |
| Procurers and prostitutes | 1,064 |
| | |

The main classes of occupation fall into the following groups:—

| | Group. | | Number of persons engaged. | Percentage of total population. |
|----|---|-----|----------------------------------|---------------------------------------|
| 1. | Pasture and agricult (including those riving income the from). | de- | 1,224,026 | 84 · 23° |
| 2. | Fishing and hunting | | 25,206 | 1 · 73 |
| 3. | Industries | | 63,585 | 4 · 37 |
| 4. | Transport | | 14,951 | 1.02 |
| 5. | Trade | | 72,371 | 4.28 |
| 6. | Public administrat and liberal arts. | ion | 27,706 | 1 - 90 |

ECONOMIC CONDITIONS.

During the course of the present operations enquiries were made with a view to ascertaining the annual budget of typical cultivating families. The results were interesting from their discrepancies, but I am inclined to attribute the discrepancies not so much to differences in actual

scale of expenditure or income, but to the illiterate, cultivators absolute inability to give even approximately correct figures. A man who cannot tell you his own age or that of his children is not likely to be able to give much idea of the amount he spends annually on

medicine or cloth. Subject to these reservations the following two budgets may be taken as typical of, respectively, the indigent and the comfortably situated cultivator. The figures have been as far as possible tested and may be taken to be approximately accurate.

| | | Samed M | ollah of ' | Feligantı. | | n | 1 | | Abdu | Samed S | ikdar of | Guakh | ola. | |
|----|--|-------------------------------|--------------------------|---------------------------------|-------------|----------|-----|-------------------------------|-----------------------------|-------------------------|------------------------|------------------|-----------------|----------|
| | Males. | | | Fema | lés. | | | Males. | | | | Fe | males. | |
| Ad | ult Mi | 10 r | Adu | lt | | Minor | Ad | ult | Minor | | Adult | | | Minor |
| | 3 | 1 | 2 | | | Nii | , | 4 | Nil. | | 6 | | | 4 |
| | не е | cultivates 6 | acres of l | and. | | | | | He | cultivates | 40 acre | of lan | d. | |
| | | Income | Table. | | | | | | J. | ncome Tal | ote. | | | |
| 1. | Annual produce i | rom land | | •• | | 130 mds. | 1. | Annual produ | uce from la | nd | | | | 800 mds. |
| | | | | | | Rs. | | | | | | | | Ra. |
| 2. | Annual income fr | om produce | and fodd | ler | | 420 | 2. | Annual incom | ne from pr | oduce and | fodder | | | 2,600 |
| 3. | Annual income fro | om selving mi orchard pr | ilk, fowls, oducts of | eggs, vegeta the land. | bles, | 80 | 3. | Annual Incon and other of | ne from mi orchard pro | lk, fowls, o | eggs, ver he land. | zetable: | , fruits | 500 |
| | Total a | nnual incon | oe | •• | •• | 500 | | | Т | otal annu | al incom | ie | •• | 3,100 |
| | | Expenditure | Table. | | | Rs. | | | E | xponditure | Table. | | | Rs. |
| 1. | Rent and abwabs | at Rs. 5 an | acre | •• | | 30 | 1. | Rent and ab | wabs at Re | , 5 an acr | r | | | 200 |
| 2. | Taxes | •• | •• | •• | | 2 | 2. | Taxes | •• | | | | | 15 |
| 3. | Cost of agricultur but not value of | e (including ! personal la | only valu bour) at | ie of hired la Rs. 16 an aci | bour re, | 98 | 3. | Cost of agricu but not val | alture (incl ue of perso | uding only nal labou | y value o r) at Rs. | f hired 16 an | labour acre. | 640 |
| 4. | Cost of up-keep o | f cattle | • • | •• | •• | 15 | 4. | Cost of up-ke | ep of cattl | r | | | | 100 |
| Б. | Cost of medicine | and doctors | •• | • • | | 5 | 5. | Cost of medic | cine and de | etors | | • • | | 60 |
| 6. | Cost of implemen | ts and repai | rs | •• | • • | 5 | 6. | Cost of imple | ments and | repairs | | • • | | 40 |
| 7. | Purchase of foods | tuff | •• | | • • | *300 | 7. | Purchase of f | ood-stuff | | | • • | | 725 |
| 8. | Cloth | • • | •• | •• | | 60 | 8. | Cloth | | | | • • | • • | 150 |
| 9. | General household | i expenditur | c | •• | •• | 25 | 9. | General hous | ehold expe | nditure | | • • | | 100 |
| 0. | Litigation | • • | •• | •• | •• | NII. | 10. | Litigation | •• | • • | | •• | | 200 |
| 1. | Luxury, etc. | | •• | •• | • • | 15 | 11. | Luxury, etc. | | | | • • | • • | 100 |
| | | | | penditure | •• | 553 | | | | | | | | |
| | | Ba | lance in l | | • • | Nil. | | | | Total ani | nual exp | enditui | re ., | 2,820 |
| | | | | Minus | •• | 53 | | | | | Bal | ance in | hand | 780 |

It will be seen that in the first case there is a slight deficit on the year's budget, and in the second case a comfortable margin. The deficit is made up by borrowing or by working as a hired labourer according to the temperament of the man in question; the surplus is extremely likely to be applied, Muhammedan tenets, notwithstanding, to money lending or at any rate to securing mortgages on land.

As regards the details of the budget, the produce has been returned in one case at 20 maunds per acre and in the other case at slightly more; this is a moderate estimate which in the fertile Sunderban tracts could be at least half as much again one year; on the other hand the following year a broken embankment might mean a total loss of crops. The rent represents a rate of about Rs. 3-6 per acre, the balance is made of abwabs:

in many estates the tenant must reckon on having to pay annually from 50 per cent. to 75 per cent. of his rent under this head. Nothing has been included in either budget for education; had the minor members of the well-to-do cultivators' family been boys instead of girls, a sum ranging up to 100 rupees per annum would have to be added to the budget. In the case of Samed Mullah, the minor boy is educated without charge at the village patshala. No amount has been debited to expenditure on account of family ceremonies; there will be annually some small expense which will be met from the head of general household expenditure, but should a wedding or other important ceremony occur in the family, it will be covered by a loan which will be met by diminution in other heads of expenditure till it is paid off. diet scale allows for 3 seer or rice per

day for each adult, and about half that amount for children. In addition dal, oil, sugar, salt will have to be purchased; Abdul Samed will purchase better class fish, such as hilsa at the local hat, Samed Mullah will depend for fish on the "tengra", "singhi", etc., which he or his small son catches.

- **Factors** affecting economic ' conditions.—In several recent settlement reports it has been the practice, following the example of Major Jack in the case of Faridpur, to estimate the economic condition of the agricultural population by calculating their gross and net income mainly with reference to the value of the yield of the land divided among the persons whom it has to support. There are however certain factors in Khulna district, which increase possibility of error in this method to such an extent as to make its value nugatory These factors for practical purposes. may be summarised as-
 - .(i) the absentee tenancies of the Sunderbans,
 - (ii) the risk of saline inundation,
 - (iii) the existence of the reserved forest,
 - (ir) the fisheries of the district.

Reference has been made in several parts of this report to the method of Sunderban cultivation by which a raivat who does not see his land at all for about nine months in the year, visits it on two occasions (in all perhaps for three months) in order to cultivate and reap his crops. Many of these raivats are not even resident in the district: the produce of their fields therefore does little to supply the food required by Khulna's increasing Again even if the raivat be population. a resident of the district, he assuredly follows the pernicious custom of allowing his fields to be reaped by "dawals" or alien reapers who flock down from Faridpur and elsewhere in the harvesting season to earn a share of the produce by doing reapers' work. This custom, born of necessity when tenants were few and Sunderban holdings large still appeals to the ease-loving cultivator, with the result that a considerable porhis grain passes away tion of Faridpur in return for service which he no longer needs. In view therefore of the extent to which people of other districts subsist on Khulna produce, calculation of the available resources by dividing the available produce among the recorded population is little criterion of the economic condition of the district.

In the second place the emergence of the district from the deltaic stage is marked by natural phenomena, particularly seasonal floods, which in one area ruin the year's crops, while in another they distribute silt which assures a bumper yield. This instability renders not merely generalisations but even statistics unreliable indices of prosperity or the reverse; it is useless to hazard guesses based upon estimated annual outturn of crops. On the other hand there are two definite and constant factors which are of the greatest importance in an area where many families are perilously near chronic insolvency. These two factors are the existence of the reserved forest and the fisheries of the Mr. Thomson in his recent census report uses the metaphor of a safety valve in connection with the Sunderban forests, and he states that the pressure of population has not yet been great enough to lift the spring. The spring is however lifted temporarily from time to time; during the scarcity thanas Paikgachha Asasuni and Kaliganj which followed saline inundation in 1921, in village after village of the famine-stricken area which I visited while on relief work I received the same answer from the haggard women in houses where no men were present. "Our crops were ruined by the flood. my husband is cutting wood in the bada. (reserved forest) and earns enough to keep us alive. I don't wish to go to the poor house ". It is quite certain that one of the main reasons which prevented the local scarcity from assuming the proportions of a famine was the existence of the reserved forest where work, arduous but profitable, was available for those whose crops had been ruined. Similarly the existence of an ample supply of easily obtainable fish is an economic factor of the greatest tance in the district. At the last census 25,199 persons were recorded as earning their livelihood from fishing, and, as the catching and selling of fish for a livelihood entails some social stigma, it is quite certain that the number was not overestimated. On the bank of every river and in every khal men and boys may be seen daily employed in catching fish, with rods or nets, for home consumption, and it is rare that the passer-by who has the patience to watch for half an hour

will not see sufficient nourishing fish for a family's meal taken from the river.

Apart from the conditions peculiar to the district, the Khulna cultivator shares with all other cultivators of Bengal the advantages and disadvantages govern his economic welfare. Regular rain and a genial sun make husbandry a task which can be performed within a few months of the year, leaving the rest for the idleness which induces a slothful habit: and physiologically speaking, sloth is fostered by a hot, damp climate. Frugality does not go hand in hand with sloth, for the useless expenditure on ceremonies and the frittering away of money on petty litigation which are commonamong the economic evils Bengal, are due not to any inherent perversion in the villager but to the very natural and very human necessity having some excitement or relief to fill in the tedium of a life of idleness. Ignorance and illiteracy are rarer in villages than they used to be, but even nowadays the proportion of persons of 5 and over who are literate is only 122 per thousand in Khulna district. direct relation of illiteracy and economic condition in a civilized community manifested in many ways, in a Bengali village probably most of all in the relation of landlord and tenant. In the matter of execution of deeds, of granting of rent receipts, and worst of all, the sale of lands by ex-parte decrees of the Courts, the illiterate goes to the wall.

Khulna is to a great extent a district where only one crop is grown; out of a total cultivable area of 1,115,048 acres in the area surveyed during the present only 38,849 acres operations, returned as bearing two crops, and the area is practically confined to the north of the district. The ordinary cultivator, therefore, has to depend upon the produce of his winter paddy crop for his year's staple food and income. Not unnaturally when after a good harvest he finds in February and March that his is full and his rent has been paid, he launches out into such extravagance, whether it be litigation, purchase of ponies, or luxurious dietary, to which his tastes incline. By August and September his resources are ebbing, and he generally has no aus paddy or jute crop ready to supplement them. Unless he be a man of unusual frugality and strength of mind, he has recourse to the village money-lender with the result that at least a portion of his next harvest is hypothecated in advance.

Indebtedhess of agriculturalists. -It is not easy to say how far the average Khulna cultivator is permanently in debt. The figures showing the number of mortgage and sale-deeds anually registered are not trustworthy guides, for, as explained elsewhere in this report, leases with high premia are frequently substituted for outright The economic figures collected during the operations, of which typical instances have been given above, tend to show that the normal cultivator is well able to maintain himself and his family without running into debt; while a smaller proportion, say about 20 per cent. of the whole number, cannot maintain themselves in a solvent condition without the adventitious aid of daily labour or woodcutting in the reserved Nevertheless it is the rule and not the exception for the family to have a standing debt. This does not necessarily imply moral delinquency or even undue weakness of character; otherwise we should have to include in the same category a large proportion of subalterns in the Indian Army before the war and a still larger number of officials in Government service before the Lee Commission. India is a hard taskmaster to the character, and Bengal by its climatic conditions is peculiarly exacting. The same conditions of tropical heat and enervating rain which favour the mosquito and breed the character-destroying tropical diseases act more directly without the intervention of bacillus upon the nervous system and produce willy nilly the sloth and the desire for expensive excitement which is inbred in the permanent dweller in Bengal and which soon saps the character of the alien resident.

The Co-operative movement is a palliative, a good palliative if well usedbut not a radical cure. It is the bitter experience of those who have had to do with the movement that few societies will flourish without an exceptional member to guide them, and that without such guidance the village banks too often put their seal of blessing upon the dissolute and extravagant habits they came The remedy, so far as there to curse. can be remedy when the forces of nature are arrayed against man, lies in fostering strength of character by invigorating the body. Hygiene, sanitation, prevention of malaria and improvement of the standard of living by cheapening communications are all efficacious means to this end.

Chapter IV.—Fiscal History and Land Tenure.

FISCAL HISTORY.

Early fiscal history.—The greater part of the fiscal history of Khulna district is the history of Sunderban resumption and settlement. This subject is inextricably bound up with the resettlement or jamabandi operations undertaken in the course of the present district settlement which embraced about 200 estates, of which about one half were Sunderban mahals. In order to elucidate the problems which were met with in the course of these resettlements, constant reference is necessary to the previous history of Sunderban administration, and I have therefore postponed an account of the fiscal history of the Sunderbans to that portion of this report, which deals with resettlement operations, where the subject can be conveniently treated as a whole.

The earliest assessment of the Subah of Bengal of which anything is known, is that of Todar Mall in 1582-89; he divided up the Subah as it then existed into 19 fiscal divisions entitled "Circars" or "Sarkars." The great majority of the permanently settled area of Khulna district falls within Todar Malls sarkar of "Khalifatabad" or "Jessore" which was defined by Grant as "the area on the skirts of the Sunderbans or salt marshy islands covered with wood on the sea coast and formed by alluvion with successive changes of the channels of the Ganges ".

67. The Sarkars and Parganas.—A list of parganas of sarkar Khalifatabad is given in the Ain-i-Akbari; this list is with the modern reproduced below equivalent parganas of Khulna district where identifiable-

| Ain-i-Akbari List. | Modern equivalent. |
|--------------------|--------------------|
| Bhal. | |
| Bhalka. | Bhaluka. |
| Polah. | Palasu (?). |
| Potka. | |
| Baghmara. | Bagmara. |
| Bhanda. | |
| Badee. | |
| Bhaliyanah. | |
| Bhulnagar. | |
| Taluk of Kasinath. | |
| Tala. | Tala. |
| Taluk of Srirang. | • |

Ain-i-Akhari List. Modern equivalent,

Taluk of Mahes Mandal. Taluk of Parmodar Bhattacharjya.

Taluk of Sripatkiraj. Jasur (Rasuipur). Charaula

Chirulia. Chhalera or Chabrah. Khaira (?) Suburban Khalifatabad.

Haveli Khalifatabad. Khalispur. Khalishpur. Daniya Dantia. Rangdiva.

Sahaspur.

Sulaimanabad. Selimabad. Sahas. Sahos Sobnath Sobnali.

Salesarbahi.

Imadour. Imadpur.

Khokral

Kanges Taluk Parmanand.

Chengutia (?).

Rakdia.

Mundakachh. Malikpur.

Madhariya. Madhudia

Mahresa. Mangorghat.

* (Though no pargana of this name now exists in Khulna district, the name is preserved in the Kukiail Ward of Satkhira Municipality.)

The list of modern equivalents given here only represents the parganas at present existing in Khulna district: the list could be amplified if Jessore parganas were taken into account.

Two other sarkars, Satgaon and Fathabad, fell within the present area of Khulna district. Satgaon covered the extreme west of the district and Fathabad the north-eastern corner. From the Ain-i-Akbari lists of the parganas of these sarkars, the following names can be identified:—

Satgaon pargana. Modern equivalent.

Bodhan. Buran. Dhuliyapur. Dhulipur. Kalaru. Kalaroa. Magora. Mulghar. Srirajpur. Saprajpur. Hilki. Holki. Akbarpur. Agarpara.

Fathabad pargana. Modern equivalent.

Bholiabel. Belphulia. Kasodia. Kharoria. Yusufpur. Isafpur.

Many large modern parganas do not occur in the Ain-i-Akbari list: others are probably covered by vagaries of transliteration. The identification of

Bholiabel as Phulbelia, and hence Belphulia is due to Professor Mitra's ingenuity, and it is probable that similar instances have remained undetected. It is also noticeable that some of the more important omissions from the list. such as parganas Hogla, Jamira and Malai occur at present largely in the reclaimed Sunderban area, and hence may be assumed to have been created since Abul Fazl's list was prepared. Making allowances for these exceptions, it is still possible to trace the extent and Todar Malls sarkars. boundaries of within Khulna district by the present location of their component parganas, as will be seen from the following outline of the situation of the chief parganas.

Beginning from the eastern boundary of the district, the following old Khalifatabad parganas occupy the land between the line of the Bhairab river and great bil area on the north, and the Sunderbans on the south--Selimabad, Chirulia, Haveli, Khalifatabad, Rakdia and Madhudia. Westward of these the majority of the land as far west as the line of the Kajibacha-Rupsa-Bhairab rivers falls within Hogla pargananamed from the great reed (Typha Elephantina), which covers newly claimed Sunderban lands. Then from north to south come parganas Chengutia, Moheswarpasha, Khalishpur and Sahos stretching westward to the Bhadra river. Between the Bhadra river and the Kobadak the land is new reclamation and the old Khalifatabad parganas are not Adjacent to the Kobadak river come the lands of Tala, Ramchandrapur, Malai and Jamira-all probably old outposts of civilisation Sunderban stretching along the banks of Kobadak. Further north Dantia pargana extends westward to the Betna river where it meets pargana Kalaroa Hosseinpur of sarkar Satgaon. The lands of these parganas are somewhat intermingled, but the Betna is roughly the boundary of the two sarkars as far as Satkhira town; thenceforward a great bil area separates pargana Bhaluka of Khalifatabad on the east from Satgaon, Buran on the west. Bhaluka and Maihatti represents the southern extreme of the old Khalifatabad parganas: it, between the Khôlpetua and Kobadak rivers, lie reclaimed Sunderban appertaining to various parganas, of which Jamira is the chief. South of the bil area, which divides the two

sarkars, the rivers Banstola and Gutiakhali mark the western boundary of Khalifatabad Bhaluka; east of these rivers lie the lands of Bajitpur, Dhuliapur, Saprajpur and Nunnagar, which cover indiscriminately the old cultivated area of sarkar Satgaon and newer reclamation, and stretch southward to the confines of the Sunderbans near King Pratapaditya's old capital Iswaripur.

monograph by Professor Blochmann (Journal of the Asiatic Society of Bengal, 1873, page 217), he defines sarkar Satgaon as covering the 24-Parganas district up to the Kobadak. When that article was written (in 1873) the subdivision of Satkhira was part of the 24-Parganas district, hence the meaning of Professor Blochmann is that sarkar Satgaon covered the cultivated area of the present Satkhira subdivision and was bounded on the east by the river Kobadak. Since, however, the materials of the present cadastral survey have become available, it is necessary to qualify the above statement; actually the boundaries of the two Sarkars Satgaon and Khalifatabad, as detailed above, fall within Satkhira subdivision and are fairly accurately represented by the line Betna river—Boyra bil area-Banstola and Gutiakhali rivers. It is an interesting corollary inference that the now-moribund Betna river and the comparatively small Banstola Gutiakhali rivers were in all probability large natural boundaries in the 16th century as the Pasur and Sipsa are nowadays.

Similarly the boundary of sarkars Khalifatabad and Fathabad within Khulna district is the existing Bhairab river, in those days the "Bhairab" or terrible from its mighty current—but now terrible in another sense from the fatal malaria which follows its dried up course. North and east of the Bhairab lie the Fathabad parganas, Belphulia, Kharoria and Isafpur, and the Mokimpur bil area which was not included in any sarkar.

From the above description it will appear that the sarkars and parganas of Todar Mall's fiscal scheme were, as far as Khulna district is concerned, compact and well defined units. Many changes subsequently took place along with the transition from a territorial fiscal unit to an ihtiman or personal zamindari;

sarkars and parganas were split up and before long ceased to have any real fiscal importance, yet the sarkar died hard and the pargana survives till this day. In the later Mogul fiscal arrangements as detailed by Grant in his appendix to the Fifth report, references to the original sarkars are given in detail when new arrangements are described, and the sarkar was treated as historically important, just as the revenue thana is nowa-days. Some attempt even seems to have been made to preserve its territorial compactness by transferring parganas from one sarkar to another, for example the large pargana of Selimabad which was originally included in Sarkar Khalifataappears to have bad been Sarkar Fathabad ferred to some before 1728 when time included in the latter under Shujauddin Khan's assessment.

Even more long lived was the pargana. From the outset it appears to have had a significance wider than that of territorial unit for we find two parganas "Akla" and "Bunjer" the pargana of grazing and the pargana of forest produce in the Sunderbans sarkar of Muradkhana created by Sultan Shuja. Its significance therefore seems to have been that of unit of revenue collection rather than a territoral unit. Another example of this tendency is to be found in the fact that when the zamindars of a pargana brought Sunderban land under cultivation, they gave it the designation of their own pargana even though it was territorially quite distinct from Thus it happens that we find small tracts of isolated land in the south of this district designated in zamindari papers as land of Selimabad, Malai or Sahos par-This process seems to have been carried further, so that when the zamindar of one pargana obtained land of another pargana by purchase or partition, he treated the land so obtained as pertaining to his own pargana. It is easy therefore to understand that the importance of the pargana gradually merged in that of the estate or mahal, and sales or transfers of parganas which were common during the period immediately following the Permanent Settlement gradually gave place to transfers of estates or aliquot parts thereof, or of certain defined areas in estates under the designation of mauzas villages. The great service which the

revenue survey did for the fiscal administration of the province was to crystallize the estate in the Thakbast maps and the village or mauza in the Revenue Survey maps. It is true that the parganas were also recorded in these surveys and the final arrangement of the maps was parganawar, but this was a mere archaic survival and to-day the estate or mahal and the village or mauza are the two important forms of classification for purposes of fiscal administration.

Reference to pargana rates of rent and pargana standards of measurement crop up, it is true, in civil courts; but solely as archaisms, which always survive longer under the ægis of the law than elsewhere, and the Bengal Tenancy Act by its adoption of the expression of "prevailing rates of rent" in section 30 and elsewhere set its seal of approval on the tendency to forsake the artificial criterion of the pargana.

The Jaighir lands.—The lands comprised within the 19 Sarkars of Bengal were known as "Khalsa"; over and above these there were lands known as "Akta" or more commonly "Jaighir" lands which were in effect scattered grants for various purposes particularly for the maintenance of military force, and civil dignitaries. These lands of course produced no income to the treasury, but they were assessed at a valuation commensurate with the object of the various grants and entered at this valuation in the total rent-roll of the Subah, which was known as the Asal Tumar Jama, *i.e.*, the original established revenue of Todar Mall.

Mogul reassessments.—After the conquests of Man Singh had extended the frontiers of the Subah of Bengal, a reassessment of the revenue became essential; this was carried out by Sultan Suja in 1658 A. D. and resulted in an increase of the number of sarkars from nineteen to thirty-four and the number of parganas was at the same time increased to 1,350. Of the newly formed sarkars, the only one which requires reference here is the 32nd sarkar known as "Marad-khana" or "Jeradkhana". This sarkar appears to have covered a part of the waste portions of the Sunderbans which produced an income of 8,454 sicca rapees from two sources termed, quaintly to modern ears, pargan**a**s Akla or pasturage and Bunjer or forest produce. This assessment remained in force till 1722 when it was radically altered by the Viceroy Murshid Kuli Khan who divided the province of Bengal into thirteen large territorial divisions entitled chaklas. The identity of the old sarkars was however preserved though they were rearranged, and in some cases split up into the new chaklas. The pargana unit was still maintained, but the number of parganas was increased to 1,660 partly by addition of conquered territory and partly by subdivision of old parganas.

The whole of the old sarkar of Khalifatabad, with part of Satgaon, were combined into chakla Jessore, which must have included practically the whole of the then cultivated portions of Khulna district. Mokimpur, a pargana covering the bil area in the north-east of the district created apparently since Todar Mall's time, fell into chakla Bhusna and Selimabad into chakla Jehangirnagar. At this period began the transition from the territorially compact sarkars to the more scattered zamindaries. words a personal element was introduced; it was no longer a question of how much revenue will a certain hundred square miles produce, but how much revenue will a certain zamindar pay. The chaklas were framed generally with regard to the limits of zamindars' estates and formed the transition to the assessment by ihtimams or large estates and mazkuri or small scattered estates which was made only six years later by Sujah Khan in 1728. At this period the majority of the cultivated area of Khulna district was in the hands of the Chanchra Raj family and was known as the Isafpur estate. The history of this family is so bound up with the fiscal history of the district that some account of it is necessary here.

The history of the Chanchra Raj.—The family traces its descent to one Madhab Singha who held Fatehsingh pargana in the present Murshidabad district early in the 16th century. Before the end of that century, his two grandsons had been dispossessed of their ancestral property by one Sabita Ray who was granted the pargana of Fatching by the Mogul Emperor for assistance rendered to his general Man Singh. Both grandsons were thus driven to seek their fortunes elsewhere, and the younger, Bhabeswar Singha, took service with the armies of the Emperor Akbar under Azim Khan. Tradition relates

that he distinguished himself in a battle fought near the present Basirhat against the armies of the celebrated Sunderban king Pratapaditya and was as a result appointed a sort of warden of the marches near Keshabpur in Jessore, which was then the northern frontier of Pratapaditya's domains, with a jaighir of four parganas, viz., Saidpur, Imad-Muragachha and Mullickpur. Bhabeswar died in 1588 A. D. and his son Mahtab Ram succeeded him. In the wars, which eventually ended with the defeat of Pratapaditya, Mahtab aided the Mogul Emperors' armies, and was confirmed in the zamindarship of the parganas which his father had held, but no longer as a jaighir, for they were assessed to revenue about the year 1612 A. D. He died in 1619 and was succeeded by his son Kandarpa Ray, during whose lifetime the parganas of Datia, Kalishkhati, Bagmara, Islamabad, and Shajatpur were added to the family possessions. At this time the Mogul Emperors began to adopt a system of realising the revenue of smaller parganas through the agency of the greatest of the neighbouring zamindars, and Kandarpa was appointed to realise the revenue of the smaller parganas adjacent to his zamindari. When these parganas fell into arrears of revenue, Kandarpa purchased them, and this practice was continued and elaborated by his son Manohar Ray, succeeded him in 1649, Krishna Ram, grandson succeeded Manohar in 1705. is considerable ambiguity about the dates when the various parganas were acquired, for the available lists do not agree in this matter. The following is an extant list of parganas acquired by the Chanchra family between 1649 and 1729: Ramchandrapur, Chengutia, Isafpur, Malai, Tala, Bhatla, Sobna, Phalua, Paikan, Kalikata, Sripati Kabiraj, Panoan, Buro Silimpur, Manpur, (Buran?), Rangdia, Rahimabad, Sayedmamudpur, Maguraghona, Bherachi, Raimangal, Bonder Mukundapur, Sripadgaha, Hosseinpur, Nurnagar, Sahos, Sobnali, Bajitpur, Rahimpur, Islamabad, Bekar Raja, Dhuliyapur, Shahapur, Moheswarpasha.

This period was the culminating point of the fortunes of the Chanchra family; after the death of Krishna Ram in 1729, the dismemberment of the estate began. The first great act of dismemberment was the separation of four annas share by

Sukh Deb Ray, son of Krishna Ram, who in 1731 at the instance of Monohar's widow conferred this share upon his brother Shyam Sundar. This was the foundation of the separate estate now known as the Syedpur Trust Estate, of which the Collector of Khulna is agent; the history of this estate will be referred to in more detail later. Apart from the separation of the four annas share, certain parganas, including Kalikata, Paikan, Manpur, Silimpur, Panoan, and Buran, had been transferred from the estate between 1715 and 1729.

This period covers the settlements of 1722 and 1728 referred to above, when the estate as then existing was consolidated in chakla Isafpur or Jessore, and six years later into the intiman of Isafpur.

Sukh Deb Ray died in 1745 and was succeeded by his son Nil Kanta Ray; it was at this time that the decline of the Isafpur estate which began with the separation of the Syedpur estate, acquired momentum. The main reason of this was the large expenditure incurred by Sukh Deb and Nil Kanta, and continued by Nil Kanta's son Srikanta, on religious and pious objects, both in the form of construction of sacred buildings and in alienation of property as rent-free grants. Ultimately in the time of Srikanta Ray, who succeeded Nil Kanta in 1764, the Committee of Revenue were obliged to interfere, presumably in the interests of Government revenue. An enumeration of the Raja's debts compiled by the order of the Committee in 1784 shows that they then amounted to Rs. 30,000. Six years later the decennial settlement took place which became permanent in 1793. At the time when the Committee interfered in the Raja's affairs, the total Government revenue of the Isafpur and Syedpur estates together would appear from Grant's appendix to the "Fifth Report" to have been Rs. 3,50,592. At the decennial settlement the revenue of these two estates was fixed at Rs. 3,92,955, i.e., an increase of over Rs. 42,000.

71. The Permanent Settlement.—It is a part of the general revenue history of Bengal, rather than of any particular district, to describe the principles on which the decennial settlement was based. A brief description of them, together with their application to the Isafpur estate in particular, is all that can be given here.

The basis of the settlement was the existing assets of the estate as determined, by the most up-to-date information in possession of the Collector, subject to certain additions and deductions. The most important additions consisted of the previous alienations from estate in the way of rent-free grants, or grants of money for religious and charitable purposes. Elaborate principles were laid down for decision as to whether these alienations were to be regarded as rightfully deducted from the assets of the estate or whether they were to be included in the assets. These principles were subsequently embodied in the Resumption Regulations XIXXXXVII of 1793, which were framed partly with the object of enabling the zamindars to recover for themselves the proceeds of these alienations which had been included in the assets of the estate at the decennial settlement and partly with the object of enabling Government to assess to revenue such grants as had wrongfully escaped inclusion in the assets. The main additions to the assets of the Isafpur estate | were Rs. 13,674 spent by the Raja for temple service and Rs. 5.043 hitherto excluded from the assets of the estate as "briti" or stipendiary lands for the private purse of the Rani.

Apart from these additions to the assets, there were minor amounts added for various purposes, e.g., Government undertook for the future to pay the kanungos employed for the keeping of the zamindars' accounts—so a sum equivalent to the pay of the kanungos was added to the estate assets. The deductions from the assets fell into two main heads. Firstly certain tenures or taluks hitherto regarded as subordinate to the estate and paying revenue to the zamindars, were separated and allowed to pay revenue direct to Government, thus entailing a diminution of the estate's assets. The taluks are now known as kharija or separated taluks and bear a separate tauzi number in the Collectorate. I have not been able to trace any account of the taluks thus separated from the Isafpur

The other deduction from the assets arose from the decision of Government to abolish the "saiyar" duties, i.e., duties in the nature of "octroi" and "tolls" levied by the zamindars apart from their collections of land rental. The most important of these duties were

the tolls levied upon "hâts" and "gunges," i.e., market places within the zamindari. Government having decided to abolish these duties, deducted the total value of these collections from the assets of the estate. The zamindars welcomed the deduction from the amount which they had to pay as Government revenue and in most cases went on quietly realising the duties as of old. The amount of the duties in the Isafpur estate was estimated, at the time of the decennial settlement, as Rs. 4,493.

. The assets of the estates having been determined by the above methods, Government proceeded to settle the zamindars allowance. The assets were divided into parts, of which the zamindar eleven received one part and Government ten parts the ten SO calculated were the revenue of the estate or the sum annually demandable from the zamindar. This, as noted above, was Rs. 3,92,955 for the Isafpur and Sayedpur estates combined, i.e., Rs. 3,02,372 for the former and Rs. 90,583 for the latter.

The assessment of the Isafpur estate.—In view of the subsequent ruin of the Isafpur estate it is of interest to enquire whether the assessment of the Permanent Settlement on this estate was inequitable. On the one hand we have Grant's estimate made in 1788 and reproduced in his appendix to the Fifth Report in the following words: "In all events the recoverable deficiency in the rental of the zamindari entire as here described, in its two divisions of Yasufpur and Sayedpur, cannot be estimated at less than one lakh of sicca rupees": in other words Grant considered that the estate was assessed at about a lakh of rupees less than it could bear.

On the other hand we have the undoubted fact that within a few years of the decennial settlement, which involved an increase of Rs. 42,000 only, as noted above, in place of one lakh, and in spite of the powers given to the zamindars by the resumption regulations to recoup themselves for a considerable portion of the added assessment, the Isafpur estate was irretrievably ruined.

If Grant was correct or even approximately correct, the assessment was not inequitable for it amounted to less than half the increase which his researches into the accounts of the estate led him to

believe that it could bear. But if Grant was correct how came it about that four years before he wrote, the Committee of Revenue were constrained to take action in the case of the Raja's debts amounts to Rs. 30,000—an inconsiderable sum for a zamindari paying several lakhs of rupees as revenue.

The explanation is probably two-fold. Firstly Grant took no account of the large sums which as described above were spent by Sukh Deb, Nil Kanta, and Srikanta on religious purposes. Certain grants could be, and were, invalidated by the resumption regulations, and the Raja could have legally resumed these grants. But human nature and particularly pious human nature stood in the way, and it is certain that very little use was made of these resumption regulations by the zamindars. Furthermore no enactment could turn back into hard cash the large sums spent on religious and other edifices.

Secondly the punctual realisation of Government revenue, provided for by a series of Sale Laws was a new feature in the administration and entirely upset the agelong habits of procrastination of payment. It is a part of the general revenue history of Bengal to describe how the zamindars failed to realise from their tenants the demands whose payment was promptly enforced by Government and how the "haftam" and "panjan (Regulation VII of 1799 and Regulation V of 1812) were enacted too late in most cases to do anything except to enable a ruined and embittered landlord to wreak a tardy vengeance on his tenants.

In the Isafpur estate the effects of the Permanent Settlement were not long in appearing. As early as 1795 the estate was notified for sale for default in payment of revenue but the evil day was postponed. The following year pargana Malai was sold under the Board's orders and in 1797 Rangdia, Jatia, Ramchandrapur, Chengutia and Emadpur were also sold for default of revenue. Sahos, Saidpur, Rasulpur and part of Isafpur were lost about the same time, the former private sale, and the three latter apparently under orders of the civil Finally in spite of the Raja's efforts to make money, some of which were of a distinctly discreditable nature, the peripeteia was complete in 1798 when the rest of the estate was sold up, and Raja Srikanta died, leaving a widow and minor child, Bani Kanta, in destitution.

They were supported by Government for some time until success in litigation regained for the family their share of Syedpur pargana and the whole of Imadpur, and later on Sahos pargana was restored to Bani Kanta's son Barada Kanta by Government into whose hands it had come by forfeiture on the ground of a fraudulent auction sale. Kanta was made a ward of court and the estate during the wardship and after its release, under the capable management of Barada Kanta, regained some of its ancient glory. The history of the family reads like a Greek tragedy, and gives strong support to the view that the decennial settlement was too hastily made permanent without adequate knowledge of the zamindars' resources and with too great reliance on doctrinaire legislation took but scant account of the temperament of the people it designed to benefit.

zamindaris.—The The smaller same fate as overtook the great Isafpur estate after the Permanent Settlement befell all the neighbouring smaller estates with two exceptions, namely, the Svedpur four annas estate and the estate of Sultanpur Kharoria. These exceptions are of interest particularly in the case Syedpur whose the estate, capable history shows that under management it was possible for estates to pay the revenue assessed at the decennial settlement with the punctuality required by the Permanent Settlement Regulation. Had all the zamindars been of the calibre of the owners of this estate the debâcle which ensued in the great zamindaris at the end of the 18th century would have But the framers of the been avoided. Regulations confused the ideal with the real; the well-known homily in Regulation I of 1793 "To discharge the revenues at the stipulated periods without delay or evasion and to conduct themselves with good faith and moderation towards their dependent talukdars and raivats are duties at all times indispensably required from the proprietors of land," proved vain words; and the legislation intended to "promote the future ease and happiness of the people" (Regulation I of 1793 Art. VI) proved in most cases a source of ruin to the proprietor and oppression to the tenants.

74. The Syedpur estate.—The exceptional cases of the Syedpur and the Sultanpur Kharoria estate merit some notice. As described above, it was in 1731 that Sukh Deb Roy, zamindar of

the Isafpur Estate, conferred four annas share of the estate on his brother Shyam. Sunder at the instance of his grandmother. Shyam Sunder held this four annas estate (which was known as the Syedpur estate from the name of the pargana in which much of the share fell) till his death in 1750 when he was succeeded by his son Ram Gopal, who died childless in 1757. On December 20th, 1757, Mir Jafar conferred 24-Parganas near Calcutta upon the English as a part of the bargain by which he succeeded Seraj-ud-dowlah. Among the lands so conferred was a jaighir belonging to Mirza Mahomed Sala-uddin, the Foujdar of Hooghly. In order to compensate the Foundar for the loss of his jaighir Mir Jafar, observing that the Syedour estate was left ownerless by the death of Ram Gopal without issue, conferred the estate upon him in return for the land taken for the English. After Salauddin's death, the estate was managed by -widow, Manujan, a remarkable woman of considerable force of character and with business instincts which were perhaps due to her descent from an Ispahan merchant. She held the estate through the crisis of the Permanent Settlement, and at her death in 1803 made it over intact to her step-brother Mohamed Mohsin. The importance of the history of the estate does not end with its successful emergence under the guidance of Manuian from the difficulties of the Permanent Settlement, for the estate is now under the trusteeship of Government with the Collector of Khulna as the agent of the This befell in the following estate. manner.

HISTORY OF THE SYEDPUR ESTATE.

75. The Mohsin endowment.—Mahomed Mohsin, a man of great learning and piety, executed a deed of endowment in respect of the four annas estate and of certain other property in Hooghly district dedicating this property for religious purposes. This deed was executed in 1806 and ran as follows:—

"I Haji Mahomed Mohsin, son of Haji Fuzulla, and grandson of Haji Fuzululla of Zilla Hooghly, being in a sound state of mind and judgment in the faith of God, do hereby declare this to be the last Will and Testament.

"The zamindari of pargana Syedpur in the district of Jessore and pargana

Sobnali in the same district, also a dwelling-house in Hooghly designated Imambara, Imambazar Hat, Hooghly, and the furniture, etc., of the Imambara as per separate list have descended to me by inheritance, and are now in my possession. Having no children, nor relatives nor connexions who could inherit my being incumbent amd it property, religious me to keep up the obligations of my faith, which have been kept up and observed from my ancestors, I do, therefore, bequeath and endow all my worldly possessions for religious purposes and for the expenses as hereinafter mentioned.

"I do hereby appoint Rajab Ali Khan, son of Sheik Mahomed Siddique, and Sakir Ali Khan, son of Ahmed Ali Khan, who are good men and known to me Matwalis. That the said Matwalis, with the consent and advice of each other, are jointly to perform the trust herein reposed in them in the manner following:—

"That the Matwalis, after the payof Government revenue, are divide the remainder into nine shares, three of which are to be appropriated for the performance of the Imambara, the Mohurram festival, and the repairs of the Imambara and the Prophet's tomb. That two shares the two Matwalis are to appropriate to themselves equally their own use and that four shares are to be appropriated for the amlahs of the establishment and those whose names appear in a separate list under my seal and signature. The daily expenditure, the pensioners' allowances, the expenses of respectable people, and the expenses of the peons and others, present incumbents, are left to the discretion of the Matwalis to continue or otherwise after my death; and all power over my property is vested in them in trust for the purposes above stated; and should the Matwalis consider themselves incapable of performing the trust herein confided in them, they can transfer their power as Matwalis to others."

In accordance with this deed, the endowment property remained under the control of two trustees till 1816, when owing to quarrels and dissensions among them, Government made use of Regulation XIX of 1810 to take charge of the estate in order to save it from ruin. The former trustees were relieved of their duties, and Government eventually took

over the duties of one trustee; it was at the same time decided that the other trustee should be a Muhammadan of the Shia sect whose duty would be to control Imambara. expenditure of the Government has little concern with the latter trustee beyond paying to him the due amount for the expenditure on the Imambara in accordance with the term of the endowment, but the administration of the four annas estate is still under the control of Government with the Collector of Khulna as agent, and is one of the important duties of the latter. appointment of fresh trustees did not end the estates trouble, for shortly afterwards the cutcherry near Jessore and all records were burnt by an amlah who absconded. This necessitated a fresh settlement of the estate, and in 1823 and 1824 the bulk of the property was given out in patni settlement, and the premia or salami realised for these settlements were comwith existing accumulated cash assets of the estate into a fund which Rs. 10,57,000: this fund totalled invested in Government securities. By a decision of the Governor-General (Sir Charles Metcalfe) in 1835, this fund was made into the nucleus of a Trust Fund, and to it was added the one-ninth share, which had been previously paid to the trustee, whose duties Government had The four-ninths share taken over. appropriated under the will to establishment and pensions remained liable for those charges but, when they lapsed, the surplus income was to be added to the Trust Fund. After provision had been made for repair of the Imambara and other necessary building charges had been met, the income of the fund was applied to the establishment and maintenance of Hooghly College open to members of all religious communities. As however Muhammadans benefited to a comparatively small extent by this use of the Trust Fund, it was decided by Government in 1873 that the fund should devoted to the advancement of Muhammadan learning throughout Bengal. It has since then been used for payment of fees of Muhammadan students, appointment of Persian teachers and for other similar purposes in connection with Muhammadan education.

Apart from the Trust Fund, the current income of the estate provides a sum of Rs. 60,000 annually, which is devoted to the purposes specified in the will. As explained above, one-ninth plus the lapsed portion of four-ninths goes

into the Trust Fund, and of the remaining four-ninths the Matwali for the time being receives one-ninth and the other three-ninths is controlled by a committee established under Act XX of 1863 for supervision of the endowment for religious purposes in accordance with the terms of the will.

76. The administration of the Syedpur estate.—The estate consists of three

tauzis borne on the Khulna Tauzi Roll. Two of them, viz., tauzis 188 and 175, correspond to the shares of parganas Sayedpur and Sobnali mentioned in the will. The third is a small resumed alluvial accretion called Chor Bhadra Madi, bearing the Tauzi No. 571; it is now let out in permanent tenure right. The following table shows the existing Government revenue and the demand from the estate:—

| Touzi | | Ar | ea. | Govern | 1111-111 | | | | | | 1) | ema | nd witho | ut i | nte | rest. | | _ |
|-------|--|------------|-------------|---------------|----------|----|--------|-----|----|----------|----|-----|----------|------|-----|-----------------|-----|----|
| No. | Name. | Acres | Dec. | rever | | | Crest | ·s. | | Rent | | | Cesse | *. | | Tot | а). | |
| 188 | Zamindari Syedpur Trust - Estate, | | | Rs. 93,072 | | | | | | : | | | i | | | Rs. 1,96,008 | | |
| | Datae., | In Khulm | i District, | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | 186,187 | 15 | 1 | | | | | | | | | | | | 1 | | |
| | | In Jessore | District | j | | | | | | | | | | | | 1 | | |
| | | 67,240 | 77 | | | | | | | İ | | | | | | 1 | | |
| | | 250, 168 | 113 | | | | | | | | | | | | | | | |
| 175 | Zamindari Sobnali Sycdpor Trust Estate. | 4,652 | 19 | 2,043 | 3 | 9 | 496 | 13 | O | 3,564 | 10 | 3 | 419 | 1 | 9 | 4.013 | 12 | 0 |
| 571 | Bajcapti Taluk Bha Ira Nadu Char Lupta Sobna. | 31 | 45 | 30 | 7 | `` | | 6 | U | 33 | 13 | 10 | 5 | 4 | \$* | 39 | 2 | 7 |
| | Votat | 255,151 | 67 | ! : 95,146 | 1 | 2 | 22,881 | 7 | :: | 1,80,622 | 12 | 1 | 19,435 | 15 | 7 | 2,00,061 | 11 | 71 |

For administrative purposes, the estate is divided into "lots", which may be either patni tenures held under the estate, other tenures not held under the patni regulation, or raiyati mahals. A broad distinction is drawn between the patni lots and

the other lots which are grouped together as "khas tenures". The following table shows the distribution of the lots among the tauzis and their existing demand:—

| | | | Rent demand. | nand. | | | | | | Cess demand | und. | | Total | rent and c | Total rent and cess demand. | |
|---|------|-------------------|--------------|---------------------|-------|-------------|-------|---------------------------|-------------|-------------|------------|--------------------------------------|---------------|------------|-----------------------------|----------------------------|
| Name of Estate. | Lots | Patni. | Lots. | Lots. Farmed. Lots. | Lots. | Khas. | Lots. | Total. | Patni. | Farmed. | Klas. | Total. | Patni. | Farme 1. | Kha•. | Total. |
| • | | RS. A. P. | | | | Rs. A. P. | | RS. A. P. | Rs. A. P. | | RS. A. P. | Rs. A. P. | Rs. A. P. | | RS. A. P. | Rs. A. P. |
| Zamindari Syedpur Trust Estate. | # | 144 1.29.938 10 2 | : | : | 3 | 16 6 280'25 | 161 | 194 1.77.024 3 111 | 11.973 10 4 | : | 4,010 14 9 | 4,010 14 9 15,984 9 1 1,44,912 4 6 | 1,44,912 4 6 | : | 51,096 & 61 1,96,008 13 | 1.96,008 13 \$ |
| Zamindar i Sobnali Syed- pur Irust Estate. | 7 | 1,927 13 7 | : | : | 1~ | 1,636 12 8 | 11 | 3,564 10 3 | 316 8. S | : | 132 9 9 | 449 1 8 | 2 0 1587 | : | 1.769 C 5 | 4,013 12 0 |
| Char Bhadra Nadi | : | : | ; | : | - | 01 81 83 | | s 13 Ja | i | : | 5 4 9 | ъ т 1.3 | : | : | 39.2.7 | 39 2 7 |
| Total | 148 | 148 1.31,866 7 9 | : | : | 23 | 45,756 4 34 | 907 | L.SO, A22, 12, 15, 290, 2 | 15.290 2 4 | : | 4,14× 13 3 | 4,14× 13 3 19,42× 15 7 1,47,156 10 1 | 1,47,156 10 1 | i: | 52,505 1 61 | 52,305 1 61 2,00,061 11 72 |

The 58 Khas Tenures are made up as follows:—

5 Lots Resumed Lakheraj.

29 Lots Resumed Chakran.

24 Lots called Khas Mahals, but actually including the following permanent tenures:—

| Lot No. | Name of Tenure. | Thana. | Агев | Rent | | C | (*##, | |
|------------|-----------------------|--------|------|----------|----|-------|-------|----|
| | | | | RS. A. | ŀ. | Rs. | ۸. | r. |
| 161 | Sychatty | | ٠.٠) | | | | | |
| 163 . | Kashipur | | } | 1,373 14 | 9 | 92 | O | y |
| 164 | Tentulia | |] | | | | | |
| 178 | Bil Gandimari | | | 469 9 | O | 73 | 6 | 0 |
| 182 | Malikhana | l l | | 25 12 | 4 | | | |
| 185 | Chak Charl Jeol. | | | 350-14 | 0 | 5-4 | 13 | 3 |
| 186 | Chak Badur- gacha. | | | 294 × | 0 | 27 | 4 | 3 |
| 187 | Chak Bagachra | | | 160 2 | 6 | 21 | 11 | () |
| 188 | Bii Pabia | | | 4,750 0 | (1 | 676 | | 3 |
| 189 | Bil Dakatia | | | 427 9 | 0 | 144 | 5 | ** |
| 7 | Sankariganti | | | 426 14 | × | 42 | 15 | 9 |
| • | | | | | | | | - |
| | Total | | | n,279 4 | 3 | 1,102 | 13 | 3 |

The balance of the Khas Mahal lots are held under raiyati collection which is distributed among collection circles in the following way:—

| Tahsil Circle. | Ren | ıt. | İ | Cons | ١. | |
|--|------------|-----|----|-------|----|----|
| The same and the s | Rs. | Α. | Р. | Rs. | Α. | Р. |
| Sobna | 9,417 | 0 | 51 | 950 | 13 | ю |
| Jessoro | 8,613 | 9 | 6 | 497 | 14 | 0 |
| Maheswarpasha | 9,091 | 13 | 4 | 739 | 9 | 2 |
| Khalishpur * | 13,354 | s | 9 | 857 | 11 | 0 |
| Total | 40,477 | U | 1 | 3,016 | O | 0 |

77. The Syedpur patni tenures.—It should be noted that the income of the estate as given in the above tables is liable to alteration as a result of proceedings under section 105 of the Bengal Tenancy Act. The patni tenures are of course "mokarari". i.e., their rents cannot be enhanced, but the question of the enhancibility of the khas tenures and raiyati rents has been a subject of considerable litigation in the past which has ended partly in favour of the estate and partly in favour of the tenure-holders.

The question arose in 1909 in the course of petty settlement proceedings under the Bengal Tenancy Act in Dihis Moheswarpasha and Siromoni. Most of the tenants of the estate vigorously resisted

the proceedings under section 105 which were instituted by the estate in order to secure enhancement of rents. cases were fought out up to the High Court, and after protracted litigation, the tenants were in the majority of the cases successful in resisting the enhance-In other cases however compromises were entered into by which the rents were enhanced. It cannot therefore be said that the principle of nonenhancibility of rent has ever been affirmed or admitted in respect of the tenancies of these dihis; further discussion of the question would be premature as at the time of writing it is still open to the estate to institute proceedings in these dihis under section

One of the original patni tenures in Mauza Khesra in Satkhira subdivision was purchased by the estate in a sale under the Patni Regulations in 1888, and was then made subject of a petty settlement under the Bengal Tenancy Act. During the present proceedings, the tenure-holders and raivats claimed mokarrari right. The cases were complicated by the fact that in many cases the petty settlement records showed tenures to be permanent, but were silent as to the question of fixity of rents. In such cases the estate claimed that under section 115, Bengal Tenancy Act, it was not now open to the tenants to claim the benefit of section 50, Bengal Tenancy Act; but this contention was disallowed for in the absence of a vital entry such as fixity of rent, it seemed impossible to hold that the condition laid down in section 115. Bengal Tenancy Act, had been complied with. All cases were therefore treated on their merits; in particular the rents recorded at the petty settlement proceedings were tested by entries in the jama wasil baki papers of the estate dating back to 1227 B. S. and the rate of rent of identifiable tenancies had clearly been altered since then the claim of mokarrari was disallowed: in other cases it was generally allowed, the provisions of section 50 being applied where the existing jama could not be clearly identified in the old jama wasil baki papers.

78. Sultanpur-Kharoria.—Apart from Syedpur, the only other notable exception to the ruin of the old estates after the Permanent Settlement was the estate of Sultanpur-Kharoria, which lies mainly in the north of Bagerhat subdivision. The early history of this

pargana is obscure; tradition relates that it was given to one Janaki Ballabh together with pargana Belphulia by Raja In the year 1774 the Pratapaditya. estate was in the hands of Krishna Chandra Ray Chaudhuri whom the family tree of the Mulghor Chaudhuries shows to have been seventh in descent from Janaki Ballabh. In this year on the ground of default in payment of revenue the estate was taken from its owners and under Warren Hastings' Kasinath orders was settled with one Dutt of Calcutta who after some litigation with the former proprietors was finally recognized as the zamindar of the pargana at the time of the Permanent The assessment of this Settlement. estate in 1790 was exceptional, for the Collector did not increase its assessment on the ground that it had been fixed some time before (i.e., in 1784) by the The Governor-General. estate assessed more leniently than its neighbours survived the Permanent Settlement and is still in the hands of the descendants of Kasinath, by whom it has been partitioned into three shares known respectively as the Kharoria Boro Zilla, Mejo Zilla and Chhota Zilla. In 1900 the Mejo Zilla share was formed into a company known as the Kharoria Mejo Zilla Zamindari Syndicate, Limited, which has subsequently acquired a 99 years lease of 4 annas of the Boro Zilla share.

79. The Resumption Regulations.—After the Permanent Settlement, the 'working of the resumption regulations became the great problem of revenue administration in all districts of Bengal for the next fifty years. In the area under report resumption of surreptitiously cultivated Sunderban land outside the limits of the decennially settled estates overshadowed the resumption of invalid lakherajes or alluvial accretions. In this respect, as in all other questions of revenue administration, the revenue history of the area covered by Khulna district is almost entirely a history of Sunderban administration. This as explained above forms the subject of a separate chapter in this report.

80. The revenue survey.—The great land-mark of revenue administration in this as in every other district in Bengal was the revenue survey in the middle of the 19th century. It was preceded here, as elsewhere, by the thak-bast survey which roughly delimited the exterior

boundaries of village units, and represented the estates occurring within these peripheries in the form of choks (i.e., blocks) on the map. The revenue survey followed the thak-bast survey; in this survey no map was made of the estates, but the village boundaries were accurately mapped and interior topographical details, such as orchards, swamps, groups of houses, etc., were shown roughly in situ by conventional signs. Khulna district east of the Kobadak river was then a part of Jessore, and was surveyed along with the rest of that district and with the districts of Faridpur and Bakarganj by a party under Captain Gastrell. The work began in 1856 in Jessore and was continued until the completion of the survey of It was not Bakarganj in 1863. connected at the time with the great trigonometrical survey, which had not then been extended to these districts, in 1866-67 a series of triangles connecting the East Calcutta Longitudinal with the Eastern Frontier series was carried across this portion of Bengal by Lieutenant Thuillier and several points fixed during the revenue survey were connected, by help of these operations, with the great frigonometrical survey.

West of the Kobadak river in the area now covered by Satkhira subdivision, the revenue survey was part of the 24-Parganas district survey and was carried out about five years before the Jessore survey by Captain Smyth. The only subsequent survey which has affected this district was the Topographical Survey of the Sunderbans by Colonel (then Major) Hirst in 1906—1908. This will be referred to in the part of this report dealing with the Sunderbans.

SYSTEM OF LAND TENURE.

Tenures in the older zamindaris. —The system of land tenure in the district is superficially complicated by the fact that it has grown up in three different groups each of which has employed to some extent a separate nomen-The underlying principles of clature. development are however the same, and by looking to the principles rather, than to the terminology, it is possible to obtain a clear idea of the system. three groups referred to are the older zamindaris of the west and centre of the district, the newer zamindaris of the south, and the eastern zamindaris where

the influence of the Bakarganj land system is felt.

The history of the Chanchra raj given elsewhere in this report is typical of the conditions under which the older zamindaris grew up. In the earliest dawn of the history of the Ganges delta we find Hindu princelets, such as the twelve Bhuias or autochthonous kings, occupying the territories in the swamps and jungles of the delta which, like Hereward the Wake in Norman times, they had consolidated into kingdoms under pressure of invaders. these kings the system of Government was primitive and patriarchal, though some of the earliest jaighirs or service tenures, and brahmottars or grants for religious purposes date back to their times, there was probably no other form of intermediate land tenure in the sense in which we now use the The land belonged to the village community and the King received the royal share of the produce.

The disruption of this archaic state of affairs took place when the spread of the Mogul arms began to reach Bengal, and Muhammadan warriors or their Hindu adherents carved great estates for themselves out of the Bhuias' principalities. The typical instance of this in the present district of Khulna was the carving of the Chanchra raj estates out of the Bhuia King Pratapaditya's dominions. When a jungle principality became a vast zamindari estate, a tenure system became a logical necessity, for on the one hand the zamindar was unable by his direct exertions to realise the revenues of the great tracts with which he was but imperfectly acquainted and on the other hand natural affection or gratitude for service rendered often led him to make grants of land or of the revenues thereof, either for a small annual payment or outright, as it were in fee simple, to his relations or to his servants. "" Be thou ruler of twelve cities" he would say in effect and the recipient's taluk was created. If the grantee remained dependent on zamindar in the sense that he was bound to make him an annual payment, the taluk was a dependent one, went by a name connoting dependence, such as shikimi taluk, taksimi taluk, patni taluk, or samilat taluk. If however the grant was outright, the taluk became independent and . was in effect a small separate estate. It must not be supposed that the creation of independent taluks was entirely the work

of the Permanent Settlement. As is well known many dependent taluks were, at the time of the Permanent Settlement, given independence usually under the name of kharija taluks, but taluks, of this nature had existed long previously. In the list of the parganas of sarkar Khalifatabad given by Abul Eazl in the Ain-i-Akbari, the following names occur:—

Taluk of Kasinath.
Taluk of Srirang.
Taluk of Mahesh Mandal.
Taluk of Parmodar Bhattacharjya.
Taluk of Sripatkiraj.
Kanges Taluk Parmanand.

Such taluks, like the present day kharija taluks, were independent units, and stand as it were at the head of the tree in the system of land tenure. In effect such taluks are equivalent to separate estates, and in examining the system of subordinate land tenures, it must be clearly premised that whatever applies to the estate or zamindari, applies equally to the independent taluk.

tenures 82. Abadkari of the **south.**—As described above, taluks might have been created either for facility in administering the estate, or from motives of natural affection and gratitude. A third ancient type of taluk was the "abadkari" or "jungleburi" taluk, which was created in forest areas by a grant given for the purpose of reclaiming the waste. Such grants have been made by Government as paramount power during the last century and a half, but before that time, the zamindar of an estate containing vast forest tracts frequently made such grants, and many existing ancient taluks are of In the older zamindaris this nature. of the west and centre of the district their origin is shrouded in the mist of time, and they are indistinguishable by incidents or nomenclature from other taluks. But in the southern area where reclamation is comparatively recent, a separate nomenclature has survived, thus giving rise to the second of the three groups referred to above.

83. The eastern tenures.—The third or eastern group comprises the area where the influence of Bakarganj conditions, manifested mainly in the great pargana Selimabad, is predominant.

• Eastern Bengal remained undeveloped longer than Western Bengal, and the

Bakargani system of tenures; as pointed cut by Major Jack in the Bakarganj Settlement Final Report, is based upon grants made for reclamation of jungle.
"Under the head of development", he says, " may be included all intermediate tenures, which were granted in forest or waste land for the purpose of bringing it under cultivation. This type of tenure is clearly the stock type of the Bakarganj system, and to this type belong almost, if not all, of the haolas and nim haolas and a large proportion no doubt of the osat nim haolas". ly therefore the origin of the scuthern and of the eastern groups of Khulna tenures was identical, and the existing difference is only one of nomenclature intensified by the fact that subinfeudation has been carried to greater extremes by the restless Muhammadan peasantry of Bakarganj than by the more placid Hindu population, which predominated in the Khulna Sunder-

Origin of abadkari tenancies.-84. Therefore in a conspectus of the Khulna tenure system the fundamental fact is the existence of the dependent taluk, but whereas in the old zamindaris of the north and west of the district there is but an adumbration of the jungle clearing taluk, in the south and east of the district this form of taluk is the predeminant feature. The outstanding feature of a jungle clearing tenure is the fact that it gives an unencumbered right to land, whereas the grant of dependent. tenures of the other classes discussed above, normally gives only a right to collect rent from persons with existing rights in the land. Grants of tenure right in the grantor's unencumbered or khas cultivated land may under certain circumstances be possible, for instance, when a landlord purchases the lands of a tenant and leases them to his own relations who in turn settle tenants upon them. Such cases are however comparatively rare and were no doubt rarer in the past when tenants were scarcer than they are nowadays. For practical purposes the broad distinction stated above The jungleburi tenureholds good. holder has therefore to settle tenants upon the land and to give such assistance as is requisite for the reclaiming of the waste, whereas the tenure-holder of other types has merely to collect rent custom. from men with existing rights in the land. At first sight therefore it would appear that the jungleburi tenureholder who was at liberty to induct

tenants on to the land on such terms as he pleased was in a stronger position with regard to these tenants tenure holders of the other classes who could not disturb existing rights. But partly owing to the difficulty of obtaining tenants willing to sultivate jungle areas and partly owing to the strong sense of the rights of the first man "who breaks the soil" which is prevalent throughout India, the cultivating tenants of an "abad" or jungleburi grant obtained by custom rights which the law, as it stood when they were inducted, would not have given Such tenants in Bakarganj and in the east of Khulna district are known as "karsha" tenants; the growth of their customary rights is well exemplified by the fact that whereas in 1881 Mr. Dampier, the then Commissioner of the Sunderbans, reported that the karshadars in the recently resumed Sundarban estates were "a depressed body with no rights of any sort,", the Bakarganj Settlement was able some seventy years later to treat them as the privileged "raiyats 3 of the Bengal Tenancy Act without opposition or objection. In the present settlement operations they have, of course, been recorded as settled raivats without a shadow of objection from anybody. the scuthern areas of Khulna district the word "karsha" is not used; the general term for cultivating tenants in "praja", but owing to the looseness of this term (which merely connotes a dependent interest), we adopted the Tenancy Act term "raiyat," again without any objection.

In the old zamindaris of the north and west of the district, the raiyats were generally in occupation of the land before the process of subinfeudation began, and the new talukdars found them established with all the castomark rights which were afterwards crystallized by the Tenancy Acts, particularly Act X of 1859 and Act VIII of 1885. It is to the status of these raiyats that the status of the "karshadar" of the east and the "praja" of the scuth was assimilated, and at the present day the three types are unified not merely in the Procrustean bed of the statute books and law ocurts, but by the more discerning criterion of tradition and village custom.

85. Submittendation.—The above description applies to the simple consor a single tenure-holder created under the name of talukdar by the zamindar of an

estate, and of the cultivating tenants holding directly under that talukdar. This is the germ of subinfeudation, and the causes which primarily led to the creation of the taluk have been the main-springs of the further process of subinfeudation. Major Jack in the Bakargani Final Report deals exhaustively with this process, giving it a six fold origin vit. (a) development, (b) promotion, (c) revolt, (d) interpolation, (e) fraud and (f) family arrangement.

This classification holds good for Khalna district with the qualification that the heads (a) of development and (d) of interpolation are by far the most important. These two heads in effect represent the two types already described as being prevalent respectively in the south and east, and in the north and Development inwest of the district. cludes all forms of tenures created for reclamation of waste, and interpolation in the words of Major Jack covers "all leases by which an intermediate interest is created in land which is already occupied by tenure-holders or raiyats". the development the outset tenures have received separate nomenclature; in Bakargan; and the east of Khulna district they were known as haoles and in the rest of Khulna district Time has obscured the as "grantis" meanings of these terms to some extent. and the names have been imitated in areas to which they do not strictly apply. but in origin every true haoladar and gantidar, whether he held under the zamindar of an estate or under an abadkari talukdar or any subordinate tenureholder, was the man who took a definite black of jungle land for the purpose of settling tenants on it and so clearing and cultivating it If he found that his resources were not equal to the task of dealing with the whole area of his haola or ganti, he sublet a block of land to a nigghadar or dargantidar, who in turn could sablet a part of his land to an gest nim haoladar or a segantidar. Thus the claim of subinfeudation would 144

Talukdar.
Hooladar or gantidar.
Nim haoladar or dargantidar.
Oaat nim haoladar or segantidar.
Kankadar or praja or raiyat.

At times however between the talukder and the haoladar a further intermeditte stage is found, viz, the osat talukdar. This tenure-holder represents one

to whom the talukdar has assigned, not a block of land for the purpose of bringing it under cultivation but a right, extending over the whole or a part of his tenure, to deal with the area covered by the osat taluk as if it were his own The distinction between osat taluk. taluk and any form of haola may perhaps be expressed by saying that the former is the assignment of interest, while the latter is the assignment of a specified block of land for the purpose of reclamation. An osat taluk might be held in respect of an aliquot part or undivided share of a taluk; a haola eculd never be so held. At times a tenure similar in nature to the osat taluk is found between the osat taluk and the haola: this is termed a nim osat taluk.

Tenures by interpolation and revolt.—Tenures by interpolation presuppose existing grades both above and below; they are less commonly found in jungleburi taluks than in other classes An osat taluk, if created after the haclas subordinate to the talukdar had come into existence, would be an interpolated tenure; and it is clear that such a process would occur far more often where there were hereditary tenants than where cultivation had not yet started when the talukdars right was The causes of interpolation were mainly the two referred to above as the causes of creation of tenures in the older zamindaris, viz., (1) inability to manage successfully rent collection in a large and scattered estate and (2) a pious desire to create a beneficial interest in favour of a relation or a servant. ·An interesting example of such a taluk created before the Permanent Settlement is the Jautuk taluk in pargana Buran. Its name is said to be derived from the fact that it was created by the owner of the pargana in favour of his first-born son, and assigned a rent proportionate to the revenue of the whole pargana; it was thus entirely a beneficial grant and ranks highest among the subcrdinate tenures of the pargana. A third cause may be added, viz., the desire to capitalize the assets of the estate by creation of subordinate tenures at a high rate of This cause was probably not operative to any great extent passing of Regulation VIII of 1819 had placed the relationship of landlord and patni tenure-holder on a definite statutory basis. A notable example of this was the creation of the patni mahals in the Syedpur estate in 1823 and 1824, thus realising Rs. 10,57,000 as premia or *salami*, which sum is now the nucleus of the Mohsin Trust Fund.

The tenures created by interpolation bear various names and differ in certain Those which have existed from before the Permanent Settlement are usually known as samilat taluks, this term taking the place of the term shikimi taluk, which is in vogue in many places in Bengal. Λ samilat permanent. taluk is and enhanced. be Its rental cannot name appears to be derived from the fact that it was incorporated in (Beng. samil) a zamindari at the time of the Taksimi taluks Permanent Settlement. are the highest grade of tenures found in pargana Selimabad. Their name is said to be derived from the fact that they represent a division (Urdu taksim) of property, by means of a beneficial lease, between the proprietor and other members of his family.

Patni tenures, including their subordinate tenures darpatni and sepatni, are tenures generally created after the passing of the Patni Sales Regulation (Regulation VIII of 1819) with the specific object of being governed by that Regulation. They are of course permanent, and their rent cannot be enhanced. Variation of the patni tenures are the "pattai" tenures; both words simply mean "leased", and the latter tenures probably date back to a time when the word patni had not been crystallized by Regulation VIII of 1819. A miyadi patni is a lease for a definite term of years: it is, of course, not governed by The term sadar the Patni Sale Law. patni is some times found; it appears to apply to the patni lease of either a large area of land or of an aliquot share of a zamindari, smaller parts of which had already been leased cut in patni. sadar patni is therefore interpolated as a superior interest over the existing patnis. At the present day a new interpolated tenure would on creation normally be styled either a "maurushi" or a "miras ijara". Both terms connote a tenure which is permanent, but of which the rent, in the absence of any stipulation to the contrary, can be enhanced. The miras ijara is commonest in the east of the district while the maurushi is more frequent in the north. but both may occur together. A variant of the latter is the kaimi maurushi: it is generally considered that the rent of this tenure cannot be enhanced, but the question is not free from dcubt.

The tenures classified by Major Jack as owing their origin to fraud and to family arrangement are merely variants of tenures created by interpolation, and could well have been classed under that In fact in this particular res-Major Jack's classification is not strictly logical, for fraud and family arrangement are merely two of objects leading to the creation of certain tenures which belong to the class of interpolated tenures and should not have been ranked as classes parallel to them. Descriptions of them are given in detail in Chapter III of the Bakarganj Settlement Report, and apply equally to similar tenures in Khulna district. object of the creation of fraudulent tenures is to save the interest of the creator from his creditors who on purchasing it discover that it has been leased to another from whom they cannot hope to recover it without costly litigation. The object of the creation of "family arrangement" tenures is to transfer by perpetual lease to a competent member of the family the interests of women or other persons who cannot themselves conveniently arrange for collecting the rents due to them. Tenures created by revolt are usually termed jimba taluks. Their origin lay in the fact that at times the tenants of an oppressive or exacting landlord, as it were, deserted his allegiance in a body and attorned to some person who enjoyed a better reputation. placing themselves within his "jimba" or charge. The recipient of the allegiance either included the revolting tenants within his own tenure or estate or else created a nominal tenure to cover their lands and pretended that he held this tenure in subordination to the deserted land-This system appears to have been lord. largely used in Bakarganj, and it is most common in the east of Khulna district, but traces of it are to be found, in The most notorious inmany parts. stance is the case of Char Hoglapasha where the tenants deserted the Banagram zamindars and attorned to the Boukailash raj; in consonance with this revolt every tenant was prepared to swear that the lands of Char Hoglapasha formed part of a village Maheshkura though no such village could be found in thak or revenue survey maps. Litigation went on for some years

chiefly under the preventive sections of the Criminal Procedure Code; eventually during the present settlement operations the true state of affairs has become clear and the tenants appear to have acquiesced in a return to their old allegiance.

Tenures by promotion.—Tenures by promotion are essentially growths of Bakarganj Muhammadan pride. nouveau riche more ardently covets a rise in social status than the well-to-do Muhammadan cultivator of that district. As explained above the status of karshadar some seventy years ago was not an enviable one, and the wealthier among those who held that status sought means to improve it by payment of money or rendering service to their landlord. a quid pro quo they received brevet rank of kaim karshadar which implied at least permanency of tenure, and enabled them to sub-lease their lands to Karshadars; by a further rise they could reach the rank of haoladar, a secure and honourable title conncting a reclaimer of An anomaly has resulted in the present day for where the aspirant was a tenant of more than one landlord, it sometimes happened that he was only able to secure the coveted promotion from one landlord, while the other refused it. In the serista of one landlord he therefore became a haoladar while in the scrista of the other he remained a karshadar. In such cases the record of rights was difficult to frame; it was eventually decided that until every landlord recognized the promotion it could not be considered as In such cases the aspirant complete. was given his original status in our record, but a note as to the promotion in one or more seristas was made.

It is probable that many of the osat haolas, nim haolas and other subordinate varieties of haclas owe their origin to promotion, rather than to development by a sub-lease for jungle clearance.

88. Rent-free tenures.—There is little that is pecular to Khulna district in the rent-free tenures; they are almost entirely absent from the Sunderban tracts, and are confined mainly to the oldest cultivation particularly that situated on the banks of the Bhairab. They may be divided into two classes, viz., (i) Permanent heritable and transferable tenures usually created for a

pious purpose. Examples of this class are—

Brahmottar for maintenance of Brahmans.

Mahatran for maintenance of any other person specially revered by the grantor.

Debottar, for maintenance of idels. Fakiran for maintenance of fakirs. Baishnabottar for maintenance of

Cheragi for upkeep of lamps in shrines.

baishnabs (devotees of Vishnu).

(ii The second class of rent-free tenures are the service tenures known as "chakran" tenures, enjoyed, e.g., by barbers, washermen, etc. They are in no way permanent, heritable or transferable, but only subsist so long as the service is rendered to their creator.

Cultivating tenants.—The subinfeudation which has been described above represents the intermediate grades between the zamindar and the cultivating tenant. There is something elusive about the status of cultivating tenant has yet been able to for no statute The object of envisage it clearly. tenancy legislation is admittedly to a great extent the protection of the raivat or cultivating tenant, but it is a fair criticism on the existing Tenancy Act to say that while it does much to pretect one man as raivat, it helps to destroy the rights of many others by compelling them to be classified as tenure-holders or under-raivats, for it refuses to recognize that there can be more than one raivat in respect of the same piece of ground. In this respect, it is generally admitted, the Act is at fault, for in actual practice we frequently see two or more cultivating tenants in the chain of subinfeudation, each of whom most surely in the eyes of his fellow villagers, and of his landlerd too, possesses the rights which attach to the hereditary cultivator. This is probably brought home to us more in Khulna than in most districts, for Khulna is one of the latest tracts to be reclaimed from jungle, and the cultivator still retains the advantages which accrued to him when he was the sole means of converting his landlords barren acres of jungle grant into rich paddy The two main advantages which he thus enjoys are firstly large holdings and secondly customary privileges. A tenant inducted for the purpose of reclaiming jungle is invariably given a

holding of at least several acres in area, and though in the north of the district where jungle cutting is a matter of remote antiquity, the raiyats' holdings are now reduced to the size prevailing in neighbouring districts, the tenants of the newer reclamation still enjoy comparatively large holdings. The following statement shows the average size of an occupancy or settled raiyats holding in the various police-stations of the district:—

| Name of poli | o-station. | | | verage siz of holding in acres. |
|--------------|------------|----------|-----|---------------------------------------|
| Kalaroa | | | | 1.50% |
| Satkhira | • • | | | 1 · 55 |
| Tala | • • | • • | | 1 · 27 |
| Debhata | | • • | | 1.82 |
| Kaliganj | | • • | | $2 \cdot 63$ |
| Shyamnagar | • • | • • | | 6.78 |
| Asasuni | • • | | | $4 \cdot 59$ |
| Phultala | | | | 1.05 |
| Daulatpur | | | | ·91 |
| Terakhada | • • | | | 2.98 |
| Dumuria | | | • • | $3 \cdot 04$ |
| Baitaghata | • • | | | $4 \cdot 63$ |
| Paikgachha | | • • | | $6 \cdot 62$ |
| Dacope | | • • | | 12.34 |
| Khulna | • • | | | 1 · 16 |
| Mollahat | • • | • • | | $2 \cdot 63$ |
| Sarankhola | • • | • • | | 2.99 |
| Kachua | | •• | | $2 \cdot 77$ |
| Fåkirhat | • • | • • | | 1.38 |
| Rampal | • • | | | $5 \cdot 73$ |
| Morrellganj | • • | •• | | $3 \cdot 93$ |
| Bagerhat | • • | <i>.</i> | | 1 - 99 |
| | | | | |

The figures in this table clearly reflect the fact that the newest reclaimed areas are in Dacope, Paikgachha, Rampal and Shyamnagar police-stations, while the oldest reclamation is on the banks of the Kobadak in Kalaroa and Tala and on the banks of the Bhairab in Phultala, Daulatpur, Fakirhat and Bagerhat police-stations. There is, in fact, a very remarkable degree of coincidence between these figures and the known history of reclamation in Khulna.

Now a raiyat with a holding of six to twelve acres of newly reclaimed land must be a very substantial man if he can continue to cultivate this area himself. Day labour is not to be had in a newly

reclaimed "abad", and plough cattle, if carried off by one of the diseases which attack them in a saline climate, cannot easily be replaced. He therefore sooner or later finds' himself obliged to reduce the size of his holding. He does not however do this by an outright sale, for on the one hand he has a distinct sentimental objection to parting with his land, and on the other hand the purchaser will be obliged to pay salami to the landlord-for recognition of the sale transaction. He therefore prefers to subdivide the holding by a sub-lease to a friend or neighbour who is willing and able to cultivate part of it. Sometimes the lessee pays a considerable premium for the lease and stipulates to pay a rent which leaves little profit to the lessor. The transactions are practically sales the premium being in effect the purchase money. So far is this fiction of a lease carried that in many parts of the district when a tenant wishes to dispose not merely of a part but of his whole holding. he still does not sell it outright but comes to an arrangement with the purchaser that the latter will execute a kabuliyat (acknowledgment of lease) in his favour and will thereafter pay the rental of the holding direct to his landlord. The lessor of course receives a considerable premium, in effect the sale price, as a part of the transaction and the fiction of lease is usually kept up by stipulating for a payment of nominal rent to him as his "munafa" or profit over and above the sum paid to the landlord. As, however, he often leaves the locality altogether after the transaction is complete. rarely realises the nominal rent; landlord finds himself with a new tenant who tenders the rent in the name of (technically called marfat) the lessor. This transaction is known as a "malik barati" lease; it is a well-known often effectual way of depriving the landlord of the salami or recognition fee for the sale of a non-transferable holding.

90. Occupancy right of under-raiyats.—This fiction of a lease to cover a sale has an important result; the nominal lessees who are really purchasers are recognized as having customary rights equal to those of the vendor lessor. This is perfectly just, for they have stepped entirely into his shoes and often pay his rent to the landlord; its result is the accrual of occupancy right by custom to the under-raiyats, and this accrual appears to have taken place throughout

district. Considerable care taken throughout the stage of attestation to enquire into the customary tenancies, incidents of under-raiyati and every Revenue Officer agreed in reporting that in the area where he worked an under-raiyat was regarded as possessed of exactly the same rights and privileges as the raivat. In fact the under-raivats are not under-raivats at all in the sense applied to the term by the Bengal Tenancy Act; they are the second and third grade raivats whose existence, as pointed out above, the Act refuses to recognize. Occasionally a genuine underraiyati tenancy was found to have been created by a temporary lease, and such tenancies were recorded as under-raivati without right of occupancy; but the very great majority of tenancies held under raivats were recorded as having occupancy right by custom. One of the strongest pieces of evidence of the privileged position of under-raivats is the prevalence of the custom of granting them permanent leases—in direct defiance of section 85 of the Bengal Tenancy Act; a section which appeared to be wholly unknown to a large number of people in the district, including the Sub-Registrars, who allow the registration of these leases. In the more sophisticated areas a legal fiction is employed by which the lessor raivat describes himself in the lease as a "maurushidar" or permanent temure-holder, but in many places the raiyat purports to give a permanent lease to the under-raight. In the event of the raiyats holding being purchased in auction sale, it is the custom for the purchaser to serve notices under section 167 of the Bengal Tenancy Act threatening to avoid the under tenancies as incumbrances. As under section 160 of the same Act any right of occupancy is a protected interest, i.e., cannot be annulled at the sale of the superior interest, it looks as if the issue of notices threatening to annul under-raivati interest is tantamount to denying their customary occupancy right. But in fact, the only object of these notices is to extort salami from the under-tenant when his immediate superior's interest is sold; the purchaser has really no more intention of evicting the under-raiyat, or belief in his power to do so, than the landlord who demands salami from the son who succeeds to his father's heritable raivati No authenticated instances of the eviction of an under-raiyat, after issue of notice under section 167, Bengal

Tenancy Act, came to light during the settlement operations in this district.

The under-raigats of the district may therefore be said to possess—occupancy right by custom, and there is every reason to believe that the accrual of this right is connected with the subinfeudation of large raivati holdings in newly reclaimed areas in the manner described above. Furthermore it appears that the underraivats of this description are not true under-raivats, but are second and third grade raivats, and only fail to be described as such because the Tenancy Act does not recognize their existence. Such raivats are termed kol karshadars in areas where the Bakargani nomenclature prevails: elsewhere in the district they are known as korfa raivats. They extend to several degrees, in exceptional cases, to as many as five or six.

Customary rights of tenants.—It was stated above that in addition to the privilege of large holdings, the jungleclearing raiyat has other customary privileges. There is no stronger title to privilege in the villager's mind than the ract that he or his forefathers cleared the jungle. Not once but many times while enquiring into village rights and customs I have heard it reiterated that such and such a right lies with such and such a man because he is an "abadkari praja". The jungle-clearing tenant, once he is established on the land, has more rights than his brother of the older cultivated The latter often may not cut areas. down trees or dig tanks without his landlord's consent; it is the first duty of the Sunderban tenant to cut down trees and if he cares to dig a tank in those saline tracts, no landlord, however exacting, will say him nay. In regard to salami on transfer of holdings, he is expected to pay something for an outright purchase for nowhere in the district are occupancy raivats' holdings recognized as transferable without the landlord's consent, and this consent usually depends upon the payment of salami. But in as much as tenants in Sunderban clearings are often in demand, the landlord is usually willing to give his consent to the transfer upon the payment of a nominal older cultivation salami. In the of where the the north demand for land is great, the rate of salami has in some cases been raised by exacting landlords, but on the whole throughout the district the rate is low and is often adapted to the means of the tenant In the case of a few purchaser.

big absentee landlords as much as 25 per cent. of the purchase price is paid, but this is abnormal for the district. Similarly in these areas the landlords have introduced the custom of levying payment from a raivat who cuts down valuable trees. This payment is however not high for it ranges from \frac{1}{4} of the value of the wood to a rupee or two. All trees, except "valuable" trees, may be cut down by the raiyat without objection, but there is a great diversity of opinion as to what constitutes a valuable free. The matter is entirely regulated by local custom; in one village a cocoanut palm may be cut down without the landlord's consent, in another village his consent is necessary; the same is true of babul trees (Acacia Arabica) and of many other trees which could be named. In the north of the district and in most of the older cultivated areas the landlord's consent is required if a tenant wishes to excavate a tank, but the consent is usually given upon payment of a few rupees.

Non-resident raiyats.—The raivat of Khulna district may therefore be said to be generally favoured by custom, and there appears to be every reason for connecting his privileges with the preferential treatment which a raivat in a newly reclaimed area soon wins for himself. Tenants are in demand in such areas, for it is not everyone who has the hardihood or the necessary means to cope with the dangers and difficulties of reclamation. It is often impossible to find willing to reside on the land, but as Sunderban paddy cultivation both sowing and reaping, takes place a month or more after that of tracts, the landlord is able to find tenants who are willing to cultivate Sunderban lands after they have finished the cultivation in their own villages. tenants may have a definite and permanent right in the land, but there is a tendency to look upon them as kahst" or alien raiyats as opposed to the "khudkahst" or resident raiyats of the estate. Some of them execute temporary leases in favour of their immediate landlords and after the expiry of the lease give up all connection with the land. Such tenants are known as "pattanias' or lease-holders and properly fall within. the definition of the non-occupancy raiyat of the Bengal Tenancy, Act.

93. Eksoná tenancies—The analogy of these short term leases has however

had an unfortunate effect; so long as the lease-holders are absentees whose Sunderban cultivation is merely a supplement to their upland cultivation, there can be no harm in regarding them as an inferior class of raivats without permanent rights in the soil. But nowadays in default of such absentee lessees, landlords of certain estates have taken to leasing vacant land to resident raiyats of the estate upon yearly terminable leases which they term "eksona", "batsar bandi", "sonkarari" or "nagdan" leases. To regard such leases as temporary and terminable is directly opposed to the provisions of the Bengal Tenancy Act, which provides that occupancy rights accrues to the settled raivat of the village in all land which he holds in that village. system of yearly leases is a deliberate infringement of the provisions of the Tenancy Act on the part of the landlords, and in framing the present settlement records, we gave occupancy status in all land held under such leases by settled raivats of the village.

It should be made clear that system of leases is by no means general; it has been adopted by certain more or less upstart landlords, Pharaohs that knew not Joseph and are unmindful of anciently earned privileges of the abadkari tenant. The system only flourishes in areas where the great fertility of the reclaimed Sunderbans makes competition for land keen among a growing population, and it is to be hoped that the settlement operations will have opened the eyes of the tenants to their rights: hitherto they have, with a few exceptions, ignorantly surrendered the benefits which accrue to them from the Tenancy Act.

Utbandi—There is no uthandi in this district. In the great bil areas where the amount of cultivation depends every year upon the extent to which the bil dries up, there is a system of assessment of rent in accordance with the area cultivated each year by the tenant. In only two villages, one in Satkhira subdivision and one in Bagerhat, was any attempt made by the landlords to assert that the tenancies were utbandi; in both cases local enquiry showed that the boundaries of the holdings were known and defined, and the tenant's annual cultivation, though fluctuating in amount according to the state of the water, was definitely confined within those limits. The tenancies did

not therefore satisfy the criterion of utbandi adopted by the Settlement Department (vide Technical Rules, 1925, reprint, page 81, et seq), and they were consequently treated as ordinary tenan-Furthermore though tenancies of this nature exist sporadically throughout the great bil tracts, there is no evidence that the custom of utbandi prevails in this district, and hence the conditions of section 180 (a) of the Bengal Tenancy Act are not satisfied. These tenancies are known as charcha or hal hasila in the district; the word utbandi is not in general use, though I remember seeing it once in some old zamindari papers in Satkhira subdivision. view of the fact that the great bils are getting shallower every year, particularly in areas where the silt laden Madhumati water penetrates, it is fortunate that the zamindars were not able to substantiate their claims as regards utbandi tenancies; had they been able to do so, in a few years' time, there would have been a multitude of tenancies. practically devoid of legal rights, in tracts of land indistinguishable from ordinary low-lying village land.

Borgádárs.—Produce rents are of two types in this district corresponding to the two types usually found elsewhere in Bengal. The first type is where a definite share, usually but not invariably a half, of the produce is paid. These bear the common name of borga tenancies. The borgadar in this district possesses practically no rights in the land; he is purely a tenant at will. Whether he holds the land for one year or for several years in succession, he and everybody else in the village fully recognizes that he is bound to vacate it if so directed by his immediate landlord. It is not easy to determine why the borgadar should be so devoid of customary right here; the fact remains that after careful enquiry by every attestation Officer, the above conclusion was unanimously arrived at, and it fully coincided with the opinion I had formed, based upon previous experience of trying criminal appeals in land disputes, where the borgadar usually figures as the cat'spaw of the rival claimants. In a few tenurecases where land of absentee holders had been held by the same tenant for many years in succession upon payment of a share of the produce. the tenancy was recognized as having occupancy rights.

96. Gulo tenancies.—The second type of produce rent is where a definite amount of rent in kind is paid. These tenancies are usually known as dhankarari throughout Bengal, but in the centre and east of Khulna district they are known as gulo tenancies. They are generally unpopular with the tenants. probably owing to the idea that the rise in the value of produce has automatically caused considerable enhancement of their rent. This is true in a sense, but actually of course the tenants are paying no more for their land than before, and obtaining greater value in the balance of the produce which they retain. In cases however where the soil has deteriorated and the outturn is consequently less, the payment of gulo rent is a great hardship. At times, particularly in the southeast of the district where this system is particularly prevalent, the landlords realise the cash market value of the stipulated produce in lieu of the produce itself. All dhankarari and gulo tenancies were treated in the settlement records as if they were ordinary raivati tenancies, and a similar course was adopted in the case of mixed rents, i.e., where part of the rent is payable in cash and part in kind.

Abwabs.—Landlords in this dis-97. trict as elsewhere realise abwabs or unauthorised impositions from their tenants in complete defiance of section 74 of the Bengal Tenancy Act. The history of the abwab belongs rather to the general revenue history of Bengal than to an account of the land system of any particular district. Briefly speaking in * origin the abwab in Mogul times was a fixed enhancement of the assessment payable to the State, and correspondingly leviable from their own tenants by the persons responsible for the payment. At the time of the Permanent Settlement all abwabs were directed to be consolidated with the rent, and imposition of fresh abwabs was forbidden. The latter part of these directions was about as efficacious as the notices exhibited in certain restaurants forbidding gratuities to be given to the staff. In fact the abwab has this in common with such gratuities: it is consecrated by universal custom, and it provides a living wage for under-paid employees. A considerable proportion of the abwab particularly under the name of tahuri nowadays goes into the pocket of the naib or other local officers of the zamindar, and serves to

supplement salaries which are usually absurdly inadequate. The following are among the more common forms of abwab levied in the district, with their average incidence per rupee of rent:—

| Name. | Nature. | Average incidence per rupee of rent anything up, to— | | |
|----------------|--|---|--|--|
| Tahuri | Collection fee | 4 annas. | | |
| Chek Kharach | Rent receipt fee | 3 pies per receipt | | |
| Hishabana | Accounts fee | 2½ annas. | | |
| Parbani | Contribution for ceremonies. | 4 pies. | | |
| Agamani | Present at land- lords or zamindari officer's visit. | Lump sum usually Re. 1. | | |
| School kharach | Upkeep of schools | 6 pies. | | |

Marriage ceremonies are peculiarly expensive affairs for the raivat, for not only has he to contribute to expenses of the landlord's family, ceremony in his but he has to pay a sort of sumptuary tax if he celebrates a marriage in his own family. The custom of begar or free labour rendered by a tenant to his landlord is not extinct, but in view of the growing spirit of independance among the tenantry many zamindars have made a virtue of necessity and commuted it for an annual payment of about rupees. Cost \mathbf{of} maintaining bridges and embankments are levied under the names of pul kharach and The latter levies in bandh kharach. saline areas where embankments are essential for the preservation of crops, is thoroughly justifiable if the landlord maintains the embankment, and in such cases the amount payable by the tenant has been treated as a legal payment in our records. Some difficulty has been experienced in cases where the tenant has stipulated to pay something in kind, usually gur (molasses) or a goat, over and above his rent. It is not clear if these are legally abwabs or not. areas where they occurred the general principle was adopted of recognising them as legal rent if they were produce of the tenant's land as gur might well be, but of treating them as abwabs if they could not be considered as produce of the If however the payment, e.g., of a goat, had been stipulated for in the tenant's kabuliyat and not subsequently added as an annual demand it was treated as part of the rent. The legal rate at which cess can be levied is 6 pies in the rupee from a raiyat within the meaning of the Cess Act (i.e., "a person cultivating land and paying rent therefore not exceeding one hundred rupees per annum "), and according to the last valuation in the case of any other person. Actually these provisions are respected in many cases, but in certain estates, usually those of small tenure-holders, cess up to one anna in the rupee is levied from the raiyats.

STATISTICS OF LAND TENURE.

Area in proprietor's direct possession.—Under existing settlement procedure, the Collectors' registers are not written up until records have been printed. It is not therefore possible at this stage, when printing is not yet complete, to give a detailed statement showing the area and revenue of each tauzi or statistics of the tauzi roll and its component estates. Statistics of the land held by proprietors are however available, though the distribution by tauzis has not yet been ascertained; the available statistics are given in Appendix I to this report. The area held by proprietors in their direct possession is 40,542 acres, i.e., 2.6 per cent. of the total area surveyed: this includes the area of most roads, small streams, burning ghats, and of land sublet by annual leases to borgadars, but not of rivers over three chains which have been classified as outside the record, nor of such roads as appear to have been in existence before 1850, and which have been, therefore, in accordance with the provisions of Act XLII of 1850, recorded as the property of the State.

99. Area in tenure-holders' direct possession.—The amount of land held by the principal classes of tenure-holders in their direct possession is as follows:—

| Class of tenure. | Number of hold- ings. | Total area held (acres). | Percentage to total area surveyed. |
|--|--------------------------------|--------------------------------|------------------------------------|
| Permanent tenure- holders on fixed rents or rates. | 38,967 | 86,309 · 70 | 5 · 54 |
| Permanent tenure- holders not on fixed rents or rates. | 49,329 | 122,083 · 25 | 7 · 72 |
| Temporary tenure-holders. | 1,472 | 10,913 · 43 | - 70 |

In practice the temporary tenure-holders are never likely to be ejected from their lands, and in many estates the landlords have admitted the permanency of all tenures; in a few estates the tenures are

hominally temporary, but the question has not been seriously contested during the present operations, and is not likely to be of practical importance. It is far otherwise with the question of fixity of rent or rate of rent, which has been the subject of a large number of disputes. Genuine mokarrari leases have not been numerous; the majority of the area which has been recorded as held on fixed rents has gained this privilege by virtue of section 50(2) of the Bengal Tenancy Act.

Rent-free tenure-holders have 17.888 acres in their direct occupation. majority of this area is covered by petty nishkar grants of a few acres for maintenance of brahmans or for similar relipurposes. gious or charitable often simply cover the homestead land of the beneficiary; the arable land, if any, is usually let out in temporary borga lease or cultivated by hired labour. Service tenure-holders only occupy a small area of about 430 acres. majority of the rent-free tenures are situated in the older cultivated areas of Kalaroa, Tala, Satkhira, Kaliganj and police-stations: Sunderban Fakirhat | landlords do not usually make rent-free grants.

100. **Raiyati holdings.**—The number of holdings and area of land held by the main classes of cash paying raiyats are as follows:

| Class of raiyat. | Number of holding. | Total area thus held (acres). | Percentage of the total area surveyed. |
|---|--------------------------|-------------------------------------|--|
| Raiyats at fixed rent or rate of rent. | 38,989 | 132,098 - 16 | 8-49 |
| Settled and occupancy raiyats. | 349,544 | 964,817+80 | 62 - 05 |
| Under raiyats with rights of occupancy (on cash rent). | 249,266 | 192,330-89 | 12 · 36 |
| Under raights without rights of occupancy (on cash rent). | 14,483 | 8,362+06 | ·53 |
| _ | 1 | | |

The raiyats holding at fixed rents are more numerous in Satkhira subdivision than in both of the other subdivisions together. One cannot help feeling that the provisions of section 50(2) took the raiyats' landlords somewhat by surprise in the first year of attestation, and that by the following seasons when Sadar and Bagerhat subdivisions were taken up, rentals had either been actually enhanced

in order to rebut the presumption of that section or else rebutting evidence from old papers had been, to put it mildly, obtained: I know of cases where enhancements were hurriedly made obviously to defeat the presumption. Apart from this reason, I can assign no other ground for the overwhelming preponderance, of Satkhira mokarrari holdings over those of the other subdivisions.

Under-raiyati holdings .- Generally speaking, as explained elsewhere, under-raiyats were recognised as having occupancy rights by custom. In khira subdivision there is again a great preponderance of under-raivati holdings without occupancy right, the number being 10,565 against 1,862 in Sadar and 2,056 in Bagerhat. During the first few weeks of attestation, the question of the recognition of under-raivats' occupancy right was under examination, and it is certain that during this period a large number of under-raivats were recorded as without rights of occupancy by officers who would later on, in view of experience gained and orders issued, have certainly recorded them as having occupancy right. It was not considered necessary to re-attest whole villages on this ground. but it was open to any under-raivat to obtain a revision of his status by filing objection under section 103A Bengal Tenancy Act, for the matter had been set at rest by the time these objections came up for decision.

102. Incidence of rent.—The incidence of rent per acre paid by raiyats holding at fixed rents and by settled and occupancy raiyats respectively is shown in the following table which covers all the police stations of the district:—

Average rate of rent per acre.

| Police-station. | | Raiy fixed or ra | ren | ts of | Occupancy and settled raiyats, | | | |
|--------------------------|-------------|------------------------|-----|----------|---|-----|------------|----|
| | | | Rs. | Α. | P. | Rs. | A . | P. |
| Kalaroa | | | 2 | 5 | 3 | 3 | 8 | 8 |
| Satkhira | •• | | 2 | 4 | 4 | 3 | Ü | 1 |
| Tala | •• | | 2 | 9 | 6 | 2 | 14 | 8 |
| Debhata | • • | | 2 | 13 | 8 | 3 | 3 | 2 |
| Kaliganj | • • | | 2 | 11 | 6 | 3 | 4 | () |
| Shyannagar | • • | . • | 3 | 14 | 6 | 6 | 11 | 1 |
| Asasuni | | | • 1 | 13 | 11 | 2 | 3 | 6 |
| Total of Sa division. | tkhira sub- | | 2 | 7 | O | 3 | 9 | 3 |

supplement salaries which are usually absurdly inadequate. The following are among the more common forms of abwab levied in the district, with their average incidence per rupee of rent:—

| Name. | Nature. | Average incidence per rupee of rent anything up to— | | | |
|----------------|--|--|--|--|--|
| Tahuri | Collection fee | . 4 annas. | | | |
| Chek Kharach | Rent receipt fee | 3 pies per receipt | | | |
| Hishabana | Accounts fee | . 2½ annas. | | | |
| Parbani | Contribution for ceremonies. | 4 pies. | | | |
| Agamani | Present at land- lords or zamindari officer's visit. | Lump sum usually Re. 1. | | | |
| School kharach | Upkeep of schools | 6 pies. | | | |

Marriage ceremonies are peculiarly expensive affairs for the raivat, for not only has he to contribute to expenses of the ceremony in his landlord's family, but he has to pay a sort of sumptuary tax if he celebrates a marriage in his own family. The custom of begar or free labour rendered by a tenant to his landlord is not extinct, but in view of the growing spirit of independance among the tenantry many zamindars have made a virtue of necessity and commuted it for an annual payment of about rupees. Cost \mathbf{of} maintaining bridges and embankments are levied under the names of pul kharach and bandh kharach. The latter levies in saline areas where embankments are essential for the preservation of the crops, is thoroughly justifiable if the landlord maintains the embankment, and in such cases the amount pavable by the tenant has been treated as a legal payment in our records. Some difficulty has been experienced in cases where the tenant has stipulated to pay something in kind, usually gur (molasses) or a goat, over and above his rent. It is not clear if these are legally abwabs or not. areas where they occurred the general principle was adopted of recognising them as legal rent if they were produce of the tenant's land as gur might well be, but of treating them as abwabs if they could not be considered as produce of the If however the payment, e.g., of a goat, had been stipulated for in the tenant's kabuliyat and not subsequently added as an annual demand it treated as part of the rent. The legal rate at which cess can be levied is 6 pies in the rupee from a raiyat within the meaning of the Cess Act (i.e., "a person cultivating land and paying rent therefore not exceeding one hundred rupees per annum ''), and according to the last valuation in the case of any other person. Actually these provisions are respected in many cases, but in certain estates, usually those of small tenure-holders, cess up to one anna in the rupee is levied from the raivats.

STATISTICS OF LAND TENURE.

Area in proprietor's direct possession.—Under existing settlement procedure, the Collectors' registers are not written up until records have been printed. It is not therefore possible at this stage, when printing is not yet complete, to give a detailed statement showing the area and revenue of each tauzi or statistics of the tauzi roll and its component estates. Statistics of the land held by proprietors are however available, though the distribution by tauzis has not yet been ascertained; the available statistics are given in Appendix The area held by pro-I to this report. prietors in their direct possession is 40,542 acres, i.e., 2.6 per cent. of the total area surveyed: this includes the area of most roads, small streams, burning ghats, and of land sublet by annual leases to borgadars, but not of rivers over three chains which have been classified as outside the record, nor of such roads as appear to have been in existence before 1850, and which have been, therefore, in accordance with the provisions of Act XLII of 1850, recorded as the property of the State.

99. Area in tenure-holders' direct possession.—The amount of land held by the principal classes of tenure-holders in their direct possession is as follows:—

| Class of tenure. | Number of hold- ings. | Total area held (acres). | Percentage to total area surveyed. |
|--|--------------------------------|--------------------------------|------------------------------------|
| Permanent tenure- holders on fixed rents or rates. | 38,967 | 86,309 - 70 | 5 · 54 |
| Permanent tenure- holders not on fixed rents or rates. | 49,329 | 122,083 · 25 | 7 · 72 |
| Temporary tenure- holders. | 1,472 | 10,913 · 43 | · 70 |

In practice the temporary tenure-holders are never likely to be ejected from their lands, and in many estates the landlords have admitted the permanency of all tenures; in a few estates the tenures are

hominally temporary, but the question has not been seriously contested during the present operations, and is not likely to be of practical importance. It is far otherwise with the question of fixity of rent or rate of rent, which has been the subject of a large number of disputes. Genuine mokarrari leases have not been numerous; the majority of the area which has been recorded as held on fixed rents has gained this privilege by virtue of section 50(2) of the Bengal Tenancy Act.

Rent-free tenure-holders have 17.888 acres in their direct occupation. majority of this area is covered by petty nishkar grants of a few acres for maintenance of brahmans or for similar religious or charitable purposes. They often simply cover the homestead land of the beneficiary; the arable land, if any, is usually let out in temporary borga lease or cultivated by hired labour. Service tenure-holders only occupy a small area of about 430 acres. majority of the rent-free tenures are situated in the older cultivated areas of Kalaroa, Tala, Satkhira, Kaliganj and police-stations; Fakirhat Sunderban landlords do not usually make rent-free grants.

100. **Raiyati holdings.**—The number of holdings and area of land held by the main classes of cash paying raiyats are as follows:

| Number of holding. | Total area thus held (acres) | Percentage of the total area surveyed. |
|--------------------------|--|---|
| 38,989 | 132,098 - 16 | 8-49 |
| 349,544 | 964,817+80 | 62 - 05 |
| | 192,330 - 89 | 12 · 36 |
| | 8,362+06 | ·53 |
| | of holding. 38,989 349,544 249,266 | of holding. thus held (acres) 38,989 132,098+16 349,544 964,817+80 249,266 192,330+89 14,483 8,362+06 |

The raiyats holding at fixed rents are more numerous in Satkhira subdivision than in both of the other subdivisions together. One cannot help feeling that the provisions of section 50(2) took the raiyats' landlords somewhat by surprise in the first year of attestation, and that by the following seasons when Sadar and Bagerhat subdivisions were taken up, rentals had either been actually enhanced

in order to rebut the presumption of that section or else rebutting evidence from old papers had been, to put it mildly, obtained: I know of cases where enhancements were hurriedly made obviously to defeat the presumption. Apart from this reason, I can assign no other ground for the overwhelming preponderance, of Satkhira mokarrari holdings over those of the other subdivisions.

Under-raiyati holdings .- Generally speaking, as explained elsewhere, under-raiyats were recognised as having occupancy rights by custom. In Satkhira subdivision there is again a great preponderance of under-raivati holdings without occupancy right, the number being 10,565 against 1,862 in Sadar and 2,056 in Bagerhat. During the first few weeks of attestation, the question of the recognition of under-raivats' occupancy right was under examination, and it is certain that during this period a large number of under-raivats were recorded as without rights of occupancy by officers who would later on, in view of experience gained and orders issued, have certainly recorded them as having occupancy right. It was not considered necessary to re-attest whole villages on this ground. but it was open to any under-raivat to obtain a revision of his status by filing objection under section 103A Bengal Tenancy Act, for the matter had been set at rest by the time these objections came up for decision.

102. Incidence of rent.—The incidence of rent per acre paid by raiyats holding at fixed rents and by settled and occupancy raiyats respectively is shown in the following table which covers all the police stations of the district:—

Average rate of rent per acre.

| Police-station. | | Raiyats at fixed rents or rates of rents. | | | | Occupancy and settled raiyats. | | | |
|--------------------------|-------------|--|-----|---|----|---|-----|------------|----|
| | | | Rs. | | Α. | Р. | Rs. | A . | Р. |
| Kalaroa | | | : | 2 | 5 | 3 | 3 | 8 | 8 |
| Satkhira | | | : |) | 4 | 4 | 3 | () | 1 |
| Tala | | | : | ? | 9 | 6 | 2 | 14 | 8 |
| Debhata | | | : | • | 13 | 8 | 3 | 3 | 2 |
| Kahganj | | | : | 2 | 11 | 6 | 3 | 4 | 0 |
| Shyannagar | | . • | ; | } | 14 | 6 | 6 | 11 | 1 |
| Asasuni | | | • 1 | l | 13 | 11 | 2 | 3 | 6 |
| Total of Sa division. | tkhira sub- | | : | ? | 7 | 0 | 3 | 9 | 3 |

| , Police-s | tation! | | Raig fixe or r | d re | nts of | set | par nd tled yat | i |
|---------------|----------|----------|----------------------|------|-----------|-----|--------------------------|----|
| • | | | Rs. | A. | P. | Rs. | A. | P. |
| Phultala | •• | | 2 | 9 | 8 | 2 | 15 | 8 |
| Daulatpur ' | i | | 2 | 7 | 3 | 2 | 14 | 5 |
| Terakhada | | | i | 11 | 3 | 2 | •7 | 2 |
| Dumuria | • • | | 1 | 15 | 5 | 2 | 5 | 4 |
| Baitaghata | •• | | 1 | 12 | 10 | 2 | 2 | 8 |
| Paikgachha | •• | | 2 | 3 | 8 | 3 | 2 | 3 |
| Dacope | • • | •• | 3 | 3 | 4 | 4 | 0 | 6 |
| Khulna | • • | | 2 | 9 | 4 | 3 | 0 | 7 |
| Total of Sa | dar subd | livision | 2 | 2 | 11 | 2 | 14 | 5 |
| Mollahat | •• | | 1 | 9 | 6 | 1 | 15 | 2 |
| Sarankhola | | | | | ı | 6 | 3 | 9 |
| Kachua | • • | | 2 | 5 | 1 | 3 | 7 | 3 |
| Fakirhat | •• | | 2 | 1 | 11 | 2 | 8 | 9 |
| Rampal | • • | | 3 | 2 | 9 | 4 | 2 | 9 |
| Morrellganj | • • | | 4 | 0 | 2 | 5 | 7 | 2 |
| Bagerhat | | | 2 | 5 | 9 | 3 | 1 | 3 |
| Total of Bage | rhat sub | division | 2 | 10 | 3 | 3 | 11 | 1 |
| Distric | t Total | | 2 | 6 | 5 | 3 | 5 | 10 |

Rentals are highest in the reclaimed Sunderbans areas of Shyamnagar, Rampal, Dacope, Morrellganj and Sarankhola, where given satisfactory embankments, an outturn of at least 30 maunds of paddy per acre is normally obtained. The lowest rentals are in the bil areas of Terakhada and Mollahat where owing to the prospect of a crop depending greatly or annual fluctuations in the amount of water in the bils, rentals are pitched very low. It has been explained elsewhere that after detailed enquiry, it was found that tenants paying a fixed share of the produce, i.e., borgadars, have practically no rights subsisting in the land they cultivate; for this reason they were not given separate khatians in our fecords and do not appear as possessors of holdings in the statistics collected. In the first attestation season, however, at the time when enquiries on this subject were in progress most attestation Officers gave khatians somewhat freely to borgadars in accordance with principles they had learnt in other districts where borgadars are genuine tenants. This accounts for the fact that the great majority of the holdings shown in the statistics table as cultivated by raiyats paying a fixed

share of the produce occur in Satkhira subdivision.

103. Produce and rent-free tenancies.—All tenants paying a fixed amount of produce or partly cash and partly produce rent, were given khatians, and consequently are included in the statistics table. The system of payment of a fixed amount of produce is unpopular, and is not very common in the district. The greater number of tenancies of this nature are found in the south of Satkhira subdivision where certain landlords have, as it were, specialised in this form of rental.

Rent-free raiyati holdings of any kind are very uncommon; the total number of such holdings on grounds of service is only 234, and on other grounds is 41.

Land occupied for public purpose.—No land has been shown in the statistics as occupied for public purposes unless it has been formally acquired. Roads and other kinds of land held permissively have been treated as the property of their true landlord, and hence do not figure in the statistics table as land occupied for public purposes. In the record of rights however a note has been made showing the permissive possession of the Department or Local Body actually occupying the land. The area of land acquired for public purposes is only 571 acres in the district, but having regard to the scanty road communication in the majority of the district, the figure is not surprisingly small.

Area outside the record.—All rivers over three chains in breadth were shown in the index khatian of the village as outside the record on the principle generally followed in recent settlements. The total area outside the record is 20,109 acres. It is interesting to compare this total with the total area of water in the district, as shown in the Milan Khasra statement; as the latter amounts to 1,29,923 acres, it follows that over 1,09,000 acres are covered, not by large rivers, but mainly by the network of khals which is so striking a feature of reclaimed Sunderbans tracts.

RELATIONS OF LANDLORDS AND TENANTS.

106. Tenants' privileges.—As is apparent from the account given above of the rights of raiyats and under-raiyats in the district, it cannot be said that the

Khulna tenants are a particularly oppressed class. Memories of their old abadkari rights secure to them considerable customary privileges which in the older and more reputable zamindaries are observed to this day. It is invidious to particularise on this score, but it is noteworthy that two of the zamindaries which have taken a great share in Sunderban development, namely, the Ray Chaudhuris of Satkhira and the Boukailash Raj have an exemplary reputation among their tenants for fair dealing and justice. Abwabs are exacted as cribed above in all estates, but provided they are moderate, no tenant feels a sense of grievance, for they are sanctioned by age-long tradition and custom. I suppose some day education and industrial revival may put an end to them, just as the same factors have put an end to many a time-honoured abuse in England, but at present the law against them is not sanctioned by popular approval and is to all intents and purposes as dead as the English law of deodand was long before its repeal.

107. Rent receipts.—It is far otherwise with the question of granting rent receipts as prescribed by law. The law is observed in well managed estates, and it is the first grievance of tenants of oppressive zamindars that they do not get rent receipts in proper form. The day of the naib who physically ill-treated his master's tenants is nearly, though not quite, passed, but oppression by manipulation of accounts and chicanery in law suits is in its heyday. An evicted tenant means salami for a fresh settlement, hence the grasping naib endeavours to keep his pocket full by ensuring that a reasonable number of holdings are sold up during the year, and for this purpose he manipulates his accounts to show that his selected victims are in arrears. In order to succeed in this nefarious game, it is essential that the rent receipts granted to the tenants should not serve to protect them; he therefore grants no receipts or else grants receipts showing a sum of money paid, but with such an insufficiency of detail that if it is produced in court, he can swear that it was a payment of old arrears or of a temporary loan taken by the tenant at some previous time. In all probability his trickery serves its purpose, and as the suit has been brought at a time when the naib knows that ready money is scarce, the holding is sold up and either

purchased by the landlord or by some other tenant, in either case to the considerable profit of the naib. If the law relating to the granting of dakhilas were stringently enforced, it would serve to a great extent to defeat this form of oppression, and as the popular feeling among the better landlords and among all tenants is entirely in favour of its enforcement, practical difficulties will probably not be very great. In a few glaring cases, the provisions of section 58 of the Bengal Tenancy Act were enforced during the present operations, but as the proceedings were usually keenly contested with the help of legal advice, it was impossible to find the time for a systematic campaign against this abuse.

As an alternative to the withholding of dakhilas, a rascal naib has another winged arrow in his quiver, which he uses when eviction of tenants on a large scale is his quarry. This consists of obtaining ex-parte rent decrees with the connivance of the low paid process serving establishment of the local civil court; the whole transaction, including the auction sale of their property, is concealed from the victims, whose first intimation is the arrival of a stranger, fortified by the civil court's decree and certificate of delivery of possession, to cultivate their lands. Not unnaturally a riot at times ensues, and in the subsequent criminal proceedings it is all Lombard street to an orange in favour of the claimant who is supported by the civil court documents.

I do not mean to suggest that these abuses are universal, but that they have occurred and do constantly occur is well known to every Revenue Officer. It is impossible to particularise on the delinquent estates; certain estates can be pointed to which are bad from zamindar downward, but in many others the local agents are mainly to blame. It is not however possible entirely to exonerate the landlords, for the majority of landlords pay far less than a subsistence wage to their local staff; this of course opens the door to abuse and oppression.

108. Assistance given by landlords to tenants.—On the other side of the picture, it must be remembered to the credit of the landlords that they often afford material assistance to their tenants in the way of loans in times of financial stress, and during the period of scarcity in this district in 1921, very

considerable free gifts were made by them in the way of cloth and rice for indigent tenants. Another material aid which they give in saline tracts is the supervision of the construction of embankments. In a few estates the landlords undertake the whole expense of erecting embankments and providing sluices, but in such cases they realise a very substantial sum from their tenants under the name of bundh kharach; the more general custom is for the tenants to do the actual work and to provide the materials required, while the zamindar arranges for his local staff to organise and supervise the work. Having regard to the jealousies and party faction which too often prevail in villages, the help rendered in this respect by the zamindar, though it often amounts to actual coercion, is never resented and usually gratefully acknowledged by the bulk of the tenants. It is needless to repeat here the instances of misuse of this system which have been given in the chapter of this report dealing with the resettlement of Sunderban estates. They are fortunately the exception and not the rule.

Zamindari accounts.—The following working system is used in the larger and better managed zamindaris of the district; there may be variation of detail or modification in particular cases, but, broadly speaking, the administrative essentials are the same. There is a Sadar cutcherry oroffice located generally at the seat of the zamindar's residence, or in some important village in the estate. It is in charge of a General Manager, whose duty comprises the supervision of the whole estate, including the outlying or mufassal cutcherries. The charge of a mufassal cutcherry is known as a mahal or tahsil.

The Sadar cutcherry has usually six departments—

- (I) The Mokoddoma Serista or Law Department.
- (II) The Sumar Serista or Cashier's Department.
- (III) The Munshi Serista or Correspondence Department.
- (IV) The Jama Serista or Accounts Department.
- (V) The Jarip or Amin's Serista or Survey and Settlement, and Jamabandi Department.
- (VI) The Mahafez Serista or Records Department.

Each department is controlled by an Officer in charge, who has a staff of clerks.

The Law Department deals with all the estate litigation; the main registers kept here are the register of bonds and other deeds, executed in favour of the estate, which require legal action, and the register of suits for arrears of rent.

The Cash Department maintains the following registers:—

- (I) Roka or Daily Cash Book.
- (II) Jama Kharach or Account register.
- (III) Monthly returns of accounts.
- (IV) Saltamami or Annual Returns.

The duty of this Department corresponds to that of any cashier's Department. It is responsible for depositing to the credit of the estate all sums remitted in its favour after they have been entered in the accounts and authenticated by means of chalans or transaction slips issued by the Accounts Department.

The Correspondence Department is run on the same lines as all similar Departments.

The Accounts Department's main work lies in the controlling of the various local collection accounts, crediting the amounts received in favour of each tabildar who remits them, and at the end of the collecting season verifying his remittances and balances with the account registers. This verification, which is attended personally by the tabildar, is called nikash.

The registers maintained by this Department are:-

- (I) Tauzi or Korcha or Talabaki register.—This is a general register of the tenants' accounts; one page is allotted to each tenant, and all money transactions with him are entered on that page.
- (II) Jama wasil baki register, which is prepared annually to show the state of each tenant's account at the end of the year.
- (III) Oja and Beojari papers deal with the system of annual remissions, which finds a far greater place in the zamindari seristas than in other systems of account.

- (IV) Books of unissued rent receipts and counterfoils of used receipt books are kept in this Department.
- (V) The tahsildars amdani or daily receipt books are deposited here at the end of the year for future reference.
- (VI) A list of defaulting tenants against whom legal action is proposed is kept here.

The Survey Serista keeps, while in current use, the chittas or measurement papers of the estate, and any available maps and khatians of the estate as well as the jamabandi or rent-roll of the tenants.

The Records Department corresponds to a similar Department elsewhere.

The mufassal or local cutcherries are mainly collection centres of the units variously known as mahals, tabsils or tarafs: the Officer in charge is known as tahsildar or gomostha. Each has a specified area, which usually comprises a few villages. In the more important centres the Officer in charge is called the naib, who sometimes controls several smaller sub-collection centres, which are placed under tahsildars. Each cutcherry is staffed by one or more clerks, or muharrirs, and henchmen called paiks or burkandazes, who provide lawful, and sometimes unlawful, strength of arm in service of the cutcherry.

The following account books are kept by the tahsildar:—

- (I) Rent-receipt books, which are issued and verified by the Sadar Accounts Department.
- (11) Jama wasil book papers containing annual statements of the tenants accounts.
- (III) Korcha or talabaki, a current ledger of tenants accounts.
- (IV) Roka or daily general cashbook.
- (V) Bakijai papers or statements of tenants arrears.
- (VI) Grain advance and realisation papers.—These are only kept in the cutcherries which are in the habit of lending paddy on interest to tenants.
- (VII) Seha or amdani papers.—These are the most important papers for an evidentiary point of view for they are actual running

accounts of daily receipts from tenants, in which, from their nature, alterations or interpolations cannot at all easily be made. This register is written up daily, whereas the karcha or current ledger is only made up from time to time by transcribing entries from the seha. dispute arises as to whether a certain payment by a tenant has been made or not, the seha is excellent evidence, but the karcha is of no great value, and the jama wasil baki practically valueless.

At the end of the collecting season when the nikash or clearance of accounts of each tahsildar is made at the Sadar cutcherry, all papers and registers not in current use are made over for deposit there.

PART II.—THE PRESENT OPERA-TIONS.

Chapter 1.—The district operations.

THE DISTRICT OPERATIONS.

Inception proposals.—According to the original provincial programme of settlement operations, Khulna district operations were due to start in 1917-18, but owing to curtailment of the programme by reason of the war, it was not until the cold weather of 1920 that the traverse party were able to start work in Khulna after completing their Jessore programme. It was originally proposed that the three subdivisions which formed the three blocks should be taken up in the order Satkhira, Bagerhat and Sadar; but it was decided in 1921 that the geographical order Satkhira Sadar and Bagerhat should be adopted, mainly on the ground that economic enquiries which Government required to be made in connection with the scarcity prevailing in 1921 should be taken first in the two subdivisions where the scarcity had been prevalent.

In the Director of Land Records' letter No. 1-19-5057, dated 14th June 1920, conveying the inception proposals, a special reason for taking up the operations at once was adduced in the fact that it was urgently necessary to locate and examine the lands covered by leases under the Waste Land Rules or held under temporary leases as resumed estates.

- 111. Omitted areas.—In the original estimate it was proposed to omit the following areas from the operations on the ground that they had been previously subject of petty settlements under Chapter X of the Bengal Tenancy Act:—
 - (I) 106 square miles of Dihi Bhadra.
 - (II) 20 square miles of Tatibunia.
 - (III) 26 square miles of Mokimpur.

The postponement of the programme however made it probable that the records of these petty settlements would be out of date, and it was decided include the first two in the present Mokimpur records operations. been finally published somewhat later than those of the other two estates, and furthermore this estate had been left out of the Jessore district operations: it was therefore decided to omit it from the programme of this district. At a date subsequent to the framing of the original proposals, two tenures covering villages Atra, Gilatala and Bil Pabla, in all an area of about 13 square miles, had been subject of petty settlement, the records of which had been published as recently as 1918; it was therefore proposed in the inception letter to omit these estates also from the programme. Later on, at the instance of the Collector of the district, who pointed out that a survey and settlement of the Government estate Boyersingh had only recently been concluded. the Director of Land Records sanctioned the omission of this area also from the programme. The total area so omitted is as follows:—

| | | Sq. miles. |
|------------|-------|------------|
| Atra | • • |) 107 |
| Gilatala | • • | } 1.87 |
| Bil Pabla | • • | 10.94 |
| Boyersingh | | 6.33 |
| Mokimpur | • • | 23.60 |
| | Total | 42.74 |

112. Traverse.—The traverse of A block was carried out during the cold weather of 1920-21, but owing to an unfortunate misunderstanding, cultivated areas which had been included in Colonel (then Major) Hirst's topographical survey of the Sunderbans in **1905**-08 were excluded the from traverse programme. No record rights had been prepared for these areas, so it was impossible to omit them from the operations. Accordingly as soon as the error was discovered the Director of surveys was asked to arrange for the traverse to be done immediately. This naturally involved considerable delay, and it was not until May 1922 that the traverse plots were received by us and kistwar started. The area so involved was about 30 square miles, but as good amins were fortunately available. work was taken up and bujharat finished in August. In the other two blocks no such contre-temps arose and though at times the cadastral Circle Officers complained that traverse stations were unduly far from the boundaries of villages, and that subtraverse was insufficient for convenient survey in dense village jungle, the difficulties were never serious, and were easily put right by a sub-surveyor working under the Technical Adviser's directions.

113. Initial difficulties vantages.—Kistwar opened under somewhat unfortunate auspices: during a few months prior to the opening of the field season, there had been considerable local scarcity, resulting from the cyclone of 1919, in police-stations Asasuni and Kaliganj of Satkhira subdivision. hot weather a motion had been the brought forward in the Bengal Council recommending the postponement of settlement operations in Khulna district owing to the economic conditions there: prevalent though motion was defeated by the narrow margin of one vote, there was a considerable amount of local feeling against the starting of the work. This feeling was intensified by the spirit of non-co-operation which was at its height in 1921 and was fermented by certain landlords who were anxious to see the settlement operations abandoned or at least postponed. These considerations did much to prevent amins coming forward on the date fixed for the opening of the field season, and those who did arrive at once combined and declared that they would not go to their halkas unless they were definitely promised fees of Rs. 25 per hundred acres surveyed by them. In putting forward these exorbitant demands, they were no doubt actuated by a genuine fear of the dangers and discomforts of work in the Sunderbans as well as by the deterrent considerations described above. demands were naturally refused, and as they declined to board the special train arranged to convey them to their destinations, the train was sent off without them, and they were left sitting on the platform for the night. Morning fortunately

reason and unconditional surrender, and the majority of them went off to their work. The numbers were however short, and this difficulty was intensified by the fact that many of them after seeing the flooded state of .areas had not been where embankments repaired, bolted altogether. The main therefore of the first cadastral season was the organization of the work with a view to its completion by the small staff available: this difficulty persisted throughout the first part of the season, but as the Sunderban areas dried up in January, matters improved and ultimately all kistwar except five square miles and all khanapuri except seven square miles was completed. seventy square miles of bujharat were perforce left pending in the north of the district where the plots were extremely namerous: it was considered better to leave this comparatively dry area finished and to concentrate upon completion of the southern wet areas. pending work was easily completed at the beginning of next field season. Owing to the open country and the size of the plots in the Sunderbans, the amins were able to earn such high fees that we were never in future troubled by a lack of them, and cadastral programmes were invariably kept up to date in succeeding blocks. To counterbalance the difficulties referred to above a considerable advantage accrued from the fact that the Settlement Officer was also Collector of the Apart from the question of district. local knowledge, a Collector can do far more than a Settlement Officer to make the rough ways smooth by his influence with the subordinate district staff and local land-holders.

114. Special features of Sunderban **Kistwar.**—It is needless to enter details of the organization and routine procedure of settlement work for they are thoroughly standardised by now, and fully described in the manuals of the department and various Settlement The main problems therefore Reports. which call for description here are those connected with any unusual features of the work: such features naturally arose Early in the mainly in the Sunderbans. first kistwar season, the Sunderbans area was inspected by the Director of Surveys; the main outcome of his visit was an order on the subject of mapping the lands which fell outside marginal embankments and which though often covered by "hargoza" or other jungle usually went

under water at high tide. In these cases the Director of Surveys ordered that the marginal embankments should be the "limit of the accurate mapping, and that the normal water's edge should be marked with a dotted line by eyesketch, the intervening area being marked alamats for tree or grass jungle as the case might be. This rule had to be somewhat modified in cases where it proved that a tenant was paying rent for a definite area outside the embankment; such area was mapped as a plot of land Other problems in the ordinary way. arose in connection with the peculiar condition of Sunderban cultivation, in particular with the infinite number of small meandering streams that spread over the reclaimed areas. In order to reduce the number of small plots which the separate mapping of these khals naturally created, it was decided that all khals running through tenants holdings and forming part of those holdings should not shown as separate plots, but should be included in the adjacent plots by a linking symbol, viz., the letter S. Embankments were divided into three classes, the distinction being made at the instance of the Director of Surveys, who directed such embankments as -formed military obstacles to progress, i.e., could not be surmounted by an active horse, should be shown separately from the smaller surmountable ones. Accordingly the larger embankments were shown by the normal conventional sign, i.e., short transverse lines between two parallel lines, smaller embankments over fifteen links in width were shown by twoparallel lines with a series of small crosses on the landward side and embankments under 15 links in width shown by a single line with small crosses on the landward side. Where there was land on both sides, i.e., the embankment was not a marginal but a embankment, the small crosses were marked on the south or east of the line The plots in the Sunderban areas were often long narrow strips of Usually the long ails ran in a straight line from corner to corner of the field and amins presuming on this probability, invariably wanted to draw their lines at long distances apart transversely to them, thus fixing the corners of the fields with a minimum of labour expended on running chain lines: they then joined up the corners with long This method naturally straight lines. only gave a correct representation of the plot when the long ails ran perfectly

straight from corner to corner: if there was any bend in the ail, it was bound to pass unmapped and serious error might It was therefore necessary to insist from the outset that the chain lines should be drawn parallel to, and not across, the direction of the long ails. Another device was found useful in defeating amins slackness; it was made an invariable rule that the katans places where chain lines cross ails should be marked on the ground with a stroke of the kodali: by this means it was possible for an inspecting officer to detect at once the cases where amins had filled up the details of their maps by taking improperly long offsets and had then false chain lines on the map to conceal the length of their offsets. In this connection it is worth note that after the Director of Surveys had inspected the Sunderban area, he gave permission for the bends of the numerous small khals to be located by offsets up to two hundred links from the chain line.

115. River **boundaries** of the district.—Another difficulty arose in connection with the district boundary in areas where there had been change in the course of a boundary river which ran between this district and a previously surveyed district such as Jessore Bakarganj. For purposes of boundary comparison, it was necessary to show on our sheets the adopted boundary of the previously surveyed district, and where a boundary river had changed its course, there would thus be two boundaries of the adjacent district, one being the actually surveyed boundary and the other the midstream of the present river course which is the de facto administrative boundary of the district. In such cases the previously surveyed boundary was shown by the alamat of long broken lines and the present administrative boundary by the ordinary alamat for a district boundary, viz., a dash and a dot. present administrative boundary was taken as the actual boundary of our maps, draft records were prepared for areas which fell outside the present boundary, but had not been included in the record of rights of the adjoining These draft records were in the case of Bakarganj eventually transferred to the Bakarganj petty settlement party, and I understand have proved of considerable use to them,

116. Kistwar in jungle areas.—Apart from the Sunderban and riverine areas, the kistwar presented no particular new

problem. Along the banks of the Bhairab, particularly in Phultala, the village jungle was so thick that amins found great difficulty in running chain lines. In this area the three flag method was necessarily used. This method, which is known as tin-jhandi by Bengali amins and "wapsi" by up-country men, consists in running a straight line from a known point on one morubba line to an unknown point on another, which point is subsequently located by measurement. The amin runs the line by means of three flags moved forward gradually one after another in thick jungle and keeps it straight by looking backwards from the front flag to the two rear ones: hence the name "tin-jhandi" or three flags, and "wapsi" or backwards. In such areas adequate partal was difficult and kanungos were allowed to use the system of marking a line on the khaka, and after taking away the original map, directing the amin to survey the line so marked. The result was compared with • the original map and afforded a satisfactory check of its accuracy. Generally speaking partal, which was easy in most of the area owing to the open nature of the country, attained a standard of fifty per cent. or 320 chains in 640 acres.

Kistwar in bil areas.—Every was made to survey the large shallow bils of the north in detail when the water was at its lowest for most of this bil area is divided into known holdings which are cultivated in years when the state of the water allows. areas are a fruitful source of rioting and litigation; hence every effort was made in the driest months of the year to prepare a map showing field boundaries wherever they could be identified out of the water. In some cases our results were somewhat vitiated by partal revealing the fact that the field boundaries composed of masses of dead water weeds had floated away bodily to some little distance.

118. Formation of villages.—Proceedings for amalgamation and splitting up of mauzas where they were inconveniently small or large, were always drawn up early in the cadastral field season. There was very little objection on the part of any landlord to these proceedings, except in the case of the Morrellganj Laha Estate, which objected to the formation of any mauza, which did not correspond to the unit adopted by the estate for collecting purposes. As however it was impossible to reconcile these collection units with the conditions

laid down in the Settlement Manual for the formation of manzas, it was decided, after a reference to the Director of Land Records, that manzas should be formed on settlement principles, but that lines showing the limits of the Laha estate units should be marked on the maps. • A question of formation of manzas in areas not previously included in the revenue survey was a matter of some importance in view of its effect on the rights of the tenants: this has been described separately in the chapter on the Sunderban operations.

Kanungo Circle Officers.—Kha-119. and bujharat presented few, napuri special problems, except in the Sunder-These have been described ban areas. and need not be recapituseparately lated here. In B block these branches of work were supervised mainly by kanungo Circle Officers instead of the gazetted usually placed in charge circles. The result of the experiment was, in my opinion, favourable. true that in difficult boundary disputes $_{
m problems}$ other unusual gazetted officer proved himself naturally the better man, but in favour of the kanungo Circle Officers were firstly their familiarity with the details of settlement the guile of amins. procedure and secondly they were usually better touring than the gazetted although had several we certainly indefatigable tourers among the latter also, thirdly from a financial point of view the kanungo Circle Officer of course cost less than the gazetted officer.

Record of shares of estates.—In preparing the khatian of the superior interest in an estate at khanapuri, the rule in this settlement was to show every co-sharer of the estate in column 13 of the khatian and to make their shares total up to sixteen annas. If any cosharers had no land in the mauza, they were still given their appropriate shares in column 14, but a note was made that they were without land in the mauza. If however there had been a permanent partition of the estate a separate khatian was opened for each hissva (share): in each khatian so opened, the total of the shares was made to come to sixteen annas.

121. Mortgages by conditional sale or lease.—In many places in the district a form of mortgage by conditional sale or conditional lease was found; the premium paid on the sale or lease was really the

mortgage money and a stipulation or ekrarnama for return of the land on repayment of the premium was simultaneously executed. Though these deeds purported to be deeds of sale or lease, it was recognized that the transaction was really a mortgage, and it was always recorded as such.

122. Experiment in bujharat attestation.—In certain villages which were under resettlement of land revenue, an experiment was made in A block of doing bujharat and attestation simultaneously in order to speed up the jamabandi proceedings. It turned out that the areas so chosen were unfortunate, in that the Government estate did not cover the area of the whole village; hence the extra labour entailed during pressure of work in the bujharat season did not seem justified, and the experiment was dropped. I think perhaps that if the experiment had been tried in some of the villages or B block where Government is sole proprictor and where the attestation was comparatively easy, it would have been more successful.

Boundary marks.—The boundary pillars embedded by the traverse party are usually renewed by the settlement party wherever they are found In a large area of the district missing. these trijunctions were frequently situated on marginal embankments or in some cases, on the middle points of embankments over khals: the marginal embankments are repaired annually by adding earth to them, and the embankments over the khals are in many cases destroyed in November to allow the water to flow in before the crops are cut, and renewed after the harvest. In the circounstances it seemed useless to renew the pillars which would only be covered up or destroyed again next year, consequently, although the usual mark register showing the number and situation of the pillars was duly prepared, the pillars. themselves were not renewed. The small khals which intersect the fields do not change their courses, and in many cases are the permanent boundaries between tenures, heldings, or villages. It therefore is improbable that relay of the sixteen inch map will ever be a matter of much difficulty, and the necessity for preserving permanent Boundary marks is to a great extent obviated.

124. Recess work.—During the recess after the field-work of the cadastral

season was over preliminary statistics were prepared and the somewhat arduous work of checking cross references of interests occurring in more than mauza was done in circle camps. At headquarters preliminary boundary comparison was done and rough thana maps on the scale of one inch to the mile were prepared by reduction of the sixteen inch sheets. These preliminary one inch maps, though nominally prepared only for settlement work, have been in considerable demand by other Departments, and have been well worth the small expense entailed in making them.

Organisation of attestation and section 103 work-Attestation of the records was done partly by gazetted officers and partly by senior kanungos vested with revenue powers: in dealing with complicated matters, the gazetted officer who has usually better educational qualifications than the kanungo, was on the whole the more successful, but much excellent work was done by the Revenue As a matter of organization a particular point was made of keeping the janch, or scrutiny and check, of the attested records up to date. It was never allowed to fall below fifteen hundred interests behind the attestation outturn which was fixed at an average of a hundred interests per day. The great advantage of this was that it enabled the programme of the officers trying objections under section 103A to be kept up to date, and this in turn meant that the final janch camps were kept supplied with continuous work, once they had been In the first attestation sea-.organized. son we were short of officers who could try section 103A objections, and the programme began to fall badly into arrears. To cope with this, three of the best kanungo Revenue Officers were vested with powers of Assistant Settlement Officers in order to enable them to try objections. Even so the progress continued somewhat behind hand and leeway was only made up during the early part of the next field season. The kanungos who were selected for trying objections on the whole justified their choice and probably disposed of nine cases out of ten as satisfactorily as more qualified officers would have done: in occasional cases however they failed to grasp broad principles which were outside their previous experience, and although there is no appeal from section 103A decisions some revisionary work was done by the

Settlement Officer and the Charge Officer.

126. Use of section 48, Bengal Tenancy Act.—The main problems which arose during attestation have been dealt with either in the section of this report which deals with the tenure system and the right of tenants, or else will be noticed in detail in the chapter which is devoted to Sunderban problems. few other points however require notice. The provisions of section 48 of the Bengal Tenancy Act which enable the Revenue Officer to cut down the rents of under-raivats if they exceed their immediate landlord's rent by more than 25 per. cent. in the case of verbal agreements and by 50 per cent. in the case of registered agreements, were not usually enforced. Experience proved that in such cases the landlord made use of his legal power of ejecting the under-raivat if he was dissatisfied with the amount of rent recorded. Révenue officers were accordingly instructed not to apply the provisions of the above section unless they were fully satisfied that the under-raivat would be secure from molestation as the result. Under-raivats who were recorded as having occupancy right by custom were in no case given the benefit of this section as it was considered that they were sufficiently protected by their customary right and could not claim additional privileges.

127. Holdings sold in execution of decree.—Many cases occurred where holdings or tenures had been sold in execution of a decree for rent, but the tenant still continued in occupation of his land. These were fruitful sources of dispute and were dealt with in the following manner. Where symbolical possession had not been taken through court, the name of the tenant and the old rent continued to be recorded as if no decree had been passed, for until possession had been delivered, it was considered that the decree must be treated as infructuous. Where however symbolical possession had been delivered, the old title had clearly been extinguished. If the tenant continued in possession, in spite of the court's order, his possession would be either permissive with the consent of the landlord, or adverse without his consent. In either case no title would be established until twelve years had elapsed, but if the landlord had accepted rent during the period of occupation or in any other way

recognized the tenant, it seemed equitable to record the tenant's rights as if they had never been extinguished. when no rent had been accepted, occupant could not be considered as a bone fide tenant: he was a mere trespassing occupier and was recorded as such under the name of dakhalkar, and no rent or status was given to him. if symbolical possession had been taken more than twelve years previously and the old tenant was still found to be in occupation, he was considered to be protected by the law of limitation and was recorded as having old status but, in the column for rent, the words "liable to rent" were written.

Hlegal enhancements.—Cases of illegal enhancement of course came to light from time to time, and in accordance with the usual settlement practice, such rents were cut down, not to the amount of rent which could have been legally levied as a result of enhancement, but to the original rent as it was hefore the enhancement was made. Cases of wholesale enhancement were reported through the Charge Officer to the Settlement Officer, who passed orders on them. Such cases were not very numerous and involved no unusual question of law or fact. The case of embankment enhancements however presented In many cases it was some difficulty. found that tenants were paying rent at rates which included an enhancement of more than two annas in the rupee on account of the proprietor undertaking to Provided maintain the embankments. these enhancements were effected by registered contracts, they were considered to have been legalized by section 29 (2) of the Bengal Tenancy Act on the ground of landlord's improvement, but if agreement was verbal registered, the enhancement would not be legal unless the defect had been remedied. under section 29 (1), by continuous payment for three years; in this case the enhanced rent was recorded as the legal If however the enhancement by rent. unregistered or verbal contract had not been paid for three years, the following principles were observed. If the landlords and tenants agreed upon the amount payable, the attestation Officer sent a report for orders under section 109C of the Tenancy Act to the Settle-In Eastern Bengal the ment Officer. attestation Officer if satisfied that the contract was equitable could have recorded the new rent under section 109B. but in this district the Eastern Bengal amedment of the Tenancy Act is not in force, and the attestation Officer has no power to record a rent which is equitable but not strictly legal. If however the landlords and tenants could not agree upon the amount payable, the attestation Officer was directed to attempt to bring about a compromise. If he succeeded, he submitted a report for action under section 109C. If however he was unsuccessful in effecting the compromise, he was bound to record the original rent as it stood before the enhancement.

Leases contravening section 85, Bengal Tenancy Act.—Reference has been made above to the prevalence in this district of permanent or long term leases granted by raivats to under-raivats in contravention of section 85 of the Bengal Tenancy Act, and it has been explained that in reality in these cases there is more than one grade of raivat, each having practically identical customary rights, but as the Tenancy Act does not envisage the existence of more than one grade, we have been compelled to record the lessee in these cases as an underraivat. Hence a difficulty arose in dealing with these leases which clearly contravene the provisions of the law. Fortunately, however, a solution was found in the ruling in a High Court decision in the case of Chandra Kanta Us. Amjadali (25 C. W.N. 4), which lavs down that in such cases the written lease is entirely invalid and has no legal consequences, but inasmuch as there was an intention to create a lease between the lessee and the lessor, the lease must be regarded as existing in the form of a Accordingly verbal contract. leases were treated as verbal contracts in our records, and unless there was any evidence of contrary intention of the parties, the lessee was recorded as having occupancy status by custom.

130. Protected interests under Regulation VIII of 1819.—An unusual point arese as a result of the sale of a patnitenure under the Svedpur Estate. After the sale, which was of course held under the provisions of Regulation VIII of 1819, the purchaser claimed the right to evict all tenants who were non-resident in the village, even though they were settled raivats of the village, on the ground that only resident raivats are protected from eviction by the Patni Sales Regulation, under the name of khudkahst-

raiyats; non-resident raiyats, who correspond to old class of paikahst raiyats were not protected by that Regulation, and it was contended by the purchaser that as the Tenancy Act left the old Regulation unrepealed, its provisions must prevail over the provisions of section 160 of the Tenancy Act. The local Government Pleader was of opinion that this view of the law was correct, and his opinion was supported by the fact that one of the provisions of the recent abortive draft amendment of the Tenancy Act was framed with a view to protecting such tenants from eviction after a patni It appears, however, that the matter has very recently been set at rest in favour of the tenants by a decision of the High Court in the case of Jnauendra Mohan Bhaduri Vs. Harendra Krish De, 87 I.C. 32. In the absence of a full report of the case, the following abstract is taken from the addenda to the 1925 edition of the late Rai Surendra Chandra " Occu-Sen Bahadur's Tenancy Act. pancy raivats are protected from eviction under section 11 of the Patni Regu-A raivat with a lation VIII of 1819. right of occupancy now occupies the same position as a khudkahst raivat, and should therefore have the same protection as a raivat had when the Patni Regulation of 1819 was passed."

of Commutation produce rents.—Applications for commutation under section 40 of the Tenancy Act were rare. The reason appears to have been partly the fact that occupancy raivats paying rent in kind are not very common in the district and also the fact that in areas where embankment is necessary, the tenants themselves, though individually they dislike the system, realize that it is to their own interest that the landlord should realize produce rent from the village, as he then has a direct interest in seeing that the embankments are main-For this latter reason, tained intact. also, during the course of jamabandi proceedings efforts were only made commute produce rents to cash rents when there was a very strong reason for doing

132. Final janch.—As noted above, every effort was made to complete final janch each year before the Puja holidays. It was found more convenient to have three or four final janch camps in various parts of the block than to have the work concentrated at Sadar. One very strong reason for this was that in

the mufassal the amlas are always willing to begin work early in the morning, but at Sadar they follow the example of Collectorate and other amlas and are very unwilling to attend office before 11 A.M. In A block an experiment was made of staffing the janch camps entirely by kanungos. On the whole the experiment was a success, for the kanungos, particularly the junior ones, benefited much by the experience thus gained and took a lively interest in the details of the work and the interpretations of rules and orders issued for their guidance. outturn, however, of the kanungos fell considerably short of that of experienced muharrirs and in "B" block the work was done partly by kanungos and partly by muharrirs. In "C" block very few kanungos were available, for they had been previously transferred to the 24-Parganas Settlement for cadastral work. No branch of work subsequent to final janch is yet completely finished, and as a supplementary report will be issued later dealing with these branches, it is useless to anticipate here a part of the information which will be contained therein. But in the case of jamabandi, the work is so nearly completed and has involved, in the Sunderbans, so many problems of unusual interest that it seems worth while to combine an outline of Sunderban revenue history with account of the questions which arose in the Sunderbans during the course of the present operations, particularly attestation. objection, and jamabandi stages. This account is given in the following chapter.

Chapter II.—History and Problems of the Sunderbans.

PRESENT AND PAST PROBLEMS OF SUNDER-BANS REVENUE ADMINISTRATION.

Some account has already been given in this report of the way in which deltaic formation has been spreading southward between the Hooghly and the Meghna rivers building up new land as it goes. These two rivers are respectively the west and east boundaries of the Sunderbans and the southern boundary is the Bay of Bengal. No definite line can be given as the northern boundary—for as delta building goes on, men push further and

further southward to cultivate the fertile alluvion, and what was once inhospitable jungle, becomes in one or two generations fields of paddy and homes of men. At any given time therefore the ${f geographically}$ speaking Sunderbans begin where cultivation ends but as land newly reclaimed from jungle and still infested by wild beasts cannot bear an assessment which old cultivation can pay, the Sunderbans from a revenue point of view are marked off as the land which is still in natures tutelage, too immature to bear the fiscal burdens of The fact was recognized in maturity. the early assessments of Bengal for we find that in Sultan Shuja's revision in 1658 of Todar Mal's original settlement of 1582, a new sarkar is introduced to cover the Sunderban tracts which Todar Mal had left unassessed. This sarkar was called Muradkhana or Jeradkhana, and was divided into two parganas only, Akla for pasturage and Bunjer for forest produce, with a light assessment of sicca It is doubtful whether this Rs. 8.454. sarkar covered the whole of the productive area of the Sunderbans or only the eastern portions, as is suggested by the ultimate inclusion of the sarkar entirely within the Neabut of Dacca, but its existence is of interest as the first example of the recognition of an area assessable to revenue, but not fit to bear the full burden of cultivated land.

We must look upon the Sunderbans therefore as a tract ever moving southward and containing in its northern limits land whose assessment requires special knowledge and special treatment, while the rest of its area is unassessable as yet to land revenue but containing the potentiality of revenue production. It is important to envisage this twofold aspect at the outset, for the dual problems of assessing cultivated area and settling uncultivated waste have been the two problems which have confronted the revenue administration throughout the fiscal history of the Sunderbans. scientific conservation of forest produce and its exploitation for revenue purposes is a later offspring of fiscal eugenics, which requires separate treatment from the older question of land revenue.

Ethymologically, the meaning of the word Sunderbans is obscure. Various derivations have been suggested: some derive the word from the name of the sundri tree (Heritiera minor), which is the most valuable tree of the littoral

But as the name applies to areas where the tree is not found at all, this derivation must be regarded as doubtful. A pious interpretation of the name derives it from the Sunddha river in Bakarganj district; this is a contraction of the name Sugandi a place celebrated as a "Pithasthan" or spot where part of Sati's body (in this case the nose) fell after it had been cut in piece by It is, however, improbable Mahadeb. that a single spot, however hallowed by tradition, would give its name to the thousands of square miles included under the term Sunderbans: a more likely derivation is the word Samundar or Samudra-ban, "sea forest"-a name peculiarly applicable to this jungle inundated throughout by salt tide and permeated by saline, air, and it is not difficult to agree with Mr. Pargiter in Of other accepting this derivation. suggestions the derivations from the forest tribe of Chandabandas, or from the Kingdom of Chandradwip are more ingenious and fanciful than probable.

The earliest references to the area now known as the Sunderbans described it as the "bhatti" or ebb tide land; this name is applied to it in the Ain-i-Akbari and in Grant's analysis of the finances of Bengal. The name is no longer current, but the common term used by cultivators and wood-cutters alike throughout Khulna district is bada which phonetically at any rate recalls the word "bhatti."

Archæologically the area is of considerable interest for the depths of its forest contain remains of buildings, tanks temples, etc., which show that it must have been inhabited by a considerable population within five or six hundred vears. It is out of place to describe these in detail in this report; full details of the various relics of antiquity are given in Professor Mitra's History of Jessore and Khulna. As however the existence of these ruins is actually used by claimants to right of property in the Sunderbans tracts as arguments in favour of their pretensions, it is sufficient to point out that even in the best preserved remains, the Shekertek temple, or the Betkasi ruins, there is no evidence, external or internal, to connect them with any particular person or family, and in any case all such claims were set at rest once and for all by Regulation III of 1828 which affirmed and secured to Government the sole right of property in the Sunderbans.

134. Early assessment of the Sunderbans.—Apart from legend and tradition the first fact of fiscal importance in the. Sunderbans was the creation by Sultan Shuja in 1658 of the sarkar Muradkhana or Jeradkhana, referred to above. After his assessment, a long gap occurs before the subject appears to have received attention again, though doubtless the border zamindars had meanwhile been pushing cultivation further and further southward. The question of reclamation of Sunderban jungle was taken up in 1770 by the Collector-General Claude Russell in respect of the Sunderbans in the vicinity of the 24-Parganas, and by Tilman Henckell, Judge and Magistrate of Jessore in 1783, in respect of the Sunderbans between the Haringhata or estuary of the Baleswar river on the east and the Raymangal river on the west. leases granted by Claude Russell originated the patitabadi taluks of the 24-Parganas and the Jessore leases originated the Henckell's taluks of Jessore and Bakarganj.

135. Henckell's scheme.—With the former this report has little connection, but as the great majority of the latter fell within the boundaries of the present district of Khulna, their history requires further notice here. It is to be noted that neither Russell nor Henckell conceived the idea of assessing lands newly cultivated by border zamindars; they simply dealt with unoccupied Henckell's scheme was as follows. Plots of jungle with specified boundaries were to be leased out to cultivators with a revenue-free period of three years and a rental of 2 annas sicca per bigha of 55 yards square for the fourth year, 4 annas for the fifth year, 6 annas for the sixth year and 8 annas for the seventh year and onwards in perpetuity. At the same time he defined the boundaries of the Sunderbans as follows:—

South—The Bay of Bengal. East—The Haringhata river. West—The Roymangal river. North—

- (a) The village of Dhuliapur on the Kalinga river.
- (b) The village of Kagrighat on the Jabuna river.

- (c) The village of Chingrikhali on the Kabadak river.
- (d) The mouth of the Dhaki creek on the Marjata river.
- (e) The end of the Dhaki creek.
- (f) The yillage of Serpatalya on the Daudkhali river.
- (g) The village of Kachua on the Baleswar river.

This northern boundary is of interest as the earliest definite northern boundary of the Sunderbans: the line can be approximately identified on a modern map by reading Kalindi for Kalinga, Khagrahat for Kagrighat, Bhadra for Pahdor and Srifaltolla for Serpatalya.

136. Henckell's taluks and khas abads.—Within this boundary Henckell gave leases to applicants and at the same time established three frontier posts on the northern confines of the Sunderbans. One was situated at the junction of the Jamuna and Kalindi, and still bears the name of Henckellgunge or Hingalganj, though a more modern name of Bangalpara is displacing the older name; a second was Chandkhali on the river Kobadak and a third Kachua on the Baleswar. These posts known by the name of khas abads. Henckellgunge is situated within the district of 24-Parganas, and the other two within the modern district of Khulna. The history of Kachua as a Government estate was short, for it was settled in perpetuity with the border zamindars during the decennial settlement of 1790.

The khas abad of Chandkhali was early settled in farm, the first traceable lease being a farming lease which expired in 1815. Subsequent settlements of the estate were in Sunderban talukdari right, until in 1877 it was purchased by Government in a sale for arrears of revenue. It was then settled raiyatwari with effect from 1878 and has been held since under khas management by Government. In the history of the neighbouring estate - Mahomedabad, which is given below, reference is made to the fact that management of these estates has been rendered very difficult by the increasing salinity of the Kobadak and Menus rivers, and the question of their future management is at present pending with the Board of Revenue.

The following mauzas are included in the estate:--

Chandkhali. Feduarabad.
Kanuardanga. Fatehpur.
Garerdanga. Dongabhanga.
Sripur. Dhemsakhali. •
Chandmukhi. Chak Narikeltala.

Kaowali.

Opposition of the zemindars.— The fatal flaw in Henckell's scheme was that it interfered with the claims of the zamindars to add to their estates all such waste lands as they could bring under cultivation. This claim was based upon prescription, and though the Board of Revenue in 1814 laid it down as a "matter of notoriety" that the whole of the Sunderban tract "was excluded from the zamindars" and belonged absolutely to the State, the earlier and greater authority of Grant in his "Historical and Comparative Review of the Revenues of Bengal " is distinctly in favour of the right of the border zamindars " to ameliorate the uncultivated wastes of the Sunderbans " subject to the payment of the State's due share of resultant profit. Actually such amelioration of waste had been going on unchecked, for it is on record that the petty zamindars of Buzurgumedpur on the skirts of the Sunderbans had improved its revenues from 6,000 rupees to two lakhs during the thirty-five years anterior to 1765. Small wonder then that the zamindars fought against the loss of this source of profit involved in Henckell's introduction of grantees on the outskirts of the Sunderbans, and no doubt looked upon Henckell much as Conservatives looked the Llyod-George during his early Mr. tenure of office as Chancellor of the Exchequer. The hostility of the border zamindars militated against the success of the scheme. Every attempt was made by them, by fair means or foul, to establish claims of title or possession to the grantees' land. In 1786 Henckell attempted to cut away the ground from the claimants' feet by demarcating the northern limits of the Sunderbans by bamboos planted along the banks of rivers; the proceedings were widely known as Henckell's "bansgari", but vague claims to Sunderban forest as far south as the sea were still put forward. Finally in 1788 the Board issued a general notice to the zamindars to define

their own boundaries within three months on pain of forfeiting all land south of Henckell's bansgari. This brought the zamindars into the open with definite claims, and it was at last possible for Henckell to decide on the validity of the grants which he had already made. He went into the matter with characteristic care and released to the zamindars all lands to which they could show a reasonable title, giving, in several cases, fresh Sunderban lands to the old grantees to replace the lands so released. For the future the zamindars could not put forward legal claims, but they substituted covert hostility to the grantees and succeeded in dispossessing many of them. Only the most powerful survived, and in this process of elimination the original raivati character of the grants was lost sight of, and the grantees settling their own tenants on the land become known as Henckell's talukdars.

The taluks after the Permanent **Settlement.**—At the time of the decennial settlement in 1790, Mr. Rocke, who was responsible for that settlement in Jessore, made a final searching enquiry into the rights—of the grantees. All cultivated lands to which the zamindars could establish title or of which they were clearly in possession were united to their zamindaries for the purposes of assessment, and all grants which survived were reassessed and included in the decennial settlement as if they had been kharija taluks. They were not however given a fixed assessment, but were assessed at progressive rates according to the terms of their leases, and stipulations as to assessment on increased cultivation were left in force. When the decennial settlement was made permanent in 1793, the position of the talukdars remained untouched, but the taluks, about this time, advancing a step further from thir origin as raivati holdings, became popularly known as parganas, and the title has in many cases survived in popular parlance to this day, no doubt confirmed by the subsequent daimi settlements (settlements in perpetuity), which were granted many year later to genuine Henckell's taluks. These taluks appear to have been only sixteen in number at the time of the Permanent Settlement. In the present Sathkhira subdivision seven taluks. Pranpur, Ramjannagar, Bhairabnagar. Bansipur, Gutlakati, Ismailpur, and

Govindapur, existed in the neighbourhood of the Jamuna river, and though the original taluk lands, together with considerable extension of cultivation, have been long permanently settled, the old names can be traced in the village names in the south of Shyamnagar police station. In Khulna subdivision three taluks, Banchanagar, Basharatpur and Babupur become united under the name of Babupur: these names do not survive. but the lands of the taluks can be traced from old Sunderban maps, in the neighbourhood of Patnikhali village in Paikgachha police-station. Two other taluks Mahomedabad and Kalidaspur survive as Government estates and came under resettlement in the present operations. Their history is as follows.

Mahomedabad and Kalidaspur were among the original grants made by Mr. Henckell in 1785, but as the border zamindars were able to establish a title to the lands comprised in the original grants, these lands were released to them in 1790 and fresh settlements of jungle land were given to the grantees in the locality where these estates now exist, the old names being preserved.

Mahomedabad was settled with Mahomed Safi. but he as defaulted in revenue, it was purby Government in and kept khas till 1811 when it was resettled on a permanent revenue with the son of the former settlement holder. The latter soon sold his rights to two persons, 10 annas to one Gouri Charan Ghosh, and the remaining 6 annas to one Bakaulla, and at the purchasers' request the estate was partitioned between them in about 1820. The villages, of which the Government estate is now composed, viz., Hatidanga, Gajalia, Kalua, Kaiya Chittabunia and Maukhali fell to the 10 annas share, which passed to Government by another sale for arrears revenue in 1823. During the last hundred years its management has fluctuated between khas management and settlement with lessees, and has always been fraught with difficulty owing to the increasing salinity of the Kobadak and rivers, which have Paused periodical destruction of crops by inundation. The crying want of the estate is a strong system of embankments like those which have been erected in the neighbouring estate of Soladana, or in Betkasi and Gabura further south,

The expenses of erecting such embankments are however very great, and it seems improbable that Government will be in a position to provide the necessary capital outlay. Three other neighbouring estates, viz., Kalidaspur, Chandkhali and Kharia Dhamshakhali are in a similar condition, and as a result of the enquiries made during jamabandi proceedings in these four estates, the question of khas management or lease to a substantial capitalist has been referred to the Board of Revenue for orders, which at the time of writing have not yet been issued.

. The history of Kalidaspur is similar to that of Mahomedabad except for the fact that though its right as a Henckell's taluk was extinguished by sale for arrears of revenue, it was continuously resettled in ordinary Sunderban talukdari form for upwards of a hundred years until in 1919-1920 the existing talukdar gave up his rights to the estate, and it has since been held in farming lease pending regular settlement. As described above, the question of its future management is now pending with the Board of Revenue. Estate Kalidaspur comprises the following mauzas:—

Kalidaspur, Kantabunia. Chak Kaowali.

In Bagerhat subdivision three taluks occurred, riz., Asmatpur, Gokulnagar and Ballabhpur. The former lay on the east of the Pasur river in the present Rampal subdivision directly opposite to the mouth of the Chunkuri khal; Gokulnagar and Ballabhpur lay side by side in the large bend of the Putimari river near the villages of Bara Kathali and Chota Kathali in the present Rampal police-station. All three have now been permanently settled. The sixteenth taluk Chandipur lay outside the boundaries of the present Khulna district, at the junction of the Baleswar and Kochua rivers in Bakarganj district. Besides these taluks there were two khas abads Henckellgunge and Chandkhali, described above; the third khas abad Kochua was released in favour of the zamindar claimant in **179**0.

139. Morrieson's survey.—The next event of importance in the Sunderbans was the survey of the Sunderbans from the river Hooghly to the river Pasur in 1811-14 by Lieutenant W. E. Morrieson,

and the correction of this survey in 1818 by his brother, Captain Hugh Morrieson. As far as Khulna district is concerned, their survey was confined to the area between the Kobadak and Pasur rivers and to the waterways between the rivers Mangla and Baleswar. The maps• of the area between the Kobadak and Koyra rivers are specially valuable as this area subsequently lapsed into jungle, and Morrieson's maps are the only reasonably reliable evidence of the original condition of the tract.

Smelt's operations.—Up to the first decade of the nineteenth century the question of Sunderban settlement was confined to waste lands; Henckell's grants had been entirely forest grants, and no question of resumption of unauthorised cultivation had arisen. This was subsequently to become the burning question in Sunderban revenue history. The first indication of this was the action taken by the Board of Revenue in 1814 who, affirming as a matter of notoriety that the whole of the Sunderthe exception of the ban tract (with areas covered by Henckell's taluks and similar taluks in the 24-Parganas district called patitabadi mahals) was excluded from the zamindaries and belonged absolutely to the State, considered it desirable for the State to assert its claims to such land which had been surreptitiously reclaimed. Enquiries were accordingly instituted under the orders of Government: these enquiries, in the area now covered by Khulna district, were conducted by Mr. Smelt who was appointed for that purpose in 1815. The primary object of his appointment was to ascertain the extension of cultivation by Henckell's talukdars and to assess such extension in accordance with the terms of their pattas. He was also directed to measure all lands reclaimed by persons other than Henckell's talukdars with a view to their assessment.

These operations were important as the first attempts to assess both genuine "taufir" or excess land and also unauthorised cultivation. In the former case the cultivation was authorised and the object of the enquiry was merely to ascertain what revenue should be paid by the reclaimer; in the latter case the reclamation had been without authority by persons with no right in the Sunderbans and the ascertainment of the extent of such cultivation was a necessary preliminary to deciding how to deal

with it. The operations were conducted with the utmost speed; about a square mile per day was the rate of progress. Naturally the survey was rough and the calculation of area at best approximate, but no interior details were measured, and the fact that the blocks of land (or choks as they are called) in the Sunderban's were universally bounded rivers or khals made approximate survey and calculation of area a simple matter. Government accepted accuracy of the survey and passed orders on the results.

These orders were of a liberal nature -never again imitated in the case of unauthorised reclaimers. The latter were given a proprietary right in the lands reclaimed by them, including a right to malikana on recusance; their lands were assessed generally at eight annas per bigha, but declared liable to assessment at an equitable jama at any The privileged pattadars or grantees were given a further right to hold their lands at eight annas a bigha in perpetuity, and remeasurements were prohibited at intervals of less than five years. In both cases a point of some importance was claimed by the lessees and allowed by Government; the standard of measurement was accepted as a bigha of 55 yards square (i.e., 110 cubits to the rassi), this being the traditional Sunderban bigha.

Appointment of Commissioner in the Sunderbans.—While the question of reclaimed land was thus being dealt with, the question of the untouched forest land was occupying the attention of Government. A reference on the ulletsubject was made to the Board of Directors, and a reply was received affirming the principle of the proprietary right of Government in all lands not included in the decennial settlement, and directing encouragement of reclamation of the Sunderbans forests. This led to an event of importance, the appointment of the Commissioner in the Sunderbans (in virtue of Regulation IX of 1816) with duties, powers and authority of a Collector of Land Revenue: Mr. Scott was appointed as the first Commissioner.

For several years the attention of the Commissioner was confined to the 24-Parganas district, and though in 1821 the Commission was reconstituted and strengthened by the addition of a survey party, the eastern limit of the Commissioner's activities appears to have been

the river Jamuna till the year 1839: only a small portion of this area, namely, the land between the Kalindi and Jamuna rivers falls within the present district of Khulna. The main work which was at first entrusted to the reconstituted Commission, was "the demarcation of public lands from private property in order to prevent future encroachment". were defined in the instructions issued to the then Commissioner, Mr. Dale, as likely to fall into two classes (i) lands the property of the State and unreclaimed and (ii) lands claimed by individuals, but believed to be the property of the State. These two classes in fact covered all land outside the decennially settled area, whether virgin jungle or surreptitious reclamation, except the previous jungleburi grants: a special enquiry into the cases of the latter was enjoined, but as the great majority of them were patitabadi mahals outside the boundary of the present Khulna district, this question does not require detailed notice here. The important point is that the claim of the State to property in surreptitious cultivation outside the limits of the decennial settlement was clearly made.

Prinsep's survey.—In compliance with these instructions, Mr. Dale and the Surveyor Ensign Prinsep proceeded in 1822 and 1823 to demarcate the boundaries separating State from private lands, working westwards from Pranpur on the river Jamuna, in the extreme west of the present Khulna district. They soon discovered that instead of the two classes anticipated, there was only one class, namely, lands claimed by individuals, for no land-holder would for a moment admit that Government had any right to property in an acre of soil even in the depths of the forest; everything was claimed as appertaining to the zamindaris. Government was, however, by no means prepared to admit this claim, and as a prelude to deciding it, Ensign Prinsep was directed to demarcate the actual forest line from the river Jamuna to the river Hooghly: as stated above the great majority of this survey fell outside the limits of the present Khulna district.

143. Government's rights in the Sunderbans.—Government then proceeded to review the whole question of the Sunderban areas not included in the decennial settlement. As stated above, the views taken of the rights of Government in the Sunderbans were from

the outset divergent; prior to the Permanent Settlement Grant had recognized the rights of the zamindars to ameliorate the waste of the Sunderbans subject to the payment of the State's due share of the resultant profit, while later on in 1814 the Board took the view that the waste lands of the Sunderbans were the absolute property of Government. A gradual revulsion, however, took place to the views of Grant that the waste lands appertained to the adjoining zamindaris, and it was argued that the assessment of the zamindaris having been settled once and for all in 1793, it was not open to Government to reassess Sunderban land. The point was discussed in the course of a civil case in 1816 but Government's proprietary title was upheld: Government however came to the conclusion that the matter should be set at rest by legislation.

144. Resumption Regulations.—This led to the passing of Act XXIII of 1817. The preamble of this Act is important. "There is reason to believe" it ran "that extensive tracts of land lying within that part of the country which is ordinarily denominated the Sunderbans and which at the period of the formation of the Permanent Settlement was entirely waste and not included within the limits of parganas, mauzas or other known divisions of estates for which a settlement was concluded, have been brought into cultivation and are now occupied by individuals without payment of revenue but the inherent title of Government to a certain proportion of the produce of every bigha of land, in all cases in which it shall neither have transferred its right thereto for a term or in perpetuity nor have limited its demand by a distinct agreement with the proprietor or possessor, has uniformly been avowed and acknowledged; and in pursuance of that principle, Government are already entitled to assess all lands of the nature of those above described ". It will be noticed that this preamble asserts the right of Government to assess Sunderban land, but does not specifically assert Government's proprietary right therein though this proprietary right had been claimed "as a matter of notoriety "by the Board of Revenue in 1814 and definitely asserted by the Court of Directors in a despatch of the same year. The distinction between the right of property and the right to assess to revenue is of fundamental importance in revenue administration, but the distinction does not seem to have

been recognized at this period. Attention was focussed on it later when the distinction was drawn between alluvial accretions to private property and islands formed in a navigable river, and in the later Regulation dealing with Sunderban resumption (Regulation III of 1828), the State's right of property is unequivocally asserted. The wording of the preamble of Regulation XXIII of 1817 cannot be taken to mean that the State forewent its proprietary right in the Sunderbans in favour of usurping claimants.

The details of the resumption procedure laid down by this Regulation are They were medified not important now. and improved by Regulation II of 1819, but by an unfortunate omission, the latter act made no reference to Government's rights in the Sunderbans. zamindars seized the opportunity to reassert their previous claims that the whole of the Sunderbans had been included in their permanently settled estates, and to deny not merely Government's proprietary right but even its right to assess revenue on extended cultivation. Meanwhile the famous regulation which still governs temporary settlements (Regulation VII of 1822) was passed and was extended to the Sunderbans by Regulation IX of 1825. act also provided for investigation into liability to assessment, concurrently with settlement operations. But the opportunity to remove the radical defect of Regulation II of 1819 was not seized. and the Board now proposed the supplementing of Regulation II of 1819 by a new enactment "declaring the exclusive right of Government to the whole of the uncultivated Sunderban waste and of speedily delineating the waste throughout the districts bordering on it ". Part of this delineation had been already carried out by Ensign Prinsep, and it was now proposed to complete the work for the area between the Jamuna and the Meghna. Government agreed with the Board, but with regard to the assessment of cultivated land outside the forest area whether surplus land of jungleburi taluks or unauthorised encroachments by border zamindars, it proposed to await the decision of the civil courts.

145. Regulation III of 1828 and Government's proprietary right.—This led to the enactment of Regulation III of 1828, the most important enactment in

Sunderban revenue history. The wording of section 13 runs as follows. " The uninhabited tract known by the name of Sunderbans has even been and is hereby declared still to be the property of the State: the same not having been alienated or assigned to zamindars or included in any way in the arrangements of the perpetual settlement, it shall therefore be competent to the Governor-General in Council to make, as heretofore, grants, assignments and leases of any part of the said Sunderbans and to take such measures for the clearance and cultivation of the tract as he may deem proper and expedient. . . The boundary of the said Sunderban jungle shall be laid down by accurate survey determined on the spot by the Commissioner of the Sunderbans and any zamindar talukdar or party interested shall be entitled to receive a copy of the survey From this section it is clear that all land south of the boundary line (later known as the Dampier-Hodges line) so laid down, is the property of Government. This has never been seriously questioned. But there was a considerable area which was Sundarban jungle at the time of the Permanent Settlement, but which had been Settlement, but cultivation between brought under 1828 1790and Part ofarea had been included in Henckell's taluks and in the settlements made after Smelt's measurements as described above. The rights of the holders of these areas were clearly governed by their existing pattas. The residue however which was not included in any such patta was open to resumption, and the question remained whether the State had a proprictary right in such land, or whether it had only the right to assess such land to revenue, leaving the person found in possession as proprietor. The question was often mooted in subsequent Sunderbans history, and the answers were by no means unanimous. The case for the State's proprietorship is based upon the contention that all Sunderban waste which was excluded from the Permanent Settlement is *ipso facto* the property of The reclaimer of jungle the State could, and often did, show that reclaimed land was included in the boundaries of his permanently settled estate. In this case the State could claim neither proprietorship nor the right to assess further the revenue having revenue, settled in prepetuity. been the But where area was not

included in the permanently settled estate, the reclaimer could only claim proprietorship by virtue of a statutory enactment, in the same way as a proprietor of an estate can claim proprietorship of fluvial accretions by virtue of Act XI The fact that under the early fiscal arrangements in Bengal, as described by Grant, the zamindars exercised unchecked the right of "ameliorating the waste" of the Sunderbans and consolidating the reclaimed area with their zamindaris is no legal justification for maintaining that after the Permanent Settlement, they should be recognized de jure proprietors of lands, of which they were not granted proprietary right by the Permanent Settlement or any other subsequent Regulations. This case is surely valid; it is the view which has been adopted in this settlement in the few cases where lessees of resumed Sunderban estates claimed proprietorship of the estates. It should be added here that at the outset of the present operations, the Board of Revenue's instructions were asked as to whether in the case of claimants to proprietorship in resumed estates of this nature, the Settlement Officer should be bound by status accorded by previous Commissioners in the Sunderbans, some of whom appear to have grievously overlooked the provisions of the law in their settlements. reply of the Board (conveyed in their No. 5197 W. L. of 28th July 1922) was to the effect that each case was to be dealt with on its merits, and that status previously accorded by Commissioners in the Sunderbans was not necessarily to be regarded as binding. In carrying out these instructions, in the light of the above views of the law, proprietorship has been refused to a few persons who previously had been granted proprietary settlements; up to the time of writing, the decisions in these cases have not been seriously contested before any civil court or higher revenue authority.

The other provisions of Regulation III of 1828 referred to the procedure for resuming land which was liable to resumption. Briefly speaking the Act provided for appointment of Special Commissioners for determining the rights of parties in resumption proceedings. Proceedings were to be instituted by the Collector or other local officer (including of course the Commissioner in the Sunderbans), and an appeal against his decision might be filed either by Government or by the adverse party to the

Special Commissioners whose decisions would be final. Powers of the civil courts in regard to such cases were transferred to the Special Commissioners.

The Dampier-Hodges survey.--The enactment of this Regulation was soon followed by the definition of the Sunderbans boundary for which it pro-This was carried out by Mr. William Dampier, Commissioner in the Sunderbans, and by Lieutenant Alexander Hodges in 1829. This survey traversed practically the whole Khulna district from Pranpur on the Kalindi river to the junction of the river Panguchi (or Jiudhara as it was then called) with the Baleswar. The boundary was described in a series of robokaris prepared by Mr. Dampier which gave the names of the villages, estates or rivers lying along it, and maps illustrating his robokaris were prepared at the same time. The boundary can be easily identified with the help of the maps, and robokaris but in two places some difficulty has arisen. Between the rivers Kobadak on the west and Kovra on the east cultivation which spread far south in the early years of the nineteenth century had retrograded owing to saline inundation and lands which Morrieson's maps and the quinquennial papers show to have been under cultivation were now covered by dense jungle. Only mauza Gobra (a part of the present village of Madiner abad), and some area in the neighbourhood of Boga was under culti-It was clearly misleading to include this area in the Sunderbans forest, for the rights of the zamindars subsisted there. Mr. Dampier accordingly directed that the line of forest as shown in Morrieson's maps of 1818 should be marked on Hodges' maps as the Sunderban boundary. Hodges was also directed to survey the actual line of forest, but it does not appear that this was ever done.

The other place where difficulty occurred was in the area between the present Paikgachha police-station and the junction of the Chunkuri khal with the Pasur river. Here the difficulty lies in the fact that the robokaris of Mr. Dampier do not agree with Hodges' mans. The robokaris show the boundary as running from the Sipsa river along the Badurgacha and following the line of the Bhadra river as far as its junction with the Maukhali Doaniya khal at the southeastern corner of the present village of

Lakshikhola. Thence the line is described as running along the Maukhali Doaniya khal, leaving abad Pankhali on the north and joining the river Pasur on the north-east side of Pankhali i.e., probably at the mouth of the present Chunkuri khal. Chunkuri abad, i,e., the present village of Chunkuri, also excluded by the robokaris from the Sunderbans. Hodges' line is however very different. Instead of following the line Sipsa-Badurgachha, he showed the forest boundary as running northward along the Haria river, thence eastward to the junction of the Gengrail and Bhadra and southward along the Bhadra as far as the Deluti river. The line then passed along the north and east of Harinkhola village, east of Darun Mullick's abad and joined the Badurgachha south of village Kalinagar. near its confluence with the -Bhadra. Thence it proceeded in a south-easterly direction rejoining the Bhadra at its junction with the Dhaki, cutting off the present village of Tildanga from the forest, and running northward along the Bhadra to rejoin the robokari line at the mouth of the Maukhali Doaniya khal. Thence taking a loop—which—approximately though not necessarily accurately corresponds to the northern boundaries of villages Khatali and Baruikhali, it joined the Chunkuri khal near its confluence with the Bajua khal and ran down that khal to its confluence with the The difference between these lines has been described in detail as the area has been a scene of much litigation in the past, and the difficulties connected with this area are perhaps not vet at an end. The cause of the discrepancy was undoubtedly the fact that the area in question had been at some time or other partially cleared and had relapsed into the jungle characteristic of Sunderban deserted clearings. clearings are to be seen now in the 24-Parganas district; to the eye of one man they would represent forest, to the eye of another their true character of old clearings will be apparent. We can only regret that Dampier and Hodges did not collate their results and arrive at a unanimous decision; it may be a satisfaction to some Settlement Officers to feel that kanungos and amlas are not the only people who scamp their janch at times.

An important result of the Dampier-Hodges survey was the preparation of Hodges' maps of the Sunderbans. The original plans were prepared on a scale

of four inches to the mile and reduced to a scale of one inch to the mile. basis of the latter map and of the previous maps prepared by Morrieson and Prinsep, a complete map of the boundary of the Sunderban forest from the Hooghly to the Meghna on the scale of two inches to the mile was prepared in 1831. Prinsep had previously divided the area surveyed by him into lots, and Hodges continued the process up to the river Pasur, revising Prinsep's numbering and making a complete series of 1-236 from the Hooghly to the Pasur. series of the four inch and one inch maps are available in the Khulna Collectorate, but no two inch map can be found.

147. The estates north of the Dampier-Hodges line.—The passing of tion III of 1828 and the demarcation of the Dampier-Hodges line represents the close of the first epoch in Sunderban history. It is however a mistake to look upon it as the beginning of Sunderban history, and it is impossible to agree with Mr. Ascoli in his Revenue History of the Sunderbans when he describes the Dampier-Hodges line as "the northern boundary of the Sundarbans" refuses to recognize as genuine Sunderban estates any area north of that line (vide Ascoli's Revenue History of the Sunderbans, pages 3 and 69-70). brought under cultivation between the Permanent Settlement and 1828 were naturally shown outside the Dampier-Hodges line of forest, but the resumption of these areas and their subsequent administration was an integral part of Sunderbans administra-In the authoritative map of the Sunderbans prepared by Ellison under the direction of the Commissioner in the Sunderbans in 1873, many estates of this nature are shown north of the Dampier-Hodges line which is correctly given in that map as the boundary of Sunder-ban forest and not, as Mr. Ascoli describes it, as the "boundary of the Sunderbans". Again in the instructions issued by Mr. Gomes, Commissioner in the Sunderbans, to his Deputy tor, Mr. Madge, dated 3rd December 1863, the following sentence occurs: " In all Sunderbans estates whether resumed or falling within Hodges and Princep's boundary, the Government is the malik or proprietor ". In view of these authoritative pronouncements and of many others which could be cited from old Sunderbans correspondence, Mr. Ascoli's strictures on the Khulna

Collectorate for treating estates north of Hodges line as Sunderban estates are, I think, unmerited.

Resumptions.—At first 148. of revenue from certain collection specified parganas was a part of the Sunderban Commissioner's duties, but from 1829 onwards his duties were confined to resumptions, forests, grants and settlements in the area west of the Jamuna: in 1830 the area was extended to include all tracts bordering on the Sunderban forest. Prior to 1830 the duty of instituting resumption cases had lain with the Collector and considerable progress had been made. After 1830, these duties, including the decision pending cases, were transferred to the Sunderban Commissioner, who simply carried on the Collector's work. therefore be convenient to describe as a whole the resumption work done by Collectors and Sunderbans Commissioners in the area comprising the present Khulna district. These resumptions covered both the area south of the These resumpline and also Dampier-Hodges areas north of that line as could be shown by adequate evidence to have been Sunderban jungle at the time of the Permament Settlement and not to have been included then in any estate permanently a block of land was settled. In 1825 resumed covering the present villages of Haria, Dholai, Sankardana, and Tetultala lying at the junction of the Haria and Sipsa rivers; Orabunia near Paikgachha was resumed at the same time. Next year, in 1826, a group of chaks further to the north lying between the Gengrail and Shalta rivers was These chaks were Khagrabuniya, Koipukhuria, Magurkhali, Parmagurkhali. Hetalbuniya, Korakata, Ahladipur, Jharjhariya, Suargodi, Sibnagar, including Kataliya, Ghazinagar, Ghurnia, Bagardair and Kalajungal or Parmandatola. Taltola near this group of estates and Putimari somewhat to the south were resumed about the same time. South of the Sipsa near the present Soladana, Harijipatan, Khaliya and Harikhali were resumed in 1826 and further west ward Chandmukhi (in three portions) in 1828; Andarmanik north-east of Hark was resumed in 1830. Further eastward between the present Paikgachha Thàna and the Kobadak fiver, Bharbariya (including Kumibuniya), Kalmibuniya, Bogara and Romardanga. Nowalitola, Bashiva, Beharibita, Sinjore, Bashakhali, and Siberbati, and adjacent to Putimari,

Samukpota, Pana and Bahirbuniya were all resumed in the same year, also Bhairabghata and Bankeswar further west-In the present Satkhira subdivision Gumantali, Jabakhali and Betangi, all in the neighbourhood of Pratapaditya's capital Iswaripur, were resumed In the present Bagerhat in 1830. subdivision adjacent to pargana Selimabad important proceedings for no less than 72 chaks were taken up in 1832; Mr. Dampier, the Commissioner of the Sunderbans, who appears to have been misled by a proposal as early as 1790 to adopt as the Sunderban boundary a line corresponding to the present rivers Panguchi, Keora, Manikkhola released all land north of this line. His error was later rectified as will be described: but at the time he confined resumption to estates south of that line, including Phulhata, Jiudhara, Sonirjhor, Deotala, Baharbuniya, Ghusiyakhali, Manikkhola and Panchkaran. Of these estates, Panchkaran alone lies north of the Keora river, but no reasons are given for its inclusion in the resumption of the area south of that river: all of these resumed in 1834. After the groups of resumptions described above as completed by about, 1830, fresh enquiries were set on foot by Mr. Donelly Assistant to the Sunderbans Commissioner, in the area covered by the present Khulna district. He prepared elaborate lists of mahals which he considered open to resumption, relying apparently on Henckell's and Smelt's proceedings to determine what areas were new cultivation. These lists contained about 175 names, many of which are totally unidentifiable and served more as a general guide to areas where resumption might be taken up than as actual basis for Actually resumption. between 1830 and 1836 Nasimabad near the junction of the Golghasia and Kholpetua rivers appears to have been the only estate effectually resumed. Reference has been made above to the release of mahals adjacent to pargana Selimabad by Mr. Dampier on a mistaken view of the Sunderban boundary line. His error was detected by his successor Mr. Grant, and in 1835 an appeal against Dampier's decision was preferred on behalf of Government to the Special Commissioner. Detailed local investigations were made, and eventually the following estates were resumed: Harganti, Kalya, Kayardia, alias Guptardia, Nazirdiya, Abdulrasulpur, Panchamalber, Mallikber, Bansbariya, Madradiya, Kapalibandi, Narendrapur,

Jeolmari, Baintala, Betkata, Khondkarber, Debraj, Kumariyajola, Mahis-"Gazaliya, charania, Kharoikhali, Sutaluri, Gatipur, Fakirtakiya, Bhatkhali, Putikhali, Gazirghata, Haldaha Sannyasi, Betbuniya, Charadaha, Teliganti, Dhuliganti, Kakarbil, Kalyapara, Bistupur, Nalbunia, Narsingdattber, Gazaliyaber: an adjacent chak Mistri danga was discovered and resumed in 1837. Reference has been made above to the list of resumable mahals prepared by Mr. Donelly when he was Assistant to the Sunderbans Commissioner in 1832. Later on, in 1836, he became Collector of Jessore, and once more devoted his attention to the question of Sunderban The list of resumable resumption. estates which he had previously prepared had been based mainly on local enquiries; after he became Collector, he turned to documentary evidence, and adopting the argument that all lands included in Henckell's pattas must be respinable as having been Sunderban jungle at a period approximating to the date of the decennial settlement. drew up a list of Henckell's patta lands as the basis of the investigation: this list contained Henckell's well known taluks, referred to above, and a large number of other lands, some of which were identifiable, others untraceable. Among the identifiable lands, some, v,g,...Magurkhali, Koipukhuriya and Khag rabuniya had already been resumed. About the same time the Sunderbans Commissioner Mr. Grant engaged himself in a detailed scrutiny of the results of old resumption suits, which he conwrongly decided sidered had been against Government by fraud or mistake. His activities led to the detection of Mr. Dampier's mistake in the case of the Selimahad chaks referred to above. and other similar enquiries were taken up by him under the direction of the At this period, with Donelly as Collector of Jessore and Grant as Sunderbans Commissioner, there seemed every prospect of much successful resumption in the Sunderbans. The expectation was however falsified; Grant vacated office in 1836, and his successors appear to have lacked his wide knowledge of Sunderban history; resumption proceedings after this date were consequently somewhat spasmodic. (including Taltola and Boyersingh Sadhughata) was resumed in 1838, Bil Gudara in 1844 and Suarnal in 1845; and in 1838 and 1839 a considerable area of invalid lakheraj land including

the chaks of Taraf Madhukhali adjacent Bhadra river, Hetalbunia, Lakshikhola, Kharia, Damshakhali and ' Anandatola Haripur (now known as Alamtala) was resumed as Sunderban land and became the property of the State. Kantamari near the Sipsa river north-west of Khalia was settled as Sunderban land apparently without any formal resumption proceedings in 1844, and the following estates in or near lots 217, 218 and 220 were resumed about the same time: Laskarber, Alakdiya, Dhoramari, Dighalia, Geubania, Charki Barki, Guachoba, Nangalmora, Boalmari, Kumibunia, Helakardanga and Badiyarkona. Later on, in 1855, a small group of estates, Basudebpur, Dargatala and Saranpur were resumed between the Kobadak and Kholpetua rivers; Govindapur Mustafapur south of Bagerhat, was also resumed about the same time; Bowliaghata (alias Hayetkhali) was resumed in 1848 and Nagar Jamira and Badanhalderber in 1850. Subsequent to the revenue survey, there appears to have been some slight recrudescence of activity in resumption, for Biralakhi and Kasimari adjacent to the river Kholpetua opposite Protapnagar were resumed in 1859, and in 1867 long delayed proceedings in the case of Khonarmet were finally brought to a successful conclusion.

The Khonarmet Case.—After Khonarmet had been resumed, proceedings were instituted in respect of the adjacent areas of Chak Khatali, Chak Par Chalna. Baroikhali and former was resumed in 1882 and the latter two in 1883. Par Chalna was . then given by Government to the encroaching zamindar. the Raja of Chanchra, in exchange for the unresumed portion of Baroikhali, and as a part of the agreement the Raja was given proprietary rights in the resumed areas, which were formed into Tauzi No. 989 of Khulna Collectorate. After the suit for Khonarmet had been won by Government, the Raja apparently anticipating the further resumption which actually took place created a permanent lease at fixed rent, in favour of one Ramtaran Chatterjee, of certain lands in Pankhali and Khatali; ultimately the latter, chak but not the former was resumed. During the present settlement proceedings, a fair rent has been fixed for this tenure, so far as it falls within the area under resettlement, on the ground that as the tenure ' was created when there was every probability of the land being resumed it is not binding for purposes of assessment against Government, and that both in law and equity the provisions of section 192 of the Bengal Tenancy Act apply. The enhancement was upheld by the Director of Land Records in an objection under section 104G., but is now being resisted in the civil court. The Board of Revenue has increased the proprietor's allowance from the usual 30 per cent. to 50 per cent on the ground that there is likely to be difficulty in the realisation of the rent of this tenure.

SETTLEMENTS OF RESUMED ESTATES.

- 150. Resettlement of Sunderbans resumed estates during the present operations.—The great majority of the Sunderbans estates which came under resettlement in the course of the present operations were resumed estates. The following were the main problems which had to be faced:—
 - (I) The status of the lessees.
 - (II) The rate of rent and the valuation of lessees' and tenure-holders' nijdakhal land.
 - (III) The treatment of subordinate tenure-holders.
 - (IV) The revenue or rent payable by the lessees and the treatment of embankment allowances.
 - (V) The kabulyats of the lessees.
- 151. Status of lessees.—The question of Government's proprietary right in Sunderban resumed estates has been discussed above, and the principles followed in this settlement have also been described. Briefly stated, the proprietary right of Government has been recognized in all cases except where proprietary right has been specifically granted to the lessees by Government or by the Board of Revenue: an example of this is estate No. 989 Khonarmet where proprietary right was granted to the Chanchra Raja as a part of a compromise in litigation. When estates were first resumed, it was usually found that the zamindar of the adjacent permanently settled estate had leased out the Sunderbans land as his zamindari to one more substantial middlemen who were responsible for the clearance and embankment of the estates and who in turn leased out the land to cultivating

tenants. After resumption, the middleman who had expended money and labour on reclaiming the jungle, was recognized as the person with whom the settlement of the estate should be made and usually settlement was made with him as "abadkar". Occasionally however no such middleman existed, or if he existed, he was unwilling to take settlement. In such cases settlement was offered either to the usurping zamindar or to a substantial middleman an adjacent estate. Such settlements were vaguely termed "farms" at first, but the word farmer in this case connoted a more privileged individual than the modern farmer, who is a mere collector of rent. The zamindar or the adjacent middlemen were recognized (probably on the principle that through their exertions the jungle was to some extent reclaimed) as having a permanent though somewhat indefinite interest in the estate. Section 10 (2), of Regulation VII of 1822 speaks of taluk dars and other hereditary malguzars; it is to these classes respectively that the abadkar and the early farmer belonged. Later on the two classes of lessees were crystallized into "talukdars" and "malguzars' respectively and separate forms öf kabulyats were devised embodying the rights to which these classes were considered to be entitled. It sometimes happened that an estate which was already under cultivation was sold up and purchased by Government, and then leased out to an outsider who had expended no capital on its development. Such outsider was termed a farmer and was in fact a farmer in the modern sense, possessing no subsisting rights Thus by beyond the term of his farm. 1870 we find the lessees of resumed estates divided into three classes "talukdars", "malguzars" and "farmers". At each resettlement the Sunderbans Commissioner decided to what class he considered the lessee belonged, and he offered the settlement accordingly, giving his reasons in the final report of the settlement. At times these reasons were very wide of of the mark and actual misstatements of fact have been detected; usually the lessees accepted the status offered, without protest, but in a few cases they appealed to the Board of Revenue and it is from the decisions of these appeals that it has been possible to ascertain what rights were considered to accrue to each class of lessee. present settlement the principle adopted

has been to recognize as valid the status given in the last settlement provided either it is in substantial accord with the history of the estate, or that this status has been definitely granted by the Board of Revenue to a lessee who would not therwise be entitled to it. In a few cases where the history is obscure, existing status which has been enjoyed for at least two periods of settlement has been assumed to be valid. As a result only a few cases have occurred in which the status given at the last settlement has been changed. Up till now all such decisions have survived appeal. As regards the rights enjoyed by each class of lessee, the abadkari talukdar has all the rights of a permanent tenure-holder, i.e., his right in the estate is heritable and transferable, but he is bound by the stipulations in his lease. There was a Sunderbans tendency with some Commissioners to speak of these tenures holders as shikimi talukdars, • i.e., middlemen talukdars holding under Government as proprietor. This was no doubt based upon the fact that Government stepped into the shoes of the usurping zamindar after resumption, and hence the old tenure-holders subordinate to the zamindar became tenure-holders subordinate to Government. But this does not represent the full state of affairs, for Government chose the tenure-holder or perhaps one of several tenure-holders to take "bandabust " of the estate, i.e., to have the rights and responsibilities of the "sadar malguzars" of the Regulations, who were granted settlements under Regulation VII of 1822. Strictly therefore from a historical point of view it might be argued that the Sunderbans talukdar has two rights in a Government estate. viz., the original right as tenure-holder depending on his original contract with the usurping zamindar, and his right under Government as sadar <u>m</u>alguzar governed by the terms of his settlement. But in practice no such distinction has been made; the two forms of tenure have grown up side by side like Siamese twins; if one died, e.g., by private transfer or sale for arrears of revenue, the other right simultaneously perished. This position has been universally recognized and acquiesced in for the last fifty years; in the present settlement records these tenure-holders have been recorded as possessing full status of permanent tenure-holders, but the historical association has been preserved by giving the tenures the mudafat or title of Sunderbans bandabusta prapta shikimi talukdar (সুন্দর্বন বন্দোবস্ত প্রাপ্ত সিকিমি ভালুকদার); as these tenures are transferable tenures, their rent has been treated as revenue under Act VII of 1868.

The malguzar of Sunderbans revenue history must not be confused with the sadar-malguzar " of Regulation VII of 1822. The word malguzar means literally revenue transmitter; the Regulation uses the term of any personal channel by which land revenue flowed to the State coffers. The malguzar of Sunderbans revenue history, as explained above, was the person other than the abadkar, with whom a Sunderbans estate was settled after resumption; it was practically a sine qua non that the malguzar should have had some previous connection with the estate either as usurping zamindar or near neighbour; settlement was rarely made with a complete stranger. The malguzar thus occupied a privileged position though Government always refused to recognize that he had any right of property in the estate, and this position was fortified by the equitable consideration that most malguzars had to expend money on the protection of the estate from saline inundation. When therefore standard forms of kabulyats were devised for malguzars, they were granted a right of renewal of settlement in the following words: "Subject to due observance on my part of the other conditions of the kabulvats, I shall have as of right on the expiry of the term of settlement the option of accepting the new settlement subject to such revised. jama as may then be imposed"; they were not however allowed to transfer, mortgage or sublease their rights in any part of the estate. The right of transferability is under the present law an essential ingredient of a permanent tenure, hence it has been impossible to recognize the malguzars as permanent tenure-holders. They have accordingly been treated in the present records as non-permanent tenure-holders with a perpetual right of resettlement so long as they hold the estate. It was indeed questioned by the Collector of the dismentioned trict whether the above renewal clause conferred anything more than the right to one renewal of settlement. Legally in view of certain High Court decisions, the Collector was right, but as it was abundantly clear from old

Sunderbans correspondence that up to 1910 the renewal had always been given as of right and in fact many malguzars) had held the estates from father to son! for nearly 100 years, the Board of Revenue decided that as a matter of equity the malguzars were to be treated as if they had permanent right of renewal: the new form of kabulyat was accordingly framed in such a way as to make this clear. As the tenures are not transferable, the sums payable by the malguzars to Government have been described as rent and not revenue in the kabulyats. The third class of lessees of resumed estates consists of farmers in the modern sense of the term, i.e., persons who have no interest in the estate whatever beyond the duty of collection of tenants' rent and trans mission of the same to Government, and the right of receiving a certain percentage of this rent. Few leases of this nature exist, for the protection and embankment of a Sunderbans estate is so precarious a matter that a terminable farming lease can never be satisfactory No farmer will devote himself to an estate where he has no subsisting right, and there is a strong temptation to suck a few years' rent out of the tenants and then abandon the estate. Where such leases do exist, they are in no way different from the farming leases of other Government estates throughout Bengal; they have been treated as such in this settlement.

Rate of rent and valuation of 152. proprietors and tenure-holders' nijdakhal lands.—In fixing the revenue of an estate, the first question is the determination of the raiyati rate. Upon this depend the profits of the lessee and the superior tenure-holders on the one hand, and the rents of the under raivats on the In the early Sunderbans other hand. settlements a fully productive estate was reckoned capable of bearing a rate of eight annas per bigha of 40 yards square or roughly one rupee eight annas per The great increase in the price of rice and the competition for land has rentals everywhere in Sunderbans, so much so that in some areas new tenants willingly contract to pay at rate ranging up to and in few cases exceeding ten rupees an acre. These areas are however exceptional; in many tracts there had been scarcity verging on famine in 1921 owing to the destruction of embankments by the

eyclone of 1919, and the increasing salinity of the water, owing to the natural causes described above, had rendered the prospects of an annual crop precarious. An account of the physical conditions of the Sunderbans estates and the natural causes of these conditions has been given above (vide Part I. Chapter The following brief recapitulation embodies the points which affected the jamabandi operations. The prime difficulty is the salt water which ruins the crops if it penetrates, in appreciable quantity, into the fields. The area which is most affected in this way is the tract immediately south and west of the junction of the Sipsa to the Kobadak by the Boalia khal; the fresh water from the Kobadak drains into the Sipsa through this khal leaving the above mentioned estates at the mercy of saline tides. The rest of the Sunderbans estates falling within Satkhira and Sadar subdivisions are to a less extent affected in the same way owing to the silting up of the head waters of the southward flowing effluents of Ganges. In Bagerhat subdivision sweet water flows through the Gorai and Madhumati into the Sunderbans; the problem there lies in the sweet water flood caused by silting up of drainage channels, a far less serious problem than that of saline inundation. The following broad principles were therefore adopted in framing preliminary proposals for raivati rates. In the area south and west of the junction of the Kobadak to the Sipsa by the Boalia khal, rentals were generally to be left untouched, in the rest of Satkhira and Sadar subdivisions a rental of three rupees per acre was to be adopted as a desirable criterion; in Bagerhat subdivision enhancement was to be made up to the level of the neighbouring permanently settled estates. It must be made clear that these criteria were only general-each estate was eventually scrutinized in detail and the rentals fixed after inspection of the estate and ascertainment of the views of lessees and tenants. Other points which were observed were as follows: contractual rents were usually maintained, for the Settlement Officer has no power to lower them without consent of the landlord; such consent was occasionally obtained where the rents were manifestly higher than the land could bear. The rents of undertenants were fixed at 25 per cent. above the raivati rate, and the provisions of

section 48 of the Bengal Tenancy Act were applied to cut down higher rates where this section applied. The terms of this section prohibit rates more than 50 per cent. above the raivati rate if fixed by written agreement; in absence of such agreement the under-raivats' rates may not exceed the raivats' rates by more than 25 per cent. The section however only applies to cases where the whole holding has been subleased, and it was only used in such cases. In other cases contractual rents were maintained. land in immediate possession of tenureholders and lessees was valued at the raivati rate if cultivated by the ploughs or hired labour of such persons; but land sublet to borgadars (i.e., persons paying a fixed proportion of the crop) wasvalued at 50 per cent, above the raivati rate, so as to give the State its fair share of the great profits accruing borga leases. In almost all cases one all-round rate for the village was aimed at and embodied in the preliminary proposals. It is usually impossible to make distinctions in Sunderbans land, for land which bears a bumper crop one year may lose its fertility by saline inundation, or a dry year may turn in ferior marshy land into the best of soils. The only exceptions were in those estates where premature embankments, by the process described above (page 6), had left a marshy depression in the centre unfit to bear any but the scantiest crops. It was found in such cases that the marshy area, locally known as "dhapa", had been leased out to tenants who were themselves willing to pay rent for it in anticipation of crops in future years. Such areas were separately mapped and classed as dhapa lands and a nominal rent was assessed upon them. Similarly in some estates it was found that the tenants claimed the land outside the marginal embankments as part of their holdings though such land produced little or no crop. Some profit however accrued to the tenants, occasionally from grazing, and more often from the jungle produce; such areas were separately assessed at small rentals with the tenants' consent. In other cases an allround rate was strictly observed in the draft rent-roll, and any one claiming preferential treatment on any ground whatever was heard by the Settlement Officer at the stage of objections under section 104E and orders were passed on his application. In fixing the rate, every effort was made to obtain tenants

consent to the proposed enhancement: where they proved recalcitrant, the method of enhancement on ground of rise in price was normally employed. In a few cases, particularly in Bagerhat subdivision, considerable differences of rates were found in the same estate. Whatever had been the case at the last settlement, it was clear that no such distinction was now justifiable, and an all-round rate was adopted. This however involved greater enhancement of the lower rates than was justifiable on the ground of the rise in price of staple food crops; accordingly enhancement made on the ground of prevailing rates. For determining the prevailing rates as far as possible rentals of similar land both outside and inside the village under settlement were looked to. In many Sunderbans estates small khals or isolated patches of jungle are frequently found: wherever possible, these were mapped as khal or unculturable land respectively and left out of assessment, but a residue of very small khals or patches of jungle at times remained, too small to be mapped. After some tests had been made in selected estates, it was decided to exempt 4 per cent, of the culturable area of all holdings from assessment, in those estates where these small khals and patches of jungle were found in appreciable quantity.

Treatment of subordinate tenure-holders. A great innovation in this respect was made first by Sir Nicholas (then Mr.) Beatson Bell in* Bakarganj jamabandi proceedings. The integral part of these proceedings was the adoption of the raivats' rents as basis of the assets and the calculation of the profits of tenure holders and other superior interests upon this basis. This principle was only arrived at after a struggle, for the tenure-holders put forward strong claims, based on old procedure, to have their rents fixed by the jamabandi Officer and to have their tenants left at their mercy for rack renting as they pleased. This is how ever ancient history now and such claims are entirely put out of court by the present Chapter X of the Tenancy Act. Having established, this principle, the Bakarganj jamabandi Officers took the war into the enemy's country and proceeded to enunciate the principle that the profit of all tenures, except those whose right to separate profit had been

recognized by Government, was to come out of the profit of the superior interest who created them: in the words of the Settlement Officer of that district the provisions of section 191 of the Tenancy Act override the provisions of section 7 of the same Act. The reasons for the adoption of this principle lay in the long chain of subinfeudation prevalent in Bakarganj. It was clear that if the lessee of an estate were to be allowed say 25 per cent. of the raiyati assets and each of four successive subordinate tenure-holders were to be allowed 15 per cent. Government's share of the profits in its own estate would be entirely nugatory. It was only equitable that Government should not be a heavy loser by subinfeudation created by its own lessees, so the principle as enunciated above was adopted. Considerable clasticity was however observed, and in the Bakarganj Sunderbans the tenure-holders obtained a relaxation of this princi ple. This was no doubt partly due to the fact that there was much waste land in the Bakarganj resumed estates in the first decade of this century, and it was also probably considered inexpedient to follow too rigidly a new principle which was an undoubted source of loss to middlemen. Subsequently however the principle was crystallized into section **340** of the Survey and Settlement Manual of 1917, and this section has been followed strictly in the present settlement operations. In effect the provisions of that section are (I) that the profit of tenures created by settlement holders of estates never permamently settled do not operate to diminish Government revenue but come out of the profits of the creator, (II) that in cases where such tenures are created in contravention of an agreement between the creator and Government, Government will decline to recognize them even to the extent of fixing a fair rent for them; their de facto existence will however be recorded in the settlement records, (III) where such tenures are created by a farmer having only a terminable interest in the estate, which interest is about to expire, the tenures will be entirely disregarded.

In the majority of cases in this district the first of the above three principles applied. The Sunderbans talukdar, the lessee under the Waste Land Rules of 1853 and the Large Capitalist

Rules of 1879 are not restrained by any covenant in their leases from creating subordinate tenures; hence in their cases the subordinate tenures were recognized to the extent of fixing a fair rent for them, but such rent was fixed by giving the tenure-holder a share of the lessees' profits. But in the case of the malguzar and the lessee under the Small Capitalist Rules of 1879 their leases specifically forbade with certain qualifications, the creation of subordinate tenures. Accordingly the second clause of section 340, referred to above, was applied to them and no rent was fixed for the tenures so created, though they 'appeared in the Settlement Records. But if, as sometimes happened, such tenures, created in contravention of a covenant of restraint had existed at the last settlement of the estate and a fair rent had been fixed for them, it was considered that the breach of covenant had been waived, and they were now treated as if they were tenures created by a lessee having power to create them. As explained above, farming leases in the Sunderbans are very few; where they were found the third principle of section 340 was applied.

As regards the division of profit between the lessee and the subordinate tenure-holders, at the outset the principle of allotting the new profits strictly in accordance with present profit was observed. The question of the allotment of profits in such cases was raised by the Director of Land Records in 1924 and was discussed at the Settlement Conference of that year. The results of the discussion are embodied in the present rule 21 of Chapter XV of the 1925 Reprint of the Technical Rules. This rule represents the subsequent practice of this settlement, but some latitude has at times been given in estates where embankment costs or difficulty of collection in the Sunderbans have justified exceptional treatment.

154. The revenue or rent payable by the lessee.—Some care has been taken in distinguishing revenue and rent in view of past wrong use of the Sale Laws in Sunderbans estates. The following rules were adopted in this settlement; they were reported to the Board of Revenue and accepted by the Board.

INSTRUCTIONS FOR DETERMINING THE DATES OF PAYMENT OF GOVERNMENT REVENUE OR RENT IN ESTATES UNDER JAMABANDI.

All payments made to Government 'as paramount power are revenue and all payments made to Government as landlord are rent. The same payment may therefore be both revenue in the broad sense and rent. This explains the fact that the terms revenue and rent are used interchangeably in various Government Manuals.

There is however a narrower sense of the word Revenue, which will be found defined in section 1 of Act VII of 1868; this briefly stated, is that all sums payable in respect of a proprietary estate or of a transferable tenure held directly under Government are revenue. The importance of this definition is -

- •(a) that all such sums are realisable by sale under the sunset Law:
- (b) that the last date of payment is fixed by the Board of Revenues orders issued under section 3, Act XI of 1859.

It will therefore be convenient to distinguish for the purposes of this note —

- (a) Revenue as defined above.
- (b) "Rent" as all payments in the nature of rent made to Government as proprietor, not being "revenue".

Therefore the following classes of persons in this district pay revenue:

- (I) All proprietors of estates whether permanently or temporarily settled, including lesses under the Waste Land Rules of 1853, and such other persons to whom proprietary right has been granted in Sunderban estates and who are recorded as proprietors in the present settlement Records.
- (II) Tenure holders recorded as shikimi talukdars in a Sunderban Bajcapti estate.
- (III) Large Capitalist lease holders under the rules of 1879 recorded in this settlement as abadkari talukdars under the Rules of 1879.

The following classes pay rent:-

- (I) Malguzars in a Sunderban Bajeapti estate.
- (II) Small capitalist lease holders under the rules of 1879.
- (III) Farmers in any Government estate.

In proposing payment instalments therefore, the Assistant Settlement Officer will first decide whether the payment is "rent" or "revenue".

(III) If it is "rent" the sole guide is section 53 of the Bengal Tenancy Act, and no difficulty should be felt in complying with the directions of that section.

Should the payment however be "revenue", the Assistant Settlement Officer must keep in mind the following points.

The last date of payment and number of instalments is governed strictly by Rule 5 of the Tauzi Manual, 1918, read with Section 1, Part III of the Sale Law Manual, 1906, and must be followed.

as pointed out in Furthermore Correction Slip to Clause (IV). Rule 528, page 130, Survey and Settlement Manual, the instalment should not be fixed in the month in which the last date of payment falls, e.a., if the last day of payment falls on March 28th, the instalment may and usually should be made payable in February. There is however no harm in putting forward the date of the instalment provided it is not put so far forward as to fall in the month preceding that of the previous last date of payment, e.a., if agricultural conditions demand it, the instalment whose last date of payment is January 12th might be put back even as far as September but not to August for them it would be realisable as an arrear on September Subject to the above limitations, the instalments should be fixed with regard to local agricultural conditions.

In writing the preliminary and confirmation report, the ambiguous word "kist" should be avoided and the word instalment used in its place.

The table of latest dates for this district is as follows:—

Estates paying annual revenue not exceeding Rs. 10.

Estates paying annual revenue { 12th January. exceeding Rs. 10 but not exceeding Rs. 50.

Estates paying annual revenue exceeding Rs. 50 but not exceeding Rs. 50 but not exceeding Rs. 100.

Estates paying an annual revenue { 28th June. 12th January. 28th March. 28th Murch. 28th Yune. 12th January. 28th March. 28th Yune. 28th June.
The above rules speak for themselves and require little comment. In practice Sunderbans lessees have several times petitioned to pay their whole rent in the February instalment, as this is the main collection season in the Sun-They have always been satis derbans. fied by a redistribution of the instalments which threw the main burden of payment into February, leaving small sums to be paid at the other due times. Probably it would be a good thing if the Board could modify its rules as to distribution of instalments in the case of Sunderbans estates. No estate produces any crop but winter paddy; the paddy is reaped in late December and January and it would be to the advantage of all concerned (including the Collector's tauzi staff) if the whole revenue could be paid in February.

The allowances to Sunderbans lessees have been a matter of some difficulty. Most of the difficulty has arisen in the resumed estates held under talukdari and malguzari leases. These will be referred to here; in the case of other forms of lease, the matter will be discussed when those forms of lease are described Government is sole proprietor of practically all Sunderbans resumed estates: the talukdar is a tenure-holder with certain rights and the malguzar a farmer with certain privileges. In both cases a basic allowance of 20 per cent. of the raivati assets has been adopted as As described above, this equitable. allowance is divisible with all subordi nate tenure-holders, hence in an estate where subinfeudation is at all consider able the tenure-holders' profits have been proportionately diminished. obviate hardship in such cases, the percentage has been raised, so as to give the tenure-holder an adequate profit.

The question of embankment allow ance has also arisen in connection with the lessees' profits. In the last settlement kabulyats, a clause was sometimes

inserted binding the lessee to keep up embankments. This clause was usually honoured in the breaches of the embankments, and there is considerable evidence of the fact that certain lessees deliberately breached the embankments with a view to destroying the crops and driving out tenants whom they wished to get rid of eventually. After a visit of the late Revenue Member, the Maharaja of Burdwan, to the Sunderban area during the scarcity of 1921, instructions were issued by Government in the form of a correction slip to the Settlement Manual (Slip No. 58 of 23rd March • 1923) to the effect that in the case of the first settlement of a temporarily settled estate with the proprietor and in all cases of estates or lands let out on such terms as permit of the insertion of new conditions on renewal of the leases (e.g., renewal of leases granted under the Sunderbans Rules of 1879 and 1897), the agreements or leases should clearly provide that whenever the Collector will declare that construction of new, or repairs to existing, outer embankments, cross bunds or dams, or both, are necessary for the protection of the lands of the estate or area under settlement, the lessee shall make such construction or repairs according to the dimensions and specifications approved by the Collector and shall maintain them in proper repair to the satisfaction of the Collector, who shall have power to inspect the works himself or through an officer duly authorised by him. The lessee shall have, however, a right of appeal to the superior revenue authorities against the order of the Collector under this rule.

Clauses embodying these instructions were accordingly inserted in the new and kabulyats which the talukdars malguzars were asked to sign. Several of them not unnaturally replied by asking to be granted a special embankment allowance if they bound themselves to keep up the embankment. Such allowances had been occasionally granted in the past but had been nearly always misused, for the custom of the Sunderbans is for the tenants to maintain the embankments, while the landlord helps them by interest bearing loan and supervision of the work. Unofficial but very considerable help is also admittedly given by the burkandazes of the landlord who make the life of a shirking tenant somewhat uncomfortable for him. In the past therefore the landfords so far

from using the six hundred rupees, or whatever their embankment allowance was fixed at, for the protection of the estate, had put it into their pockets, or had given it at interest to their tenants, in either case making unauthorised profit from it.

There were therefore good very reasons for attempting to do away altogether with the principle of embankment allowance in Sunderban estates, and the Collector of the district was emphatically in favour of the abolition of such allowances. We were therefore in something of a dilemma. On the one hand Government had directed the above described clauses to be inserted in all kabulyats where this could be legally done. On the other hand it was undesirable to accede to the lessees requests for embankment allowances.

Eventually no embankment allowances were granted but where the lessee could show by clear proof that he had and was still annually expended. expending money on the protection of the estate, he was allowed an increased percentage of profit—and amount over the standard 20 per cent. was allowed went entirely into his own pocket--no subordinate tenure-holder taking any share of it. In one or two cases also where it was proved that a gantidar or other subordinate tenureholder undertook the protection of the estate, the same principle was applied in his favour. In all cases where it appeared that the tenants undertook the maintenance of embankments as was the case in the great majority of the estates, the lessees received no increase over the standard 20 per cent, but were required to sign kabulyats in which the above mentioned precautionary clauses were inserted. It was at the same time explained to them that the clauses in question did not relieve the tenants from their customary duty, and that they might rest assured that the Coileetor would not enforce the penal clauses unless the lessees had, by their conduct or laches, deserved the enforcement; there was also the additional safeguard that the Collector's orders enforcing these clauses were open to appeal. strict logic of these proceedings is undoubtedly open to question; the kabulyats do undoubtedly impose a potential duty upon the lessees which might involve

them in heavy expense, but no correspending privilege in the way of allowcance to meet that expense was granted. Logic however cannot prevail where nature has made it possible for an unscrupulous landlord by one hour's work at night to open the embankment at a time of saline flood, and thereby ruin the year's crops of tenants whom he wishes to drive from the estate. It also came to light during the crop failures of 1921 that certain landlords had granted loans to their tenants at large interest for the purpose of constructing embankments, and then regardless of whether the crop was successful or not, had ruined the tenant by legal proceedings to recover the advance and the interest due. Against such landlords the precautionary clauses of the kabulyat would serve as a powerful weapon, while a moderate landlord not be affected. Hence it was necessary to insert the clauses, but as it was and is to be hoped that the cases where their application is necessary, be few, it was impossible to throw away a large amount of revenue by granting embankment allow-ances only because these clauses were inserted in the lease. Most lessees saw the point of this and almost to a man signed the kabulvats, some however under protest. In a few cases they repeated their protests to higher authorities and under the orders of the Board of Revenue, the clauses in question have been expunged from some of the leases; in a few other cases the allowance to lessees who are maintaining embankments has been increased by five per cent, under the Board's orders.

THE KALULYATS OF THE LESSEES.

155. The kabulyats of the lessees.— The main problems of the kabulyats taken from lessees of resumed estates in the Sunderbans have been dealt with above in connection with the embankment allowances; the reasons for giving malguzars a perpetual right of renewal have also been alluded to.

The kabulyats, themselves, for talukdars and malguzars were based upon the standard form in Appendix N of the Settlement Manual giving talukdars, as being permanent tenure-holders, rights and duties of proprietors, with necessary limitations, and treating malguzars as farmers with the special

privileges referred to above. Copies of the kabulyats as finally approved by the Board are inserted as Appendix V to, this report.

The 99 years settlements of **156**. resumed estates.—Before leaving the subject of resumed estates, it is necessary to allude to a class of these estates which caused some confusion till their history was fully understood. estates of Bagerhat sub-division among those resumed in 1837, were found to have been settled for 99 years from dates ranging round 1860. In view of the fact that leases under the Waste Land Rules of 1853 were always for a period of 99 years, and that certain leases held on less favourable terms than those of the Rules of 1853 were allowed to be commuted to those terms, it was not unreasonably supposed by attestation Officers that the leases in question were under the Rules of 1853 and our records were framed accordingly. It was however noticed that the rates of revenue in these estates did not correspond with the 2 annas per bigha which is the maximum under the Rules of 1853, hence a further enquiry was made into their history.

It has eventually been discovered that these leases are nothing but long term leases of resumed estates. The reason for granting these long terms has not transpired, but it is abundantly clear that the group of estates near Selimabad pargana were always treated greater leniency than any others in the Sunderbans, many in fact having been settled in perpetuity between the time their resumption and 1880. particular leases referred to here were accordingly treated in our records as resumed estates held under talukdari They are as follows: lease.

> Tauzi No. Name. Kapalibanda. 795 816 Kharoikhali. 827 Khondkarber. 824 Gazalia Char. 826 Gazirghat. 852 Dhuliganti. 862 Narendrapur. 865 Nazirdia. 905 Mahishcharania. Madradia. 908 936 Sutaluri. 940 Sanyasi. 945 Haraganti.

All lessees of these estates have been treated as talukdars, whether this right was originally granted or refused to them. It seems inequitable to give a lease-holder who has been allowed to hold for 99 years the lower status of malguzar or farmer.

Waste Land Rules of 1825.— The earliest waste land grants in the Sunderbans were Henckell's taluks which have been described above. The subject was again broached early in the nineteenth century, but it was not until 1819 that a form of lease embodying definite terms seems to have been drafted and sent up for Government approval; even then the question was shelved pending the appointment of the Commissioner in the Sunderbans, though in one or two specific instances Collectors were empowered to make grants of jungle land, provided the border zamindars did not oppose it. Eventually on 24th March 1825 Government sanctioned forms of leases embodying the following terms: "One-eighth of the grant was to be brought into cultivation in three years, one-fourth in four, and half in six years under pain, in case of default, of a penalty of one rupee for each bigha of land unreclaimed (but this provision was not to be pressed). The land was to be held rent-free for seven years, thereafter one-fourth was to be exempted from assessment on account of houses, streams, uncultivable land, etc., and the remainder assessed at 2 annas in the eighth year, 4 annas in the ninth and 6 annas in the tenth; and in the eleventh year and afterwards at 12 annas less malikana of one-third which was equivalent to an ultimate net rate of 8 annas, the terms being so stated for convenience of underletting by the grantee. He was to furnish a yearly list of his raiyats, showing each man's area and rate of rent. All penalties were to be recovered as arrears of revenue. Besides that, the grantee had to procure a surety, who was required to execute a bond for the payment of all penalties and arrears of revenue until three-fourths of the grant were reclaimed. Not many leases were issued on these terms, but they remained in force until the boundary of the forest had been the Hodges-Dampier line defined by under Regulation III of 1828. Certain pattas appear however to have been granted as late as 1827 on Henckell's terms by Collectors with the sanction of the Board of Revenue. The most important from a revenue point of view in this district was the grant of Atlia in

1827. The question of the reassessment of this estate was taken up during the present operations, and has been vigorously contested by the existing holders of the estate. The proceedings at the time of writing are under consideration by the Board of Revenue.

Waste Land Rules of 1829.— In 1829-30 fresh rules were issued on more liberal terms with a view to attracting more applicants. The period was to be 20 years; one-fourth of the area was to be rendered fit for cultivation in five years, and in event of failure, Government had power to resume the whole. One-fourth of the area was exempted from assessment in perpetuity as an allowance for roads, houses, embankments, etc., the remainder was to pay revenue at the rate of 2 annas per bigha (of 40 yards square) in the 21st year, 4 annas in the 22nd, 6 annas in the 23rd and 8 annas in the 24th and in perpetuity: the Board were also empowered to call for accounts. kabulyat provided for a measurement at the end of 20 years by Government either of its own motion or at the desire of the grantee. Arrangements were also made to prevent friction with the Salt Department arising from the bestowal of grants in areas where the "Khalaris" or places of salt manufacture were situated. large number of leases under these terms were sanctioned, but none exist in this district at the present day, as all were subsequently commuted to the still more favourable terms of 1853 on the request of the holders. It will be remembered that no survey of the forest east of the Pasur had yet been made, and that there was no division into lots in this area. It was therefore impossible to make formal grants here. In certain cases however "amalnamas", i.e., informal permissions to reclaim, were granted with the idea that when reclamation was complete, the land would be surveyed and measured. This practice of granting informal amalnamas in the area where definite grants were impossible was subsequently extended by Sunderban Commisioners to areas covered by Morrieson's survey and Hodges' lots, a misuse of their authority which led to confusion in several instances.

By 1836 and 1837 the question arose whether the condition of clearance of one-fourth of the area in five years had been fulfilled in the estates leased out shortly after the promulgation of the rules of 1830. Detailed inspections were

accordingly made with the result that in some cases it was found that reclamation had proceeded as fast as had been anti: cipated; in other cases where the clearance condition had not been fulfilled the grant was forfeited. But after forfeiture, the ex-grantee was usually allowed to engage for the actual amount of land cleared by him on the same terms as were applied to resumed Sunderban estates. This inspection brought into prominence the fact alluded to above, that Hodges had made no survey from Gobra, to the northern corner of lot 217, but had adopted Morrieson's line as his forest boundary. Naturally therefore all cultivation made south of Morrieson's line between 1818 and 1828 fell within one of Hodges' lots. These lots were granted out wholesale as uncultivated jungle in 1830, and consequently the grantees found themselves in conflict with actual cultivators. Such cases were dealt with individually and required much attention for some time.

From 1839 onwards competition for grants which had slackened after 1830 became keen again, and in 1846 the principle of auction sale was introduced in cases where there were more than one applicant for the same land. This principle was followed until 1852 when the question of revision of the grant rules came into prominence.

Waste Land Rules of 1853.— In spite of the competition for grants and the fact that in many cases the clearance conditions had been duly fulfilled, it was felt that the existing grant rules had not worked satisfactorily. Ja 1852 the Board in a report to Government pointed out that " clearance had been less than was anticipated, many settlements had broken down, the rent-free period had been extended in nearly all cases where it had expired and the rents derived from the grants had been next to nothing "Considerable correspondence took place, and the leading grantees were consulted. They represented that the existing terms were too severe and asked for the following terms: a rentfree period of 20 years then an assessment of one anna on half the area for ten years, and thereafter the assessment of the whole area (deducting the irreclaimable portion) at 1 anna for 11 years and afterwards at 2 annas, the maximum rate, in perpetuity. Their representations were considered by the Board and Government, and ultimately requests were partially acceded to by the issue of the Revised Grant Rules of 24th

September 1853. The salient points of these Rules were that the period of 'settlement was fixed at 99 years, the maximum assessment was reduced to 2 annas per bigha of 40 yards square, onefourth of the grant was for ever exempted from assessment and the grantees were given proprietary right, but it was expressly declared that after the 99th vear "the grant shall be liable to survey and resettlement and to such moderate seem assessment as mav to the Government of the day." It was further provided that grantees under existing rules shall have the option of throwing up their existing leases and taking other leases according to these Rules terminable in 99 years from the date on which their existing leases commenced.

Reassessment of estates held **16**0. under the Rules of 1853.—It is evident that the terms of 1853 were indeed Many thousands of acres of generous. the best paddy land in Bengal have been held for upwards of a century upon the peppercorn rent of 6 annas per acre. These leases are now beginning to expire, and it is of the utmost importance from a revenue point of view that care and attention should be devoted to their resettlement. Final orders have not vet been passed on the proposals for assessment of the first of these estates to come under resettlement, hence it is premature to attempt to estimate the financial results to Government; it is however worth pointing out that 132,850 acres of fertile paddy land in this district alone ≪excluding the areas in Bakarganj and the 24-Parganas) are held under these rules on a revenue of only 6 annas per acre, and at the most lenient interpretation of the words "moderate assessment' in the original leases, the results of resettlement of these estates must be of very considerable financial import-The grantees will of resist the assessment, as they are at present doing in the case of Atlia and the whole history of the leases is likely to come under review: in order therefore to amplify the available information about these leases which is necessarily abbreviated in a report of this nature. I have reprinted Chapters XIX, XX and XXI of Mr. Pargiter's History of the Sunderbans as an appendix to this report.

161. Commutation of existing grants to the terms of 1853.—It was unfortunate that at the time when these important rules were brought into force, the

office of Sunderban Commissioner was held by a man whose integrity and devotion to duty is said to have earned the highest praise, but who was entirely ignorant of English, and hence dependant for his comprehension of rules and instructions upon subordinates. Uma Kanta Sen Bahadur did not even write his signature in English. It is not strange therefore that he fell into errors in interpreting the Grant Rules; some of them were subsequently rectified. but others have persisted till now and have proved a source of considerable loss to Government. The question of commuting existing leases to the terms of the Rules of 1853 was the source of the most serious error. The privilege of commutation was only given to holders of previous valid waste land grants and not to those persons who were lessees of land having been clandestinely which, reclaimed, was resumed by Government Naturally therefore the latter class of lessees suffered by comparison with the favoured class of grantees, and they made strenuous efforts to attain equal pri-This was categorically refused by Government, though certain concessions in the rate of assessment were given. Nevertheless the lessees of resumed estates, with persistence worthy of a better cause, continued to apply for commutation of their leases to the terms of the Rules of 1853. At first Uma Kanta Sen appears to have refused such applications, but subsequently he modified his views and allowed commutation in resumed estates which fell within Hodges Sunderban boundary, e.g., estates in lots 216-220, such as Khalia, Haria, This was entirely a mistake, for the etc. right to commutation was not based on the geographical situation of the estate, but on the fact whether it had been reclaimed under Government permission or secretly. The secret reclaim ers were quite justly refused the great privileges of 1853. On the other hand Henckell's taluks being in origin jungle clearing leases, were logically entitled to benefit of the 1853 rules, and this was allowed in certain cases, e.g., Pranpur. Ramjannagar and Atlia by the Presidency Commissioner. In other cases e.g., Ballabhpur, commutation was somewhat illogically refused, but this estate as well as Ramjannagar and Pranpur and other original Henckell's taluks was subsequently granted settlement in perpe-Atlia which was not an original tuity. Henckell's taluk (vide supra) remained a commuted estate. Most of Uma Kanta Sen's errors in this and other respects

were rectified during the Commissionership of his successor Mr. Reily, and as far as this district is concerned, they are of little moment now.

162. Fee simple grant and 'redemption rules of 1863.—In reality the Rules of 1853 liberal though they were, proved ineffectual in promoting reclamation. Grantees took the jam of commutation, but generally rejected the powder of new reclamation. In Khulna district some fresh land was taken up for reclamation, but elsewhere the grantees of existing leases were almost the only persons to take advantage of the new Rules: as a result much revenue was lost to Government without the compensating advantage of opening up new land.

In 1858 two proposals of general land revenue policy which had special bearing upon Sunderbans grants were made the subject of discussion between the Government of India and the Secretary of State. These proposals were (i) the sale of waste land in perpetuity, discharged from all prospective demand on account of land revenue and (ii) permission to redeem existing land revenue by the immediate payment of one sum equal in value to the revenue redeemed. Considerable correspondence ensued, and ultimately in 1863 two sets of rules were published by the Government of Bengal embodying the decisions arrived at upon these proposals. The substance of the rules were as follows: All unassessed waste lands in which no right of proprietorship existed, were available for purchase with certain reservations. The maximum limit was 3,000 acres and the lot was to be first surveyed and demarcated, the applicant depositing the necessary It was then to be advertised and sold not less than three months afterwards at a minimum upset price of Rs. 2-8 per acre on the whole area after disposal of counter claims, if any. On payment of one-tenth of the purchase money, the purchaser received a deed conveying to him the lot in full hereditary and transferable proprietary right free for ever of all demand of land revenue, but subject to taxes and local rates. He was bound to erect boundary marks; and a tow path, 20 feet in width, was to be reserved on either side of each These grants were in the nature of fee simple grants and are usually alluded to under that name.

In the case of applications for redemption of existing land revenue, it was provided that all grants of waste land

already made for a term of years under existing rules in which no right of occupancy or proprietorship existed. except that of the grantee or what was derived from him, would be treated as if the land were permanently settled at the highest annual rate of rent payable under the lease, and grantees would be permitted to redeem the future land revenue of their grants or any compact part in perpetuity for an amount equal to the present value of all future stipulated annual payments calculated at 5 per cent. interest provided that the amount was not less than Rs. 2-8 per acre on the whole area of which the land revenue was redeemed: permission to redeem did not affect the obligation of the clearance conditions, and before a grantee could redeem, he would be bound to show he had complied with them, subject to relaxations in certain cases. The main defect in these rules was that a very large amount of capital was required either for purchasing an estate in fee simple, or for redeeming the existing Mainly for this reason land revenue. little advantage was taken of them; actually in Khulna district there are no estates held in fee simple, and only two of which the land revenue has been redeemed in perpetuity by the wealthy Laha estate. They have been described as "rehai" or "redeemed" estates in They have been described our records, and bear the tauzi Nos. 24BI and 25BI.

163. Large Capitalist Rules of 1879. —Some slight modifications in the Rules of 1863 were subsequently made, mainly in the direction of relieving the grantees of the expense of the preliminary survey at first declared essential in the case of fee simple grants, but the root of the matter, namely, the amount of capital outlay required, remained untouched, and, eventually, in order to resuscitate reclamation, permission was granted to issue leases again under the Rules of 1853. The subject of framing satisfactory Waste Land Rules for the Sunderbans was not however dropped, and in 1871 the subject was considered by a committee appointed to consider the subject of Waste Land Rules generally. Detailed proposals were framed and published in 1874, but as the terms were considerably less favourable than those of the 1853 Rules, except in the matter of clearance conditions, which were entirely dispensed with, there was not unnaturally no response whatever from

the public and not a single lease was issued under these rules. The matter remained untouched during the next few years which coincided with the period of the development of the reserved forest in this district, but in 1877 the Board of Revenue forwarded to Government proposals for a new set of rules based upon a draft framed by Mr. Gomess, and then Commissioner of Sunderbans. The the substantial difference between these draft rules and the Rules of 1853 lay in the direction of shorter term leases, limitation of the size of grants, and higher maximum revenue: the clearance conditions of the 1853 Rules which had been admittedly too severe were reduced to a stipulation for clearance of one-eighth of the grant in five years. The terms of these rules formed the subject of correspondence between the Board and Government for some two years, particularly with regard to leases for cultivators with the developing in accordance policy raiyatwari settlement. of Finally in 1879 two sets of rules were issued known respectively as the Large Capitalist Rules and the Small Capitalist Rules. The details of these are given in Mr. " Revenue History of the Sunderbans and need not be transcribed in extenso. following points represent the salient features of the Large Capitalist Rules. Government reserved proprietary right in the land, and gave to the grantee "a hereditary and transferable occupancy right ". The question whether this conferred a permanent tenure right on the grantee or only gave him hereditary and transferable rights within the term of his lease is at present a moot point, and pending a pronouncement from the Board of Revenue, its discussion would be premature. Similarly the clause in the lease which gave the right of renewal of lease for thirty years on the expiry of the first term of forty years has been variously interpreted as giving a perpetual right of renewal and a right which is satisfied by one renewal: this question also is at present under discussion. The Rules prescribed that at the expiry of the term of 40 years the grantee was entitled to resettlement for 30 years at a rate not higher than that paid by cultivators in the neighbourhood less 30 per cent. for collection charges and profits: it was further prescribed that this rate should be calculated on three-fourths of the area. thus leaving a quarter of the area unassessed as was done under the Rules of 1853. During the present operations the lessees of those estates which came under resettlement pressed to have these conditions interpreted as binding Government to assess only the revenue of the lessee and to leave the tenants rents to be fixed by their landlord. It was obviously wrong to follow their wishes in this matter, for it would have deprived the tenants of the right, conferred by section 104 and section 113 of the Bengal Tenancy Act to have their rents settled for a period of fifteen years on the occasion of a revision of land revenue. The tenants' rents were accordingly settled in the ordinary way, and for the purpose of settlement of revenue, the following instructions were issued:—

- "Instruction for determining the revenue in estates held under leases prescribed by the Large Capitalist Rules of 1879.
- "Clause 8 of the lease under the above Rules gives a right of resettlement to the lessee for 30 years with an assessment not higher than rates which would be paid by cultivating raiyats of the neighbourhood less 30 per cent, for collection expenses and profits, the above assessment to be based on three-fourths of the area leased.
- "The first thing to do is to determine the raivati rate of neighbouring estates; this will not be easy as rates in the Sunderbans vary considerably. The Revenue Officer must use his discretion accepting as a guide the principle that he must look rather for estates where conditions are similar than to mere propinquity, for example an estate lying inland from a tidal river is no criterion as regards an immediately neighbouring estate which lies on the river bank.
- "Having determined the raiyati rate, he will proceed to calculate the amount of revenue derived by assessing three-fourths of the total area at this rate and then deducting 30 per cent. All the area within the periphery of the estate (even water and unculturable fallow) will be included in the total area with which he begins his calculation. Rivers outside the record will however not be included.
- "The amount determined by the above process will be the provisional revenue of the estate.

"Under section 104, Bengal Tenancy Act, we are bound to settle the rents of all classes of raiyats, and the provisions of section 113, Bengal Tenancy Act, then accrue in their favour. Accordingly the rents of the raiyats will be settled at a fair and equitable amount, and the total of the rent-roll will be compared with the provisional circumstances revenue. In normal there will be a considerable margin of profit for the lessee, and under the terms of the lease he is entitled to this. We cannot increase his revenue, nor will it be equitable to him or to neighbouring landlords to refuse to enhance unduly low raiyati rents merely because this will give a large margin of profit. Having regard to the ample allowance of one-fourth of the area and 30 per cent, profits, it is most unlikely that the provisional revenue so determined will not show a fair profit when compared with the rent-roll. Should this occur however, it will be necessary to reduce the provisional revenue to a sum which gives a clear profit of 30 per cent, to the lessee; a larger allowance than the 20 per cent, allowed to small capitalists being given in view of the initial expenditure necessary for clearing and embanking a large grant. The amount so determined will be the revenue of the estate.

During the present operations out of a total of 23 leases under the above rules, the following came under resettlement:

> Uttar Bainbari Tauzi No. 998. Dakshin Bainbari Tauzi No. 999.

An anomalous lease was "issued as late as 1911 on the lines of a Large Capitalist lease in favour of a body of young men known as the Bengal Young Men's Zamindari Co-operative Society. The details are given by Mr. Ascoli on page 119 of his History of the Sunderbans, but require qualification as regards the nature of the lease. Though it approximates to a Large Capitalist lease in its terms, it does not confer freedom of transfer; it has accordingly been differentiated in our records from the Large Capitalist leases, and has been definitely recorded as non-permanent, on the ground that without freedom of transfer it cannot satisfy the Tenancy Act definition of a permanent The understatement of area in the lease referred to by Mr. Ascoli has been remedied during the present operations by fixing a fair rent on ground of increase of area in a proceeding under section 105, Bengal Tenancy Act, instituted by the Collector.

Small Capitalist Rules Small **1879.**--The Capitalist Rules which were issued at the same 'time as the Large Capitalist Rules, were, as Mr. Ascoli points out, a reversion to an experiment in the nature of raiyatwari settlement which had not been repeated since Henckell's settlements of 1783. might have added that the settlements under these rules have followed the example of Henckell's taluks in their quick metamorphosis from raiyati tenancies to large tenures. The following leases under these rules have been granted in this district:-

| Name. | • | Tauzi No. | Area in acr |
|---------------|---|-----------|-------------|
| Bauliaghata | | 979 | 1,085-89 |
| Bhagba | | 996 | 787:32 |
| Kumkhali | | 995 | 2,625.88 |
| Purba Hadda | | 1.024 | 1,573.50 |
| Paschim Hadda | | 1,600 | 1,872-54 |
| Gunari | | 997 | 4,159.47 |

All, except Bauliaghata, have come under resettlement in the present operations.

It will be seen therefore that in point of size they have no approximation to raivati holdings or even to small tenures.

Originally two forms of lease were prescribed under these Rules, one for cultivators and one for small tenureholders or haddadars. The only actual difference in the leases was that the haoladari form gave the right to sublet to cultivators while the cultivating lease did not. Naturally no lessee chose the restricted form; all the above leases are in the haoladari form. The details of the conditions of the leases are given in Mr. Ascoli's History of the Sunderbans; the lessee is entitled to continuous renewals of settlement at thirty-year intervals at rates paid by the undertenure-holders in neighbouring estates. His rights are heritable, and transferable subject to notice to the Sunderbans Commissioner (now to the Collector), but he cannot create any subordinate tenure. In view of the latter restriction, the lessees were described as non-permanent tenure-holders in our records, for under the Tenancy Act permanency of tenure connotes full transferability. They demurred at first, but appear to have accepted the position after a test objection was filed and decided. Like the

lessees under the Large Capitalist Rules, also questioned Government's right to settle the rents of the tenants on their estates; the question decided in favour of the tenants on the same grounds as have been described in the case of the Large Capitalist Rules. The settlement of Government revenue was simpler than in the case of the Large Capitalist leases for there was no calculation of profit at 30 per cent. nor any deduction of area to be taken into account. The following rules observed in calculating the revenue:

"Instructions for determining the revenue in estates held under Haoladari leases prescribed by the Small Capitalist Rules of 1879.

"In these estates clause 5 of the lease gives a right of resettlement to the lessee for thirty years at a rate not exceeding the rates paid by neighbouring under-tenure-holders for similar lands.

"The first thing to do is to determine what the rate is: this will not be easy, as Sunderban rates vary considerably. The Revenue Officer must use his discretion, accepting as a guide the principle that he must look rather for estates where conditions are similar than to mere propinquity: for example an estate lying inland from a tidal river is no criterion as regards an immediately neighbouring estate which lies on the river bank.

"The rate so determined will be applied to the whole of the area within the periphery of the haola after deducting therefrom the area shown as unassessed in the analysis of area, paragraph III, of the jamabandi preliminary report, together with a further deduction amounting in total to the amount deducted from tenants' assessable area in the estate where such deduction has been actually made on account of khals, included in their holdings, but not plotted separately.

"The total sum arrived at by applying the determined rate to the area calculated as above will be the provisional revenue of the estate. Under section 104, Bengal Tenancy Act, we are bound to settle the rents of all classes of raiyats and the provisions of section 113, Bengal Tenancy Act, will then accrue in their favour. Accordingly the rents of the raiyats will be settled at a fair and equitable amount and the total of the rent-roll will be compared with the provisional revenue. If the

resulting profit amounts to 20 per cents or over, the provisional revenue will be maintained. Even if the profit is very considerable the haoladar will still get the benefit of clause 5 of his lease, and we cannot increase his revenue, nor will it be equitable to him or to neighbouring landlords to refuse to enhance unduly low raiyati rates merely because this will give a large margin of profit. The profit accrues to the haoladar as the benefit of the favourable lease granted for jungle clearing purposes.

"So much for the case when comparison of the rent-roll with the provisional revenue shows an adequate profit for the haoladar. But if the margin of profit is less than 20 per cent, the only thing we can do is to reduce the provisional revenue to a figure which gives him a clear profit of 20 per cent., and this will accordingly be done. The sum so determined will be fixed as the revenue of the estate."

Raiyatwari settlements.—'The tentative efforts at Sunderban reclamation through the agency of small holders were never a success under the Small Capitalists' Rules system. Little advantage was taken of the Rules, and everyone of the few leases which were taken in this district resulted in the creation of large tenures, and were attended by the evils which often spring up where illiterate tenants are left at the mercy of the agents of absentee landlords in areas remote from executive con-These evils were no more rife in the newer Waste Land Rules than in any other remote area of the district whether temporarily or permanently settled, and would not of themselves have led to the necessity of a change in policy being envisaged. But other factors intervened. The system of selling the Large Capitalist leases to the highest bidder had resulted in speculative purchases and had drained the resources of the capitalists which should have been applied to the embanking and improvement of the grants. Above all, there was at the end of the nineteenth century a general tendency to exalt the advantages of raivatwari settlement as the best possible form of management of Government estates. It is not strange therefore that from the beginning of the present century the policy of settlement with capitalists of any class was thrown overboard and extensive experiments in raiyatwari settlement inaugurated. It is a truism

say that in areas where a substantial outlay is necessary for clearing jungle and erecting embankments, raiyatwari settlement cannot succeed unless backed by considerable Government supervision funds. The enterprise has been taken up in Bakarganj under the colonisation scheme, and in Fraserganj in the 24-Parganas, but up till now this form of settlement has not been tried in Khulna district. Boyersingh, a resumed estate of Khulna district now the property of Government, which had been lying fallow or only tenanted by squatters for some time, was settled in 1921 in raiyatwari form, but as the area had formerly been cultivated, and as considerable restrictions were placed upon its embanking at the instance of the Irrigation Department who wished to preserve a spill area for the Gangrail-Shalta system of rivers, it cannot be regarded in any way as a typical Sunderban raiyatwari reclamation settlement.

In this district therefore the history of Sunderbans raivatwari settlement which began about 1902 finds no place, though the rules which were framed from time to time culminating in the rules of 15th February 1919 are nominally in force At present in this district the claims of the reserved forest are regarded as paramount, and there is not a single acre of waste land available for lease. It is, however, a question whether some of the reserved forest might not with advantage be turned into paddy land, and it is not improbable that this question will come to the fore during the next few years. If and when this comes to pass, the question of raivatwari rersus capitalist lease will come up for decision once more, and it to be anticipated that a weighty argument in favour of the latter will found in the great expenditure on embankments entailed by the salinity of Khulna rivers; under present financial conditions Government is not likely to embark on a scheme where a large outlay of capital is to some extent dependant on the chances of wind and tide; for a cyclone or storm wave may destroy in a few hours the prospect of a year's crops in thousands of acres.

It is therefore to be anticipated that a system of settlement through capitalists will be revived; if this be the case the experience gained in the resettlement of capitalist estates as they fall due from time to time is bound to be of the greatest value, and it is to be hoped that this experience will be used in preference to doctrinaire theories which have too often in the past governed Sunderban administration.

Estates settled in perpetuity.— A considerable number of Sunderban estates have been settled in perpetuity from time to time. There is no trace of fixed policy in this matter throughout Sunderban history; it rather seems that from time to time particularly in the fifties and sixties of last century the idea was current that when an estate had reached its full productive capacity and had been assessed with the maximum revenue which it then seemed capable of bearing, it should be settled in perpetuity at that revenue. In accordance with this policy, a considerable number of estates, particularly in the neighbourhood of Selimanad pargana, were settled in perpetuity in accordance with recommendations of the Sunderbans Commissioner. All the Henckell's taluks appear also to have been treated in this way, except Mahomedabad, Kalidaspur and the khas abad Chandkhali, whose histories have been referred to in detail above.

This policy was subsequently criticised and appears to have been short-sighted. but is, of course, beyond remedy now. Some care has however been taken in the course of the present operations to scrutinize each case of this nature and to ascertain whether any estates are held as permanently settled without due authority and whether any areas not originally included in the perpetual, settlement have been surreptitiously included later. In order to do this, a list of the estates marked on Ellison's map of the Sunderbans was made and the history of each estate examined in detail from estate bundles and corres-Three pondence files. estates. Betkata, Barthal, and a group of villages comprising Noai or Alukdia, Harinkhola, and Darun Mullick's-Abad appeared to be wrongly held as permanently settled estates. Preliminary jamabandi proceedings were started and the present holders of the estates were invited to file objections under section 337A of the Survey and Settlement As a result of these objec-Manual. tions, Betkata proceedings were dropped on the discovery of a letter not previous. ly forthcoming, which sanctioned the settlement of this estate in perpetuity.

The other two estates are undoubtedly wrongly held as permanently settled, but in the case of the Noai group, a judgment of Uma Kanta Sen releasing an adjacent "area is so worded as to include within the boundaries of the release the abovementioned three villages which it is certain he never meant to release. In the circumstances, the area in question having been held as permanently settled for nearly sixty years, the proceedings were dropped. Finally in the case of Barthal, which is well known locally as the encroached khas mahal, available documents and local witnesses showed that indubitably a Government estate had existed, and had been encroached upon by the neighbouring zamindars. A patta giving the boundaries of the estate was found, but although three boundunfortunately aries out of the four were clearly identifiable in the locality, the fourth boundary—Chak Amratala—could not be identified. An old "amra" tree, which is a rarity in the Sunderbans, gave a clue to the locality, but did not serve purpose of definitely fixing the boundary line. The matter was referred to the Director of Land Records during an inspection visit, and on his advice the case was dropped for want of certainty as to the boundaries.

- Sunderbans History of the Commissionership.—The above spectus of Khulna Sunderban history has dealt with Resumptions and Waste Land Settlements and the treatment of their problems during the present operations. The history of the Sunderbans Commissionership till its abolition 1905 is a part of the Sunderbans history of this district, and has been referred to in certain places above, but in view of the fact that its latter stages are the subject of a complete chapter Mr. Ascoli's history of the Sunderbans, it appears unnecessary to devote further space to it here. The other points ther space to it here. which merit notice may be divided into-
 - (I) Surveys.
 - (II) Formation of villages.
 - (III) Sources of revenue other than land revenue.
- 168. Revenue survey of the Sunderbans.—The surveys by Morrieson, Prinsep and Hodges have been dealt with above, and it remains to notice the

revenue survey of the Sunderbans and the topographical survey of 1906—08. The revenue survey of the Sunderbans falls into two distinct parts—

- (I) The work of Captain Smyth in 1850-51 from the western boundary of the district to the Kobadak.
- (II) The work of Captain Gastrell and Lieutenant Stewart from the Kobadak to the Baleswar during the revenue survey of Jessore, Faridpur and Bakarganj districts in 1856—63.

Captain Smyth was the officer who carried out the revenue survey of the 24-Parganas district, including the Satkhira subdivision of the present Khulna district. A distinct and apparently preliminary part of his work was the demarcation of Prinsep's boundary; as explained above very little of Prinsep's line falls within the present district of Khulna, and it is unnecessary therefore to deal with this relay in de-The maps are however available in the Director of Surveys' office and may prove of value for reference should occasion arise. After finishing the survey of Prinsep's line Captain Smyth appears to have continued his survey from the Jamuna to the Kobadak which fell within the area covered by Hodges maps. At one time it was an important question whether Captain Smyth's survey was a revenue survey having the effect of defining villages within the meaning of section 3 (10) of the Bengal Tenancy Act; if it were not, then the tenants of the areas defined as villages by him could not be settled raiyats within the meaning of section 20 (1) of the same Act. There seemed no doubt that Captain Gastrell's survey was a part of the revenue survey, but in view of the nature of the work entrusted to Captain Smyth, viz., the relaying of Prinsep's line, the question was not free from doubt. However, as will be noticed below, the passing of the new section 20 (1A) of the Bengal Tenancy Act and the notification of all areas in the district as villages has effectually protected the tenants interests by other means.

The survey of that part of the Sunderbans which then fell within Jessore district was carried out by Captain Gastrell as part of the revenue survey of the districts of Jessore, Faridpur and

Bakarganj. He appears to have survey ed the Sunderbans, including Hodges' boundary and the areas adjacent to it, from the Kobadak to the Manikkhola, Putimari and Chilla Chandpie rivers in 1857-58; the work up to the eastern boundary of the district appears to have been completed in 1862-63 by Lieutenant Stewart. That this was a genuine revenue survey does not appear open to doubt; a written opinion given by the acting Director of Surveys in 1916 that this survey did not create mauzas or villages gave rise to some confusion, but after examination of the question by his successor, the present Director of Surveys, the previous opinion was overruled.

Topographical survey of the Sunderbans.—The topographical vey of the Sunderbans was carried out by Colonel (then Major) Hirst between 1905 and 1908. The object of the survey was to a great extent to prepare a map suitable for the requirements of the Forest Department, and also to survey certain cultivated areas near the forest boundary. The forest was surveved on the scale of 2 inches to the mile and the cultivated areas on the scale of 4 inches to the mile. The maps so prepared are the only available accurate maps of the Sunderbans forest, and are of the greatest value and interest not only for the departmental purposes for which they were prepared, but for the light which they throw upon the lower courses of the rivers of the delta and on the configuration of the sea face. reserved forest was, of course, not surveved during the present operations. Colonel Hirst's map of the forest has been combined with the quarter inch maps appended to this report, thus giving a representation of the district as a whole.

Formation of villages.—The formation of villages in the Sunderban areas where villages had not been defined by the revenue survey was a matter of considerable importance for it affected the rights of many thousands tenants. In view of the wording of the definition of a village in section 3 (10) of the Bengal Tenancy Act, the tenants of an area which had not been defined as a village in the revenue survey, or subsequently declared as a village in the manner laid down in that section, could not become settled raivats of a village within the meaning of section 20 (1) of

the same Act, and hence were liable to lose the benefits conferred by the Act upon settled raivats. This was initially noticed in 1910, and after considerable correspondence, three notifications were issued in 1914 and 1916 declaring certain areas in Khulna district to be villages. Unfortunately these notices were wrongly framed, for in the absence of an up-to-date survey and record of rights, the available information about the Sunderbans estates was very scanty. Actually many areas which were perfectly valid villages were renotified, and areas which should have been notified were omitted. It was therefore obviously necessary to make up the deficiencies by fresh notifications which covered the whole area of the district as found during the present operations. With this end in view, the tenants of the areas which were not yet villages were recorded as settled raivats, for it appeared certain that as soon as the notifications were published in the Gazette, all tenants who had held land for twelve years (as the great majority had) within the areas covered by those notifications would immediately become settled raiyats.

Unfortunately however on 4th July 1923 in the case of Jonab Ali Molla and others rersus the Port Canning and Land Improvement Company, the High Court decided that the status of settled raiyat could not accrue in an area declared a village, until 12 years from the date of the declaration. This decision frustrated the intentions of Government which had led to the notifications of 1914 and 1916, and made the proposed correction of those notifications useless from the point of view of the tenants' interest. The matter was reported to Government, and as a result, the Bengal Tenancy (Amendment) Bill of 1925 was introduced in Council and duly passed. This Bill added a clause to section 20 (1) of the Tenancy Act to the effect that a person shall be deemed have continuously held land for twelve years in a village notwithstanding that such village was declared to constitute a village at a date subsequent to the commencement of the said period. This Bill combined with the notifications which were then issued adopting as villages all areas surveyed as villages during the present operations made it possible to record as settled raiyats all tenants in the district who would in normal circumstances be entitled to that

right. A list of the notifications in question is given in Appendix VII (c) to this report.

FOREST AND SALT ADMINISTRATION.

171. •Early forest revenue.—An account of the fiscal history of the Sunderbans would not be complete without some account of the history of the revenue producing departments of forestry and salt for in respect of both these sources of revenue the Sunderbans have given to Khulna district a peculiar importance.

Reference has been made above to the fact that under the fiscal arrangements of Sultan Shuja, a sarkar named Muradkhana, or "Jeradkhana" formed to cover part of the Sunderbans, with two parganas "Akla" pasturage, and "Bunjer" forest produce. This is the first and only indication for many vears of Government's intention derive revenue from forest produce. After the assumption of the dewani by the English, this policy appears to have been lost sight of, and the paramount object of the revenue authorities was to ameliorate the waste of the Sunderbans rather than to derive any revenue from forest produce. In Grant's elaborate Historical and financial analysis of the finances of Bengal considerable attention is devoted to the revenue derivable from salt, but hardly a passing word is given to forest produce.

Tilman Henckell indeed, with his characteristic farsightedness and know-, ledge of detail, laid stress upon the potential value of the timber, firewood, wax and shell lime of the Sunderbans in the course of his proposals for leases of Sunderban land in 1783, but neither he nor any other Revenue Officer seems to have envisaged any right of Government to derive separate revenue from these sources. In 1817 the Board of Revenue in discussing the question of forest grants recognized as evils the exactions of private zamindars under the name of bankar and mom-mahal, and desired to take measures for their discontinuance, but at the same time refused to arrogate to Government any claim to revenue from these sources. In 1828 the proprietary right of Government in the Sunderbans was definitely asserted by legislation (Act III of 1828), and it was ordered that the claims

of zamindars to bankar, mom-mahal, etc., in the Sunderbans were to be investigated, and if they were found to exist, they were to be abrogated by payment of compensation, the produce being pre-sumably left free to the wood-cutters and others who dared to penetrate this " pestilential haunt of smugglers and wild heasts". This state of things continued, and Government categorically refused to grant leases of "bankar" or forest produce to applicants until the question came to the fore when the policy of conserving the forests of Bengal was mooted in 1862. A memorandum on the subject was drawn up in 1863 by Dr. Brandis, and after some further enquiries, the ungranted lands in the 24-Parganas and Jessore districts were divided into blocks, and the Board of Revenue sanctioned the lease of these blocks in farm providing that the farms should be cancellable at six months' notice if the lands were required for cultivating leases. Farms for 24 blocks in the 24-Parganas and 22 blocks in Jessore were granted in 1866 producing an annual revenue of Rs. 8,358. activity of the Port Canning Company secured the monopoly of these farms by lease or purchase, but in 1868 the Government exercised its option of cancellation in spite of the protests of the Company who had secured a net profit of nearly half a lakh of rupees in 1867-68.

Constitution of the reserved and protected forests.—Further proposals for conservation of the forest and raising revenue from the produce were put forward in 1869-70 and again in 1872-73, but the then Lieutenant-Governors Sir William Grey and Sir George Campbell opposed the idea on the ground of harassment of the people, much in the same way as the Board of Revenue a few years ago negatived proposals to obtain revenue from the fisheries of the Sunderbans. A further effort was however made by the Forest Department in 1873-74, and after a detailed survey of a large block of forest land by Mr. Home and a personal inspection of the area by Dr. Schlich, the necessity of conservation of forest produce was again represented to Government, stress being laid rather on the necessity of conserving the sundri wood rather than of deriving revenue from it. As a result of this 500 square miles in Bagerhat subdivision and 385 square miles in Khulna subdivision were declared reserved forest in 1875. The main restrictions were

confined to the felling of sundri trees with a girth of less than 3 cubits. The royalty on sundri wood was fixed at 1 anna and on firewood at 1 anna per maund. Further creations of reserved areas followed, including 314 square miles in Khulna subdivision and 382 square miles in Satkhira subdivision. Government were still chary of extending the reserved area further than was absolutely necessary for the conservation of sundri wood, but consented in 1879 to declare a considerable area in the 24-Parganas and Khulna districts as "protected" forest. The distinction between reserved and protected forests was that the former were not open to lease for cultivation, but the

latter could be so leased; the Forest Department could, however, collect tolls upon forest produce in the protected area. Under this system of reserved and protected forests, the revenue from the Sunderbans produce showed a net profit of over two lakh of rupees in 1880, which rose to about three and a half lakhs by 1890.

173. Release of forest area.—The claims of would-be cultivating lessees had been pressed in the meanwhile, and several lots in Khulna district were released in 1890 and 1891. The following schedule gives details of the most important areas released for cultivation:—

SCHEDULE Y.

| Lot No. | New tauzi No. | Approximate area of the tauzi. | Rules under which held. |
|------------|--|--|-----------------------------------|
| 1 | 2 | 3 | 4 |
| 216 | 998 | Acres. 952 · 73 | Large Capitalists' Rules of 1879. |
| | 999 | 1256 · 25 | harge vapremists ituies of 1000. |
| | 995 996 1000 1024 | $\begin{array}{c} 2625 \cdot 88 \\ 787 \cdot 32 \\ 1872 \cdot 54 \\ 1573 \cdot 50 \end{array}$ | Small Capitalists' Rules of 1879. |
| 224 | 1012 1013 1011 1014 | 3216 · 67 1523 · 64 847 · 17 1414 · 86 | Large Capitalists' Rules of 1879. |
| , | 997 | 4159.47 | Small Capitalists' Rules of 1879. |
| 225 240 | 1016 1005 1006 1007 1017 1018 1019 | 2625·30 1537·52 1523·59 1501·98 1810·95 1817·92 2510·85 | Large Capitalists' Rules of 1879. |
| | 1010 | 1477.39 | |

Efforts, however, to obtain cultivating leases of Lot No. 7 of Khaolia-Barisal were unsuccessful, and Government has wisely persisted in this refusal, in spite of applications which continue up to the

present time. This strip of land protects the Khaolia-Barisal peninsular from cyclone and provides an effectual spill area for the waters of the Baleswar and Bhola rivers.

Working plan system and forest administration.—From 1890 began the system of working plans in the Sunderbans; these are largely a matter technical forestry which lies outside the scope of this report; it is sufficient to say that their aim has been to regularise the felling of valuable timber by judicious selection—both of the areas where felling will be permitted and of the trees which may be felled—and at the same time to produce an adequate revenue. The present system management is twofold, viz., by the permit system which applies to all forest produce except sundri, pasur, amur keora and kankra, and by the coupe system which applies to the above mentioned valuable species. The backbone of the permit system is the establishment of a chain of revenue stations round the northern boundary of the reserved forest, situated at convenient points on the rivers most used for export'. tending purchasers bring their boats to one of the revenue stations where the boats are measured, their volumetric capacity in maunds ascertained by an approximate calculation, and a registration certificate given for each boat. A small fee is charged for the certificate which remains valid for two years and may be used for subsequent journeys to When the owner and from the forest. of a certificated boat wishes to take forest produce, he goes to a revenue station and pays the royalty fee for the kind of produce he wishes to export; the quantity of the produce, for the purposes of the fee, is calculated by the registeled capacity of his boat, and he is given a permit covering this quantity. When he has secured the produce, he is required to return to the revenue station where it is examined, and if it is in order, he is given a pass allowing him to take the boat and its cargo away. There are no restrictions on felling within the limits of the permit, but boats of over 200 maunds capacity are restricted certain areas where there is no danger of exhausting the produce. The forest is also patrolled by subordinates of the Forest Department to prevent illegalities.

The coupe system applies in particular to sundri, which is the most valuable produce of the forest; it also covers the four other species mentioned above. The eastern Sunderbans, where most of the valuable sundri grows, is divided into

40 compartments, ranging in area from 15 square miles in the best localities to 50 square miles in areas where the timber is scarcer. Fellings are made in one or more of these compartments under the working plan system referred to above.. The coupe or area selected for felling (generally one compartment) is divided into a number of squared sections, and the trees which are suitable for felling in each section are selected by an officer of the Forest Department and marked for purposes of identification. A list is prepared of the trees thus marked, and they are sold, section by section, in public auction at Khulna. The purchaser is required to pay 10 per cent. of his bid as security and is then allowed to remove the produce from the forest: no royalty is now-a-days levied over and above the auction price. The felling is supervised by an officer of the Department, often a junior Imperial Service Officer. At present, practically the only purchasers of timber under this system are a ring of mahajans belonging to the Sarupkati policestation of Bakarganj district, who employ a special class of wood-cutters habituated to this laborious and often unhealthy work. Most of these woodcutters come from a village Barsakati; hence, the usual term for a Sunderban wood-cutter is a Barsakati The auction prices of the three years have been as follows-

| | $\mathbf{R}\mathbf{s}$. |
|---------|--------------------------|
| 1922-23 | 1,28,720 |
| 1923-24 | 82,630 |
| 1924-25 | 1,71,180 |

A separate coupe is known as the fuel coupe. In this area cutting of small sundri poles is allowed in order to encourage the growth of the remainder. This cutting is done and the produce sold on the royalty system, selected poles having been previously marked according to requirements. The demand for this class of timber is small, and is mainly confined to Calcutta.

The total revenue and expenditure on the Sunderbans forests during the last four years is as follows:—

| Year. | Revenue in Rupees. | Expendi- ture in Rupees. | Surplus in Rupees. |
|---------|--------------------------|--------------------------------|--------------------------|
| 1921-22 | 5,54,913 | 1,91,747 | 3,63,166 |
| 1922-23 | 6,99,921 | 2,22,867 | 4,77,054 |
| 1923-24 | 7,50,915 | 2,27,267 | 5,23,648 |
| 1924-25 | 8,96,820 | 2,42,975 | 6,53,845 |

administration.—Under 175. **Salt** the Muhammadan rule, salt revenue was obtained in Bengal by taking the khalaris or places of manufacture and by transport duties; the manufacture was carried on in the strip of country called by Grant "Noondeep," i.e., the salt island or territory on the edge of the Bay of Bengal, between Midnapore and Chittagong. It appears khalaris were in the hands of a few powerful Muhammadans who derived such considerable profits from them that the leading merchant was known as the Fakher-Ul-Tejar -- "most exalted merchants ". The income to the state coffers under Kasim Ali Khan was Rs. 2,25,000 at the rate of Rs. 25 per 70,000 with Rs. khalari, together realised as transport duties. After the grant of the Dewani to the British in 1765, Clive took over the monopoly of salt manufacture for the benefit of the East India Company, dividing the profits equally between the officers of the Company and the Government exchequer; but as the Court of Directors did not approve this arrangement. system of farming the rights of manufacture was adopted in 1772. This system lasted till 1780, at which time the total assets to Government had increased to Rs. 18,40,000 mainly by increase profit on the khalaris and by additional transport duties. In 1780 Warren Hastings, as usual ahead of his generation, substituted khas management by Government for the farming system. Under the new arrangements the Government agents advanced money to the salt manufacturers or "molungis", who gave advances to the salt boilers or " mahinders ", and exacted delivery of a stipulated quantity of salt which they in turn delivered to the Company's agent at a stipulated price. These advances were known as "dadon molungian". and there seems reason to believe that they were as unpopular with the mahinders as the indigo dadon of later The manufacture was carried on largely in the inhospitable Sunderbans tracts where few people cared to go. When the supply of volunteer mahinders fell short, the molungis resorted to system of impressment. The advances were thrust upon them or even thrown into their houses, and once the advance had been given, the molungi treated the mahinder as a slave. The salt officials, with an eye to revenue alone, supported the molungis when the mahinders were

recalcitrant, and winked at the oppression which was rife. The appointment of Civil Judges in connection with the salt agency came as a boon to the mahinders, but caused considerable friction between the salt agents and the Judges. This district was fortunate in its first Judge and Collector—Tilman Henckell —an administrator of the greatest vigour and foresight who has left an indelible mark on the revenue history the Sunderbans. He vigorously espoused the cause of the oppressed mahinders, and on more than one occasion came into direct collision with Ewart, the salt agent. Eventually, Henckell cut away the ground from his adversary's feet by offering to Government to undertake himself the duties of salt agent and to deal direct with the mahinders, without the intervention of the hated molungis. In accordance with this proposal, he was appointed agent for the area then comprised in Jessore district, while Ewart was directed to confine his operations to the Bakarganj side. After some further difficulties had been adjusted, this arrangement worked satisfactorily till the reorganisation of the Salt Department by Lord Cornwallis, which was effected by Regulation XXIX of 1793. The new system followed the previous proposals of Henckell in regard to direct dealing between the agent and the mahinders, and the hated name of molungi became a thing of the past. It is now so far buried in oblivion that recently when I came across a man named Mofiz Molungi in a Sunderbans village, neither. landlords, agents nor villagers could tell me the meaning of the name molungi. The system of 1780 was estimated by Grant, writing in 1786, to produce a net profit of Rs. 35,00,000 to Government: the subsequent changes effected by Lord Cornwallis provided for the auction sale of salt by the agent in place of the previous system of sale at a fixed price, and resulted in a considerable accession of revenue, which of course varied annually, according to the auction prices. This system continued in force till 1837; by that time the auction sale had virtually resulted in the creation of monopolies exactly as the existing auction sale of the right to cut sundri wood has resulted in a monopoly of a ring of mahajans. The Court Barisal Directors then ordered that in future the price to be paid by purchasers of salt should be regulated by cost price of manufacture added to a fixed rate of duty. Apart from this change, the system of Hastings and Cornwallis lasted till the second half of last century when the agencies were gradually abolished, till by 1862 the supply of salt was entirely left to private enterprise, subject to excise duty.

mahals.-Khalari 176. **Nimak** Owing to the saline character of the land in Khulna district, the manufacture of salt was an important local industry. Though it has long been discontinued, the sites of the old khalaris are still to be found throughout Sunderbans, well marked by the heaps of broken pots which were apparently of a uniform type, cup-shaped, with a rough criss-crossed pattern. The land for these khalaris—if included in the area of the Sunderbans where Government was sole proprietor—was made over free of charge to the agencies, and old Sunderbans correspondence reveals that elaborate precautions were taken to safeguard the Salt Department's interests when leases of waste land were given for purposes of reclama-The name "tafalbari" is frequently used in this connection, appears to connote the salt khalaris, Where, however, the land occupied by the salt agency was within the ambit of private estate, Government first paid khalari rent for it. The first of the Land Acquisition Regulations (Regulation I of 1824) specifically confers powers on Government to acquire Land for the purpose of salt manufacture, alad in virtue of this Regulation, Government acquired proprietary rights of khalari lands. Later, when the salt manufactory was discontinued, these

estates were held as khas mahals under the names of "nimok estates. As far as I have been able to trace, all such estates in this district have been subsequently daimi settled in perpetuity, though a few-e.g., Tauzis 1062-1063— have subsequently reverted to Government by purchase at revenue In one case, an estate (Tauzi 654 of the 24-Parganas district) was discovered in which the proprietors of the parent estate were offered settlement after the relinquishment of salt manufacture more than 60 years ago. appear to have made no reply to the offer but to have reoccupied the lands. These lands could have been resumed but for the limitation of sixty years running against Government. A curious mis-understanding arose while enquiries were being instituted in regard to this class of estates; its narration may prevent future error. Practically officer who was asked to report on the existence of nimok khalari estates in his circle furnished a reply relating to the small invalid lakherajes released as too petty for resumption and termed "nun khalasi" estates in the Thak statement. The confusion, of course, arose between "petty", the Bengali words नान খালাসী "release", and salt মুন থালাডি "khalari.''

Chapter III.—Conclusion.

177.—Boundary disputes.—The following statement shows the number of boundary disputes under the Survey Act instituted and their results—original and appellate:—

| | mber of | Number of | N | Number of appea | lla. | Remanded to |
|----------|-------------------------------|-----------|-----------------|-----------------|------------|---------------------|
| di | riginal sputes tituted. | appeals. | Wholly allowed. | Partly allowed. | Dismissed. | the Lower Court. |
| A | <u> </u> | 23 | 6 | 2 | 15 | |
| В | 276 | 41 | 2 | 7 | 31 | 1 |
| C | } | 43 | • 1 | 4 | 38 | •••• |
| | Total | . 107 | , 9 | 13 | 84 | 1 |

In nine cases, parties applied to the Commissioner of the Presidency Division to set aside the appellate orders of the Superintendent of Survey under the powers vested in him by section 58 of Act V of 1875, in five of these cases the

applications were allowed. In two cases, Commissioner's decision the appeared to be contrary to the interpretation of the Survey Act which has been universally adopted by the Settlement Department, Government were moved to set aside the Commissioner's order. The point at issue was briefly this: under section 41 of the Survey Act, the Superintendent of Survey is bound to base his decision upon actual possession, and under section 44 he must in certain cases, in addition to his determination by actual possession, direct the relay of the revenue survey boundary in a disputed area. certain disputes where possession was clear, the Commissioner directed that the revenue survey boundary should be followed as the boundary of the village, and that the records should be framed according to the possession of the respective parties within the ambit of the revenue survey villages: in other words. the revenue survey boundary was to be considered as sacrosanct and was not to be varied on the ground of possession. As this decision appeared to conflict with the provisions of the Survey Act as detailed above, and as it certainly conflicted with the practice universally adopted in all settlements, the question was referred to Government for decision. As a result, the Commissioner's order was set aside, and the order of the Superintendent of Survey restored. another case where a similar principle was involved, the Commissioner's order was also set aside on the ground that he had exercised appellate functions in a case where no appeal lay to him—Government holding that he has exceeded the revisionary jurisdiction vested in him by law.

Junior Officers' Training Camp. **178**. -The annual training camp of junior officers was held in this district in the cold weather of 1923-24; it proved pleasant and, I think, instructive to all concerned. A considerable number of the officers showed the greatest keenness and aptitude for settlement work, and several useful recruits to the Settlement have subsequently been Department chosen from their numbers. At this camp the Inspector-General of Police allowed the young Police officers to join at the outset instead of half-way through the first month, a courtesy which did much to make the camp socially enjoy-

179. Necessity for overhauling Sunderhans administrative machinery in Khulna.—It is usual to conclude a

settlement report by drawing attention to such details of law or administrative which the experience gained during the operations has shown to be capable of amendment or improvement. In view of the fact that at the present moment the whole question of amendment of the Bengal Tenancy Act is under consideration and will presumably have received detailed attention from all available sources before this report can appear in print, it seems unnecessary to make any suggestions under this head. The most important point which should, I think, be brought into prominence as regards the administration ofdistrict is the necessity for overhauling the Sunderbans administrative machin-The maps and records in the record-room appear to have lain there practically untouched and unsorted since they were handed over on the abolition of the Sunderbans Commissioner's office: cases have come to light where even the douls under double lock are wrongly named and numbered. Sunderbans correspondence, maps and other records require to be thoroughly overhauled. classified and indexed. The only available account of the early history of the Sunderbans is Mr. Pargiter's history. This volume contains a mass of information which should be available to officers whose duty it is to deal with Sunderbans matters, but partly from the extreme scarcity of the book and partly from the fact that it contains information about the districts of the 24-Parganas and Bakarganj as well as the district of Khulna, all set out in minute detail, it is extremely difficult for an officer to become acquainted with the facts bearing upon the problems of this district without long and tedious study, and this difficulty is enhanced by the fact that the volume has no index. It is, perhaps, too much to expect that the information dealing with Khulna could be extracted and epitomised, but at any rate a new edition of the book with a complete index should be brought out. The strongest reason for taking up this question of overhauling the Sunderbans administrative machinery is that within the next few years considerable areas of old waste land grants held on an extremely low revenue will come up for resettlement, and it is of the utmost importance that the Government officers, who have to deal with this question and who will meet with considerable resistance from the lessees, should be in a position to base their work on an adequate knowledge of the

previous history of Sunderbans problems. In the map of the Government and temporary-settled estates attached to this report, the date when each estate will fall due for resettlement has been shown in small figures. This will give an adequate idea of the dates and the localities where the work will have to be taken up.

Possibility of revenue 180. fisheries and deforestation.—Two other sources of additional revenue may profitably be exploited—firstly, the fisheries of the district and, particularly, of the rivers in the reserved forest; and, secondthe time appears ripe for the dely, foresting of certain areas where the valuable sundri trees do not flourish and where the land appears to have been raised sufficiently high to be of little value as a spill area for the rivers. Both these possibilities have been discussed in more detail in this report both will require examination by experts before any steps can be taken.

Desirability of readjusting dates of payment of revenue in Sunderbans.— Finally, a small matter which needs readjustment is the question of the dates of payment of revenue in Sunderbans areas. Under existing instructions of the Board of Revenue, issued under section 3 of Act XI of 1859, and contained in Rule 5 of the Tauzi Manual of 1918, read with section 1, Part III of the Sale Law Manual of 1906, the revenue of estates, when exceeding the sum of one hundred rupees annually, must be paid in four instalments in different months of the year. Sunderbans estates produce one crop, usually a bumper crop, of winter paddy, which is reaped in January, but no other crop whatever is produced. Consequently, many lessees whose revenue has come under resettlement during the present operations have petitioned to be allowed to pay their revenue in one instalment in the month of February or March. As the rule stands, we have been unable to accede to this request, but have met their reasonable wishes as far as possible by making the greater part of the revenue payable in those months and dividing the small balance between the three other instalments in the year. The payment of these small sums will naturally cause unnecessary trouble both the lessees and to the Collectorate staff; hence, it would be well if landlords in Sunderbans areas were allowed to make their whole payment in one

instalment at the time when they can most easily pay.

Financial epitome.—The end of the operations is not sufficiently near at hand to make it possible to give an account of the financial results of the settlement; as this will have to be done in the supplementary report which it is proposed to issue, it does not seem worth while to anticipate the description of this aspect of the operations by discussing in detail the cost rates of the branches which have already been concluded, more especially as this information, if required, is available in full detail in each of the annual reports. will be sufficient to quote here the following sentence from the last annual report as an epitome of the position at present: "Taking the operations as a whole....., the total expenditure up to date has been Rs. 18,89,083 against an estimate of Rs. 21,72,395, thus showing a total saving of approximately three lakhs of rupees."

183. Gratiae reddendae.—In a review of the merits of the officers by whose assistance and collaboration these operations have been carried out, the unpleasant conditions and hardships under which the majority of them have worked particular deserve mention. Director of Surveys on the occasion of his first visit to the tidal areas near Asasuni expressed the opinion that it was the most unpleasant kistwar area he had ever seen, and he was only repeating the opinion which Captain Gastrell, the revenue surveyor of the Sunderbans in this district, had expressed more than fifty years earlier. Due credit must, therefore, be given to those who have worked continuously among the swamps and mud of these inhospitable tracts, and the credit in this respect must be apportioned inversely to the status of the officer. The real brunt of the work was borne by the kanungos who, after some months of inspecting amins work, had to settle down to bujharat under the burning sun of March and April and very often in the rain of June and July, in areas where shade or shelter was scarce, and where, instead of riding to and fro, they had often to begin and end their day's work with a three-mile walk through mud and water.

The higher grades of officers can hardly claim the same credit, for they lived on comfortable launches or boats, and though their inspections entailed many hours of walking through the swamps and, often enough, swimming khals, they had not to suffer the deadly monotony of the kanungo's daily routine of hardship.

Of the three Civilian charge officers who worked in this settlement, Kemm bore the brunt of the first season's difficulties, and it was largely owing to his tact, assiduity and power of organisation that the work of that season, which was more arduous than in any subsequent season, was successfully accomplished. Mr. Pinnell and Mr. Jameson in subsequent seasons gave of their best: the former's grasp of difficult problems and the latter's indefatigable energy were conspicuous. It is much to be regretted that the latter's health broke down in November, 1924, largely owing to the fact that he had never spared himself during the preceding season.

Babu Promoda Ranjan Das Gupta and Babu Shambu Charan Chatterjee, both in their capacities of Charge Officers and in the various other capacities in which they have worked, have signalised themselves as outstanding Assistant Settlement Officers. The former's promptness in disposal of work and the latter's grasp of detail are particularly noticeable, and both have a power of organisation which should carry them far.

The names of Rai Sahib Anath Bandhu Chatterjee and Babu Janoki Bhushan Sinha are well known as belonging to the select tenth legion of Sir Nicholas Beatson-Bell's veterans. I can only say that both have fully maintained in this settlement the solid reputations which they made at a time when most present Settlement Officers were still at school.

Good work has been done by the three Technical Advisers who have been attached to this settlement—Babu Akhil Chandra Ganguly, Mr. I. Newton and Babu Lal Mohan Bose. The latter has borne the brunt of the work of the Drawing Office, and has carried it through efficiently and promptly. Two Munsiffs—Babu Jitendra Prasad Sen and Babu Jogendra Nath Wadadar—have worked here; both were efficient, and the latter's energy in managing an unpleasant cadastral circle was highly praiseworthy.

Of the Sub-Deputy Collectors who have been in charge of cadastral and attestation circles, the most outstanding were Babu Promada Kumar Bose, Babu Sudhansu Ranjan De, Babu Harendra Nath Mukherjee and Babu Sasadhar Das Gupta. Sound and solid work as Attestation Charge Officer was done by Maulvi Ali Azam, since promoted to Deputy Collector, during the rather short time he was here.

It is hard to make a judicious selection among the many kanungoes who worked in this settlement. A Settlement Officer soon gets to know who is inefficient, but among the many efficient kanungoes he has less opportunity of discriminating. In giving the following list of names, I feel sure I have omitted many whose unassuming efficiency deserves notice, and with some hesitation I particularise Maulvi Gholam Akbar, Babu Rajendra Nath Chatter-Maulvi Mafizuddin Khan, Babu Anukul Chandra Sarkar (now promoted to Sub-Deputy Collector), Maulvi Taheruddin. Ahmed, Babu Chandra Ba'bu Karmakar, Prokash Chandra Das Gupta, Babu Sita Nath Das Gupta, Babu Anukul Chandra Das, Maulvi Abdul Gani, Babu Nagendra Kishore Biswas, Babu Upendra Nath Ganguly and Babu Parameswar Sanval. It is fitting to mention specially the names of Maulvi Ali Hossein and Babu Nagendra Kumar Banerjee who died in harness, and whose death was in no small measure due to their devotion to duty by working beyond the limits which their failing health allowed.

I owe much of the smooth running of the office to two ministerial officers-Babu Makhan Lal Mitra, my Clerk, and Babu Debendra Chandra Roy Choudhury, my Peshkar, both of whose long experience and devotion to duty were of the utmost value. Many more of the ministerial staff would merit mention if space allowed; as a whole they have worked hard, honestly and ungrudgingly. Finally, it is a pleasant duty to put on record the great help in every respect which this settlement has received from three successive Directors of Land Records and Surveys-Messrs. Sachse and Jameson and Khan Bahadur Abdul Momen. From Mr. Gladding as Collector of the district I was always able to expect and obtain every courtesy and consideration which it was in his power to give.



APPENDIX

Khulne

MAUZAWAR

| | | | | | | | | | In the dire |
|------------|-------------------------------------|---|------------|---------------------|-------------------|---------------------|--------------------|---------------------|--------------|
| | Name of thana. | | Prop | orictors. | • | Rent-free ten | ure holders. | Service ten | ore holders. |
| .0. | Name of Chana. | As priv | ate lands. | Not as pri | vate lands. | No at | | No. of | - |
| Serial No. | | No. of holdings. | Area. | No. of holdings. | Area. | No. of holdings. | Area. | No. of holdings. | Area. |
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 |
| | | | А. D. | | A. D. | | A. D. | | A. D, |
| 1 | Kalaroa | | •••• | 290 | 1,008 95 | 2,025 | 1,049 83 | | |
| 2 | Satkhira | | •••• | 524 | 2,775 71 | 3,528 | 1,752 39 | 1 | - ···· |
| 3 | Tala | | •••• | 528 | 1,834 99 | 4,691 | 2,417 40 | 13 | . 60 |
| 4 | Debhata | | •••• | 186 | 3,034 36 | 1,214 | 772 08 | 4 | 6 2 |
| 5 | Kaliganj | | •••• | 687 | 3,372 21 | 2,954 | 1,775 71 | 7 | 8 9 |
| 6 | Shyanmagar | | | 349 | 4,724 21 | 453 | 840 05 | | •••• |
| 7 | Asasuni | •••• | •••• | 330 | 2,111 87 | 1,457 | 1,233 15 | | |
| | Total of Satkhira sub- division. | • • • • | | 2,894 | 18,862 30 | 16,322 | 7,340 61 | 25 | 21 1 |
| 8 | Divited | | | 52 | 944.05 | 614 | 336 56 | | |
| 9 | Phultala Daulatp u r | •••• | •••• | 154 | 244 85 716 07 | 2,300 | 976 54 | | |
| Ü | | | •••• | 140 | 1,772 91 | 501 | 237 41 | 5 | 5 |
| 1 | Teraknada | •••• | •••• | 305 | 1,719 45 | 1,658 | 1,099 02 | ı | |
| 2 | Baitaghata | • | | 428 | 945 97 | 490 | 125 97 | 2 | 1 6 |
| 3 | Palkgachha | | •••• | 452 | 4,430 27 | 916 | 571 02 | | |
| 4 | Dacope | | •••• | 31 | 174 73 | 10 | 8 07 | | |
| 5 | Khulna | | •••• | 490 | 733 33 | 2,025 | 875 58 | 153 | 16 20 |
| | Total of Sadar sub- division. | | | 2,052 | 10,746 58 | 8,714 | 4,230 17 | 166 | 18 7 |
| | | | | | | | | | |
| 6 | Mollahat | | •••• | 106 | 1,621 77 | 136 | 39 32 | 2 | . 5 |
| 7 | Sarankhola | | •••• | 11 | 953 51 | 24 | 18 22 | •••• | •••• |
| 8 | Kachua | •••• | •••• | 266 | 400 63 | 911 | 440 17 | | 15.5 |
| .9 20 | Fakirhat | | •••• | 588 | 1,298 05 | 3,509 | 1,660 21 | 132 | |
| :0 :1 | Rampal | | •••• | 383 | 1,804 54 | 567 | 112 79 | 95 | 36 2 |
| 2 | Morrellganj Bagerhat | | | 186 | 1,560 82 3,294 45 | 917 3,731 | 538 38 1,509 11 | 8 | 5 2 |
| | Total of Bagerhat sub- division. | •••• | •••• | 2,533 | 10,933 77 | 9,795 | 4,318 20 | 238 | 57 7 |
| | Total of Khulna district. | | | 7,479 | 40,542 65 | 34,831 | 17,888 98 | 429 | 97 (|

Settlement.

STATISTICS.

occupation of-

| Permanent 40 at fixed res | enure holders its or rates. | Permanent t not at fixed | enure holders rents or rates. | Tempora Rold | rary tenure olders, and kind. Tenure holders on rent in kind or combined cash and kind. Other classes, | | and kind. | | |
|------------------------------|--------------------------------|-----------------------------|----------------------------------|---------------------|--|---------------------|-----------|---------------------|----------|
| No. of holdings. | Ares. | No. of holdings. | Area. | No. of holdings, | Arca. | No. of holdings. | Area. | No. of holdings. | Area. |
| | 12 | 13 | 14 | 15 | 16 | 17 | 18 | 19 | 20 |
| 1 | A. D. | | A . D. | | A, D. | | А. D. | | A. D. |
| 2,004 | 2,014 00 | 1,187 | 890 92 | 18 | 2 70 | | | 195 | 52 97 |
| 3,716 | 4,424 69 | 3,994 | 1,841 05 | 34 | 12 07 | 18 | 3 25 | 487 | 195 95 |
| 4,970 | 5,080 78 | 3,190 | 1,389 32 | 128 | 57 31 | 11 | 59-80 | 174 | 32 92 |
| 1,327 | 6,881 60 | 792 | 5,246 44 | 19 | 463 04 | 2 | 3 11 | 161 | 215 64 |
| 2,524 | 10,085 29 | 1,818 | 2,515 48 | 22 | 45 74 | 6 | 99 3 | 264 | 234 06 |
| 935 | 9,267 01 | 457 | 5,289 00 | 53 | 1,540-81 | 3 | 63 75 | 77 | 386 70 |
| 1,595 | 10,116 48 | 1,214 | 3,091 94 | 12 | 67 22 | 18 | 370 03 | 319 | 265 62 |
| 17,071 | 47,869 85 | 124652 | 20,264 15 | 286 | 2,188 89 | 58 | 506-93 | 1,677 | 1,383 86 |
| 934 | 695 80 | 1,548 | 429 69 | | | | | 46 | 14 OX |
| 967 | 339 39 | 3,315 | 912 29 | | | 2 | 20 | 66 | 19 07 |
| 517 | 2,028 71 | 672 | 1,737 10 | 3 | 7 24 | | | 92 | 162 5 |
| 1,769 | 4,892 77 | 1,942 | 4.147 83 | 29 | 271 12 | 3 | 6 10 | 115 | 207 21 |
| 1,082 | 1,549 78 | 652 | 1,703 64 | 10 | 1 20 | 3 | 1 04 | 108 | 70 89 |
| 2,023 | 5,872 72 | 1,536 | 12,207 36 | 110 | 2,975 33 | 5 | 114 40 | 93 | 406-71 |
| 48 | 830 16 | 219 | 3,786-76 | 231 | 3,222 61 | | | 9 | 172 78 |
| 2,146 | 956-99 | 1,580 | 425 23 | 4 | 11 81 | | | 118 | 68 07 |
| 9,481 | 17,166 32 | 11,464 | 25,349 90 | 387 | 6,489-31 | 13 | 121 74 | 647 | 1,121 31 |
| 300 | 1,313 55 | 464 | 1,463 90 | 55 | 637 73 | 1 | 23 | 26 | 149 5 |
| | •••• | 7,932 | 29,631 37 | 2 | 2 83 | 8 | 41 82 | 18 | 30 04 |
| 1,185 | 2,245 09 | 963 | 1,842 31 | 5 | •••• | 1 | 16 27 | 75 | , 23 04 |
| 3,195 | 2,020 57 | 1,452 | 807 09 | 35 | 139 56 | 5 | 2 31 | 154 | 79 25 |
| 1,090 | 3,489 42 | 2,079 | 7,433 01 | 135 | 867 43 | 18 | 6 87 | 487 | 248 14 |
| 3,985 | 8,704 18 | 9,694 | 30,147 96 | 86 | 133 71 | 204 | 508-27 | 232 | 587 59 |
| 2,660 | 3,500 72 | 2,629 | 3,143 57 | 481 | 453 97 | 4 | 5 01 | 197 | 72 98 |
| 12,415 | 21,273 53 | 25,213 | 74,469 20 | 799 | 2,235 23 | 241 | 580-78 | 1,189 | 1,190 4 |
| 38,967 | 86,309 70 | 49,329 | 1,20,083 25 | • 1,472 | 10,913 43 | 312 | 1,209 45 | 3,513 | 3,695 64 |

APPENDIX

Khulna

MAUZAWAR

| | | Rai (rent | yats. -free). | Rai (ser | yats vice). | 1 | Raiyats at fixed | rate of rent (cash |). • |
|------------|-------------------------------------|---------------------|------------------|---------------------|----------------|---------------------|------------------|--------------------|-------------|
| | Name of thana. | | • | | | | | | |
| Serial No. | | No. of holdings. | Area. | No. of holdings. | Area. | No. of holdings. | Arca. | Rent. | Incidence o |
| 1 | 2 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 |
| | | | A. D. | .40 | A. D. | | A. D. | Rs. A. P. | Rs. A. P. |
| 1 | Kalaroa | | | 11 | 1 42 | 3,594 | 12,949 51 | 30,205 9 0 | 2 5 3 |
| 2 | Satkhira | 10 | 5 51 | 17 | 6 71 | 4,662 | 17,022 99 | 38,678 2 0 | 2 4 4 |
| 3 | Tala | 1 | 26 | 16 | 2 01 | 7,632 | 17,221 60 | 44,722 1 0 | 2 9 6 |
| 4 | Debhata | | | 3 | 1 73 | 2,838 | 6,686 12 | 19,090 6 0 | 2 13 8 |
| 5 | Kaliganj | | | 8 | 2 66 | 3,080 | 12,589 00 | 34,250 6 0 | 2 11 6 |
| 6 | Shyamnagar | | | 8 | 1 42 | 181 | 1,182 37 | 4,619 10 0 | 3 14 6 |
| 7 | Asasuni | | | 9 | 2 21 | 1,577 | 11,641 23 | 21,762 7 0 | 1 13 11 |
| | Total of Satkhira sub- division. | J1 | 5 77 | 72 | 18 16 | 23,564 | 79,292 82 | 1,93,328 9 0 | 270 |
| 8 | Phultala | | | 29 | 10 34 | 2,010 | 3,473 10 | 9,056 10 0 | 298 |
| 9 | Daulatpur | 3 | 37 | 9 | 3 67 | 1,079 | 1,303 08 | 3,198 11 0 | 273 |
| 10 | Terakhada | 2 | 43 | 2 | 26 | 470 | 1,937 95 | 3,307 4 0 | 1 11 3 |
| 11 | Dumuria | 2 | 1 31 | 2 | 6 41 | 3,105 | 12,495-36 | 24,534 6 0 | 1 15 5 |
| 12 | Baltaghata | 1 | 55 | 32 | 30 52 | 081 | 5,296 11 | 9,565-11 0 | 1 12 10 |
| 13 | Paikgachha | 5 | 7 24 | 7 | 16 99 | 1,219 | 4,890 29 | 10,918 5 0 | 238 |
| 14 | Dacope | | | | •••• | 261 | 2,685 45 | 8,621 0 0 | 3 3 4 |
| 15 | Khulna | | •••• | 2 | 2 50 | 1,425 | 2,005 77 | 5,183 7 0 | 2 9 4 |
| | Total of Sadar sub- division. | 13 | 9 90 | 83 | 70 69 | 10,250 | 34,087 11 | 74,385 6 0 | 5 5 11 |
| 16 | Mollahat | 3 | 2 72 | 5 | 1 77 | 105 | 583-80 | 931 8 0 | 196 |
| 17 | Sarankhola | | | | | | | • • • • | |
| 18 | Kāchua | 7 | 6 10 | 34 | 85 28 | 331 | 1,436 44 | 3,330 0 0 | 2 5 1 |
| 1,9 | Fakirhat | | | 1 | 1 94 | 1,618 | 5,695 64 | 7,835 1 0 | 2 1 11 |
| 20 | Rampa! | | | | | 1,175 | 7,827 94 | 24,836 1 0 | 3 2 9 |
| 21 | Morrellganj | 3 | 2 17 | а | 4 92 | 40 | 199 06 | 798 8 0 | 4 0 2 |
| 22 | Bagerhat | 4 | 84 | 34 | 25-81 | 1,904 | 4,975 35 | 11,744 9 0 | 2 5 9 |
| | Total of Bagerhat sub- division. | 17 | 11 83 | 79 | 69 72 | 5,173 | 18,718 23 | 49,475 11 0 | 2 10 8 |
| | Total of Khulna district. | 41 | 27 50 | 234 | 158 57 | 38,987 | 132,098 16 | 3,17,189 10 0 | 2 6 (|

l-contd.

Settlement—contd.

STATISTICS—contd.

| ked produce ts. | Settled and raiyats on fi ren | | raiyata (cash rent). | Non-occupancy | | Settled and occupancy raiyats (cash rent). | | | Settl |
|--------------------|-------------------------------------|-----------------------|----------------------|---------------|---------------------|--|-----------------|-------------|---------------------|
| • | | T | 1 | 1 | ļ | ī | 1 | | |
| Area. | No. of holdings. | Incidence of rent. | ♥ Rent. | Arca. | No. of holdings. | Incidence of rent. | Rent. | Arca. | No. of holdings. |
| 38 | 37 | 36 | 35 | 34 | 33 | 32 | 31 | 30 | 29 |
| A. D. | | Rs. A. P. | Rn. a. P. | А. Д. | | Rs. a. p. | Rs. A. P. | A. D. | |
| 185 07 | 295 | 4 3 10 | 325 5 0 | 76 69 | 102 | 3 8 8 | 1,32,102 10 0 | 37,572 43 | 23,976 |
| 739 46 | 867 | 3 10 2 | 280 3 0 | 77 01 | 67 | 3 0 1 | 1,72,052 9 0 | 57,201 52 | 36,866 |
| 834 20 | 758 | 3 1 4 | 500 12 0 | 162 17 | 90 | 2 14 8 | 1,45,120 5 0 | 49,747 11 | 31,106 |
| 113 79 | 125 | 3 4 0 | 35 2 0 | 10 76 | 8 | 3 3 2 | 53,537 15 0 | 16,731 60 | 9,197 |
| 959 05 | 597 | 5 10 7 | 4,531 13 0 | 800 32 | 150 | 3 4 0 | 1,34,129 13 0 | 41,249 78 | 15,657 |
| 1,077 68 | 228 | 6 0 4 | 97,977 4 0 | 16,259 53 | 1,362 | 6 11 1 | 3,63,323 10 0 | 54,287 14 | 8,004 |
| 1,181 73 | 564 | 1 6 7 | 1,650 2 0 | 1,165 02 | 182 | 2 3 6 | 1,30,554 3 0 | 58,795 32 | 12,810 |
| 5,090-98 | 3,434 | 5 10 9 | 1,05,300 9 0 | 18,551 50 | 1,961 | 3 9 3 | 11,30,82\ ''1 0 | 315,584 90 | 1,37,616 |
| 2 60 | 4 | | | | | 2 15 8 | 34,080 10 0 | 11,448 29 | 10,837 |
| 22 84 | 42 | 6 0 6 | 84 12 0 | 14 05 | 22 | 2 14 5 | 46,716 14 0 | 16,082 83 | 17,597 |
| 8 22 | 4 | 2 10 0 | 1,921 9 0 | 731 82 | 202 | 2 7 2 | 1,04,434 10 0 | 42,590 44 | 14,250 |
| 280 74 | 112 | 4 6 7 | 3,653 12 0 | 827 55 | 91 | 2 5 4 | 1,60,612 11 0 | 68,770 56 | 22,572 |
| 23 97 | 13 | 2 6 0 | 63 9 0 | 26 51 | 7 | 2 2 8 | 92,226 3 0 | 42,495 13 | 9,161 |
| 511 89 | 79 | 5 10 1 | 12,320 6 0 | 2,186 71 | 217 | 3 2 3 | 3,23,383 2 0 | 1,02,812 07 | 15,515 |
| 484 37 | 56 | 17 12 6 | 6,316 9 0 | 355 22 | 38 | 4 0 6 | 2,03,461 2 0 | 50,468 00 | 4,006 |
| 17 36 | 20 | 3 9 4 | 69 10 0 | 19 43 | 29 | 3 0 7 | 51,873 7 0 | 17,063 24 | 14,690 |
| 1,351 99 | 330 | 5 13 11 | 24;430 3 0 | 4,161 29 | 606 | 2 14 5 | 10,16,788 11 0 | 3,51,739 56 | 1,08,628 |
| 41 15 | 26 | 1 13 3 | 765 8 0 | 417 20 | 128 | 1 15 2 | 75,252 3 0 | 38,553 26 | 14,641 |
| 1 39 | 1 | | | 13 08 | 2 | 6 3 9 | 14,848 10 0 | 2,380 34 | 796 |
| 9 43 | 9 | 3 11 3 | 23 12 0 | 6 41 | 6 | 3 7 3 | 1,03,869 2 0 | 30,021 84 | 10,821 |
| 8 00 | 8 | 4 8 11 | 596 3 0 | 130 78 | '57 | 2 8 9 | 65,686 14 0 | 25,759 94 | 18,654 |
| 113 35 | 26 | 14 15 7 | 7,328 11 0 | 489 05 | 65 | 4 2 9 | 3,72,958 13 0 | 89,377 52 | 15,594 |
| 42 08 | 15 | 6 6 6 | 2,447 1 0 | 381 70 | 60 | 5 7 2 | 2,88,054 10 0 | 52,942 45 | 13,472 |
| 20 40 | 27 | 4 0 8 | 5,225 6 0 | 1,292 73 | 250 | 3 1 3 | 1,78,944 6 0 | 58,457 90 | 29,322 |
| 235 80 | 112 | 6 0 0 | 16,386 9 U | 2,730 95 | 568 | 3 11 1 | 10,99,614 10 0 | 2,97,493 34 | 1,03,300 |
| 6,678 77 | 3,876 | 5 11 10 | 1,46,117 5 0 | 25,443 74 | 3,135 | 3 5 10 | 32,47,224 6 0 | 9,64,817 80 | 3,49,544 |

APPENDIX

Khuina

MAUZAWAR

| | | Settled and raiyats of produ | occupancy a share of cc rent. | Non-occup on lixed p | ancy raiyats rodule rent. | Non-occupate share of p | ncy raiyats on produce rent. | raiyats on c | i occupancy combined cash oduce rent. |
|------------|-------------------------------------|------------------------------------|-------------------------------------|-------------------------|------------------------------|-------------------------|---------------------------------|---------------------|---|
| | Name of thana. | | , | | | | | | i |
| Serial No. | | No. of holdings. | Arca. | No. of holdings. | Arca. | No, of holdings. | Area. | No. of holdings. | Arca. |
| 1 | 2 | 39 | 40 | 41 | 42 | 43 | 44 | 45 | 46 |
| ł | | | A. D. | | A. D. | | A. D. | | A. D. |
| 1 | Kalaroa | 391 | 275 41 | 17 | 9 43 | 53 | 42 21 | 85 | 302 16 |
| 2 | Satkhire | 1,511 | 1,595 14 | 14 | 11 10 | 15 | 18 41 | 155 | 287 12 |
| 3 | Tala | 842 | 1,023 78 | 13 | 23 87 | 7 | 4 80 | 191 | 688 12 |
| 4 | Debhata | 555 | 1,033 94 | 2 | 44 | 1 | | 60 | 284 11 |
| 5 | Kaliganj | 1,407 | 2,414 74 | 104 | 293 01 | 27 | 95 23 | 331 | 1,449 36 |
| 6 | Shyaninagar | 838 | 7,736 79 | 176 | 1,545-41 | 4 | 43 67 | 58 | 470 17 |
| 7 | Asasunl | 899 | 2,054 33 | 11 | 65 76 | 1 | 30 | 254 | 1,722 45 |
| | | | | | | | | | |
| | Total of Satkhira sub- division. | 6,443 | 16,134 13 | 337 | 1,949 02 | 107 | 201 65 | 1,134 | 5,203 49 |
| 8 | Phultala | 1 | 1 06 | | | | | | |
| 9 | Daulatpur | 261 | 195 15 | 2 | 23 | | | 136 | 42 31 |
| 10 | Terakhada | 58 | 86 04 | | | | | 136 | 290 42 |
| 11 | Dumuria | 872 | 1,803 64 | 22 | 105 84 | 47 | 66 01 | 196 | 1,320 31 |
| 12 | Baitaghata | 750 | 1,906 82 | | | 3 | 24 37 | 343 | 1,969 91 |
| 13 | Paikgachha | 658 | 2,048 25 | 26 | 130 07 | 6 | 41 28 | 353 | 3,375 46 |
| 14 | Dacope | 178 | 1,290 10 | 4 | 61-65 | 27 | 281-61 | 101 | 1,091 42 |
| 15 | Khulna | 151 | 121 96 | 1 | 58 | 20 | 19-88 | 23 | 26 07 |
| | Total of Sadar sub- division. | 2,929 | 7,453 02 | 55 | 298 37 | 103 | 433 15 | 1,188 | 8,115 90 |
| | | | or 40 | | | | 18 90 | 43 | 79 20 |
| 16 | Mollahat | 19 | 25 68 18 93 | | •••• | 8 | 16 80 | 13 | 4 58 |
| 17 18 | Sarankhola Kachua | 356 | 354 06 | | •••• | | | 540 | 2,419 87 |
| | 79.3.1.1.4 | 1,013 | 1,447 43 | | 0 | 4 | 8 69 | 241 | 1,146 12 |
| 19 20 | | 667 | 1,784 36 | 3 | 6 40 | 14 | 98,43 | 512 | 3,607 29 |
| 21 | | 695 | 1,060 82 | " | U 40 | | | 1,311 | 5,752 59 |
| 22 | Bagerhat | 792 | 812 02 | 3 | 3 40 | 36 | 57 67 | 210 | 711 17 |
| | Total of Bagerhat sub- division. | 3,551 | 5,503 30 | 6 | 9 80 | 62 | 182 34 | 2,858 | 13,720 91 |
| | Total of Khulna district. | 12,923 | 29,090 45 | 398 | 2,257 10 | 272 | 820 14 | 5,180 | 2 7,040 30 |

l—contd.

Settlement—contd.

STATISTICS—contd.

| on comb | pancy raiyats ined cash and iuge rent. | Othe | er classes. | Occ | upants (E. G. I. gricultural holdi | E. non- ngs). | Under raiyats. | | | |
|---------------------|--|---------------------|-------------|---------------------|---------------------------------------|--------------------|--|------------|---------------------------|--|
| | | | | | | | With rights of occupancy on cash rent. | | | |
| No, of holdings, | Area. | No. of holdings. | Атса. | No. of holdings. | Area. | Rent. | No. of holdings. | Arca. | Rent. | |
| 47 | 48 | 49 | 50 | 59 | 52 | 53 | 54 | 55 | 56 | |
| | A. D. | | A, D, | | A. D. | Rs. A. P. | | А. Д. | Rs. A. P | |
| 1 | 1 07 | 210 | 12 90 | 422 | 180 08 | 584 5 0 | 30,137 | 15,256 97 | 93,129 10 | |
| 7 | 5 76 | 146 | 10-76 | 1,338 | 1,277 45 | 2,101 3 0 | 35,781 | 18,446 69 | 91,693 6 | |
| 22 | 157 03 | 67 | 41 92 | 461 | 339 66 | 246 4 0 | 29,554 | 15,990 49 | 85,217 9 (| |
| | | 91 | 56 69 | 310 | 140 75 | 368 13 0 | 5,439 | 3,462 76 | 18,557 12 (| |
| 6 | 35 57 | 147 | 52 82 | 570 | 852-61 | 460 9 0 | 10,780 | 8,287 59 | 37,576 4 (| |
| 4 | 131 52 | 36 | 11 96 | 371 | 265 02 | 269 15 0 | 2,044 | 2,330 81 | 12,131 12 0 | |
| 1 | 4 80 | 29 | 8 75 | 468 | 453-87 | 996-12-0 | 7,176 | 9,186 46 | 33,549 15 0 | |
| 41 | * 335 75 | 726 | 198-80 | 3,940 | 4,409 44 | 5,030 13 0 | 1,20,920 | 73,591 77 | 3,71,856 4 0 | |
| | | | | 990 | 112 00 | 119 0 0 | 9,919 | 4,450 92 | 99,000 17, 0 | |
| •••• | | 23 | 65 18 39 | 230 323 | 142 02 104 43 | 142 0 0 427 2 0 | 11,760 | 4,767 35 | 22,088 15 0 | |
| | 32 40 | 78 82 | 31 50 | 230 | 263 49 | 25 13 0 | 10,311 | 9,497 38 | 25,249 1 0 | |
| 8 | 60 95 | 51 | 175 74 | 537 | 392 29 | 443 14 0 | 21,140 | 17,706 87 | 33,707 12 0 70,387 1 0 | |
| ı | 1 96 | 72 | 92 45 | 118 | 112 09 | 132 4 0 | 4,928 | 7,253 55 | 25,160 11 0 | |
| 19 | 275 90 | '~ | | 378 | 570 93 | 1,310 12 0 | 5,620 | 8,359 05 | 34,126 15 0 | |
| 2 | 8 24 | 21 | 64 31 | 140 | 130 15 | 224 14 0 | 2,122 | 7,107 29 | 34,231 15 0 | |
| | | 4 | 1 11 | 1,129 | 405 98 | 6,807 11 0 | 9,155 | 4,253 91 | 24,307 9 0 | |
| 39 | 379 54 | 331 | 384 15 | 3,594 | 2,121 68 | 9,514 6 0 | 74,955 | 63,396 32 | 2,69,259 15 0 | |
| | | 3 | 1 63 | 200 | 248 37 | 33 1 0 | 6,152 | 5,062 32 | 17,008 1 0 | |
| | | | | 109 | 297 40 | 31 3 0 | 155 | 351 77 | 3,340 2 0 | |
| 1 | 3 39 | 25 | 13 63 | 226 | 178 00 | 218 5 0 | 4,173 | 4,519 30 | 23,554 14 0 | |
| 6 | 12 37 | 35 | 25 44 | 570 | 348 89 | 98 13 0 | 8,813 | 5,937 82 | 25,014 7 ð | |
| 6 | 29 92 | 4 | 11 15 | 424 | 617 31 | 287 11 0 | 9,227 | 16,396 27 | 1,21,714 12 0 | |
| | | 8 | 4 37 | 543 | 785 57 | 993 11 0 | 3,704 | 7,391 44 | 65,655 11 0 | |
| | | 12 | 10 85 | 1,209 | 658-30 | 3,076 1 0 | 21,167 | 15,683 88 | 1,11,145 4 0 | |
| 13 | 45 68 | 87 | 67 07 | 3,281 | 3,133 84 | 4.738 13 0 | 53,391 | 55,342 80 | 3,67,433 3 0 | |
| 93 | 760 97 | 1,144 | 650 02 | 10,815 | 9,664 96 | 19,284 0 0 | 249,266 | 192,530 80 | 10,08,549 6 | |

APPENDIX

Khuina

MAUZAWAR

| | | | | 1 | | | | Unde |
|------------|-------------------------------------|---------------------|-----------------|-----------------------|--------------------------------|----------------------|-------------------------------|----------------------------|
| | | Without rights | of occupancy (| on cash cent). | With rights of (fixed produ | | Without rights (fixed prod | of occupancy uce rent). |
| | Name of thana. | | | | | | | |
| Serial No. | | No. of holdings. | Area. | Rent. | No. of holdings, | Area. | No. of holdings. | Area. |
| or 1 | 2 | 57 | 58 | 59 * | 60 | 61 | 62 | 63 |
| _ | | | | | | | | |
| | | 0.0 | A. D. | Rs. A. P. | | A. D. | | A. D. |
| 1 | Kalaroa | 3,902 | 1,594 72 | 1,203 10 0 | 179 | 122 81 | 163 | 97 1 |
| 2 | Satkhira | 2,063 | 1,091 06 | 4,768 5 0 | 1,214 | 1,054 66 | 290 | 224 3 |
| 3 | Tala | 2,218 | 1,068 33 | 5,575 12 0 | 217 | 183 34 | 45 | 78 20 |
| 4 | Debhata | 584 | 318 99 | 1,561 5 0 | 200 | 243 39 | 73 | 59 01 |
| 5 | Kaliganj | 907 | 638 78 | 2,523 7 0 | 587 | 604 73 259 33 | 177 | 172 0 |
| 6 7 | Shyamnagar | 73 818 | 96 67 777 90 | 261 14 0 2,734 6 0 | 72 264 | 719 18 | 127 | 238 19 |
| ' | Asserum | 010 | 111 90 | 2,734 6 0 | 204 | 110 10 | | 200 It |
| | Total of Satkhira sub- division. | 10,565 | 586 45 | 18,628 11 0 | 2,733 | 3,187 44 | 875 | 869 08 |
| 8 | Phultala | 198 | 67 16 | 212 11 0 | | | | •••• |
| 9 | Daulatpur | 186 | 46 85 | 666 3 0 | 94 | 103 70 | | |
| 10 | Terakhada | 143 | 152 53 | 36 2 0 | 263 | 513 92 | | •••• |
| 11 | Dumuria | 226 | 235 26 | 204 0 0 | 847 | 2,543 60 | 15 | 84 58 |
| | | | 1 | | | | | |
| | | | | 00 0 0 | 000 | 0711.10 | | 10.00 |
| 12 | Baltaghata | 84 | 78 74 | 20 2 0 | 839 | 2,711 18 | 5 | 13 82 82 25 |
| 13 | Paikgachha | 332 | 174 28 | 925 8 0 92 15 0 | 298 247 | 1,691 58 1,195 27 | | 62 20 |
| 14 | Dacope Khulna | 683 | 85 44 176 69 | 92 15 0 1,567 9 0 | 171 | 172 33 | 3 | 7 45 |
| 15 | Knumi | 000 | 170 09 | 1,007 0 0 | | | | |
| | Total of Sadar sub- division. | 1,862 | 1,006 95 | 3,725 2 0 | 2,759 | 8,931 58 | 27 | 188 10 |
| | - | | | • | | | | |
| 16 | Mollahat | 213 | 132 41 | 356 13 0 | 50 | 77 11 | a | 5 40 |
| 17 | Sarankhola | 4 | 13 71 | | 7 | 48 62 | | |
| 18 | Kachua | 88 | 100 69 | 319 6 0 | 178 | 260 69 | a | 35 |
| 9 | Fakirhat | 175 | 103 79 | 394 15 0 | 727 | 654 89 | 15 | 34 24 |
| 20 | Rampal | 310 | 544 18 | 8,757 14 0 | 450 | 1,419 18 | 18 | 92 54 |
| 21 | Morreliganj | 161 | 183 08 | 1,287 10 0 | 178 | 1,329 10 | 1 | 6 09 |
| 22 | Bagerhat | 1,105 | 690 80 | 5,831 5 0 | 604 | 593 63 | 11 | 9 92 |
| | Total of Bagerhat sub- division. | 2,056 | 1,768 66 | 16,947 15 0 | 2,194 | 4,383 22 | 52 | 148,54 |
| | Total of Khulna district. | 14,483 | \$862 06 | 39,801 12 0 | 7,686 | 16,502 24 | 954 | 1,205 72 |

1-conold.

Settlement-concld.

STATISTICS concid.

| iyats. | | | • | | | |
|--------------------------|--------------|-----------------------------|---------------------|---------------------------|---------------------|-------------------|
| Without sights | of occupancy | | | | of the thana. | |
| (share of produce rent). | | Acres un- occupied (in- | Area un- | • | _ | |
| | | cluding area outside the | occupied for public | | | Remarks. |
| | | record). | purposes. | | | |
| No. of holdings. | Arca. | | ** | Іп астея. | In Sq. miles. | , |
| | | | | | | |
| 64 | 65 | 66 | 67 | 68 | 69 | |
| | | | | | - | |
| | A. D. | A. D. | A. D. | A. D. | | |
| . 202 | 135 48 | 395 37 | 100 82 | 57,186 94 | 89 - 35 | |
| 164 | 144 78 | 374 29 | 347 39 | 90,206 76 | 140 -94 | |
| 35 | 29 79 | 1,932 81 | 218 90 | 83,333 77 | 130 -21 | |
| 63 | 75 18 | 1,458 09 | 32 03 | 43.237 54 | 67 -55 | |
| 47 | 56 40 | 2,255 02 | 102 18 | 81,387 73 | 127 - 17 | |
| 1 | 2 41 | 7,717 77 | 56 26 | 1,12,460 24 | 175 · 72 | |
| 90 | 283 55 | 0,466 28 | 10 08 | 1,01,071 44 | 157 -92 | |
| 602 | | | | | | |
| 602 | 727 59 | 20,599 63 | 867 66 | 5,68,884 42 | 888-86 | |
| | | | | | | |
| 8 | 4 49 | 168-00 | 186 80 | 17,153 85 | 26 -80 | |
| į | | | | 1,194 52 | 1 -87 | Petty settlement. |
| | | | | 18,348 37 | 28 -67 | |
| 43 | 25 16 | 926 85 | 302 93 | 21,981 07 | 34 -34 | |
| 37 | 76 01 | 963 15 | | 52,891 53 | 82 -64 | • |
| 18 | 68 50 | 3,972 26 | 43 43 | 1,02,665 90 11,055 24 | 160 · 42 17 · 27 | Petty rettlement. |
| - | | | | 1,13,721 14 | 177 -69 | |
| 20 | 68 89 | 5,445 01 | 2 76 | 61,828 29 | 96-61 | |
| 10 | 27 50 | 12,743 51 | 117 96 | 1,56,315 45 | 244 -24 | |
| 10 | 54 30 | 5,488 92 | 1 85 | 70,606 67 | 110 -32 | |
| 37 | 49 12 | 1,555-71 | 527 77 | 24,854 57 | 38 -84 | |
| | | | | | | |
| 183 | . 373 97 | 31,263 41 | 1,183 50 | 508,297 33 | 794 -21 | 70.44441 |
| | | | i | 12,249 76 | 19 · 14 | Petty settlement. |
| | | | | 520,547 09 | 813 - 35 | |
| 2 | 2 97 | 790 34 | 8 37 | 46,006 00 | 71-88 | |
| - 1 | 18 2 | 120 94 | 0 31 | 15,108 28 | 23 -60 | Petty settlement. |
| | | | | 61,114 28 | 95 -48 | |
| | | 4,104 16 | 8 58 | 37,506 25 | 58 - 60 | |
| 2 | 6 09 | 2,042 96 | 3 28 | 41,498 86 | 64 -84 | |
| 4 | 11 18 | 444 10 | 266 66 | 39,318 52 | 61 -43 | |
| 26 | 51 86 | 6,611 83 | 4 11 | 124,577 08 | 194 -65 | |
| 6 | 25 36 | 5,079 38 | 2 13 | 108,438 36 | 169 -43 | |
| 75 | 75 44 | 1,027 55 | 278 80 | 80,317 93 | 125 -49 | |
| | - | | | | | |
| 115 | 172 90 | 20,109 32 | 571 93 | 477,663 00 15,108 28 | 746 ·32 23 ·60 | Petty settlement. |
| | | | | 492,771 - 28 | 769 - 92 | |
| <u> </u> | | | | | 100 94 | |
| 900 | 1,274 46 | 71,972 36 | 2,623 09 | 1,554,844 75 27,358 04 | 2,429 ·39 42 ·74 | Petty settlement, |
| | | | | 21,000.04 | 36 17 | vey moved mone. |

APPENDIX

Khuina

MILAN

| | | | | Area sown. | • • | | | | | Culturab |
|-----|-----------------------------------|--------------------|--------------------|------------|---|--------------|-----------|--------------|--------------------|----------------------|
| | liame of thans. | Bhadol. | Aghani. | Rabi. | Others, e.g., Bnango, tea pan, plan- tain, gua- vas, etc. | Total. | Dofasli. | Net. | Current fallow. | Old • fallow. |
| 1 | 1(a) | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 |
| | | 4 D | 4 15 | A, D, | A. D. | A. D. | A. D. | A. D. | A. D. | A. D. |
| 1 | Kalaroa | A. D. 26,077 17 | A. D. 16,844-94 | 6,264 92 | 3,259 42 | 52,446 45 | 6,008 57 | 46,437 88 | 1,262 43 | 565 15 |
| 2 | | 15,395 99 | 48,392 11 | 2,135 20 | 4,219 07 | 70,142 37 | 1,393 55 | 68,748 82 | 5,731 85 | 2,375 76 |
| 3 | | 18,605 56 | 21,950 03 | 11,928 17 | 8,561 78 | 61,045 54 | 10,057 58 | 50,987 96 | 15,268 26 | 1,815 40 |
| 1 | 1 | | 16,833 49 | | 953 07 | 19,923 34 | 274 98 | 19,648 36 | 3,675 90 | 5,170 39 |
| 4 | Debhata | 1,461 53 | | 625 25 | | | | 50,737 56 | | |
| 5 | Kaliganj | 3,263 29 | 41,733 54 | 4,015 62 | 2,295 45 | 51,307 90 | 570 34 | 76,953 64 | 7,492 73 | 7,292 15 5,957 69 |
| 6 | Shyamnagar | 303 88 | 75,391 44 | 733 60 | 542 27 | 76,971 19 | 17 55 | | 7,698 57 | |
| , 7 | Asasımi | 1,498 62 | 34,153 28 | 1,869 45 | 1,393 20 | 88,914-55 | 76 23 | 38,838 32 | 87,750 94 | 4,397 79 |
| , | Total of Satkhira Subdivision. | 66,606 04 | 255,348 83 | 27,572 21 | 21,224 26 | 370,751 34 | 18,398 80 | 352,352 54 | 78,880 68 | 27,574 31 |
| | Dhulauta | 907 99 | 10.054.01 | N== 41 | 1.007.00 | 13,247 18 | 215 01 | 13,032 17 | 373 56 | 707 95 |
| 8 | Phultala | 837 28 | 10,076 91 | 377 61 | 1,955 38 | | | 14,861 44 | | 1,399 54 |
| 9 | Daulatpur | 712 32 | 11,677 01 | 911 34 | 2,038 96 | 15,339 63 | 478 19 | · | 263 56 | , |
| 10 | Terakhadı | 1,964 08 | 31,361 20 | 17,909 0 | 561 72 | 51,796 00 | 8,072 66 | 43,723 34 | 1,015 37 | 2,613 66 |
| 11 | Dumuria | 3,781 80 | 66,789 09 | 4,741 70 | 3,152 43 | 78,465 02 | 1,177 53 | 77,287 49 | 3,116 59 | 5,308 99 |
| 12 | Baitaghata | 311 52 | 45,518 95 | 1,226 31 | 1,199 85 | 48,256 63 | 85 85 | 48,170 78 | 836 14 3,705 84 | 1,309 41 |
| 13 | Paikgachha | 1.913 84 | 110,068 39 | 3,963 71 | 2,189 01 | 118,134 95 | 911 34 | 117,223 61 | | 5,128 95 |
| 11 | Dacope | 11 77 | 57,923 09 | 360 65 | 135 04 | 58,430 55 | 2 31 | 58,428 24 | 194 19 | 1,101 75 |
| 15 | Khulna | 681 36 | 12,457 65 | 1,706 17 | 2,237 79 | 17,082 97 | 966 21 | 16,116 76 | 508 15 | 1,657 00 |
| i | Total for Sadar Subdivision. | 10,213 97 | 345,972 29 | 31,195 49 | 13,470 18 | 400,752 93 | 11,909 10 | 388,843 83 | 10,013 40 | 19,227 25 |
| 16 | Mollahat | 4,613 76 | 19,533 91 | 16,327 45 | 1,614 93 | 42,089 95 | 5.411 84 | 36,678 11 | 1,005 47 | 2,948-64 |
| 17 | | 624 96 | 27,856 82 | 10,327 43 | 686 19 | 29,334 31 | 0 83 | 29,333 48 | 401 12 | 721 71 |
| 18 | 77 1 | 167 07 | 26,722 00 | 3,444 45 | 3,893 28 | 34,226 80 | 1,598 18 | 32,628 62 | 510 46 | 1,412 16 |
| 19 | 21.1.1.1.1 | 1,529 90 | 17,907 13 | 4,540 01 | 3,622 88 | 27,639 92 | 319 21 | 27,320 71 | 935 86 | 3,507 58 |
| 20 | Dames 1 | 865 31 | 96,363 05 | 2,876 75 | 2,233 53 | 102,338 64 | 26 61 | 102,312 03 | 1,478 96 | 4,240 72 |
| 21 | Morrellganj | 1,231 37 | 81,062 45 | 812 62 | 5,878 29 | 88,984 73 | 69 83 | 88,914 90 | 2,638 75 | 3,490 20 |
| .22 | Bagerhat | 1,340 25 | 35,172 04 | 14,924 79 | 6,341 65 | 57,778 73 | 1,114 89 | 56,663 84 | 2,226 72 | 8,118 97 |
| | Total of Bagerhat Subdivision. | 10,372 62 | 304,617 40 | 43,092 31 | 24,310 75 | 382,393 03 | 8,541 39 | 373,851 69 | 9,197 34 | 24,439 98 |
| | Total of Khulna District. | 87,192 63 | 905,838 52 | 101,861 01 | 59,005 19 | 1,153,897 35 | 34,849 29 | 1,115,048 06 | 98,091 42 | 71,241 56 |

II. Settlement.

KHA8RA.

| area other than | current fallow. | | | Arca n | ot available fo | or cultivation. | | | |
|---|-----------------------|-----------------|------------|---------------|-----------------|-----------------|------------|---|--------------------------------------|
| Groves not fruit-bearing and bamboos. | Culturable jungle. | Other kinds. | Total, | House altes. | Water. | Other kinds. | Total. | Total uncultivated cols, 9, 14 and 18. | Total area: cols. 8 and 19. |
| 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 16 | 17 | 18 | 19 | 20 |
| A. D. | А. О. | А. D. | A. D. | A . D. | A. D. | A. D. | A. D. | A. D. | Λ. |
| 2,009 64 | 11 43 | 354 99 | 2,941 21 | 3,428 74 | 1,178 58 | 1,938 10 | 6,545 42 | 10,749 06 | 57,186 |
| 2,476 51 | 44 09 | 299 12 | 5,195 48 | 4,428 99 | 3,480 20 | 2,621 42 | 10,530 61 | 21,457 94 | 90,206 |
| 1,993 24 | 399 00 | 166 74 | 4,374 38 | 4,055-05 | 3,768 52 | 4,876 60 | 12,703 17 | 32,345-81 | 83,333 |
| 2,713 96 | 2,931 12 | 54 61 | 10,870 08 | 1,629 39 | 2,417 43 | 4,996 38 | 9,043 20 | 23,589 18 | 43,237 |
| 657 23 | 50 21 | 126 56 | 8,126 15 | 3,810 89 | 3,171 21 | 8,049 19 | 15,031 29 | 30,650 17 | 81,387 |
| 107 32 | 764 52 | 20 57 | 6,850 10 | 3,085-15 | 8,572 76 | 9,300 02 | 20,957 93 | 35,506 60 | 112,460 |
| 452 42 | 428 97 | 29 16 | 5,308 34 | 3,469 94 | 12,716 85 | 2,987 05 | 19,173 84 | 62,233 12 | 101,071 |
| 10,410 32 | 4,629 34 | 1,051 75 | 43,665 74 | 23,911 15 | 35,305 55 | 34,768 76 | 93,985 46 | 216,531 88 | 568,884 |
| 349 70 | 8 47 | 491 44 | 1,557-56 | 1,061 58 | 520 02 | 608-06 | 2,190-56 | 4,121-68 | 17,153 8 |
| 628 (6) | 35 52 | 883 94 | 2,947-66 | 1,651 40 | 1,425 85 | 831 16 | 3,908 41 | 7,119 63 | 21,981 |
| 67 31 | 4 33 | 210 71 | 2 896 01 | 1,386 39 | 3,485 56 | 381 86 | 5.256 81 | 9,168 19 | 52,891 |
| 811 22 | 132 93 | 782 38 | 7,035 52 | 3,317 50 | 9,600 45 | 2,308 35 | 15,226 30 | 25,378 41 | 102,665 |
| 135 44 | 766 59 | 86 20 | 2,207 64 | 1.891 72 | 8,010 00 | 621 92 | 10,523 73 | 13,657 51 | 61,828 |
| 584 15 | 83 93 | 137 96 | 5,934 99 | 4,404 55 | 22,977 31 | 2,069 15 | 29,451 01 | 39,091 84 | 156,315 |
| 36 67 | 1 52 | 23 25 | 1,163 19 | 1,804 34 | 8,938 04 | 78 67 | 10,821-05 | 12,178 43 | 70,606 |
| 547 16 | 48 66 | 869 37 | 3,122 19 | 1,859 53 | 2,335 38 | 912 56 | 5,107 47 | 8,737 81 | 24,854 |
| 3,160 31 | 1,081 95 | 3,485 25 | 26,954 76 | 17,377 01 | 57,293 60 | 7,814 73 | 82,485 34 | 119,458 50 | 508,297 8 |
| 569 79 | 685 13 | . 114 28 | 4.317 84 | 1,232 49 | 2,220 51 | 551 58 | 4,004 58 | 9,327 89 | 46,006 0 |
| 17 85 | 109-86 | 150 93 | 1000 08 | 1,545 22 | 5,155 40 | 70 95 | 6,771 57 | 8,172 77 | 37,506 2 |
| 155-96 | 190-80 | 222 10 | 1,981 02 | 2,076 18 | 3,346 29 | 956 29 | 6,378-76 | 8,870 24 | 41,498 8 |
| 1,681 34 | 65 97 | 148 73 | 5,403 62 | 2,376 10 | 1,829 62 | 1,452 61 | 5,658 33 | 11,997 81 | 39,318 5 |
| 289 52 | 59 40 | 172 86 | 4,762 50 | 3,451 77 | 11,323 93 | 1,247 89 | 16,023 59 | 22,265 05 | 124,577 0 |
| 30 55 | 163 32 | 196 59 | 3,880 66 | 4,148 44 | 8,386 10 | 469 51 | 13,004 05 | 19,523 46 | 108,438 3 |
| 1,480 49 | 225 58 | 368 40 | 10,193 44 | 3,635 95 | 5,062 05 | 2,535 93 | 11,233 93 | 23,654 09 | 80,317 9 |
| 4,225 23 | 1,500 06 | 1,373 89 | 31,539 16 | 18,466 15 | 37,323 90 | 7,284 76 | 63,074 81 | 103,811 31 | 477,663 0 |
| 17,795 86 | 7,211 35 | 5,910 89 | 102,159 66 | 59,754 31 | 129,923 05 | 49,868 25 | 239,545 61 | 439,796 69 | 15,54,544 7 |

APPENDIX

Khuina

CROP

| | | | | | C | ercals and | l pulses. | | | | | | |
|----|-------------------------------|-------------|-----------|-------------|-----------|------------|-----------|-------------------------|----------------------|---|--------|------------------|--------------------------------------|
| | Name of thans. | | | Rice. | , | Wheat. | Barley. | Cum- ba or bajra. | Ragi or marua. | Maize. | Jowar. | Gram (pulse). | Other food grains, includin |
| | | | Aus. | Aman. | Roro. | | | | | | | • | pulses. |
| 1 | 1(a) | | 2 | 3 | 4 | 5 | - 6 | 7 | | 9 | 9(a) | 10 | |
| | | | A. D. | A. D. | A. D. | A. D. | A. D. | A. D. | A . D. | A. D. | A. D. | A. D. | A. D |
| , | Kalaroa | | 25,722 91 | 16,844 94 | | 1 59 | 26 17 | | | 0 16 | | 4 09 | 5,112 6 |
| 2 | Satkhira | | 14,069 78 | 48,335 82 | 0.86 | 1 50 | 2 90 | | | | | | 998 5 |
| 3 | Tala | | 16,780 42 | 21,927 17 | | 09 | 20 62 | | , | 0 11 | | | 8,078 3 |
| 4 | Debhata |] | 1,453 37 | 16,877 47 | | . <u>.</u> | | | | | | | . 183 7 |
| 5 | Kaliganj | | 3,193 12 | 41,683 47 | | | | | 0 67 | | | | 1,405 5 |
| 6 | Shyamnagar | | 155 46 | 75,391 44 | | | | | | | | | 61 46 |
| 7 | Asasuni | | 1,442 55 | 31,128 00 | | | | •• | | | | | 329 60 |
| | Total of Satkhira s | ubdivi- | 62,817 61 | 2,55,188 31 | 0.86 | 3 18 | 49 69 | * * | 0 67 | 0 27 | | 4 09 | 16,169 8 |
| 8 | Phultala | | 823 22 | 10,077 41 | 0 09 | | 0 28 | | | | | 0 21 | 164 7! |
| 0 | Terakhada | | 1,450 95 | 31,346 59 | 13,365 83 | 1 34 | 1 66 | | | | | | 412 8 |
| 0 | Dumuria | | 3,539 52 | 66,789 09 | 12 :3 | | 0 66 | | | | | | 1,636 3 |
| 1 | Baitaghata | | 294 82 | 45,513 84 | 40 45 | 0 27 | | | | | | 0 32 | 405 6 |
| 2 | Paikgachha | | 1,567 11 | 1,10,062 82 | | | | | | | | 0 33 | 1,000 5 |
| 3 | Dacope | | 7 67 | 57,923 00 | | | | | | | | | 19 |
| 4 | Khulna | | 663 89 | 12,454 23 | 177 22 | | | | | | | 1 14 | 484 3 |
| 5 | Daulatpur | | 697 41 | 11,677 01 | 1 37 | | | •• | | | | | 204 1 |
| | Total of Sadar vision | subdi- | 9,044 59 | 3,45,843 99 | 13,597 79 | 1 61 | 2 60 | •• | | • | •• | 2 00 | 4,310 6 |
| | | | | • | | | | | | | | | |
| 6 | Mollahat | | 3,359 58 | 19,356 62 | 11,437 24 | ٠ | 2 10 | | | | | | 366 7 |
| 7 | Sarankhola | | 624 96 | 27,856 82 | | | | •• | | | | •• | 2 2 |
| 8 | Kachua | | 147 17 | 26,660 83 | 1,800 41 | | | | | | •• | | 1,014 5 |
| 9 | Fakirhat | | 1,519 07 | 17,886 59 | 1,516 89 | 0 08 | 0 09 | | | | •• | 1 90 | 1,156 9 |
| 0 | Rampal | | 311 18 | 96,363 05 | 0 44 | , | | | | | | | 729 0 |
| Į, | Morrellganj | | 1,221 18 | 81,050 21 | | | | | | | •• | •• | 128 3 |
| 2 | Bagerhat | •• | 1,269 75 | 35,135 43 | 12,136 37 | | | •• | | | | 3 54 | 1,181 6 |
| | Total of Bagerhat division | япb- • • | 8,452 89 | 3,04,309 55 | 26,891 35 | 0 08 | 2 19 | •• | | | | 5 44 | 4,579 3 |
| | Total of Khulna dis | rict | 80,315 09 | 9,05,341 85 | 40,490 00 | 4 87 | 54 48 | | 0 67 | 0 27 | | 11 53 | 25,059 8 |

HI.

Settlement. .

STATEMENT.

| | | Oil- | needs. | | | | | Suga | ar. | | Fibre | ·8. | |
|----------------|---------------------------------|--------------------------|----------------|----------------|----------|---------|------------------------|-----------------|----------|---------|-----------------|---------------|---------|
| l,in- seed. | Semamum (til or jipjili). | Rape and Mustard). | Ground nut. | Cocoa- nut. | Castor. | Others, | Condiments and spices. | Sugar- cane. | Others, | Cotton. | Hemp (Sunn). | • Jute, | Others. |
| 12 | 13 | 14 | 14(a) | 14(b) | 14(r) | 15 | 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | . 21 | 22 |
| A. D. | A. D. | А. Д. | A. D. | A. D. | A. D. | А. D. | A. D. | A. D. | A. D. | A. D. | A. D. | A. D. | А. Д. |
| 1 03 | 0 47 | 535-29 | | | | | 424 13 | 43 07 | 947 81 | | | 345 70 | |
| 0 95 | 14 35 | 640 65 | | | | 0 22 | 197 73 | 56 29 | 1,338 12 | | | 1.325 35 | |
| 5 68 | 7 62 | 2,464 77 | | | | | 3,747 86 | 22 76 | 91 44 | | ١ | 1,825 14 | |
| 0.592 | 13 36 | 353 24 | | | | 0.60 | 9 84 | 8 18 | 29 13 | | 0 17 | 7 78 | ٠ |
| Ø 41 | 17 78 | 1,885 96 | | | | 4 64 | 105 33 | 62 88 | 3 84 | | | 68 9 3 | ١ |
| | 0 48 | 334 93 | | | | | 2 75 | 3 54 | 4 39 | | | 148 42 | |
| 0 23 | 1 68 | 1,030 96 | | | | | 13 86 | 10 42 | 554 74 | | | 84 93 | |
| 8 89 | 55 74 | 7,245 80 | | | | 5 46 | 4,491 50 | 207 14 | 2,960 47 | | 0 17 | 3,806 25 | |
| | | | | | | | | 314.5 | | | | | |
| •• | , 1 85 | 167-66 | | | | | 17 86 | •• | 582 67 | | | 13 97 | •• |
| 1 31 | 2.576 27 | 391 61 | | | | | 750 06 | 14 61 | 10 53 | •• | ··· | 513 13 | •• |
| 1 36 | 14 03 | 1,329 71 | | | •• | 1 13 | 1,040 90 | 0 66 | 822 16 | •• | | 229 45 | •• |
| •• | 6 46 | 419 17 | | | • • • | | 9 74 | 4 84 | 7 96 | | | 16 70 | •• |
| •• | 0 16 | 1,506 75 | | | •• | •• | 173 40 | 5 58 | 216 98 | 0 10 | | 346 73 | •• |
| •• | | 12 74 | | •• | •• | | 1 18 | 0 09 | 5 20 | •• | | 4 10 | •• |
| •• | 413 05 | 339 78 | | | •• | 0 67 | 37 75 | 3 42 | 4 69 | •• | | 17 47 | •• |
| 0 55 | 296 68 | 198 01 | | | | 1 50 | 77 87 | 10 96 | 41 51 | •• | | 17 97 | |
| 3 22 | 3,308 47 | 4,365 43 | | | | 3 30 | 2,108 76 | 40 16 | 1,693 50 | 0 10 | | 1,159 52 | •• |
| 0 15 | 3,150 43 | 225 95 | | | | 0.54 | 828 07 | 57 41 | 54-86 | | | 1,391 81 | 0 35 |
| •• | | | | | | 0 36 | 1 88 | 0 36 | 106 16 | | | | •• |
| | 44 48 | 135 86 | | | | | 145 47 | 60 74 | 0 37 | | | 19 89 | |
| 0 77 | 3 22 | 807 83 | | | | | 96 54 | 20 54 | | | | 10 83 | |
| 0 06 | 0 52 | 1,721 36 | | | | 0 03 | 41 21 | 19 19 | 390 92 | | | 12 03 | ٠ |
| | 0 06 | 37 21 | | | | 1 23 | 61 43 | 12 24 | 436 52 | | | 10 19 | |
| 0 52 | 116 60 | 790 54 | | | | | 211 75 | 36 71 | 18 56 | 0 25 |] | 70 46 | •• |
| 1 50 | 3,315 31 | 3,718 75 | | | | 2 21 | 1,386 35 | 207 10 | 1,007 39 | 0 25 | | 1,515 21 | 0 35 |
| 13 61 | 6,679 52 | 15,329 98 | | | | 10 97 | 7,986 61 | 454 49 | 5,661 36 | 0 35 | 0 17 | 6,480 98 | 0 85 |

APPENDIX

Khuina

CROP

| | | | | Dye | es. | _ | Drug | s and narcotic | 8. | | |
|------------|---------------|---------------|-------|---------|---------|---------|----------|----------------|----------------------------|----------|-----------------|
| Se ial No. | Name | e of thana. | | Indigo. | Others. | Ten. * | Tobacco. | Cinchona. | Indian hemp (ganja). | Betel. | Others. |
| 1 | | l(a) | | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 | 30 |
| | | | | A. D. | А. D. | A. D. | A. D. | A. D. | A. D. | А. D. | A. D |
| 1 | Kalaroa | | | | | | 140 47 | | | 44 36 | 48 56 |
| 2 | Satkhira | | | | | | 127 91 | | | 31 34 | 4 64 |
| 3 | Tala | | | | | | 325 11 | | | 173 59 | 14 24 |
| 4 | Debhata | •• | | | | • | 36 30 | | | | 3 64 |
| 5 | Kaliganj | | | | | | 545 34 | | | 6 84 | 4 56 |
| 6 | Shyamnagar | | | | | | 311 90 | | | | |
| 7 | Asasuni | •• | | | 0 25 | •••• | 396 42 | | | 42 85 | 0 62 |
| | Total of Sath | thira subdivi | sion | | 0 25 | •••• | 1,883 45 | | | 208 98 | 76 26 |
| | | | | | | | | • | | | |
| 8 | Phuitala | | | | | | 18 08 | | · | 138 30 | 554 82 |
| 9 | Terakhada | | | | | •••• | 237 33. | •••• | | 2 71 | 0 50 |
| 10 | Dumuria | •• | •• | | | •••• | 609 32 | | | 8 56 | 904 1 |
| 11 | Baitaghata | •• | | | | • • • • | 314 01 | •••• | | | 29 7 |
| 12 | Paikgachha | | •• | | | | 1,374 22 | | | 71 37 | |
| 13 | Dacope | •• | •• | •••• | | • • • • | 333 32 | •••• | | | |
| 14 | Khulna | •• | | | | •••• | 47 41 | •••• | | 88 45 | 13 79 |
| 15 | Daulatpur | •• | •• | •••• | | •••• | 61 76 | | | 409 50 | 5 07 |
| | Total of Sada | ar subdivisio | n | | | | 2,905 45 | | | 718-89 | 1,508-16 |
| 16 | Mollahat | | | | | •••• | 438 95 | | | 0 23 | 2 9 |
| 17 | Sarankhola | •• | | | | | 151 86 | | | | 70 90 |
| 18 | Kachua | •• | | | | | 255 87 | | | 41 74 | 965 4 |
| 19 | Fakirhat | •• | •• | | | | 44 10 | | | 64 29 | |
| 20 | ' Rampal | •• | •• | | | •••• | 289 57 | | | | 1,752 0 |
| 21 | Morrellganj | •• | •• | | | | 568 04 | | | 8 74 | 652 4 |
| 22 | Bagerhat | •• | •• | | | •••• | 215 30 | | | 202 31 | 316 2 |
| | Total of Bag | erhat subdiv | ision | | | •••• | 1,963 69 | | | 317 31 | 3,76 0 0 |
| | Total of Kh | ulna district | | | 0 25 | | 6,842 59 | | | 1,335 18 | 5,344 44 |

III—concld.

Settlement-concld.

STATEMENT-concld.

| | Fruits | and vegetable | s (including rec | ot crops.) | Miscellane | cons crops. | | | |
|--|--------------|---------------|------------------|------------|------------|-------------|--------------|---------------------------------|--|
| Fodder crops (in- cluding joar and kalai.) | , Fruits, | Potato. | Onlon. | Others. | • Food. | Non-food. | Total. | Area sown more than once. | Net area sown. |
| 81 | 32 | 33 | 33(a) | 34 | 35 | 36 | 37 | 38 * | 39 |
| A. D. | А. D. | A. D | A. D. | A. D. | A. D. | A. D. | A. D. | А. Ъ. | A. D. |
| 0 18 | 569 12 | 76 54 | 66 57 | 1,361 68 | 128 97 | | 52,446 45 | 6,008-57 | 46,437 8 |
| 7 33 | 1,252 84 | 138 18 | 66 28 | 1,422 85 | 61 37 | 46 54 | 70,142 37 | 1,393 55 | 68,748 8 |
| | 1,143 93 | 65 78 | 90 70 | 899 59 | 3,370 62 | | 16,045 54 | 10,057 58 | 50,987-9 |
| | 508 83 | 7 46 | | 241 73 | 90 66 | 106-16 | 19,923 34 | 274 98 | 19,648 3 |
| 0 42 | 1,573 49 | 32 25 | 14 08 | 495 32 | 63 24 | 139 77 | 51,307 90 | 570 34 | 50,737 50 |
| | 304 40 | 2 64 | 4 05 | 235 11 | 10 13 | | 76,971 19 | 17 55 | 76,953 64 |
| | 325 20 | 8 92 | 3 06 | 455 70 | 63 28 | 21 28 | 38,914 55 | 76 23 | 38,838 32 |
| 7 93 | 5,677 90 | 331 87 | 244 74 | 5,111,98 | 3,788 27 | 313 75 | 3,70,751 34 | 18,398 80 | 3,52,352 54 |
| | | • | • | | •••• | | | | ************************************** |
| | 633 37 | 6 59 | 1 46 | 44 62 | | | 13,247 18 | 215 01 | 13,032 17 |
| 164 36 | 16 33 | 3 84 | | 231 08 | 302 99 | | 51,796 00 | 8,072 66 | 43,723 34 |
| | 468 57 | 11 32 | 58 56 | 991-62 | 0.08 | | 78,465 02 | 1,177 53 | 77,287 49 |
| 28 31 | 28 54 | 3 25 | 2 21 | 1,128 51 | | | 48,256 63 | 85 85 | 48,170 78 |
| | 1,612 23 | 18 74 | 31 17 | 144 59 | 1 80 | 0 36 | 1,18,134 95 | 911 34 | 1,17,223 61 |
| | 2 00 | 0 14 | 1 65 | 9 94 | 127 62 | | 58,430 55 | 2 31 | 58,428 24 |
| 187-80 | 94 24 | 4 45 | 1 92 | 54 96 | 1,992 06 | 0 24 | 17.082 97 | 966 21 | 16,116 76 |
| 30 62 | 18 46 | 2 00 | 8 46 | 101-78 | 1,476 28 | 0 67 | 15,339 63 | 478 19 | 14,861 44 |
| 411 09 | 2,873 74 | 50 33 | 100 43 | 2,707 10 | 3,900 83 | 1 27 | 4,00,752 93 | 11,909 10 | 3,88,843 83 |
| | | | - | | | ; | | | |
| 1 14 | 398-96 | 10 60 | 8 16 | 951-30 | 1 78 | 44 07 | 42,089 95 | 5,411 84 | 36,678 11 |
| 5 13 | 331 45 | 0 75 | | 3 76 | 177 70 | | 29,334 31 | 0 83 | 29,333 48 |
| 43 74 | 11 90 | 0 95 | | 1,760 47 | - 686 76 | 430 15 | 34,226 80 | 1,598 18 | 32,628 62 |
| 956 42 | 1,247 93 | 59-86 | 3 18 | 2,242 86 | | | 27,639 92 | 319 21 | 27,320 71 |
| 70 66 | 416 11 | 10 42 | 4 44 | 176 07 | 10 63 | 19 59 | 1,02,338 64 | 26 61 | 1,02,312 03 |
| 4 14 | 1,185 81 | 3 03 | 4 63 | 3,446 41 | 97 19 | 56 23 | 88,984 73 | 69 83 | 88,914 90 |
| 259 99 | 544 47 | 41 75 | 5 64 | 5,220 67 | 0 28 | | 57,778 73 | 1,114 89 | 56,663 84 |
| 1,341 22 | 4,136 13 | 127 36 | 26 05 | 13,801 54 | 974 34 | 550 04 | 3,82,393 08 | 8,541 39 | 3,73,851 69 |
| 1,760 24 | 12,677 77 | 509 56 | 371 22 | 21,620 62 | 8,663 44 | 865 06 | 11,53,897 35 | 38,849 29 | 11,15,048 00 |

APPENDIX

Khuine

AGRICULTURAL STOCK

| Serial No. | Name of thana. | Bulls. | Bulls reared or bred in Government Farm. | Bullocks. | Соия. | . (alves. | Male buffaloes. | Female buffaloes. | Buffaloe calves. | Sheep. |
|------------|-------------------------------------|--------|---|-----------|---------|-----------|-----------------|-------------------|------------------|--------|
| 1 | 1(a) | 2 | | 4 | 5 | 6 | | 8 | 9 | 10 |
| 1 | Kalaroa | 1,857 | 1 | 14.838 | 12,210 | 11,009 | 36 | | | 55 |
| 2 | Satkhira | 2,283 | 21 | 17,686 | 15,731 | 14,291 | 37 | | | 267 |
| 3 | Tala | 1,803 | | 17,202 | 16,311 | 14,448 | 42 | | 6 | 16 |
| 4 | Debhata | 715 | 3 | 5,350 | 4.794 | 4,619 | 72 | 203 | 174 | •3 |
| 5 | Kaliganj | 1,041 | 29 | 16,182 | 12,719 | 11,699 | 97 | 380 | 143 | 6 |
| 6 | Shyamnagar | 2,397 | 17 | 17,898 | 16,545 | 13,650 | 263 | 482 | 190 | 96 |
| 7 | Asasuni | 1,915 | 90 | 14,170 | 15,820 | 13,606 | 23 | 78 | 43 | 26 |
| | Total of Satkhira Sub- division. | 12,011 | 161 | 103,326 | 94,130 | 83,362 | 570 | 1,143 | 557 | 469 |
| | | | | | | | • | | | • |
| 8 | Phultala | 4 | | 1,392 | 1,182 | 932 | 7 | | [| 15 |
| Q | Daulatpur | 186 | 5 | 6,043 | 5,417 | 4,969 | 11 | 1 | | 4 |
| 10 | Terakhada | 452 | | 7,258 | 7,549 | 7,818 | 33 | 1 | | 48 |
| 11 | Dumuria | 3,185 | 10 | 17,787 | 19,353 | 15,861 | 191 | 273 | 97 | 8 |
| 12 | Raitaghata | 1,119 | 26 | 14,587 | 10,577 | 7,607 | 284 | 218 | 36 | 7 |
| 13 | Paikgachha | 3,345 | 1 | 23,568 | 25,391 | 21,940 | 131 | 114 | 49 | 33 |
| 14 | Dacope | 589 | 39 | 14,497 | 10,463 | 7,990 | 76 | 116 | 35 | 20 |
| 15 | Khulna | 386 | 8 | 5,913 | 6 308 | 5,507 | 52 | 21 | 5 | 41 |
| | Total of Sader Subdivi- sion. | 9,266 | 89 | 91,045 | 86,240 | 72,624 | 795 | 744 | 222 | 176 |
| 16 | Mollahat | 788 | 1 | 7.012 | 6,614 | 6,397 | 15 | | | 54 |
| 17 | Sarankhola | 222 | 4 | 5,634 | 5,843 | 4,096 | 83 | 189 | 56 | 1 |
| 18 | Kachua | 722 | 24 | 9,855 | 8,798 | 6,432 | 202 | 121 | 33 | 15 |
| 19 | Fakirhat | 465 | 18 | 8,551 | 7,695 | 6,492 | 46 | 75 | 12 | |
| 20 | Rampal | 1,475 | 28 | 23,565 | 19,117 | 15,034 | 1,963 | 3,154 | 529 | 26 |
| 21 | Morrellganj | 675 | 32 | 21,895 | 21,376 | 15,125 | 1,115 | 1,946 | 479 | 25 |
| 12 | Bagerhat | 1,219 | 38 | 15,260 | 14,370 | 12,467 | 483 | 664 | 85 | 18 |
| | Total of Bagerhat Sub- division. | 5,561 | 145 | 91,772 | 83,808 | 66,043 | 3,910 | 6,149 | 1,194 | 139 |
| | Total of Khulna District | 26,838 | 395 | 286,143 | 264,178 | 222,029 | 5,275 | 8,036 | 1,973 | 784 |

IV. Settlement.

STATEMENT.

| Goats. | Horses. | Mares. | Young stock colts and filles, | Mules. | Donkeys. | Elephants. | Camels. | Pigs. | Ploughs. | Carts, | Boats, |
|---------|---------|--------|-------------------------------|--------|----------|------------|---------|-------|----------|--------|--------|
| 11 | 12(a) | 12(b) | 12(c) | 13 | 14 | 15 | 16 | 17 | 18 | 19 | 20 |
| 18,296 | 67 | 22 | 2 | | | | | 255 | 7.448 | 4,168 | 119 |
| 12,810 | 65 | 17 | 2 | | | | | 828 | 9,402 | 2,960 | 584 |
| 12,856 | 32 | 12 | 2 | | • | :: | | 534 | 2,626 | 1,796 | 631 |
| 3,012 | 2 | 3 | | | 3 | | | 225 | 2,205 | 183 | 1,102 |
| 5,586 | 80 | 98 | 16 | | | | | 56 | 7,160 | 952 | 352 |
| 7,751 | 315 | 60 | 12 | 1 | | | | 39 | 10,273 | 686 | 1.214 |
| 6,465 | 79 | 46 | 9 | | | | | 19 | 7,660 | 172 | 1 705 |
| 66,776 | 640 | 258 | 43 | 1 | 3 | | • • | 1,956 | 46,774 | 10,917 | 5,767 |
| • | | • | | | | | | | | | |
| 391 | 4 | | { | | | | | | 612 | 46 | 52 |
| 561 | 6 | 5 | 1 | | | | 1 | 715 | 2,918 | 223 | 702 |
| 817 | 17 | 12 | | | | | | . 5 | 3,090 | 71 | 2,884 |
| 8,733 | 57 | 26 | | | | | | 506 | 12,135 | 548 | 3,257 |
| 1,788 | 9 | 4 | | | | | | [| 9,082 | 23 | 2,594 |
| 9,923 | 76 | 37 | 1 | | | | | 14 | 14,127 | 378 | 4,081 |
| 2,497 | 24 | 4 | | | | | | 23 | 8,765 | 13 | 2,459 |
| 1,096 | 21 | 16 | 1 | | | | | 2 | 2,142 | 180 | 874 |
| 25,806 | 214 | 104 | 3 | | | •• | | 1,265 | 52,871 | 1,477 | 16,903 |
| 1,671 | 10 | 6 | | | | | | 7 | 3,074 | 67 | 1,722 |
| 1,441 | | | | | | | | 4 | 3,252 | 2 | 625 |
| 1,013 | 11 | | | | | •• | | 5 | 5,141 | 59 | 3.168 |
| 1.044 | 5 | 7 | 1 | | | •• | | 6 | 3,676 | 75 | 863 |
| 6,533 | 45 | 12 | | | • 5 | | | 159 | 13,708 | 64 | 2.810 |
| 6,357 | 73 | я | 5 | | | | | 155 | 12,944 | 35 | 2,800 |
| 2,089 | 15 | 25 | | | | | | 12 | 6,968 | 167 | 2,725 |
| 20,148 | 159 | 59 | 6 | | 5 | •• | | 348 | 48,763 | 469 | 14,713 |
| 112,730 | 1,013 | 421 | 52 | 1 | 8 | •• | | 3,569 | 148,408 | 12,863 | 37,383 |

APPENDIX V (a).

[Form of Agreement to be used in Temporary Settlement of a Government Estate with a Talukdar.]

In whose favour executed-

SECRETARY OF STATE FOR INDIA.

Name, parentage and residence of the person executing the kabulyat.

- I take settlement of Government estate in district Khulna bearing Tauzi No. for years from 1st April to 31st March at an annual net revenue of Rs. subject to the following conditions.
- I. Subject to the terms of this settlement, I shall be at liberty to sell, alienate or transfer my right as tenure-holder in the said estate, but I shall remain liable for the revenue assessed thereon, until intimation of the transfer has been given to the Collector and the transfer has been recorded in the Collector's registers, vide Board's letter No. 257 L. R., dated the 15th January, 1926.
- II. I shall respect the rights recorded in the settlement papers as possessed by tenants of all grades, village headmen and others in the said estate.
- III. I shall not collect higher rents than are recorded in the settlement papers as demandable from the tenants of any class or grade, except in accordance with the law for the time being in force relating to the enhancement or increase of rents.
- IV. I shall not collect or attempt to collect any illegal cess or abwabs or exact forced labour, nor shall I collect the legal cess at a rate higher than that laid down in the law regarding cess, and I shall pay the aforesaid amount of Government revenue according to the instalments noted at the foot of this engagement. If I fail to pay the revenue as herein provided, the arrears shall be recoverable as land revenue under the law for the time being in force for the recovery of such arrears.
- V. At the end of the aforesaid period of settlement and of each successive settlement for which I or my heirs or successors in interest shall engage, I or my heirs or successors in interest shall, subject to the same conditions as in the proviso to section 3 of Regulation VII of 1822, have the right to a renewal of the settlement on the revenue that may be then fixed. If I or they do not take the settlement on the revenue that may be then fixed or if I refuse to hold on or to take summary settlement for any reason after the expiry of any settlement, my right and interest in the estate shall entirely cease, and the Collector shall be at liberty to make any fresh arrangements with others, or to hold the estate khas as may appear to him advisable without payment of malikana.
- VI. In the event of my or my heirs or successors in interest holding on after the expiration of the term of settlement specified in this kabulyat, I or they shall be held responsible on account of any year subsequent to

- the expiry of such terms of settlement for any enhanced revenue as may then be assessed and shall not require from Government any notice of its intention to revise the settlement.
- VII. On the occurrence of any agricultural calamity when Government has suspended or remitted the whole or any portion of the revenue for any period, I shall suspend or remit rents payable to me by tenants in the same proportion as the revenue is suspended or remitted and for the same period and, if I fail to do so, the Collector shall be at liberty to withdraw the suspension or remission granted.
- VIII. If any waste lands in the estate be brought under cultivation through my exertions, my right to receive the rents derivable therefrom without any increase of revenue shall continue during the currency of this esettlement.
- IX. I shall file any measurement, *collection or other papers that may be from time to time called for from me by the Collector in such Public Office as may be prescribed and shall observe the instructions laid down by the Board of Revenue or Government for the maintenance and correction of the Survey and Settlement Records without any objection so long as this lease continues in force.
- X. I shall not permit any encroachment to be made on lands reserved according to the Settlement Records for common village use, such as grazing grounds, cremation or burial grounds and fuel reserves.
- XI. I bind myself year by year to repair and keep up all boundary marks within the estate, and these marks shall be liable to inspection at any time by the Collector of the district without any notice whatsoever.
- XII. If the Collector, in consultation with the local officers of the Irrigation Department, declare that construction of new or repairs to any existing outer embankments, cross-bunds or dams, or both, or provision of sluices or other means of draining off surplus water are necessary for the protection of tenants, I, on receipt of a notice in writing to that effect from the Collector, shall, subject to a right of appeal within seven days from the receipt of the notice aforesaid to the Superior Revenue Authorities whose decision shall be accepted as final, make such construction or repairs according to the dimensions and specifications approved by the Collector, and shall maintain the works in proper repair to the satisfaction of the Collector who shall have power to inspect them himself or through any officer duly authorised by him.
- XIII. In the event of my violating the conditions of clauses III, IV and IX of this lease, the provisions of the law bearing on the matter may be resorted to, to enforce compliance with its conditions, or the Collector may cancel the lease and take steps to enter into direct possession of the estate. If on receipt of a due notice from the Collector I fail to construct or keep in proper repair any embankments, cross-bunds, dams or sluices or means of draining off surplus water declared by the Collector to be necessary under clause XII above the Collector shall have power to execute such works and to recover the cost thereof from me under the law for the time

being in force for the recovery of public demands.

XIV. Neither I nor my heirs or successors in interest shall be at liberty to raise objection to the remeasurement of the estates, and reassessment of the revenue of the same after this Settlement has expired.

XV. I admit that the State has reserved to itself all rights in minerals with full liberty to search for the same and that in case minerals are found, the State is entitled to them and to rights of way and other reasonable facilities for working and carrying away such minerals. The State has also the right to grant similar powers to the assignees of its minerals rights, provided that whenever in the exercise of any such right of the State the rights of any persons are infringed by the occupation or disturbance of the surface of any land, the State

or its assignees shall pay to such persons such amount of compensation for the damages so caused as may be determined by the officers of Government specially deputed for the purpose.

XVI. In the event of my death, my rights and liabilities as a tenure-holder in respect of this estate shall devolve upon my heir or heirs, vide Board's letter No. 2031 W. L., dated the 20th March, 1925.

XVII. This settlement has been made with me in anticipation of and subject to the sanction of the Competent Revenue Authorities whose orders, if any, shall be carried out by me with effect from the commencement of this lease. This settlement shall not be valid if it is set aside by such authorities.

SCHEDULE OF KISTS:-

APPENDIX V(b).

[Form of Kabulyat to be executed by the Malguzar of Temporarily Settled Government Estates.]

IN WHOSE FAVOUR EXECUTED-

SECRETARY OF STATE FOR INDIA.

Name, parentage and residence of the person executing the kabulyat.

I take the malguzari settlement of Government estate in district Khulna bearing Tauzi No. for years from 1st April to 31st March at an annual net rent of Rs. subject to the following conditions.

- 1. Without the sanction of the Collector previously obtained in writing I have not the power to transfer by gift, public or private sale, mortgage or in any other manner my rights or make another a co-sharer with me as a malguzar of the estate. I have not the power to sublet the tenure or any portion thereof to any Ijaradar, Chakdar or other person or to grant any leases whatsoever creating any tenure between myself and the raiyat cultivator. No sublease or other incumbrance created by me in contravention of the terms of this clause shall be in any way binding on Government.
- 2. I shall respect the rights recorded in the settlement papers as possessed by tenants of all grades, village headmen and others in the said estate.
- 3. I shall not collect higher rents than are recorded in the settlement papers as demandable from the tenants of any class or grade, but I may collect rents for waste lands cultivated through my own exertions.
- 4. I shall not collect or attempt to collect any illegal cess or abwads or exact forced labour, nor shall I collect the legal cess at a rate higher than that laid down in the laws regarding cess, and I shall pay the aforesaid amount of Government rent according to the instalments noted at the foot of this engagement. If I fail to pay the rent as herein provided, the arrears shall be recoverable as land revenue under the law for the time being in force for the recovery of such arrears.
- 5. At the end of the aforesaid period of settlement and of each successive settlement for which I or my heirs or successors in interest shall engage, I or my heirs or successors in interest shall, subject having observed all the conditions of the engagement which we entered into with Government in respect of this estate but not otherwise, have the right to a renewal of the settlement at such rent and on such conditions as may then be determined by Government, and the decision of the highest Revenue Authority shall be final in the matter. But in the event of my or my heirs or successors in interest once ceasing for any lawful reason, whether of our own will or against our will to hold the settlement, all rights or interests which I or they hold in the estate shall entirely cease

- and I or they shall have no claim either to malikana or any future settlement of the estate.
- 6. In the event of my or my heirs or successors in interest holding on after the expiration of the term of settlement specified in this kabulyat, I or they shall be held responsible on account of any year subsequent to the expiry of such term of settlement for any enhanced rent as may be then assessed and shall not require from Government any notice of its intention to revise the settlement.
- 7. On the occurrence of any agricultural calamity when Government has suspended or remitted the whole or any portion of my rent for any period, I shall suspend or remit rents payable to me by tenants in the same proportion as the rent is suspended or remitted and for the same period, and if I fail to do so the Collector shall be at liberty to withdraw the suspension or remission granted.
- 8. If any waste land in the estate be brought under cultivation through my exertions, my right to receive the rents derivable therefrom without any increase of reut due to Government shall continue during the currency of this settlement.
- 9. I shall file any measurement, collection or other papers that, may be from time to time called for from me by the Collector in such public office as may be prescribed and shall observe the instructions laid down by the Board of Revenue or Government for the maintenance and correction of the survey and settlement record without any objection so long as this lease continues in force.
- 10. I shall not permit any encroachment to be made on lands reserved according to the settlement record for common village use, such as grazing ground, cremation or burial ground or fuel reserves.
- 11. I bind myself year by year to repair and keep up all boundary marks within the estate and these marks shall be liable to inspection at any time by the Collector of the district without any notice whatsoever.
- 12. If the Collector, in consultation with local officers of the Irrigation Department, déclare that construction of new or repairs to any existing outer embankments, cross-bunds or dams or both or provision of sluices or other means of draining off surplus water are necessary for the protection of tenants, I, on receipt of a notice in writing to that effect from the Collector, shall, subject to a right of appeal within seven days from the receipt of the notice aforesaid to the Superior Revenue Authorities whose decision shall be accepted as final, make such construction or repairs according to the dimensions and specification approved by the Collector, and shall maintain the works in proper repair to the satisfaction of the Collector who shall have power to inspect them himself or through an officer duly authorised by him.
- 13. In the event of my violating any of the conditions of the lease or if I become insolvent or allow my lease to be sold in execution of a decree or fail to comply with the provisions of the law relating to grant of rent receipts, the provisions of the law bearing on the matter may be resorted to, to enforce compliance with its conditions, or the Collector may cancel the lease and take

steps to enter into direct possession of the estate.

If on receipt of due notice from the Collector, I fail to construct or keep in proper repair any embankment, cross-bunds or dams or sluices or means of draining off surplus water declared by the Collector to be necessary under clause 12 above, the Collector shall have power to execute such works and to recover the cost thereof from me under, the law for the time being in force for the recovery of public demands.

- 14. Neither I nor my heirs or successors in interest shall be at liberty to raise any objection to the remeasurement of the estate and the reassessment of the rent due to Government for the same after this settlement has expired.
- 15. I admit that the State has reserved to itself all rights in minerals with iuli liberty to search for the same and that in case minerals are found, that the State is entitled

to them and to rights of way and other reasonable facilities for working and carrying away such minerals. The State has also the right to grant similar powers to the assignees of its mineral rights, provided that whenever in the exercise of any such right of the State the rights of any persons are infringed by the occupation or disturbance of the surface of any land, the State or its assignees shall pay to such persons such amount of compensation for the damages so caused as may be determined by the officers of Government specially deputed for the purpose.

16. This settlement has been made with me in anticipation of and subject to the sanction of the Competent Revenue Authorities whose orders, if any shall be carried out by me with effect from the commencement of this lease. This settlement shall not be valid if it is set aside by such authorities.

SCHEDULE OF KISTS:--

APPENDIX V (c).

. Form of Agréement to be used in Temporary Settlement of a Government Estate with a Haoladar.]

IN WHOSE FAVOUR EXECUTED-

SECRETARY OF STATE FOR INDIA.

Name, parentage and residence of the person executing kabulyat.

- I take settlement of Government estate in district bearing Tauzi No. for years from 1st April to 31st March at an annual net revenue of Rs. subject to the following conditions.
- I. Subject to the terms of this settlement, I shall be at liberty to sell, alienate or transfer my entire right in the said estate, but I shall not be entitled to divide my right in the haola with any other person or to sublet it or lease any portion of it to any person except a bonû fide cultivator. In case I transfer my entire right, I shall remain liable for the revenue assessed thereon, unless the transfer is registered under the provisions of Act VII (B. G.) of 1876.
- II. I shall respect the rights recorded in the settlement papers as possessed by tenants of all grades, village headmen and others in the said estate.
- III. I shall not collect higher rents than are (recorded in the settlement papers as demandable from the tenants of any class or grade, except in accordance with the law for the time being in force relating to the enhancement or increase of rents.
- IV. I shall not collect or attempt to collect any illegal cess or abwabs or exact forced labour nor shall I collect the legal cess at a rate higher than that laid down in the law regarding cess, and I shall pay the aforesaid amount of Government revenue according to the instalments noted at the foot of this engagement. If I fail to pay the revenue as herein provided, the arrears shall be recoverable under the provisions of Act VII (B. C.) of 1868.
- V. At the end of the aforesaid period of settlement and after every successive settlement for which I or my heirs or successors in interest shall engage, I or my heirs or successors in interest shall, subject to the proviso to section 3 of Regulation VII of 1822, have a right to renewal of settlement for a period of 30 years at a rate of revenue which is not higher than that paid for similar land by tenure-holders under neighbouring landlords and grantees. If I do not take the settlement on the revenue that may then be fixed or if I refuse to hold on or to take summary settlement for any reason after the expiry of any settlement, my right and interest in the estate shall entirely cease, and the Collector shall be at liberty to make any fresh arrangements with others or to hold the estate khas as may appear to him advisable.
- VI. In the event of my or my heirs or successors in interest holding on after the expiration of the term of settlement specified

- in this kabulyat, I or they shall be held responsible on account of any year subsequent to the expiry of such terms of settlement for any enhanced revenue as may then be assessed upon the estate and shall not require from Government any notice of its intention to revise the settlement.
- VII. On the occurrence of any agricultural calamity when Government has suspended or remitted the whole or any portion of the revenue for any period, I shall suspend or remit rents payable to me by tenants in the same proportion as the revenue is suspended or remitted and for the same period, and, if I fail to do so, the Collector shall be at liberty to withdraw the suspension or remission granted.
- VIII. If any waste lands in the estate be brought under cultivation through my exertions, my right to receive the rents derivable therefrom without any increase of evenue shall continue during the currency of this settlement.
- IX. I shall file any measurement, collections or other papers that may be from time to time called for from me by the Collector in such Public office as may be prescribed and shall observe the instructions laid down by the Board of Revenue or Government for the maintenance and correction of the Survey and Settlement Records without any objection, so long as this lease continues in force.
- X. I shall not permit any encroachment to be made on lands reserved according to the Settlement Records for common village use, such as grazing grounds, cremation or burial grounds, and fuel reserves.
- XI. I bind myself year by year to repair and keep up all boundary marks within the estate, and these marks shall be liable to inspection by the Collector of the district without any notice whatsoever.
- XII. If the Collector, in consultation with the local officers of the Irrigation Department, declares that construction of new or repairs to any existing outer embankments, cross-bunds or dams, or both, or provision of sluice or other means of draining off surplus water are necessary for the protection of tenants, I, on receipt of a notice in writing to that effect from the Collector, shall, subject to a right of appeal to the Superior Revenue Authorities, make such construction or repairs according to the dimensions and specifications approved by the Collector, and shall maintain the works in proper repair to the satisfaction of the Collector who shall have power to inspect them himself or through an officer duly authorised by him.
- XIII. In the event of my violating the conditions of clauses III, IV and IX of this lease, the provisions of the law bearing on the matter may be resorted to, to enforce compliance with its conditions, or the Collector may cancel the lease and make any fresh arrangements with others or hold the estate khas as may appear to him advisable. If on receipt of a due notice from the Collector I fail to construct or keep in proper repair any embankments, cross-bunds, dams or sluices or means of draining off surplus water declared by the Collector to be necessary under clause XII above, the Collector

shall have power to execute such works and to recover the cost thereof from me under the law for the time being in force for the recovery of public demands.

XIV. Neither I nor my heirs or successors in interest shall be at liberty to raise any objection to the remeasurement of the estate and the reassessment of the revenue of the same after this settlement has expired.

XV. I admit that the State has reserved to itself all rights in minerals with full liberty to search for the same and in case minerals are found, the State is entitled to them and to rights of way and other reasonable facilities for working and carrying away such minerals. The State has also the right to grant similar powers to the assignces of its mineral rights, provided that whenever in the exercise of any such right of the State

the rights of any persons are infringed by the occupation or disturbance of the surface of the land, the State or its assignees shall pay to such persons such amount of compensation for the damages so caused as may be determined by the officers of Government specially deputed for the purpose.

XVI. In the event of my death, my rights and liabilities in respect of this estate shall devolve upon my heir or heirs.

XVII. This settlement has been made with me in anticipation of and subject to the sanction of the Competent Revenue Authorities whose orders, if any, shall be carried out by me from the commencement of this lease. This settlement shall not be valid if it is set aside by such authorities.

SCHEDULE OF KISTS:-

APPENDIX VI.

Statement of Officers who were employed in the district of Khulha.

| | · · · · · · · · · · · · · · · · · · · | T | | |
|-------------|--|------------------|------------|--|
| Serial | Name of officer. | Period of e | mployment. | Nature of duties. |
| No. | Name of Stricer. | From- | To | Nature of Garden. |
| 1 | 2 | 3 | 4 | |
| , | Civilians. | 1 | | • |
| 1 | | 1-9-1921 | | Settlement Officer. |
| 2 | | 2-11-1921 | 2-4-1922 | Cadastral Charge Officer. |
| 3 | T. C. Div. H. H. | 2-11-13/21 | 26-4-1924 | Cadastral and Attestation Charge |
| 3 | L. G. Pinnen, Esq., I.C.S. | 2-1-1020 | 20.4.1024 | Officer. |
| 4 | T. B. Jameson, Esq., i.c.s | 11-11-1923 | 11-12-1924 | Cadastral and Attestation Charge Officer. |
| | Extra Assistant Settlement Superintendent of Surveys. | | | |
| 5 | I. Newton, Esq | 6-11-1922 | 22-6-1923 | Technical Adviser. |
| | Deputy Collectors. | | | |
| 6 | Babu Sambhu Charan Chatter- jee. | 18-10-1921 | 19-7-1922 | Cadastral and Attestation Charge Officer. |
| | •• | 7-10-1922 | 26-2-1923 | Ditto. |
| | | 14-10-1924 | 25-11-1925 | Objection Officer. |
| 7 | Moulvi Lutfar Rahaman Taraf- dar. | 18-10-1921 | 4-7-1922 | Cadastral Circle Officer. |
| | | 2-11-1923 | 26-4-1924 | Attestation and Objection Officer. |
| 8 | Babu Promod Ranjan Das Gupta. | 26-10-1923 | | Cadastral Circle Officer, Attestation Charge Officer and Objection, Ja- mabandi and Diara Officer. |
| | Munsiffs. | | | |
| | • | (15-10-1921 | 16-4-1922 | [] |
| 9 | Babu Jitendra Prasad Sen | Ĭ | a. a 16. m | Cadastral and Attestation Circle Officer. |
| | | (23-10-1922 | 28-2-1923 |) |
| 10 | ,, Jogendra Nath Wadadar | 7-10-1922 | 31-5-1923 | Cadastral Circle Officer. |
| | Sub-Deputy Collectors. | | • | |
| 11 | Rai Sahib Anath Bandhu Chat- terjee. | 24-6-1921 | •••• | Headquarters Assistant Settlement Officer. |
| 12 | Babu Phani Lal Mukherjee | 17-10-1921 | 18-6-1922 | Cadastral Circle Officer. |
| 13 | " Akhil Chandra Ganguly | 23-10-1921 | 23-3-1923 | Technical Adviser. |
| 14 | ,, Suresh Chandra Chakra- borty. | 30-10-1921 | 13-5-1922 | Cadastral Circle Officer. |
| 15 | " Rajendra Nath Gupta | 18-10-1921 | 9-4-1922 | Ditto. |
| 16 | " Badanya Kumar Roy | 7-11-1921 | 2-7-1922 | Ditto. |
| 17 | ,, Promada Kumar Basu | 25-10-1921 | 18-8-1922 | Ditto. |
| 18 | " Lal Mohan Basu | 20-8-1923 | •••• | Technical Advisor. |
| 19 | Moulvi Ali Azam | 7-10-1922 | 26-2-1923 | Attestation Charge Office. |
| 20 | Babu Janaki Bhushan Sinha | 15-11-1922 | • • • • | Jamabandi and Diara Officer. |
| 21 | ,, Suresh Chandra Das Gupta. | 27-10-1923 | 25-7-1925 | Cadastral and Attestation Circle Officer. |
| ^ 22 | " Sasadhar Das Gupta | 4-11-1923 | 3-7-1924 | Ditto. |
| | | 15-10-1924 | 17-7-1925 | Objection Officer. |

APPENDIX VI-contd.

Statement of Officers who were employed in the district of Khulna-contd.

| Scrial | Name of officer. | *Period of em | ployment. | Nature of duties. |
|----------|--------------------------------------|---|------------------------|--|
| No. | Name of omeer. | From- | •To | Nature of duties. |
| <u>i</u> | 2 | 3 • | 44 | 5 |
| • | | | • | |
| 23 | Sub-Deputy Collectors coneld. | f 9-11-1923 | 2-6-1924 | • |
| | Babu Purna Chandra Sen | 15-10-1924 | 8-6-1925 | Cadastral and Attestation Circle Officer. |
| 24 | " Sudhanshu Ranjan De | 5-11-1923 | | Cadastral and Attestation Circle Officer, Objection and case-work Officer. |
| 25 • | Moulvi Khurshed Alam Chou- dhury. | 5-11-1 9 23 | 24-3-1924 | Cadastral Circle Officer. |
| 26 | Babu Harendra Nath Mukher- jee. | 22-10-1924 | | Attestation and Case-work Officer. |
| | Revenue Officer. | | | |
| 1 | Moulvi Golam Akbar | 18-8-1921 | 1-10-1924 | Cadastral Circle Officer and Attesta tion Circle Officer. |
| 2 | Babu Nibaran Ch. Datta | 12-12-1921 | 2-10-1925 | Ditto. |
| 3 | " Suresh Ch. Sen | 3-4-1922 | 1-10-1924 | Ditto. |
| · | " suresn Ch. sen | 8-1-1925 | 19-9-1925 |] |
| 4 | " Jyotish Chandra Chou- | 14-3-1922 | 5-8-1922 | Bujharat and Cadastral Circle Office |
| • | dhury. | 7-10-1922 | 16-8-1924 | and Attestation Circle Officer. |
| 5 | ,, Promatha Nath Chodu- dbury. | 5-4-1922 | 21-7-1922 | Cadastral Circle Officer, |
| 6 | ,, Chandra M. Karmaker | 11-3-1922 | | Bujharat, Attestation Circle Officer and Jamabandi Works. |
| 7 | ,, Jogendra Chandra Baner- jec. | 15-4-1922 | 21-7-1922 | Cadastral Circle Officer. |
| 8 | ,, Rajendra Nath Chatter- jee. | 7-10-1922 | 2-10-1925 | Attestation Circile Officer and Objection Officer. |
| 9 | ,, Anukul Ch. Ganguly | 7-10-1922 | 2-10-1925 | Attestation Circle Officer. |
| 10 | ,, Anukul Ch. Sarkar | 7-10-1922 | 13-10-1923 | Ditto. |
| 11 | Moulvi Mafizuddin Khan | 5-10-1922 | 2-10-1925 | Attestation Circle Officer and Objection Officer. |
| 12 | " Md. Siddique | 7-10-1922 | 19-9-1925 | Attestation Circle Officer and Jama- bandi Works. |
| 13 | ,, Golam Hydar | 7-12-1922 | 27-1-1923 | Cadastral Circle Officer. |
| 14 | ,, Abdul Gani Talukdar | 7-10-1922 | 1-10-1924 | Attestation Circle Officer. |
| 15 | Babu Upendra Kishore Mazum- dar. | 6-10-1922 | 2-10-1925 | Ditto. |
| 16 | Moulvi Taheruddin Ahmad | $ \begin{cases} 7-10-1922 \\ 14-10-1924 \end{cases} $ | 13-10-1923 1-9-1925 | } Ditto. |
| 17 | Babu Janardan Sen Gupta | 7-10-1922 | 13-10-1923 | Ditto. |
| 18 | " Prokash Ch. Das Gupta | 7-10-1922 | 1-10-1924 | Ditto. |
| 19 | " Sita Nath Das Gupta | 7-10-1922 | 2-10-1925 | Ditto. |
| 20 | Moulvi Ali Hossain | 7-10-1922 | 6-4-1924 | Ditto. |
| | | 2-11-1922 | 30-5-1923 | <u> </u> |
| 21 | Babu Jogendra Chandra Dutta | 7-12-1923 | | Bujharat, Cadastral Circle Officer and Press Superintendent. |
| 22 | Moulvi Mozaffar Ahmed | 7-10-1922 | 4-3-1923 | Cadastral Circle Officer. |

APPENDIX VI—contd.

Statement of officers who were employed in the district of Khulna—contd.

| 23 Mou 24 ,, 25 Bab 26 ,, 1 Mr. 2 Bab 3 Mou 4 ,, 5 ,, 6 Bat 7 ,, 8 ,, 9 ,, 10 ,, 11 ,, 12 Mou 13 ,, 14 Bat 15 ,, 16 Mou 17 Bat 18 ,, 19 ,, | Revenue Officer—concld. ulvi Kashem Ali Khan Abdul Wahed bu Sideswar Haldar Syama Kanta Ganguly Kanungos R. J. DeSilva | From——3 11-4-1923 21-4-1923 26-10-1923 | To | Nature of duties. 5 Cadastral and Attestation Circle Officer. Attestation Circle Officer. |
|---|--|---|--------------------------------------|---|
| 23 Mou 24 ,, 25 Bab 26 ,, 1 Mr. 2 Bab 3 Mou 4 ,, 5 ,, 6 Bab 7 ,, 8 ,, 10 ,, 11 ,, 12 Mou 13 ,, 14 Bab 15 ,, 16 Mou 17 Bab | Revenue Officer—concld. ulvi Kashem Ali Khan Abdul Wahed bu Sideswar Haldar Syama Kanta Ganguly Kanungos. R. J. DeSilva | 11-4-1923 21-4-1923 26-10-1923 | 2-10-1923 13-10-1924 2-10-1925 | Cadastral and Attestation Circle Officer. Attestation Circle Officer. |
| 23 Mou 24 ,, 25 Bab 26 ,, 1 Mr. 2 Bab 3 Mou 4 ,, 5 ,, 6 Bab 7 ,, 10 ,, 11 ,, 12 Mou 13 ,, 14 Bab 15 ,, 16 Mou 17 Bab 18 ,, 19 ,, | Revenue Officer—concld. ulvi Kashem Ali Khan Abdul Wahed bu Sideswar Haldar Syama Kanta Ganguly Kanungos. R. J. DeSilva | 21-4-1923 26-10-1923 | 13-10-1924 2-10-1925 | Cadastral and Attestation Circle Officer. Attestation Circle Officer. |
| 24 | Abdul Wahed | 21-4-1923 26-10-1923 | 13-10-1924 2-10-1925 | Officer. Attestation Circle Officer. |
| 25 Bab 26 ,, 1 Mr. 2 Bab 3 Mou 4 ,, 5 ,, 6 Bab 7 ,, 10 ,, 11 ,, 12 Mou 13 ,, 14 Bab 15 ,, 16 Mou 17 Bab 18 ,, 19 ,, | bu Sideswar Haldar | 26-10-1923 | 2-10-1925 | Attestation Circle Officer. |
| 26 ,, 1 Mr. 2 Bab 3 Mou 4 ,, 5 ,, 6 Bab 7 ,, 8 ,, 9 ,, 10 ,, 11 ,, 12 Mou 13 ,, 14 Bab 15 ,, 16 Mou 17 Bab 18 ,, 19 ,, | Syama Kanta Ganguly Kanungos. R. J. DeSilva | | | |
| 1 Mr. 2 Bab 3 Mou 4 ,, 5 ,, 6 Bab 7 ,, 10 ,, 11 ,, 12 Mou 13 ,, 14 Bab 15 ,, 16 Mou 17 Bab 18 ,, 19 ,, | Kanungos. R. J. DeSilva | 26-10-1923 • | 1 10 1094 | Attestation Circle Officer. |
| 2 Bab 3 Mou 4 ,, 5 ,, 6 Bab 7 ,, 10 ,, 11 ,, 12 Mou 13 ,, 14 Bab 15 ,, 16 Mou 17 Bab 18 ,, 19 ,, | . R. J. DeSilva | • | 1-10-18-4 | Ditto. |
| 2 Bab 3 Mou 4 ,, 5 ,, 6 Bab 7 ,, 10 ,, 11 ,, 12 Mou 13 ,, 14 Bab 15 ,, 16 Mou 17 Bab 18 ,, 19 ,, | . R. J. DeSilva | ı | | |
| 2 Bab 3 Mou 4 ,, 5 ,, 6 Bab 7 ,, 10 ,, 11 ,, 12 Mou 13 ,, 14 Bab 15 ,, 16 Mou 17 Bab 18 ,, 19 ,, | | 28-9-1921 | 1-10-1924 | Bujharat. |
| 3 Mou 4 ,, 5 ,, 6 Bab 7 ,, 8 ,, 9 ,, 10 ,, 11 ,, 12 Mou 13 ,, 14 Bab 15 ,, 16 Mou 17 Bab 18 ,, 19 ,, | bu Jadu Nath Ganguly | 18-10-1921 | 17-4-1924 | Do. Bujharat Kanungo and Cadastral |
| 4 ,, 5 ,, 6 Bab 7 ,, 10 ,, 11 ,, 12 Mot 13 ,, 14 Bab 15 ,, 16 Mot 17 Bab 18 ,, 19 ,, | and outside states of the stat | 10 10 1021 | | Circle Officer. |
| 5 | ulvi Abdur Razzak | 18-10-1921 | 29-11-1922 | Bujharat. |
| 6 Bat 7 ,, 8 ,, 9 ,, 10 ,, 11 ,, 12 Mou 13 ,, 14 Bat 15 ,, 16 Mou 17 Bat 18 ,, 19 ,, | Asimuddin Ahmed | 18-10-1921 | 19-4-1924 | Bujharat Kanungo and Cadastral Circle Officer, |
| 6 Bat 7 ,, 8 ,, 9 ,, 10 ,, 11 ,, 12 Mou 13 ,, 14 Bat 15 ,, 16 Mou 17 Bat 18 ,, 19 ,, | Golam Assam Choudhuri | 18-10-1921 | 24-7-1922 | }Bujharat. |
| 7 | | 7-10-1923 | 1-10-1924 | ع ا |
| 8 ,, 9 ,, 10 ,, 11 ,, 12 Mor. 13 ,, 14 Bath 15 ,, 16 Mor. 17 Bath 18 ,, 19 ,, | bu Nagendra Kishore Biswas | 18-10-1921 | 1-10-1924 | Do. |
| 8 ,, 9 ,, 10 ,, 11 ,, 12 Mon 13 ,, 14 Bab 15 ,, 16 Mon 17 Bab 18 ,, 19 ,, | Subodh Ch. Ghosh | 18-10-1921 | 26-7-1922 | Do. |
| 9 ,, 10 ,, 11 ,, 12 Mou 13 ,, 14 Bab 15 ,, 16 Mou 17 Bab 18 ,, 19 ,, | | 7-10-1922 | 28-12-1924 | J |
| 10 ,, 11 ,, 12 Mon 13 ,, 14 Bah 15 ,, 16 Mon 17 Bah 18 ,, 19 ,, | Upendra Nath Pal | 18-10-1921 | 17-7-1922 | Do. |
| 11 ,, 12 Mou 13 ,, 14 Bab 15 ,, 16 Mou 17 Bab 18 ,, 19 ,, | Jogendra Kumar Sen | 18-10-1921 | 1-10-1924 | Do. |
| 12 Mou 13 ,, 14 Bah 15 ,, 16 Mou 17 Bah 18 ,, 19 ,, | Santosh Kumar Bhatta- cherjce. | 18-10-1921 | 31-10-1924 | Do. |
| 13 ,, 14 Bab 15 ,, 16 Mou | Jitendra Nath Roy | 18-10-1921 | 1-10-1924 | Do. |
| 14 Bab 15 ,, 16 Mou 17 Bab 18 ,, 19 ,, | oulvi A. F. Basirul Huq, Chou- dhury. | 20-10-1921 | 1-10-1924 | Do. |
| 15 ,, 16 Mou 17 Bab 18 ,, 19 ,, | Kazi Abdul Gani | 18-10-1921 | 28-8-1924 | Do, |
| 16 Mou | bu Satish Chandra Misra | 22-10-1921 | 5-9-1924 | Do. |
| 17 Bab 18 ,, 19 ,, | Jagadish Chandra Bhat- tacharjee. | 18-10-1921 | 1-10-1924 | Do. |
| 17 Bab 18 ,, 19 ,, | | (18-10-1921 | 20-4-1923 | 1 |
| 18 ,, | oulvi Bazlal Haq Choudhury | 1-3-1924 | 1-10-1924 | Do. |
| 19 ,, | bu Jogendra Nath Sen | 18-10-1921 | 1-10-1924 | Do. |
| | Hrishi Kesh Mazumdar | 18-10-1921 | 1-10-1924 | Do. |
| 90 | Anukul Chandra Das | 18-10-1921 | 1-10-1924 | Do. |
| 20 ,, | Dhirendra Chandra Sen | 18-10-1921 | 1-10-1924 | Do. |
| 21 Mon | oulvi Abdul Gani | 18-10-1921 | 1-10-1924 | Do. |
| 22 Bal | bu Indu Bhushan Chatterjee | 18-10-1921 | 17-8-1924 | Do. |
| 23 Mot | oulvi Abdul Gaffar | 16-10-1921 | 1-10-1924 | Bujharat. |
| 24 Bal | bu Upendra N. Ganguly | 18-10-1921 | 19-9-1925 | Bujharat and Sadar Kanungo. |
| 25 ,, | | 18-10-1921 | 1-10-1924 | Bujharat. |
| .26 | 0 1011 | 18-10-1921 | 5-12-1921 | Do. |
| 27 ., | Suesh Ch Das Gupta | | | i e |

APPENDIX VI—contd.

Statement of officers who were employed in the district of Khuina—contd.

| G | | Period of en | aployment. | | | |
|---------------|---|--------------|----------------|-------------------|--|--|
| Serial No. | Name of officer. | From— | То | Nature of duties. | | |
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | | |
| | | · | | | | |
| | Kanungoes—contd. | 610 10 1001 | 05.1.1000 | | | |
| 28 | Babu Priya Mohan Ghatak | 18-10-1921 | 27-1-1923 | Bujharat. | | |
| | | 3-4-1923 | 1-10-1924 | ال | | |
| 29 | ,, Hem Chandra Pathak | 18-10-1921 | 2-9-1924 | Do. | | |
| 3 0 | " Santosh Kumar Chakrabor- ty. | 18-10-1921 | 1-10-1924 | Do, | | |
| 31 | ,, Umesh Chandra Chakrabor- ty. | 18-10-1921 | 31-10-1924 | Do. | | |
| 32 | " Bhim Chandar Barman | 18-10-1921 | 4-12-1923 | Do. | | |
| 33 | ,, Hira Lal Bancrice | 18-10-1921 | 1-10-1924 | Do. | | |
| 34 | " Surendra N. Banerjee | 18-10-1921 | 1-10-1924 | Do. | | |
| 35 | "Surendra Kumar Sur | 18-10-1921 | 1-10-1924 | Do. | | |
| 36 | " Joytish Chandra Das | 18-10-1921 | 30-8-1924 | Do. | | |
| 37 | Moulyi Md. Abdul Mazid Choudhury. | 18-10-1921 | 28-3-1922 | Do. | | |
| 38 | Babu Sudhir Chandra Bardhan | 18-10-1921 | 1-10-1924 | Do. | | |
| 39 | ,, Dinesh Chandra Sen-Gupta | 18-10-1921 | 1-10-1924 | Do. | | |
| 40 | Moulvi Kazi A. N. Wahed Hossain. | 18-10-1921 | 16-8-1924 | Do. | | |
| 41 | ., Shamasuddin Ahmed | 18-10-1921 | 1-10-1924 | Do, | | |
| 42 | Babu Hari Das Das | 18-10-1921 | 16-10-1924 | Do. | | |
| 43 | Moulvi Ramizuddin Ahmed | 18-10-1921 | 4-7-1924 | * Do. | | |
| 44 | Babu Moni Mohan Mukherjee | 18-10-1921 | 2-9-1924 | Do. | | |
| 45 | Moulvi Abul Mansur Md. Ali Akbar. | 18-10-1921 | 17-9-1923 | Do. | | |
| 46 | Babu Brojendra K. Sarkar | 19-10-1921 | 1-3-1922 | Do, | | |
| 47 | Moulvi Khandaker Fazlal H a qu | 18-10-1921 | 13-10-1923 | Do. | | |
| 48 | " Asraf Ali | 18-10-1921 | 1-10-1924 | Do. | | |
| | h 1 7 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 | f 18-10-1921 | 1-12-1921 |) n. | | |
| 49 | Babu Jogendra Nath Chosh | 14-2-1922 | 11-5-1922 | } Do. | | |
| 50 | Moulvi Shamsul Hossain | 18-10-1921 | 14-10-1923 | Do. | | |
| 51 | " Abul Hossain | 18-10-1921 | 14-10-1923 | Do. | | |
| 52 | " Md. Asanulla | 18-10-1921 | 14-10-1923 | Do. | | |
| 53 | Babu Hara Nath Majumdar | 18-10-1921 | 7-2-1923 | Do. | | |
| 54 | ,. Rebati Mohan Guha Tha- kurta. | 18-10-1921 | 1-10-1924 | Do. | | |
| 55 | " Kulada Kinkar Ghosh | 18-10-1921 | 1-10-1924 | Do. | | |
| 56 | ,, Nalini Kanta Mukherjee | 18-1Q-1921 | 1-10-1924 | Do. | | |
| 57 | " Upendra Chandra Chou- dhury. | 4-11-1921 | 1-10-1924 • | D_0 , | | |
| 58 | " Rajani K. Choudhury | 7-11-1921 | 1-10-1924 | Do. | | |
| 59 | " Ambika Charan Sen | 5-11-1921 | 28-2-1922 | Do.• | | |
| 60 | Moulvi Sayed Muzzam Hossain | 20-10-1921 | 10-12-1922 | Do. | | |

APPENDIX VI-concld.

Statement of officers who were employed in the district of Khuina—concld.

| Serial | N. C. | Period of e | mployment. | Nature of duties. |
|--------|--|-------------|------------|--|
| No. | Name of officer. | From- | То- | Nature of duties. |
| 1 | . 2 | 3 | 4 | 5 . |
| | Kanungoes—concld. | | | |
| 61 | Babu Hemendra Nath Bose | 25-1-1922 | 8-6-1922 | Buibarat. |
| | The state of the s | (15.4-1922 | 4.7.1922 | 7 |
| 62 | " Jatindra M. Chakraborty | 21-11-1922 | 17-4-1924 | |
| | • | (11-4-1922 | 25-7-1922 | 5 |
| 63 | " Provash Ch. Chatterjee | 10-10-1922 | 27-7-1924 | } Do. |
| 64 | " Nagendra K. Banerjee | 10-10-1922 | 23-7-1924 | Do. |
| 65 | Moulvi Badar Uddin Ahmed | 7-10-1922 | 1-10-1924 | Do. |
| 66 | Babu Girish Chandra Sen | 25-1-1922 | 1-10-1924 | Do. |
| 67 | ,, Biseswar Majumdar | 23-4-1924 | | Record Room Enquiry and Recovery |
| 68 | " Parameswar Sanyal | 14-10-1924 | | Officer. Recovery Officer. |
| | | 22-1-1922 | 1-10-1924 | |
| 69 | ,, Radha Ch. Mandal | 1-5-1925 | 2-10-1925 | Bujharat. |
| 70 | ., Sukumar Mukherjee | 7-4-1922 | 31-7-1924 | Do. |
| | W 1.4m | 7-4-1922 | 6-4-1923 | h |
| 71 | Moulvi Tayebuddin Ahmed | 14-10-1924 | 17-12-1924 | $\left.\right $ $\left $ $\left $ $\left $ $\left $ $\left $ $\left $ $\left $ \left |
| 72 | Babu Satyendra N. Bose | 8-4-1922 | 17-10-1922 | Do. |
| 73 | ., Kalipada Sen | 9-4-1922 | 23-9-1922 | Do. |
| 74 | ,, Kamala Kanta Betahayal | 9-4-1922 | 23-10-1922 | Do. |
| 75 | Moulvi Nabi Reza Bhushan | 12-5-1922 | 7-11-1922 | Do. |
| 76 | Babu Benoy Bhushan Sen | 7-10-1922 | 1-10-1924 | Do. |
| 77 | Moulvi Abdul Aziz Akhan | 7-10-1922 | 1-10-1924 |) Do. |
| " | Moulvi Abdul Aziz Akhan | 1-3-1925 | 2-10-1925 | J 180. |
| 78 | Babu Satish Chandra Datta | 7-10-1922 | 13-10-1923 | Do. |
| 79 | " Anukul Ch. Das Gupta | 7-10-1922 | 1-10-1924 | Do. |
| 80 | " Souri Bilash Mukherjec | 7-10-1922 | 1-10-1924 | Do. |
| 81 | " Jatindra Kumar Nag | 7-10-1922 | 1-10-1924 | } Do. |
| | ,, | 15-7-1925 | 2-10-1925 | J - 2 |
| 82 | Moulvi Zahidal Islam | 7-10-1922 | 1-10-1924 | Do. |
| 83 | Babu Bishnupada Chatterjee | 7-10-1924 | 1-10-1924 | Do. |
| 84 | " Jatindra M. Majumdar | 7-10-1922 | 1-10-1924 | .Do. |
| 85 | " Probhat Chandra Bose | 2-6-1923 | 31-7-1924 | Do. |
| 86 | " Sharaju Lal Bose | 10-4-1924 | 1-10-1924 | Do. |
| 87 | " Dhirendra Nath Bhatta- | 14-4-1924 | 1-10-1924 | } Do. |
| | cherjee. | 15-5-1925 | 2-10-1925 | J |
| 88 | Moulvi Moizuddin Ahmed | 16-1-1924 | 1-10-1924 | Do. |
| . 89 | Babu Birinchi Lal Roy | 8-4-1924 | 1-10-1924 | Do. |
| 90 | Moulvi Md. Ismail | 14-5-1924 | 16-8-1924 | Do. |
| 91 | Babu Nani Gopal Mukherjee | 15-5-1925 | , 9-8-1925 | Do. |

APPENDIX VII (a).

List of Important Notifications.

| · | Number and date of Notification. | | | | | | | | | |
|---|--|---|---|--|--|--|--|--|--|--|
| Local area. | Under section 3, Survey Act. | Under section 101 (1), B.T. Act. | Under Act IX of 1847. | Under section 101(2) (d), B.T. Act. | | | | | | |
| Khulna | No. 7543 L.R., dated the 3rd September 1920. | No. 7167 L.R., dated the 13th August 1921, read with No. 7877 L.R., dated the 4th Septem- ber 1921. | | | | | | | | |
| Khulna, including that portion of the district which has been transferred to the district of Faridpur by Notification No. 2275 L.R., dated the 18th September 1913. | | | No. 6022 L.R., dated the 3rd August 1923. | | | | | | | |
| Tauzi No. 978 of Khulna Collectorate falling in the district of Bakarganj. | • | | | No. 8991 L.R., dated the 12th August 1925. | | | | | | |

APPENDIX VII (b).

| | Number and date of Notification. | | | | | | | | | |
|--|--|--|---|--|--|--|--|--|--|--|
| Name of officer. | Appointment as Settlement Officers. | Powers of Revenue Officer and Settlement Officer. | Powers of a Collector under Regulation VII of 1822, IX of 1825, 111 of 1828 and IX of 1833. | Special powers under the Bengal Tenancy Act. | | | | | | |
| مقدر به القداف والمساورة والمساورة والمساورة والمساورة والمساورة والمساورة والمساورة والمساورة والمساورة والمس | | Khulna | district. | | | | | | | |
| L. R. Fawcus, Esq., 1.c.s. | No. 7859 L.R., dated the 5th September 1921. | No. 7860 L.R., dated the 5th September 1921. | dated the 1st | Nos. 10496 L.R., 10497 L.R., 10498 L.R., and 10499 L.R., dated the 1st December 1922, | | | | | | |
| | | Jessore | district. | | | | | | | |
| | No. 901 L.R., dated the 1st January 1923. | No. 902 L.R., dated the 26th January 1923. | No. 907 L.R., dated the 26th January 1923. | Nos. 903 L.R., 904 L.R., 905 L.R., and 906 L.R., dated the 26th . January 1923. | | | | | | |
| | | Faridpur | district. | | | | | | | |
| | | No. 5300 L.R., dated the 13th May 1925. | No.` 5301 L.R., dated the 13th May 1925. | | | | | | | |
| | dated the 13th dated the | | | | | | | | | |
| | | No. 5030 L.R., dated the 4th May 1925. | No. 5031 L.R., dated the 4th May 1925. | , | | | | | | |

APPENDIX VII (0).

Adoption of Villages as units of survey and record for the purpose of clause 10 (b) of section 3 of the Bengal Tenancy Act.

Name of police-station.

Number and date of Notification.

Satkhira, Tala, Asasuni, Kaliganj, Debhata, Kalaroa, Shyamnagar, Daulatpur and Terakhada

No. 3253L.R., dated the 16th March 1925.

Palerhat, Phultola, Baitaghata, Dumuria, Dacope and Paikgachha

No. 7031L.R., dated the 15th August 1924.

No. 4426L.R., dated the 8th April 1925.

Mollahat in regard to villages
(J. L. Nos. 53 to 61) surveyed
in Mokimpur Petty Settlement ...

No. 3674 L.R., dated the 23rd March 1925.

APPENDIX VIII.

Reprint of Chapters XIX, XX, XXI of Pargiter's History of the Sunderbans.

CHAPTER XIX.

REVISED SUNDERBANS GRANT RULES OF 24TH SEPTEMBER 1853.

248. State of Sunderbans grants, 1852.—
The Board had had the state of the Sunderbans repeatedly under consideration. In connection with an application for extension of the free period in lots 56 and 72, they called, in May 1852, for a statement of all grants in the Jessore district, and in June following for a statement of all grants showing a total of 264 allotments, of which 173 had been granted out, while the rest were undisposed of. The grants were classified thus*:—

| 24-Parganas Jessore Bakarganas Jessore Bakarganas | | Total. | | |
|---|-----|--------|----|-------|
| Free period expired, assessed and settled. | 6 | 4 | 3 | 13 |
| Free period under settlement | 5 | 1 | | 6 |
| Free period extended | 37 | | 3 | 40 |
| Original grants unmodified | 45 | 4 | 19 | 68 |
| | 36 | 3 | | 39 |
| Original pattas not regranted | 5 | 2 | | 7 |
| Total once granted out | 134 | 14 | 25 | 173 |
| Ungranted allotments | 58 | 38 | | . 91 |
| Total allotments | 187 | 52 | 25 | e 264 |

The Presidency Commissioner and Board took these facts into consideration, but meanwhile, when reporting to Government in December 1852 on the annual returns of the Sunderbans, the Board observed that the system of grants had certainly not answered. Clearances had been less than was anticipated; many settlements had broken down; the rent-free term had been extended in nearly all cases where it had expired, and the rents derived from the grants had been next to nothing. Extensive inquiries had been made and were in progress, and the Board hoped shortly to lay before the Government a revised scheme for Sunderbans lands.

249. Modifications in grant rules proposed by the Presidency Commissioner, 1852.—The Presidency Commissioner Mr. Bruce, in forwarding the foregoing statement to the Board, reviewed the system in force. He disapproved of the long free period as raising illusory expectations in the minds of grantees. The assessment in a great part of the Sunderbans was higher than in the adjacent permanentlysettled estates-a circumstance that hampered reclamation in the first instance and also led to the relapse of cultivation and the ruin of the grantee. Two remedies were openeither a general extension of the free period or a reduction of the Government demand. The former was unsatisfactory, as no mere extension would reduce the final rate of assessment to a proper standard, while in the interim Government would receive nothing. He, therefore, preferred the latter remedy. The reduction of the rate from 8 to 4 annas was absolutely necessary in the Jessore portion of the Sunderbans, while a reduction to 5 annas would, he thought, be sufficient in the 24-Parganas where access was readier and the markets nearer, and to 5½ annas in Bakarganj, where, though the markets were distant, reclamation was easier, the water sweeter, and the crops more plentiful. These modifications he recommended as desirable alike in the interests of the Government and the grantees.

250. Modifications proposed by grantees.-The Board agreed generally with Mr. Bruce's views, but before submitting the matter to Government gave the grantees an opportunity of expressing their sentiments. Some 40 grantees laid a petition before the Board, in which they declared that unless more liberal terms were accorded, Government could never look forward to the general clearance of the Sunderbans in the face of the expense, labour and risk incurred by the grantees and the manifest failure of the rules then extant. They asked for the following terms—a free period of 20 years, then an assessment of one anna on half the area for ten years, and thereafter the assessment of the whole area (deducting the irreclaimable portion) at 1 anna for ten years, at 1½ anna for the next ten years, and afterwards at 2 annas, the maximum rate, in perpetuity: the grant to be liable to forfeiture if one-eighth of the area were not cleared in five years.

^{*}Sunderbans Commissioner to Presidency Commissioner, No. 229, dated the 26th June 1852. This table is complete for country as far as the river Pasur (excluding the sea-face), but not beyond that, where no survey had been carried out. Hence no ungranted allotments are assigned to the Bakarganj district, though it contained abundant forest lands undisposed of. Presidency Commissioner to Sunderbans Commissioner, No. 228, dated the 9th December 1852.

251. Review of Sunderbans grant, scheme by the Board, 1852.—The Board—Meskrs. Gordon, Ricketts and E. Currie-submitted report No. 461 to Government on their 14th Decembe. 1852, reviewing the history of the grants from the commencement, and considering all the views that had been propounded. They began with the proposal put forward by the Board in 1816 to fix 8 annas as the Sunderbans rate per the bigha of 110 cubits or 55 yards, which proposal, however, had led to nothing. Next followed terms of 1819 which were approved by the Government on 19th March 1819, but were not promulgated till 24th March 1825. Those the Board summarised, remarking with regard to the assessment that the ultimate net rate was 8 annas "upon what may be presumed to have been the bigha of 100 (110) cubits measurement". Those rules were in force till 1829 when, on the Board's report, the Government The Board amended them on 8th September. set out the amended rules as advertised on 23rd March 1830. The ultimate rate was 8 annas per bigha, which, though not defined in the rules, was stated in the remeasurement clause of the kabulyat to be of 80 cubits or 40 yards. Hence, the Board remarked "that if the bigha formerly in use was, as has been supposed, one of 110 cubits, the change was in effect tantamount to nearly doubling the rate of assessment proposed by the Board in 1816".* These terms applied especially to grants of waste lands in the Sunderbans, but there were besides lands reclaimed from the Sunderbans, which had been resumed and assessed at what appeared to have been taken as the rates prevailing in the adjoining parganas, which were generally very low. It was not till 1844 that the Commissioner, Mr. Harvey, represented the anomaly of such lands being assessed at less than the Sunderbans grant rate, and thenceforward the Sunderbans rate of 8 annas per the 40-yard bigha was the rate fixed either immediately or ultimately upon all resumed Sunderbans lands open to permanent settlement. Nearly 23 years had elapsed since the rules came into force, but the scheme had proved a total failure. Clearances had been less than was anticipated and the revenue next to nothing: applications for a prolonged rent-free period had been numerous, grants had been repeatedly resumed for failure to cultivate, and the disinclination of parties to take up fresh grants was as great as ever. These facts and certain circumstances re-ported by the Collector of Jessore had induced the Board to reconsider the whole subject. The results in the resumed mahals had been markedly different. The Board summed up those results, showing that the assessment in those mahals had fairly stood; but they agreed with Mr. Bruce in holding that the resumed mahals were no criterion by which to

judge of the grants proper, since the former were generally small, all more or less cultivated prior to resumption and mostly adjacent to permanently-settled estates by the holders of which they had been reclaimed-in fact they bore little analogy to ordinary Sunderbans lands. The Board discussed his views and expressed their general agreement with them. Turning to the proposals put forward by the grantees, the Board pronounced the rates too low, there being nothing in the circumstances to warrant so great a reduction, though many of the grantees' arguments, the failure of the existing system, and the Commissioner's remarks regarding the rates current, all proved that a considerable reduction was necessary. The Government letter, dated the 6th August 1816, and the fact that many resumed lands had been measured in 110-cubit bighas, both proved in their opinion that the area of grants had been computed in 110-cubit bighas before 1830. The size of the bigha in grants subsequent to 1830 was little more than half the measure current between 1816 and 1830. Under those circumstances, it was to the grantee's interest to retain grants during the free period only, and not afterwards: though it was true that, after the demand for security had been withdrawn, there had been a good deal of mere speculation. Cases of bona fide reclamation were the exception, and success, where it had been secured, had been entirely due to the peculiar advantages of particular grants.

Modifications proposed by the Board, 1853.—The Board pronounced it hopeless to look for the clearance of the Sunderbans so long as the existing rates were demanded. They, therefore, proposed revised rules with the following terms: (1) that grants should not exceed 10,000 bighas of 40 yards square tequal to about 3,200 acres) in order to check mere speculation, and the free period should be ten years; (2) that one-fourth should be cleared in five years on pain of forfeiture; (3) that one-fourth should be exempted from assessment as before; (4) that the remainder should be assessed at $\frac{1}{2}$ anna for ten years, then at 1 anna for five years, at 2 annas for the next five years, at 3 annas for five years more, and thereafter at 4 annas, the full rate; and (5) that the above rates should apply to the Sunderbans of the 24-Parganas and Jessore. the peculiar advantages of which were about on a par, while the corresponding rates in Bakarganj should be 25 per cent. higher on account of the superior advantages of the lands there. The 6th condition provided for the recovery of the revenue, the 7th for demanding security, if necessary, and the 8th indicated the procedure for obtaining grants, applications being ordinarily made to the Sunderbans Commissioner. They held that the old grants should be admitted to the

^{*}The first rules, promulgated in 1825, had, as far as I can discover, special, if not sole, reference to the allotments in the 24-Parganas. It was the intention of the Government that the Sunderbans Commissioner should first settle the claims of the State in that district before proceeding east to Jessore and Bakarganj, and in fact Smelt's operations were stopped by orders to that effect. The Board's orders prohibiting the practice of giving leases for forests lands in Jessore were most strict until 1817; and though the prohibition was relaxed in that year as mentioned in paragraph as, and the Collectors after that again granted leases for the jungle, yet they appear to have acted not upon a definite system, but to have given pattas or amainamas somewhat irregularly for lands within such and such boundaries, as in the case of Maulavi Abdullah mentioned in paragraph 73. For these reasons I cannot help thinking that the Board's statements age mistaken. At any rate, the 110 cubit bigha was not generally cursent in the 24-Parganas, where the prevalent measure was the bigha of 80 cubits or 40 yards square. The 24-Parganas Sunderbans were first divided into allotments by Prinsep in 1822 and 1823, while those Jessore were not lotted out till 1829 or 1830 by Hodges. Prinseps bighas were all 40 yards square and so, two, were Hodges'. The grants in the 24-Parganas which, as the table in paragraph 248 shaws, constituted more than three-fourths of the total number. To that extent, therefore, the considerations on which the rules of 1853 were based proceeded from a mistaken view of the circumstances. Smelt's operations of 1818 strictly have no connexion with the subject of Sunderbans grants. They were directed to lands reclaimed with or without Hencekell's pattas, and his assessment—8 annas per the 55 yards bigha—was imposed on lands that had been actually brought into cultivation and not on jungle lands.

benefit of the new rules, and proposed conditions of admission, while as to resumed mahals, all that the Board believed to be necessary was that their assessment should in future be regulated by the rates current in the neighbourhood, instead of the general rate of 8 annas, subject, however, to the maximum of 8 annas everywhere, and a minimum of 4 annas in the 24-Parganas and Jessore, and 5 annas in Bakarganj.*

proposals.—The Government communicated the Board's proposals to Messrs. Begg and Rose, two of the grantees, at the desire of the others, and they were allowed to offer their remarks thereon. They objected to the limitation of the size of grants to 10,000 bighas as overriding the natural division of the country, and as being futile, since no restriction was placed on the number of grants a speculator might buy. Instead of the clearing condition recommended by the Board, they preferred one of clearing one-eighth of the area in six years to be strictly enforced. The Board's assessment was, they considered, not liberal enough and would not succeed. The Board's ultimate rate of 4 annas per 40-yard bigha was practically the same as the old rate of 8 annas per the 55-yard bigha, so that the apparent reduction was in reality very trifling; besides, since that rate was nearly double the revenue assessment on lands included in the Permanent Settlement, the grantees would still be at a disadvantage. The increased rate in Bakarganj was objectionable, because of the distance of the markets. Lastly, they urged that all grants should be publicly sold; Government would thereby get the full value of a grant favourably situated.

Modifications sanctioned Government, 1853.—The Government, after considering all these views and suggestions, announced its decision in its No. 306, dated the 9th April 1853, to the Board of Revenue. Reviewing briefly the rules of 1825 and their failure, the Government passed on to those of 1829, regarding which they took it as certain that the bigha in the former rules was of 110 cubits, and the bigha in the datter of 80 cubits, so that the assessment under the latter rules was nearly double that under the former. The 1820 rules had failed under the former. The 1829 rules had failed, and the Board's remarks and the position of affairs as to the grants were briefly recapitulated. The Governor stated Mr. Bruce's terms and contrasted them with the 1825 rules as to the 55-yards bigha; also the terms asked for by the grantees, comparing them with the rules of 1825 and 1829. The Board's remarks and terms were next considered and contrasted with the same rules, and the grantee's objections thereto were noticed. The paramount object of Government in devising the rules was declared to be the re-clamation of the Sunderbans—a pestilential tract near Calcutta which afforded a home for wild animals and shelter to smugglers and pirates. The improvement of the revenue

was of secondary and altogether subordinate importance. Till then it had been thought that improvement of revenue might keep pace with the clearance of jungle, without materially impeding it, but that had proved to be fallacious. Increase of revenue would, of course, follow reclamation, but had been looked for too soon. That principle was now abandoned, and speedy reclamation was declared to be the paramount object, Government being, however, left free to impose a moderate assessment at some future time. Keeping that object in view, the Governor accepted the terms offered by the grantees with two modifications—(1) that conditions of progressive elements. of progressive clearance should be insisted on, such as one-eighth of the area in five years, one-fourth in 10, one-half in 20, and three-fourths in 30 years; and (2) that the full assessment of 2 annas instead of being in perpetuity should be for 99 years, after which grants should be liable to reassessment on moderate terms, proprietorship and the right of settlement remaining with the grantees as in estates not permanently settled. Existing grantees would be allowed the option of throwing up their leases and taking fresh leases for 99 years under the new rules, lands already brought under assessment being subjected to the full rate of 2 annas. Where grants were resumed for failure, lands actually cultivated were to be settled separately with the cultivators on moderate terms not exceeding the maximum rate of 2 annas, so as not to cause desertion among the settlers; and the jungle remainder would be granted out fresh. The Governor did not consider the reasons sufficient for limiting grants to 10,000 bighas, nor for imposing a higher assessment in Bakargani than in the 24-Parganas or Jessore, nor for demanding security. In the concluding paragraph of the letter, viz., paragraph 25, the case of resumed lands was considered. They comprised an area of 796, 286 pighas, the whole of which, except four estates with an area of 40,692 bighas, had been assessed at 8 annas per the 40-yard bigha. The Governor sanctioned the course recommended by the Presidency Commissioner and the Board that in future settlements, instead of that uniform rate, the rates found to prevail in neighbouring zamindaris should be adopted, provided they in no case exceeded 8 or fell short of 4 annas.1

255. Grant rules of the 24th September 1853.—Revised rules were drafted by the Sunderbans Commissioner in accordance with these instructions, and after amendment by the higher authorities were finally approved by the Government in its resolution No. 1803, dated the 24th September 1853, and published in the Calcutta Gazette of 8th October 1853, page 1385. As a very large number of the then grants were commuted under these rules, as others were forfeited and regranted under the same rules, and as numerous fresh grants were made under them, the rules of the 24th September 1853 govern by far the

Presidency Commissioner to Sunderbans Commissioner, No. 154A., dated the 25th June 1858.
 A list of these was submitted with Sunderbans Commissioner's letter to Presidency Commissioner, No. 272, dated 1st July 1854.
 Presidency Commissioner to Sunderbans Commissioner, No. 106, dated the 6th May 1853. The restriction on the rate of assessment in \$80-see paragraph 278.
 Sunderbans Commissioner to Presidency Commissioner, No. 293, dated the 14th July 1853.
 Presidency Commissioner to Presidency Commissioner, No. 293, dated the 14th July 1853.
 Presidency Commissioner to Sunderbans Commissioner, No. 277, dated the 26th October 1858.

great majority of Sunderbans grants. They are here set out in full:—

Rule I—Clause 1.—Applications for grants of waste land in the Sunderbans shall be ordinarily made to the Sunderbans Commissioner. Such applications shall be immediately entered in a register to be kept for the purpose in his office, and, after being advertised for one week in the Calcutta Gazette, shall be submitted through the Revenue Commissioner for the orders of the Board of Revenue. In the absence of the Sunderbans Commissioner from Alipur, such applications will be received either by the Revenue Commissioner of the Jessore Division or by the Board of Revenue.

Clause 2.—Should there be more than one applicant for the same grant, it shall be put up to sale after a further advertisement in the Calcutta Gazette of fifteen days, and the application of the highest bidder shall be submitted as above provided.

Rule 11.—When an application for a grant of land has received the sanction of the Board of Revenue, a patta in the following form* shall be drawn out on vellum or parchment, and submitted for registry in the office of the Board of Revenue.

Form of patta.—Under the orders of the Board of Revenue, dated 18, this patta is granted to for himself, his heirs, executors, and assigns for that portion of waste land in the Sunderbans estimated to contain bighas, described as lot No. of Captain Hodge's map, and bounded as follows:—

On the North-

On the East-

On the South-

On the West-

The terms of this grant are-

Firstly, that one-fourth of the entire grant shall be for ever exempted from assessment in lieu of an allowance for the sites of houses, for water-courses, creeks, nullahs, tanks, roads, the space required for the construction of embankments, dams, etc., and for irreclaimable waste land.

Secondly, that the remaining three-fourths of the grant shall be held free of assessment for twenty years from the 1st May, and shall afterwards, be subject to an annual revenue charge at the following rates, namely,—

From the beginning of the 21st to the end of the 30th year, half-an-anna the bigha of 1,600 square yards.

From the beginning of the 31st to the end of the 40th year, one anna the bigha of 1,600 square yards.

From the beginning of the 41st to the end of the 50th year, one anna and a half the bigha of 1,600 square yards.

From the beginning of the 51st to the end of the 99th year, two annas the bigha of 1,600 square yards.

Thirdly, that at any period after the expiration of the 20th and before the expiration of the 30th year, the Government may make a survey and measurement, and in like manner the grantee may require that a survey and measurement be made, with the view of ascertaining the exact area of the lands contained in the grant, and that the reyenue conditioned in the preceding article shall thenceforth be calculated upon the area ascertained by such survey. The expense of such survey shall be defrayed by the party at whose instance the survey may be made. Provided that until such survey be made, or if no such survey be made, the revenue conditioned in the preceding article shall be calculated on the area specified in the first clause of this patta.

Fourthly, that after the 99th year, the grant shall be liable to survey and resettlement, and to such moderate assessment as may seem proper to the Government of the day, the proprietary right in the grant, and the right of engagement with Government remaining to the grantee, his heirs, executors or assigns under the conditions generally applicable to the owners of estates not permanently settled; and the revenue equal to the amount annually paid from the 51st to the 99th year shall be paid annually by the grantee, his heirs, executors or assigns, until such survey and resettlement or reassessment as is described above be effected.

Fifthly, that one-eighth of the grant shall be declared and rendered fit for cultivation by the expiration of the 5th year from the 18.

That one-fourth of the grant shall be cleared and rendered fit for cultivation by the expiration of the 10th year from the 18.

That one-half of the grant shall be cleared and rendered fit for cultivation by the expiration of the 20th year from the 18.

That three fourths of the grant shall be cleared and rendered fit for cultivation by the expiration of the 30th year from the 18.

That on failure of all or any of these four conditions (the fact of which failure shall after local enquiry conducted by the Sunderbans Commissioner or other officer be finally determined by the Board of Revenue), the entire grant shall be resumed and the grantee shall forfeit all right and interest in the lands, both those which may be yet uncleared, and those which may have been cleared and brought into cultivation.

Sixthly, that the revenue payable under the third and fourth terms of the patta shall be paid into such treasury as the Government may determine, or to such Collector or other thovernment officer as may be appointed by the Government to receive it, on the dates specified on the reverse of the kabulyat or counterpart of this patta, and that in default the retenue shall be recoverable from the grantee, his heirs, executors or assigns by the process

^{*} The Roard ordered in 1854 that the patta should be executed in English and Bengali at the desire of the grantees (Presidency Commissioner, No. 18, dated the 23rd January 1854).

that now is or hereafter may be in force for the recovery of arrears of Government revenue.

Seventhly, that the grantee shall not in any way interfere with the passage of boats through any open river or nullah traversing his grant, and shall allow a sufficient space along the banks of all such rivers or nullahs for towing paths.

Rule III—Clause 1.—Grantees or their representatives holding grants or leases in perpetuity under the rules hitherte in force shall have the option of throwing up their existing leases and taking other leases according to these rules, terminable in 99 years from the date on which their existing leases commenced.

Clause 2.—Grantees so electing to commute their present grants for settlements terminable in 99 years shall pay revenue at the rate of 2 annas per bigha from the commencement of the current year for all lands already brought under assessment to Government.

Clause 3.—In cases in which a rent-free term was originally granted for twenty years, and that term having expired, a further rent-free term has been granted, the grantee, if he commutes as above, shall waive all claim to continued rent-free possession, and shall pay half-an-anna per bigha on the whole of his grant (after deducting the prescribed one-fourth) from the beginning of the ensuing year, and one anna per bigha from the commencement of the 31st year from the date of the original lease, and thenceforward according to the scale prescribed in rule II.

Clause 4.—In cases in which a rent-free term was granted for twenty years, and that term not having expired, a further rent-free term has been promised, the grantee, if he commutes as above, shall waive all claim to such extended rent-free term, and shall pay revenue for the lands of his grant from the commencement of the 21st year according to the scale prescribed in rule II.

•Clause 5.—Persons desirous of availing themselves of the option given by this rule, must signify their desire by application to the Sunderbans Commissioner within one year from the date of these rules, that is to say, on or before the 24th day of September 1854.

Rule IV.—When a grant is resumed under article 5 of the terms of the lease, the lands found to be actually under cultivation shall be measured and settled with the cultivators or under-tenants, as the case may be, at such rates as may appear equitable to the Revenue Authorities, reference being had to the circumtances under which the cultivators or under-tenants were located; and in the event of a new lease being given for the resumed grant, the lands so settled with the occupants shall be included in, or excluded from, the lease, as may be deemed most suitable. Provided, however, that, when cultivated lands are included in a lease, the terms of assessment in Rule II shall be applicable only to

the uncleared lands, and separate provisions shall be made for the assessment of the cultivated land at the discretion of the Board of Revenue.

CHAPTER XX.

Sunderbans grants and the rules of 1853 and 1853-62.

256. Carrying into effect of the rules.—The promulgation of the revised rules gave a fresh impetus to Sunderbans operations, which had, in a great measure, been held in abeyance pending their issue. Uma Kanta Babu proceeded to carry them out in their three directions of commutations, assessments, and new grants. At first his treatment was careful and proper, but afterwards he appears to have become confused amid the variety of claims put forward by grantees and others, and to have blundered strangely; and the mistakes were often due to his neglecting to report the cases to the Presidency Commissioner as he had been directed to do in all cases,* so that in many instances they passed unnoticed till Mr. Reily, his successor, by a methodical investigation, ascertained them and reported them for correction. It is unnecessary to notice the errors, except in so far as they served to elicit principles or explanations of rules and orders. The extension of the new rules to resumed mahals was a matter where Uma Kanta Babu fell into serious perplexities. It will be noticed in the next chapter. As regards grants proper, the following are the important points regarding commutation and assessment where confusion arose and fresh instructions were laid down.

Instructions regarding commutation.-Rule III prescribed the method of commutation, and the majority of grantees availed themselves of the option held out, but the determination of the assessment was not unattended with difficulties. As regarded the rate at which the assessment was to be made where grants under the former rules were paying 2 annas the bigha or more, Uma Kanta Babu failed to understand the rule, and the Presidency Commissioner was frequently obliged to revise, correct, and remand the proceedings.† Much of the difficulty was due to uncertainty as to when the grants were to be considered to have commenced. It had been laid down in 1835 that the date of sanction was to be adopted as the initial date, but Uma Kanta Babu does not appear to have been aware of that order, and in several cases altered the initial dates. On inquiry, it was found that the original leases had been in many instances executed some time after the date of the grant, so the Board laid it down in the case of lot 53, which had been granted in 1831, but where the kistbandi was executed in 1834, that the latter was the

Presidency Commissioner to Sunderbans Commissioner No. 25, dated the 25th August 1854: also No. 148, dated the 19th January 1855.
 Presidency Commissioner to Sunderbans Commissioner No. 292, dated the 8th November 1853; also No. 9, dated the 16th January 1854.

initial date;1 and they decided in 1856 that the free period ordinarily ran from the date of the patta, and retrospective effect was to be given to this construction one result of which was that the grantees escaped the payment of considerable sums, which were due according to the order of 1835.3 Other difficulties arose on the meaning of the words of the rules, and were referred to the Board or Government for an authoritative explanation in 1856. Thus, as to the words "all lands already brought under assessment to Government" in Rule III, Clause 2, it was laid down that after the expiry of the free term, lands ipso facto came under revenue, the grantee being bound to pay, and no steps being necessary on the part of Government.' The scope of the word "assessment" in the above quoted passage was thrown into doubt by some previous demi-official correspondence, but on reference made, the Government decided that the literal meaning was correct and the word included lands paying revenue at 2, 4, 6, or 8 annas. With respect to the words "from the date on which the existing leases commenced" in clause 1 of the same rule, the Board decided that if no engagement had been taken from the greater and ment had been taken from the grantee previous to his signing the kabulyat and kistbandi, the date of those documents, that is, the date of the patta, should be the date in question. The promise referred to in clause 4 of the same rule might be an implied one, but the Board would not lay down any general rule, leaving each case to be dealt with on its own merits. The words "from the beginning of the ensuing year" in clause 3 had been held by the Board in 1855 to mean the 1st May 1854, but in 1856, after the period of commutation had been extended in the case of lot 73, they decided that the words meant the commencement of the year next ensuing after commutation, whenever that might be; but on Mr. Reily's representing that through delays in commutation that construction would necessitate revisions, and the refund of revenue already paid," and on the Presidency Commissioner's strongly commenting on the unsoundness of making the date a movable and not a fixed one, the Board decided that the "current year" in the rule meant 1853-54, and the ensuing year 1854-55, thus making the date a fixed one and reverting to the first interpretation.

258. Crants commuted.—Commuted leases were granted for the following lands during the years 1854-56, the applications having in all cases been made in time—lots 2, 3, 6, 7, 9, 10, 18, 21, 22, 27, 28, 30, 31 (jungle portion) only), 32, 33, 36-40, 52, 53, 56, 57, 61-69, 72 (four portions), 75-77, 81, 82, 86, 87, 91, 92, 98, 101, 105, 108, 136, 137, 166 (four portions), 216, and 225; 2 also for the grant portions of Gulsakhali and Kukua; for Harijhipatan, Andarmanik, Munkiya and Godardanga, Nalbuniya and Amtali; and lots 1-3 (Khao-Nalbuniya and Amtali; and lots 1-3 (Khaoliya) Barisal. In the case of lot 73, the application was made after the expiry of the time allowed, but commutation was allowed, the grantees being country folk, who were unacquainted with the limitation. 15 The settled land of lot 108 was, in consideration of its exposed situation, allowed an abatement of from 8 to 2 annas and a lengthened period of 99 years. Gyanpara, which Mr. Gomes's survey of 1852-53 showed to comprise 1, 12, 761 bighas instead of Mullin's absurd area of 20,000 bighas, was admitted to the benefit of commutation, three-fourths of the old area being assessed at 2 annas. Similarly in Kalamegha, for which the Collector of Bakarganj had given an amalnama in 1844-45, the cultivation was assessed, and the whole (cultivated and jungle), 45,012 highas, disposed of as a grant. In Tushkhali, the farmer Debnath Rai had received express permission to clear the adjacent jungle in 1839, and had been reclaiming. He applied for a patta under the new rules. The area was surveyed by Mr. Gomess in 1854-55 and found to contain 83,493 bighas of unsettled land (of which 23,743 bighus were cultivated); this settled with him under the new rules, Mr. Reily disapproved and the Presidency Commissioner quashed all the proceedings in 1855, on the ground that Debnath as farmer had no right to the benefit. In appeal, the Board (of which Mr. Dampier was a member) explained that the Bakarganj forest not having been lotted out, no formal grant had been feasible, but that Debnath got the land on the same terms as authorised grantees, and was to all intents and purposes a real grantee. They, therefore, admitted him to the benefits of the new rules for all the jungle land north of the Saplenja Don within defined boundaries and a patta was given him in 1857 for those lands under the name Debnathpur, no allot-ment number being possible since Mr. Gomess's survey of the forest had not been carried so far at that time.21 But a further claim by him to a lease of the land south of that Don

Presidency Commissioner to Sunderbans Commissioner, No. 27Ct., dated the 6th February 1857.

Presidency Commissioner to Sunderbans Commissioner, No. 384 dated the 30th April 1856.

Sunderbans Commissioner to Presidency Commissioner, No. 173, dated the 5th May 1865.

Presidency Commissioner to Sunderbans Commissioner, No. 25, dated the 16th May 1856 transmitting Bd. Rev. to Presidency Commissioner No. 208, dated the 9th idem.

Presidency Commissioner to Sunderbans Commissioner, No. 25, dated the 16th May 1856.

Presidency Commissioner to Sunderbans Commissioner, No. 25, dated the 16th May 1856.

Presidency Commissioner to Sunderbans Commissioner, No. 28, dated the 27th May 1856.

Presidency Commissioner to Sunderbans Commissioner, No. 181, dated the 27th May 1856.

Presidency Commissioner to Sunderbans Commissioner, No. 182, dated the 18th June 1856.

Presidency Commissioner to Sunderbans Commissioner, No. 186, dated the 18th June 1856.

Revised Presidency Commissioner to Sunderbans Commissioner, No. 182, dated the 12th June, and No. 18Ct., dated the 23rd July 1857.

Presidency Commissioner to Sunderbans Commissioner, No. 182, dated the 12th March 1856.

As to lot 167, see Presidency Commissioner to Sunderbans Commissioner, No. 28, dated the 4th February 1853; No. 109, dated the 29th July 1856; No. 104Ct., dated the 27th November 1857; and No. 60, dated the 10th January 1858.

Presidency Commissioner to Sunderbans Commissioner, No. 140, dated the 29th July 1857.

Presidency Commissioner to Sunderbans Commissioner, No. 24, dated the 29th September 1855.

Presidency Commissioner to Sunderbans Commissioner, No. 24, dated the 18th January 1855; No. 70, dated the 17th June 1856;

Presidency Commissioner to Presidency Commissioner, No. 24, dated the 18th January 1855, No. 70, dated the 17th June 1856;

Presidency Commissioner to Sunderbans Commissioner, No. 24, dated the 18th January 1855, No. 70, dated the 18th January 1856.

Presidency Commissioner to Sunderbans Commissioner, No. 267, dated the 18th January 1856.

P

was refused by the Board. Other mahals were allowed a modified commutation, Nilganj and Tiyakhali.

Extensions of clearance periods. The admission of grants to the easy terms of the new rules did away for a time with the demand for extensions. The change had already been inaugurated of extending merely the confiscation period without touching the revenue stipulations, and, after the issue of the revised rules, that was the invariable practice, it being so necessitated by the enforcement of gradual clearances long before the free period expired. The new shape which the bestowal of extensions took was to suspend the penalty for a year or two to enable the grantee to come up to the proportion required, as was done in lots 2, 10, 11, 12, 28, 37, 38, 105, 136, and others.

260. Resumptions, 1853-67.—During the first two years after the promulgation of the new rules, the penalty of resumption was not enforced, but from 1856 Mr. Reily a stricter practice appears to have obtained. In 1859 Government ordered that the clearance conditions should be always enforced, except in extraordinary cases, in order to promote the reclamation of the Sunderbans.³ The resumptions comprised lots 58 and 90 in 1854; lots 48 and 49 in 1855; lots 23-26, 78 and 84; lots 4-7 of Khaoliya Barisal, Pachakuraliya, Chando-Khaoliya Barisal, Pachakuraliya, Chando-khali and Kachupatra⁶ in 1856; lots 7, 29, 36, 39, 57 (second portion), 87, 122, 137, 211 and 212 in 1857; lots 18, 27 and 168, and Karaibariya in 1858; lots 11, 99, 105, 109-115, 123, 138, 140, 142 and 143 in 1859; lots 59, 106, 107 and 136 in 1860; lot 227 in 1861; lots 67, 90, 121, 124-126, 163 and 172 in 1862; lots 25, 63, 242, and No. 7 Khaoliya 1862; lots 25, 63, 242, and No. 7 Khaoliya Barisal in 1864; lots 15, 122 (north part), 135, 137 and Kukuriya Mukuriya in 1865; lots 110-114 and 139 in 1866; and lots 11 and 117 in 1867.

261. Interests of the Salt Department.-The reorganization of the Salt Agency, which was under discussion, was finally negatived by the Government in 1854, and no general provision regarding salt was required in the grants, but lots 127, 128, 131, 132 and 149-162 were reserved by the Board for excise manufacture.8 Government had relinquished the salt lands in the old grants, and, none being reserved in the new, the Salt Agent was left to obtain his lands by ordinary lease, or

acquire them under Regulation I of 1824, though the Sunderbans Commissioner was instructed always to consult him prior to bestowing new grants. The Salt Agent applied for lot 148, and asked for no restrictions beyond the insertion of a special salt clause, explaining that, as his manufacture was carried on only along the banks and a breadth of 100 feet would suffice, reclamation and the manufacture could go on together." The following clause was then prescribed in 1856: "Provided that in the event of the Salt Department requiring to occupy any of the lands within the grant, such lands shall be given up on demand, the revenue derivable therefrom being remitted by the Govern-ment." It was to be inserted in all leases except those in Bakarganj, where there was no likelihood of the manufacture ever being renewed.4 In 1860 the restriction on the bovementioned eight lots was withdrawn, and they became available for grants-16

262. New grants and regrants, 1853-62.-On the publication of the rules, the Sunderbans Commissioner proceeded to sell the grants, and the favourable character of the rules once more stimulated capitalists embark in Sunderbans reclamation. In the case of resumed grams being offered for sale, the Board directed in 1853 that the whole of the lands should be sold, both cultivated and uncultivated, the rights of the abadkari 99, 104, 110-115, 123, 129, 130, 135, 138, 140, 142, 143, 148, 163, 168 and 226 were granted out in 1853; in 1854, lots 13, 14, 134, 164, 166, 223 and 227; in 1855, lots 48, 49, 58, 90 and 172 (?); in 1856, lots 23, 25, 78, 87, 121, 124-126, Halliday Island, and Lata Chapli; in 1857, lots 241-251 and Khaoliya Barisal lots 4-7, Pachakuraliya, Chandokhali, Kachupatra and Kakchira Chart in 1858, lots Kachupatra and Kakchira Char; in 1858, lots 7, 8, 15, 16, 29, 36, 39, 57, 87, 116, 118, 120, 122, 137, 211 (two portions), and 229-232; in 1859, lots 85 (?), 195, 196, and 210 (?); in 1860, lots 167 (1864). 1869, 10ts 89 (7), 199, 190, and 210 (7); in 1860, lots 167, 168 (two parts) and 223 (?); and in 1861, lots 216 and 240. In April 1862, the further grant of waste lands was stopped, pending the issue of the new waste land rules. 18 Several of the lots, such as Nos. 23 and 25, were keenly competed for and realized a large price. The proceeds of the sales constituted a large fund and were devoted to the improvement of Sunderbans estates. Property of the total realizations were reck-oned at Rs. 1,56,066 in 1862, namely,

¹ Presidency Commissioner to Sunderbans Commissioner, No. 69, dated the 17th June 1856, and No. 40Ct., dated the 24th September

Presidency Commissioner to Sunderbans Commissioner, No. 69, dated the 17th June 1856, and No. 40Ct., dated the 24th September

Presidency Commissioner to Sunderbans Commissioner, No. 51Ct., dated the 31st July 1858.

Presidency Commissioner to Sunderbans Commissioner, No. 51Ct., dated the 28th April 1855.

Presidency Commissioner to Sunderbans Commissioner, No. 231, dated the 28th April 1856.

Presidency Commissioner to Sunderbans Commissioner, No. 167, dated the 18th September 1856.

Presidency Commissioner to Sunderbans Commissioner, No. 103Ct., dated the 27th November 1857.

Presidency Commissioner to Sunderbans Commissioner, No. 103Ct., dated the 27th November 1857.

Presidency Commissioner to Sunderbans Commissioner, No. 171, dated the 18th November 1855.

Presidency Commissioner to Sunderbans Commissioner, No. 171, dated the 28th May 1854, and No. 145, dated the 27th July 1854.

Presidency Commissioner to Sunderbans Commissioner, No. 212, dated the 28th December 1855.

Presidency Commissioner to Sunderbans Commissioner, No. 212, dated the 28th May and 114, dated the 30th July 1856; also No. 31Ct. dated the 14th February 1857.

Presidency Commissioner to Sunderbans Commissioner, No. 28, dated the 5th and No. 93, dated the 28th June 1856.

Presidency Commissioner to Sunderbans Commissioner, No. 103Ct., dated the 2nd March 1858.

Presidency Commissioner to Sunderbans Commissioner, No. 103Ct., dated the 2nd March 1858.

Presidency Commissioner to Sunderbans Commissioner, No. 103Ct., dated the 2nd March 1858.

Presidency Commissioner to Sunderbans Commissioner, No. 27, dated the 2nd March 1858.

Presidency Commissioner to Sunderbans Commissioner, No. 27, dated the 2nd March 1858.

Presidency Commissioner to Sunderbans Commissioner, No. 27, dated the 2nd March 1858.

Presidency Commissioner to Sunderbans Commissioner, No. 27, dated the 2nd March 1858.

Presidency Commissioner to Sunderbans Commissioner, No. 27, dated the 2nd March 1858.

Presidency Commissioner to Sunderbans Commissioner, No. 202Ct., dated the

Rs. 1,21,000 in the 24-Parganas, Rs. 18371 in Jessore, and Rs. 16,695 in Bakarganj. Lot 44 was assessed ultimately at 2 annas, and incorporated with taluk Bantia.

263. Settlement on expiry of free term.-Uma Kanta Babu's practice of measuring grants on the expiry of the free term and assessing them de novo was dropped, and the execution of dowls at that stage was pro-nounced useless.³ A survey was not indis-pensable, but it was sufficient to calculate the revenue on Hodges's area, and where dowls and kabulyats had been executed and possession given, nothing further was necessary.4 The notion, however, that something was required on the expiry of the free term to give efficacy to the revenue provisions still held its ground, and the practice of taking dowls was observed for more than twenty years afterwards. Grants as soon as made were to be brought on to the Collector's rent-roll.⁵

264. **Subsidiary rules, 1856-67.**—In 1859 Government ordered that the words "properly embanked" should be inserted in future leases where embankments were necessary.6 It had been questioned whether Government could resume a grant for nonclearance, if the right were not exercised at the proper time. It was decided in 1856 that if the period expired and the grant com-menced to pay revenue, the right was barred, otherwise apparently delay did not destroy it. Commutation made no change in those respects.7 The rule requiring a survey before a grant could be made was relaxed in 1867, Government declaring that a boundary road might be cut all around beforehand, and pillars erected by the grantee within three months after getting possession. Government directed in 1865 that no grant should be sold for arrears of revenue without its state as regarded clearance being ascertained by a reference to the Sunderbans Commissioner.9

CHAPTER XXI.

RESUMED MAHALS AND THE RULES OF 1853 AND 1853-62.

265. Effect of the 1853 rules on the resumed or excluded mahals.-When passing the new rules for grants in 1853, the Governor had sanctioned a relaxation of the assessment upon resumed mahals, namely, that in future they should be assessed at current rates not exceeding 8 annas and not falling below 4 annas. 10 A list of these mahals, which, in

consequence of their being expressly denied the benefit of the grant rules, were spoken of as "excluded mahals," was prepared by Uma Kanta Babu and submitted to the, higher authorities in 1854. But a large body of the holders of resumed lands in the Sunderbans petitioned the Board in August 1854. 1854, representing that the indulgent rates conceded to grantees by the 1853 rules bore with great hardship on them, inasmuch as their raiyats were deserting, being tempted by the lower terms which the grantees were able to offer; they declared that they could not continue to pay the 8-anna rate, and they asked for some consideration. The Board refused to make any reduction in the case of lands that were cultivated when settled, but thinking it might be necessary to revise the prospective assessment fixed in perpetuity on jungle lands, they called for a report on the subject from the Sunderbans Commissioner. 12 Uma Kanta Babu made no remarks on the questions raised by the Board, but merely sent up a list of 70 resumed mahals in February 1855.¹³

266. Detailed Sunderbans map, 1855.—About the same time that the landowners petitioned, the Government desired to know what the state of the Sunderbans then was, and what was the proportion between the cultivated and uncultivated land. The Presidency Commissioner directed Uma Kanta Babu in September 1854 to have a plan of the Sunderbans drawn up, each district in one sheet, exhibiting the names, numbers and state of cultivation of each of the lots. The map—though pronounced most urgent—was not completed till the end of 1855.15

Terms of assessment revised in the resumed or excluded mahals, 1855-56.—
Meanwhile the Presidency Commissioner torwarded the list, remarking that it showed no strict rule had been followed in the settlement of the jungle lands of those estates. The free period varied from one to twenty years, then followed a rasad of two or three years, after which the full assessment of 8 annas was imposed. It seemed that in some recent cases the new rules had been applied to such jungle lands. He was in favour of granting the petitioners some indulgence, and suggested proposals for giving the jungle lands in the estates the benefits of the new rules. The Board, which then consisted of Messrs. Ricketts, Dampier and Dunbar, took some time to deliberate, and submitted their report to Clarescent, in Tanasce 1956. report to Government in January 1856. They were divided in opinion, Mr. Dunbar desiring to offer liberal concessions with the object of having the forest reclaimed. The decision of Government was recorded in its No. 105, dated the 1st February 1856. The

Sunderbans Commissioner to Presidency Commissioner, No. 130, dated the 10th September 1862.
 The opposition of the talukdars had prevented its reclamation. Presidency Commissioner to Sunderbans Commissioner, No. 194 dated the 4th October 1856.
 Presidency Commissioner to Sunderbans Commissioner, No. 251, dated the 31st January 1856.
 Presidency Commissioner to Sunderbans Commissioner, No. 22, dated the 10th and No. 25, dated the 16th May 1856.
 Presidency Commissioner to Sunderbans Commissioner, No. 156, dated the 20th December 1859.
 Presidency Commissioner to Sunderbans Commissioner, No. 34 and 35, dated the 22nd May 1856.
 Presidency Commissioner to Sunderbans Commissioner, No. 717, dated the 30th October 1867.
 Presidency Commissioner to Sunderbans Commissioner, No. memorandum No. 214, dated the 23rd Ocotber 1865, and No. 37Ct., dated the 16th March 1866.
 **See paragraphs 254.
 **See paragraphs 254.
 **Sunderbans Commissioner to Presidency Commissioner, No. 272, dated the 1st July 1854.
 **Presidency Commissioner to Presidency Commissioner, No. 29, dated the 1st September 1854.
 **Sunderbans Commissioner to Presidency Commissioner, No. 29, dated the 1st December 1855.

with Lieutenant-Governor, agreeing majority-Messrs. Ricketts and Dampierheld that there was no necessity for a general reduction of the assessment in resumed mahals, since these lands were usually more favourably situated than the mass of Sunderbans lands, having been selected by the people themselves on account of their proximity to zamindari lands or for other good reasons: but as regarded other lands differently situated, where there was reason to believe that they were likely to be affected by the lower assessment obtaining in grants, the Lieuten-ant-Governor decided that where the original ant-Governor decided that where the original abadkars were still in possession, the rate should be decreased to 4 annas; and in resumed lands, which were entirely surrounded (if any such existed) by mahals assessed at a maximum of 2 annas, the assessment should be reduced to the same level; but in all cases local inquiries were to be made. In the case of lands appertaining to resumed mahals which were waste at the period of settlement, the assessment should be revised uniformly, according to the second clause of the new leases. In sanctioning these rules, he enjoined, however, that in all cases the reduction of the existing assessment should be conceded only on condition that the perpetual leases on which the lands in question were then held should be surren-dered, since he conceived it to be very desirable that those parts of the Sunderbans territory which were originally usurped should be liable to resettlement at a future day equally with the larger area which was embraced by the grants.¹

268. Results of these orders.—The result of these orders was to rescind the rate of 8 annas which Mr. Harvey had uniformly established, and to make local circumstances the criterion for determining the assessment. A reduction was permitted, if necessary, in all kinds of lands. As mentioned in paragraphs 167 and 168, several settlements had been made in perpetuity. Such settlements were now prohibited, and the duration in all cases was to be temporary, but in several cases the period was, as in Sunderbans grants, fixed at 99 years.

269. Claims to commutation in resumed mahals, 1854-55.—There was, however, a general impression among the landowners that the grant rules were intended for lands of every description, and numerous applica-tions were sent in for commutation. Uma Kanta Babu at first acted rightly, and refused them on the ground that the lands were either resumed mahals or lay outside Hodge's Sunderbans boundary. But towards the end of 1854 he appears to have modified his views, and considered that lands which fell within that boundary were admissible to the benefit of the rules, even though they were resumed

or "excluded" mahals. Thus, he allowed commutation in lots which had been incorporated with patitabadi mahals, such as Nos. 17 20, etc.; in resumed estates which composed lots 216-220, such as Khaliya, Hariya, etc.; and in other resumed estates falling inside the boundary, such as Gulsakhali. Some of Henckell's talukdars applied for admission, and commutation was allowed in Pranpur by the Presidency Commissioner, on the ground that it was reclaimed land so also in Ramzannagar and Atliya. But when commutation was recommended in Ballabhard. pur, Mr. Stainforth, the Presidency Commissioner, noticing its circumstances, refused, since it was one of the mahals excluded by paragraph 25 of the Government orders. In the case of not a few Sunderbans mahals, however, Uma Kanta Babu had commuted the terms and bestowed fresh pattas, either without the previous sanction declared to be indispensable, or in cases which were not entitled to the benefit of the grant rules. Such irregularities were detected in 1855, and much of Mr. Reily's time for two years was occupied in rectifying the errors, which frequently involved serious diminutions of land revenue. It had been ordered in 1853 that on the presentation of applications for commutation, immediate information should be sent to the Collector with the request that, pending the adjustment of the settlement, he would receive payment of the revenue according to the new rules. A reduced revenue was thus being paid by the mahals which had been improperly admitted to commutation, and when the irregular proceedings were quashed and the revenue restored to its former amount, a sum of arrears became due, which the Board allowed to be liquidated by instalments during one or two years.

270. Claims to commutation in jungle mahals in Bakarganj, 1854-57.—The absence of a detailed survey in the Bakarganj district had rendered the application of the grant rules almost inoperative, and the question arose in 1854 whether lands there, especially in pargana Salimabad, were entitled to commutation under the new rules, the talukdars of Patikhali, Panchakaran, Debraj, Dhuliganti, Harganti, Nazirdiya, and Madardiya having applied to commute. Commuted pattas were given for the first three and were confirmed by the Board in 1855, the free term remaining 15 years as before? In term remaining 15 years as before.9 In the case of Gulsakhali, the Board laid it down in 1855 that the new rules applied only to grants and not to resumed estates.10 But resumed mahals, especially in pargana Salimabad, were of various kinds and lay both within and without the Sunderbans forest; and Mr. Reily suggested that the fact whether the lands lay without or within the Sunder-bans boundary should be taken as the criterion for deciding claims to commutation, only those within having a reasonable claim."

Presidency Commissioner to Sunderbans Commissioner, No. 262, dated the 12th February 1856.

E. g., Tarabuniya. Sunderbans Commissioner to Presidency Commissioner, No. 508, dated the 5th December 1855.

Presidency Commissioner to Sunderbans Commissioner, No. 17, dated the 22nd August 1854.

Presidency Commissioner to Sunderbans Commissioner, No. 16, dated the 22nd August 1854.

Presidency Commissioner to Sunderbans Commissioner, No. 10, dated the 22nd August 1855.—See paragraph 254 above.

Presidency Commissioner to Sunderbans Commissioner, No. 214, dated the 24th December 1855.—See paragraph 254 above.

Presidency Commissioner to Sunderbans Commissioner, No. 278, dated the 27th October 1853.

See Sunderbans Commissioner to Sunderbans Commissioner, No. 278, dated the 11th July 1856.

Presidency Commissioner to Sunderbans Commissioner, No. 210, dated the 16th April 1855.

Board of Revenue to Presidency Commissioner, No. 136, dated the 16th March 1855.

Sunderbans Commissioner to Presidency Commissioner, No. 37, dated the 16th February 1856.

The Presidency Commissioner held that the new rules did not apply to resumed estates, whether within or without the boundary. He informed Mr. Reily that Government could not demand a higher rate than was specified in the pattas, and that, if none were mentioned, the assessment might be made at the pargana rates.* The assessment was not to be fixed at 8 annas merely because that had till then been the uniform rate, but it might be reduced according to local cirit might be reduced according to local cir-cumstances.† The commuted leases were then cancelled and the mahals were settled

agreeably to local rates, some at 8, some at 6, but most at 7 annas, for a period of 99 years. Commutation had also been carried out in Khondkarber, Baintala and. Manikkhola, but the Board disallowed it, expressly declaring that resumed mahals acquired no special character by being comprised within the Sunderbans boundary.‡ The resettlement in these mahals was, however, made at 2 annas.§ In the six chaks—Phulhata, etc.—the farmer was pronounced entitled as abadkar to the benefit of the 1853 entitled as abadkar to the benefit of the 1853 rules.

*Presidency Commissioner to Sunderbans Commissioner, No. 10, dated the 5th May and No. 89, dated the 28th June 1856.
†Presidency Commissioner to Sunderbans Commissioner, No. 100, dated the 25th July and No. 183, dated the 21st August 1856.
‡Sunderbans Commissioner to Presidency Commissioner, No. 387, dated the 10th November 1856, and Presidency Commissioner to Sunderbans Commissioner, No. 366, dated the 24th Arpli 1857.

§Sunderbans Commissioner to Presidency Commissioner, No. 16, dated the 22nd May 1857.

§Presidency Commissioner to Sunderbans Commissioner, No. 286, dated the 20th January 1857.

Government Estates of the Khuina Collectorate under Resettlement of Land Revenue.

| serial | Estate | N(No.)) | Name of thans with J. L. | Area in | Former | Present | Period of settlement. | | Nature of |
|--------|---------|--|---|--------------------|-------------------|-------------------|-----------------------|------|-------------------|
| No. | No. | Name of Mahal. | No. of mauzas in which the estate occurs. | acres. | revenue. | revenue. | From | То | settlement. |
| 1 | 2 | 3 | <u> </u> | <u>te</u> | • 6 | 7 | 8 | 9 | 10 |
| | , , | | | •A. D. | Rs. A. P. | Rs. A. P. | | | • |
| 1 | 164 | Khas Mahai Lakshmi- nathpur and others. | 1. Lakshminathpur (Bara), J. L. No 171, P. S. Kaliganj. 2. Paruigachha, J. L. No. 175, P. S. Kaliganj. 3. Jharurkhamar, J. L. No. 174, P. S. Kaliganj. 4. Ubhakur, J. L. No. 170, P. S. Kaliganj. 5. Mautala, J. L. No. 172, P. S. Kaliganj. 6. Kuslia, J. L. No. 178, P. S. Kaliganj. 7. Sripur, J. L. No. 180, P. S. Kaliganj. 8. Mukunda Madhusudanpur, J. L. No. 180, P. S. Kaliganj. 9. Thekra, J. L. No. 227, P. S. Kaliganj. 10. Nengi, J. L. No. 231, P. S. Kaliganj. 11. Bejua, J. L. No. 220, P. S. Kaliganj. 12. Faridpur, J. L. No. 230, P. S. Kaliganj. 13. Bansdaha, J. L. No. 221, P. S. Kaliganj. 14. Fatepur, J. L. No. 221, P. S. Kaliganj. 15. Tentulia J. L. No. 191, P. S. Kaliganj. 16. Tulakati, J. L. No. 194, P. S. Kaliganj. 17. Srikala, J. L. No. 179, P. S. Kaliganj. 18. Gobindapur (Barn), J. L. No. 179, P. S. Kaliganj. 19. No. 179, P. S. Kaliganj. 10. 179, P. S. Kaliganj. 11. Srikala, J. L. No. 179, P. S. Kaliganj. 12. No. 179, P. S. Kaliganj. 13. L. No. 179, P. S. Kaliganj. | 61 72 | Rs. A. P. 292 3 0 | Rs. A. P. 238 4 0 | 1925 | 1910 | Khas manage-ment. |
| 2 | 232 | Khas Mahal Khanka | Kaliganj. 19. Bhcdrakhali, J. L. No. 54, P. S. Kaliganj. 20. Sonatala, J. L. No. 216, P. S. Kaliganj. 21. Kalijoga, J. L. No. 51, P. S. Kaliganj. 22. Pania, J. L. No. 168, P. S. Kaliganj. 23. Pania, J. L. No. 168, P. S. Kaliganj. 24. No. 171, P. S. Dumuria. 2 Angardaha, J. L. No. 27, P. S. Dumuria. 3. Char Rupsa, J. L. No. 24, P. S. Khulna. 4. Alalpur, J. L. No. 40, P. S. Khulna. 5. Khanka, J. L. No. 40, P. S. Khulna. 7. Samantasena, J. L. No. 47, P. S. Khulna. 8. Ukhra, J. L. No. 41, P. S. Dumuria. 9. Par Solua, J. L. No. 37, P. S. Khulna. 9. Par Solua, J. L. No. 38, P. S. Bantaghata. 10. Ballahara, J. L. No. 18, P. S. Dumuria. 10. Ballahara, J. L. No. 118, P. S. Dumuria. | . 633 93 | 1,970 : 9 | 2,122 9 0 | 1925 | 1940 | Ditto. |
| 3 | 353 | Khas Mahal Ghona | Ghqua, J. L. No. 19, P. S. Satkhira. | 27 90 | 85 14 9 | 97 9 0 | 1925 | 1940 | Ditto. |
| 7 | <u></u> | | | | | | | | |

APPENDIX IX (a)—contd.

Government Estates of the Khuina Cellecterate under Resettlement et Land Revenue-contd.

| Scrial | Estate | Name of Mahal. | Name of thans with J. L. No. of mauzas in | Area in | Former | Present | Period settlen | | Nature of |
|--------|----------|---|--|---------|---------------|------------------------|-------------------|--------------|-----------------------|
| No. | No. | Transit of Mariner | which the estate occurs. | acres. | revenue. | revenue. | From | То | settlement. |
| _1_ | 2 | 3 | 4. | 5 • | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 |
| • | • | | | • A. D. | Rs. a. p. | Rs. A. P. | | | • |
| 4 | 391 | Khas Mahal Tentulia, Labsa and others. | 1. Labsa, J. L. No. 88, P. S. Satkhira. | 170 42 | • 366 11 3 | 366 14 0 | 1925 | 1940 | Khas manage- ment. |
| • | | | Mirzapur Banaghata, J. L. No. 83, P. S. Satkhira. Mathurapur, J. L. No. 87 P. S. Satkhira. Benerpota, J. L. | | | | | | |
| | | | 4. Bencrpota, J. L. No. 89, P. S. Sat- khira. 5. Kasimpur, J. L. No. 93, P. S. Sat- khira. 6. Palaspol. J. L. | • | | | | | |
| · | . • | | 6. Palaspol, J. L. No. 94, P. S. Sat- khira. 7. Magura Gopinath- pur, J. L. 90, P. S. Satkhira. 8. Jografpur, J. L. No. 84, P. S. Sat- khira. 9. Bhomra, J. L. No. | · | | | | | |
| | • | ,* | Bhomra, J. L. No. 27, P. S. Sakkhira. Tentulia, J. L. No. 194 P. S. Kaliganj. Char Debhata, J. L. No. 14, P. S. Debhata. Char Chhutipur, J. L. No. 52, P. S. Debhata. Khanji Raghunathpur, J. L. No. 52, R. S. S. Kaliganj. Khanji Raghunathpur, J. L. No. 1, P. S. Kaliganj. | | | | | | |
| , | | Khas Mahal Kshetrapara | S. Kaliganj. 14. Suhilpur, J. L. No. 19, P. S. Kaliganj. Kshetrapara, J. L. | 0 82 | 170 | 470 | 1925 | 1940 | Ditto. |
| 5 | 510 | Kilas maliai Koliculapaia | No.111, P. S. Kalaroa. | 0 %2 | | 1 10 | 155 | 1140 | D1000, |
| 6 | 696 | Khas Mahal Labsa (Ch- hota). | Lahsa, J. L. No. 88, P. S. Satkhira. | 0 35 | 1 0 0 | 1 10 0 | 1925 | 1940 | Ditto. |
| . 7 | 779 | Sundarbans Bajcapti Mahal Ahladipur. | Ahladipur, J. L. No. 122, P.S. Dumuria. | 790 18 | 530 0 0 | 1,769 15 0 | 1925 | 1940 | Ditto. |
| s | 808 | Khas Mahal Kalidaspur, etc. | 1. Kalidaspur, J. I., No. 80, P. S. Paik- gachhu. 2. Kantabunia, J. L. No. 83, P. S. Paik- gachha. 3. Chak Kaoali, J. L. No. 81, P. S. Paik- gachla. | | 1,336 0 0 | 1,724 1 0 | 1925 | 1940 | Ditto. |
| ø | 806 | Sundarbans Bajcapti Mahai Chak Kakarbil. | Kakarbii, J. L. No. 86, P. S. Kachua. | 2 64 | 800 | 11 4 0 | 1926 | 1941 | Ditt o. |
| 10 | 813 | Sundarbans Bajcapti Mahal Kharia Dhe- msakhali. | Kharia Dhemsakhali, J. L. No. 92, P. S. Paik- gachha, | | 7,780 0 0 | 9,867 4 9 9,916 1 0 | 1 | 1930 1940 | Ditto. |
| 11 | 835 | Khas Mahal Char Magura | Magura, J. L. No. 71, P. S. Tala. | 14 84 | 10 0 0 | 21 6 0 | 1025 | 1940 | Ditte. |
| 12 | 836 | Khas Mahai Char Jamuna | Char Jamuna, J. L. No. 53, P. S. Kaliganj. | 85 89 | 192 0 0 | 339 15 0 411 15 0 | 1 | 1930 1940 | Ditto. |
| • 13 | 1 | Sundarbans B ajca pti Mahal Jealmari. | Chak Betkanta, J. L. No. 155, P. S. Rampal. | 050 70 | 920 0 0 | 2,776 11 0 | 1926 | 1941 | Ditto. |
| 14 | 1 | Khas Mahal Chakla Teli- khali. | Chakla Telikhali. J. L. No. 158, P. S. Asa- suni. | | 93 0 3 | 92 0 (| 1925 | 1940 | Ditto. |
| 15 | 856 | Sundarbans Bajcapti Ma- hal Chak Teligati. | Chak Teligati, J. L. No. 15, P. S. Morrell- ganj. | 1,804 3 | 3,782 0 0 | 8,250 3 6 | 1926 | 1941 | Ditto. |
| . 16 | 935 | Sundarbans Bajcapti Ma- hal Chak Surnai. | Chak Surnal, J. L. No 33, P. S. Paikgachha. | . 150 1 | 200 0 0 | 311 1 (| 1925 | 1940 | Ditto. |
| - | <u> </u> | <u> </u> | | .1 | | | 1 | | |

APPENDIX IX (a)—tontd.

Government Estates of the Khuina Gollectorate under Resettlement of Land Revenue_contd.

| u sala1 | 13-4-4- | | Name of thana with J. L. | Area in | , Former | Present | Period of settlement. | | Nature of settlement. |
|---------------|---------------|--|---|----------|-------------------|------------------------|-----------------------|--------------|--|
| Serial No. | Estate No. | Name of Mahal. | No. of mauzas in which the estate occurs. | acres. | revenue. | revenue. | From | To | settlement. |
| _1_ | 2 | 3 | 4 (| <u> </u> | <u>*6</u> | 7 | -8 | 9 | 10 |
| | , 0 | | a completely 1 1 | AA. D. | Rs. A. P. | Rs. A. r. | 1925 | 1040 | e Khas manago- |
| 17 | 971 | • | Chandkhall, J. L. No. 70, P. S. Paik-gachha. Kanuardanga, J. L. No. 82, P. S. Paik-gachha. Garerdanga, J. L. No. 98, P. S. Paik-gachha. Sripur, J. L. No. 97, P. S. Paik-gachha. Sripur, J. L. No. 97, P. S. Paik-gachha. Chandmukhi, J. L. No. 96, P. S. Paik-gachha. Fedurabad, J. L. No. 103, P. S. Paik-gachha. Fatepur, J. L. No. 100, P. S. Paik-gachha. Dongabhanga, J. L. No. 102, P. S. Paik-gachha. Dhemsakhali, J. L. No. 106, P. S. Paik-gachha. Chak Narikeltala, J. L. No. 106, P. S. Paik-gachha. Kaoali, J. L. No. 109, P. S. Paik-gachha. | 1,757 81 | 2,591 14 0 | 2,803 2 0 | 1925 | 1040 | ment. |
| 18 | 978 | Khas Mahal Char Baniari | 1. Char Banlari, J. L. No. 11, P.S. Kachua. 2. Char Hoglabunia, J. L. No. 91, P. S. Morreliganj. 3. Banlari, J. L. No. 185, P. S. Nazirpur (District Bakarganj). | 3,730 18 | 10,317 0 0 | 12,815 15 0 | 1926 | 1941 | Ditto. |
| 19 | 984 | Khas Mahal Mahmud- abad. | Hatiardanga, J. L. No. 129, P. S. Paikgachhā. Gajalia, J. L. No. 93, P. S. Paikgachha. Kalua, J. L. No. 94, P. S. Palkgachha. Kaya Chhitibunia, J. L. No. 86, P. S. Paikgachha. Maukhali, J. L. No. 105, P. S. Paikgachha. | 3,483 94 | 5,906 10 3 | 6,012-15 0 | 1925 | 1940 | Ditta. |
| 20 | 1,020 | Khas Mahai Island Char Sonakur. | Char Sonakur, J. L. No. 49, P. S. Kachua. | 142 11 | 224 10 9 | 267 14 0 | 1926 | 1941 | Ditto. |
| 21 | 857 | Sundarbans Bajcapti Ma- hal Dargatala. | Swaranpur, J. L. No. 135, P. S. Asasuni. | 212 35 | 251 0 0 | 447 0 0 | 1925 | 1940 | Farminy. |
| . 22 | 881 | Sundarbans Bajeapti Ma- hai Basudebpur and others. | Basudebpur, J. L. No. 147, P. S. Asasuni. Ballabhpur, J. L. No. 140, P. S. Asasuni. Rajapur, J. L. No. 145, P. S. Asasuni. | 162 04 | 212 0 0 | 407 0 0 | 1925 | 1940 | Ditto |
| 23 | 891 | Bajcapti Mahal Purba Biralakshi. | Purba Biralakshi, J. L. No. 105, P. S. Syam- nagar. | 315* 21 | 504 U 0 | 964 0 0 | 1925 | 1940 | Ditto. |
| 24 | 939 | Sundarbans Bajcapti Ma- hal Saranpur. | Swaranpur, J. L. No. 135, P. S. Asasuni. | 190 93 | 246 0 0 | 413 0 0 | 1925 | 1940 | Ditto. |
| 25 | • 969 | Sundarbans Bajcapti Ma- hal Par Madartala. | Par Madartala, J. L. No. 104, P. S. Dumuria. | 505 78 | 218 0 0 | 1,060 0 0 | 1925 | 1940 | Ditto. |
| 26 | 998 | Sundarbans Abadkari Mahal Uttar Bainbari. | Uttar Bainbari, J. I No. 190, P. S. Paik- gachha. | 952 73 | 534 0 0 | 1,116 0 0 | 1926 | 1956 | Held under targe capitalist rules of 1879. |
| 27 | 999 | Sundarbans Abadkari Mahal Dakshin Bain- bari. | Dakshin Bainbari, J. l No. 191, P. S. Paik gachha. | 1,256 25 | 703 0 0 | 1,566 0 0 | 1926 | 1956 | Ditto. |
| 28 | 995 | Sundarbans Abadkari Mahai Kumkhali. | Kumkhali, J. L. No. 188, P. S. Paikgadina. | 2,025 88 | 3,39 5 8 0 | 3,835 0 0 | 1926 | 1956 | Held under small capitalist rules of 1879. |
| 29 | 996 | Sundarbans Abadkari Mahal Bhagba. | Bhagba, J. L. No. 192, P. S. Paikgachha. | 787 42 | 942 0 0 | 1,389 0 0 | 1926 | 1956 | Ditto. |
| 30 | 997 | Sundarbans Abadkari Mahai Gunari. | Gunari, J. L. No. 11, P. S. Dacope. | 4,150 47 | 5,550 0 0 | 7,239 0 0 | 1925 | 1955 | Ditto. |
| 31 | 1000 | Khas Mahai West (Pas- chim) Hadda. | Hadda, J. L. No. 189, P. S. Palkgachha. | 1,872 54 | 2,599 0 0 | 2,599 0 0 3,717 0 0 | 1925 1930 | 1930 1955 | Ditto; |

APPENDIX IX (a)—contd.

Government Estates of the Khuina Collectorate under Resettlement of Land Revenue—contd.

| Serial No. | Estate No. | Name of Mahal. | Name of thana-with J. L. No. of manzas in which the estate occurs. | Area in acres. | Former revenue. | Present revenue. | Period of settlement. | Nature of settlement. |
|---------------|---------------|--|--|----------------|--------------------|-------------------------------|-----------------------|---|
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | From To | 10 |
| | • | | | A. D. | Rs. A. P. | Rн. а. р. | | |
| 32 | 1024 | Khas Mahal East Hadda | Haddu, J. L. No. 189, P. S. Paikgachha. | 1,573 50 | 2,180 0 0 | 2,180 0 0 2,835 0 0 | 1925 1930 1955 | Held under small capita- list rules of 1879. |
| •33 | 781 | Sundarbans Bajcapti Muhal Alakdia Chak. | Alakdia, J. L. No. 59, P. S. Paikguchha. | 43 32 | 99 0 0 | 118 0 0 | 1925 1940 | Talukdari settle- ment. |
| 34 | 783 | Sundarbaus Bajcapti Mahal Abdul Rasul- pur. | Abdul Rasulpur, J. L. No. 146, P. S. Rampal. | 651 60 | 1,530 0 0 | 2,341 0 0 | 1926 1941 | Ditto. |
| 85 | 784 | Sundarbans Bajcapti Mahal Chak Betangi, | Gumantali, J. L. No. 111, P. S. Synnmagar. | 41 66 | 102 12 0 | 204 0 0 | 1925 1940 | Ditto. |
| 36 | 786 | Sundarbans Bajcapti Mahal Karulia, | Karulia, J. L. No. 67, P. S. Paikgachha, | 399 51 | 510 0 0 | 670 O O | 1925 1940 | Ditto. |
| 37 | 802 | Sundarbans Baje a pti Mahal Chak Kakarbil, I. | Kakarbil, J. L. No. 86, P. S. Kachua. | 109 98 | 382 0 0 | 406 0 0 | 1926 1941 | Ditto |
| 38 4 | 803 | Sundarbans Bajcapti Mahal Chak Kakarbil, 11. | Ditto | 21 50 | 68 () () | 72 0 0 | 1926 1941 | Ditto. |
| 39 | 804 | Sundarbans Bajcarsi Mahal Chak Kakarbil, 111, | Ditto | 266 18 | 522 0 0 | 962 0 0 | 1927 1942 | Ditto. |
| 40 | 805 | Sundarbans Bajcapti Mahal Chak Kakarbil, IV. | Ditto | 10 01 | 37 0 0 | 44 0 0 | 1926 1941 | Ditto. |
| 41 | 809 | Sundarbans Bajcapti Mahul Kumibunia. | Kule Srikanthapur, J. L. No. 71, P. S. Paik- gachha. | 81 27 | 105 0 0 | 125 0 0 | 1925 1940 | Ditto. |
| 42 | ×II | Sundarbans Bajcapti Mahal Kaipukuria. | Kaipukuria, J. L. No. 173, P. S. Dumuria. | 285 72 | 318 0 0 | 412 0 0 | 1925 1940 | Ditto. |
| 43 | 815 | Sumlarbans Bajcapti Mahal Khagrabunia. | Khagrabunia, J. L. No. 174, P. S. Dunuria. | 286 17 | 358 0 0 | 509 0 0 | 1925 1940 | Ditto. |
| 44 | 829 | Sundarbans Bajcapti Mahal Jabakhali, | Gumantali, J. L. No. 111, P. S. Syannagur, | 5 32 | 18 0 0 | 23 0 0 | 1925 1940 | Ditto. |
| 45 | 831 | Sundarbans Rajeapti Mahal Guachhoba. | Guachhoba, J. L. No. 159, P. S. Palkgachba. | 610 47 | 781 0 0 | 1,058 0 0 | 1925 1940 | Ditto. |
| 46 | 832 | Sundarbans Bajcapti Mahai Geubuniu. | Geubunia, J. L. No. 166, P. S. Paikgaeldia. | 504 48 | 552 0 0 | 893 0 0 | 1925 1940 | Ditto. |
| 47 | 838 | Sundarbans Bajcapti Muhul Chukri Bakri. | Chakri Bakri, J. L. No. 165, P. S. Paikgachim. | 193 61 | 208 0 0 | 321 0 0 | 1925 1940 | Ditto. |
| 48 | 840 | Sundarbans Bajcapti Mahal Charadaha. | Charadaha, J. L. No. 133, P. S. Rampal. | 380 91 | 861 0 0 | 1,437 0 0 | 1926 1941 | Ditto. |
| 49 | 841 | Sundarbaus Bajcapti Mahai Keoratala. | Keoratala, J. L. No. 87, P. S. Paikgachha. | 464 02 | 583 0 0 | 670 0 0 862 0 0 | | Dittoe |
| 50 | 842 | Sundarbaus Bajcapti Mahal Matan. | Matan, J. L. No. 88, P. S. Paikgachha. | 111 24 | 189 0 0 | 222 0 0 | 1925 1940 | Ditto. |
| 51 | 843 | Suudarbans Bajenpti Mahai Chak Chawi- mukbi. | Chak Chandmukhi, J. L. No. 69, P. S. Paik- gachha. | 207 09 | 310 0 0 | 399 0 0 | 1925 1940 | Ditto. |
| 52 | 860 | Sundarbans Bajcapti Mahal Nasimabad. | Nasimabad, J. L. No. 118, P. S. Asasuni. | 390 55 | 579 0 0 | 926 0 0 | 1925 1940 | Ditto. |
| 53 | 863 | Sundarlmus Bajrapti Mahal Nagar Jamira. | Madiner Abad, J. L. No. 233, P. S. Paikgachha. | 1,264 62 | 1,300 0 0 | 2,241 0 0 | 1925 1940 | Ditto. |
| 64 | 864 | Sundarbans Bajcupti Maha) Chak Narasing Datterber. | Chuk Narasinghadatter- ber, J. L. No. 143, P. S. Rampal. | 193 98 | 462 0 0 | 526 0 0 | 1926 1941 | Ditto. |
| 55 | 860 | Sundarlans Bajeapti Mahal Paucha Maler- ber, | Chak Punchumalerber, J. L. No. 144, P. S. Rampal. | 759 85 | 1,654 0 0 | 2,446 0 0 | 1926 1941 | Ditto. |
| • 56 | 871 | Sundarbans Bajcupti Mahal Pana, | Pana, J. L. No. 153, P. S. Paikgacha. | 613 12 | 750 0 0 | 1,289 0 0 | 1925 1940 | Ditto. |
| 57 | 884 | Sundarbans Bajcapti Mahal Biasarabad. | Baisar Abad, J. L. No. 35, P. S. Paikgachha. | 394 23 | 549 0 0 | 762 0 0 | 1925 1940 | Ditto. |
| ās | 885 | Sundarbaus Bajcapti Mahal Basakhall. | Basakhali, J. L. No. 147, P. S. Paikgachha. | 75 03 | 128 0 0 | 161 0 0 | 1925 1940 | Ditto. |
| 50 | 886 | Sundarbans Bajcapti Mahal Bahirbunia. | Bahirbunia, J. L. No. 155, P. S. Paikgachha. | 272 44 | 390 0 0 | 533 0 0 | 1925 1940 | Ditto. |
| 60 | 887 | Khas Mahal Bagardar South. | Dakshin Bagardar, J. L. No. 177, P. S. Dum- uria. | 236 55 | 239 0 0 | 390 0 0 | 1925 1940 | Ditto. |
| | <u> </u> | | |] | |] | | |

APPENDIX IX (a)—contd.

Government Estates of the Khuina Collectorate under Resettlement of Land Revenue-contd.

| Serial | Estate No. | Name of Mahal. | Name of thana with J. L. No. of mauzas in | Area in acres. | Former revenue. | Present revenuo. | Periosettler | | Nature of settlement. |
|---------------|---------------|---|---|----------------|-----------------|---------------------|--------------|---------|----------------------------|
| | | , <u>,</u> | which the estate occurs. | | | | From 8 | To 9 | |
| _1 | 2 | 3 | 4 | | . 6 | 7 | | | 10 |
| | , , | | | , A. D. | Rs. A. P. | Rs. A. P. | | | • |
| 61 | 889 | Sundarbans Abadkari Mahai Badiarkona. | Chak Chandmukhi, J. L. No. 69, P. S. Paik- gachha. | 23 67 | 48 0 0 | 5 3 0 0 | 1925 | 1940 | Talukdari settle- ment. |
| 62 | 890 | Sundarbans Bajcapti Mahal Bansbaria. | Bansbaria, J. L. No. 153, P. S. Rampal, | 1,632 08 | 3,069 0 0 | 6,291 0 0 | 1927 | 1942 | Ditto. |
| 63 | 894 | Sundarbans Bajcapti Mahal Biharibhita. | Basakhali, J. L. No. 147, P. S. Palkgacha. | 73 39 | 172 0 0 | 199 0 0 | 1925 | 1940 | Ditto. |
| 64 | 895 | Sundarbans Bajcapti Mahal Chak Boalmari. | Kule Srikanthapur, J. L. No. 71, P. S. Palk- gachha. | 73 85 | 125 0 0 | 187 0 0 | 1925 | 1940 | Ditto. |
| 65 | 902 | Sundarbans Bajeapti Mahal Bhairabdanga. | Bhairabdanga, J. L. No. 47, P. S. Rampal. | í 18 72 | 229 0 0 | 242 0 0 | 1926 | 1941 | Ditto. |
| 66 | 906 | Sundarbans Bajeapti Mahal Mallikerber. | Mallikerber, J. L. No. 150, P. S. Rampal. | 2,060 93 | 4,051 0 0 | 7,164 0 0 | 1927 | 1942 | Ditto. |
| 67 | 915 | Sundarbans Bajcapti Mahal Laksmikhola. | Lakshmikhola, J. L. No. 90, P. S. Palk- gachha. | 657 20 | 787 0 0 | 1,026 0 0 | 1925 | 1940 | Ditto. |
| 68 | 933 | Sundarbans Bajeapti Mahai Siberbati. | Siberbati, J. L. No. 60, P. S. Paikgachha. | 331 31 | 472 0 0 | 582 0 0 | 1925 | 1940 | Ditto. |
| 69 | 842 | Sundarbans Bajeapti Mahal Sing jo r, | Basakhali, J. L. No. 147, P. S. Paikgachha. | 117 84 | 246 0 0 | 285 0 0 | 1925 | 1940 | Ditto. |
| 70 | 946 | Sundarbans Bajcapti Mahal Haldaha, | Haldaha, J. L. No. 129, P. S. Rampal. | 397 75 | 476 0 0 | 1,006 0 0 | 1926 | 1941 | Ditto. |
| 71 | 949 | Sundarbans Bajcapti Mahal Haria. | Haria, J. L. No. 148, P. S. Paikgachha. Tentultala, J. L. No. 152, P. S. Paikgachha. Dholal, J. L. No. 157, P. S. Paikgachha. Sankardana, J. L. No. 151, P. S. Paik- gachha. | 3,056 05 | 3,005 0 0 | 5,559 U Q | 1925 | 1910 | Ditto. |
| 72 | 951 | Sundarban s Bajcapti Mahal Helakhardanga. | Kule Srikanthapur, J. L. No. 71, P. S. Palk- gachha. | 29 41 | 56 O O | 62 0 0 | 1925 | 1940 | Ditto. |
| 73 | 782 | Sundarbans Bajcapti Mahal Alamtala. | Alamtala, J. L. No. 91, P. S. Paikgachha. | 586 66 | 907 0 0 | 931 0 0 | 1925 | 1940 | Malguzari settle- ment. |
| 74 | 787 | Sundarbans Bajcapti Mahal Orabunia. | Orabunia, J. L. No. 85, P. S. Paikgachha. | 407 38 | 460 0 0 | 549 0 0 | 1925 | 1940 | Ditto. |
| 75 | 794 | Sundarbans Bajeapti Mahal Chak Guptir- dia. | Chak Guptirdia, J. L. No. 148, P. S. Rampal. | 144 93 | 373 0 0 | 476 0 0 | 1926 | 1941 | Ditto. |
| 76 | 797 | Sundarbans Bajcapti Mahai Kasimari. | Kasimari, J. L. No. 103, P. S. Syamnagar, | 1,469 46 | 2,150 0 0 | 3,280 0 0 | 1925 | 1940 | Ditto, |
| 77 | 799 | Sundarbans Bajeapti Mahal Katalia. | Katalia, J. L. No. 123, P. S. Dumuria. | 680 18 | 700 0 0 | 1,052 0 0 | 1025 | 1940 | Ditto. |
| 78 | 800 | Sundarb a ns Abadk a ri Mahal Srinagar Kalinagar. | Srinagar Kalinagar, J. L. No. 15, P. S. Da- cope. | 5,385 31 | 4,399 0 0 | 7,372 0 0 | 1025 | 1940 | Ditto. |
| 79 | 807 | Sundarbans Bajcapti Mahal Kalikabari. | Kalikabari, J. L. No. 156, P. S. Rampal. | 713 12 | 1,734 0 0 | 2,488 0 0 | 1926 | 1940 | Ditto, |
| 80 | 812 | Sundarbans Bajcapti Mahal Chak Korakata. | Korakata, J. L. No. 119, P. S. Dumurla. | 626 72 | 176 0 0 | 1,040 0 0 | 1925 | 1940 | Ditto. |
| 81 | 821 | Sundarbans Bajcapti Mahal Khepna. | Khepna, J. L. No. 130, P. S. Paikgachha. | 400 87 | 574 0 0 | 738 0 0 | 1925 | 1940 | Ditto, |
| 82 | 825 | Sundarbans Bajcapti Mahal Gazinagar. | Gazinagar, J. L. No. 184, P. S. Dumuria. | 231 61 | 300 0 0 | 335 0 0 | 1925 | 1940 | Ditto. |
| 83 | 830 | Sundarbans Bajcaptl Mahal Bilgodaria. | Kasimari, J. L. No. 103, P. S. Syamna- gar. | 355 35 | 462 0 0 | 760 0 0 | 1925 | 1940 | Ditto. |
| 84 | 844 | Sundarbans Bajcapti Mahai Seora Chin- grakhali. | Scora, J. L. No. 208, P. S. Palkgacha. | 358 02 | 554 0 0 | 827 0 0 | 1925 | 1940 | Ditto. |
| 85 | 847 | Sundarbans Bajcapti Mahal Mandartala. | Mandartala, J. L. No. 124, P. S. Dumurla. | 1,944 94 | 1,182 0 0 | 3,633 0 0 | 1925 | 1940 | Ditto. |
| 86 | 859 | Sundarbans Bajcapti Mahal Dhoramari Abad | Dharamari Abad, J. L. No. 57, P. S. Paik- gachha. | 87 83 | 105 0 0 | 1 26 0 0 | 1925 | 1940 | Ditto. |
| 87 | 861 | Sundarbans Bajeapti Mahal Chak Noyan- tala. | Chak Noyantala, J. L. No. 34, P. S. Palkga- chha. | 188 21 | 227 0 0 | 245 0 0 | 1925 | 1940 | Ditto. |
| 88 | 879 | 1 " | Parmagurkhali, J. L. No. 121, P. S. Dumu- ria. | 410 47 | 857 0 0 | 538 0 0 | 1925 | 1940 | Ditto. |
| - | <u> </u> | <u> </u> | | | <u> </u> | <u> </u> | | | |

APPENDIX IX (a)—concld.

Government Estates of the Khulna Collectorate under Resettlement of Land Revenue—concld.

| Serial No. | Estate No. | Name of Mahal. | Name of thans with J. L. No. of mauzas in | Area | | For | | | Present revenue, | | | | od of ement. | Nature of |
|---------------|---------------|--|---|-------|----|-------|------|----|---------------------|----|------|------|-----------------|----------------------------|
| 110. | 2 | 6 6 6 | which the estate occurs. | acre | 8. | revei | oue. | • | | | From | То | settlement. | |
| _1_ | 2 | 3 . | 1) | 5 | , | 6 | | | 7 | | | 8 | 9 | 10 |
| • | • | | <u>.</u> | | | | | | 11 | | | | | . , |
| | • | | | " Л. | D. | Rs. | Α. | Р. | Rs. | Α. | Р. | | | |
| 89 | 872 | Sundarbans Bajeapti Mahal Putimari. | Putimari, J. L. No. 157, P. S. Palkgachha. | 1,204 | 87 | 1,977 | 0 | 0 | 2,370 | 0 | 0 | 1925 | 1940 | Malguzari settle- ment. |
| 90 | 879 | Sundarbans Bajcapti Mahal Badan Hal- dar Ber, | Badan Haldar Ber, J. L. No. 178, P. S. Bagerhat, | 135 | 18 | 326 | 0 | 0 | 845 | 0 | 0 | 1926 | 1941 | Ditto. |
| 91 | 888 | Khus Mahal Purba Bajua | Bajua, J. L. No. 19, P. S. Dacope. | 1,668 | 56 | 3,342 | 0 | 0 | 5,208 | 0 | 0 | 1925 | 1940 | Ditto. |
| 92 | 892 | Sundarbans Bajcapti Mahal Paschim Bi- rahkshi. | Paschim Biralakshi, J. L. No. 104, P. S. Sy- amimgar. | 316 | 52 | 455 | 0 | 0 | 707 | O | 0 | 1925 | 1940 | Ditto. |
| . 93 | 893 | Sundarbans Bajcapti Mahal Bishmipur. | Chak Bishnupur, J. L. No. 78, P. S. Paik- gachha. | 366 | 29 | 822 | 0 | 0 | 942 | 0 | 0 | 1925 | 1 9 40 | Ditto. |
| 94 | H96 | Sundarbans Bajcapti Mahal Chak Bharbha- ria. | Chak Bharbharia, J. L. No. 56, P. S. Paik- gachha. | 265 | 55 | 315 | 0 | 0 | 474 | 0 | 0 | 1925 | 1940 | Ditto. |
| 95 | 907 | Sundarbans Bajcapti Mahal Chak Magur- khali, | Magurkhali, J. L. No. 120, P. S. Dumuria. | 710 | 12 | 643 | O | 0 | 1,022 | 0 | 0 | 1925 | 1940 | Ditto. |
| 96 | 911 | Sundarbans Bajeapti Mahal Mistridanga. | Chak Mistridanga, J. 1. No. 6. P. S. Morrell- ganj. | 707 | 76 | 1,809 | ø | 0 | 2,533 | 0 | 0 | 1926 | 1941 | Ditto. |
| 97 | 910 | Sundarbans Bajcapti Mahal Laskar. | Laskar, J. L. No. 143, P. S. Paikgachha. | 766 | 24 | 1,131 | 0 | 0 | 1,182 | O | 0 | 1925 | 1940 | Ditto, |
| 98 | 931 | Sundarbans Abadkari Mahal Saheber Abad. | Saheber Abad, J. L. No. 17, P. S. Dacope. | 1,732 | 76 | 1,269 | 0 | 0 | 4,315 | 0 | 0 | 1925 | 1940 | Ditto. |
| 99 | 932 | Sundarbans Bajcapti Mahal Samukpota. | Samukpota, J. L. No. 156, P. S. Paikgachha. | 332 | 51 | 398 | 0 | 0 | 598 | 0 | 0 | 1925 | 1940 | Ditto |
| 100 | 943 | Sundarbans Bajcapti Mahal Kule Srikantha- pur. | Kule Srikanthapur, J. L. No. 71, P. S. Paik- gachba. | 39 | 27 | 50 | 0 | 0 | 55 | 0 | 0 | 1925 | 1940 | Ditto. |
| 101 | 950 | Sundarbans Bajcapti Mahal Hentalbunia. | Hentalbunia, J. L. No. 89, P. S. Paikgachha. | 216 | 46 | 311 | 0 | 0 | 402 | Ð | O | 1925 | 1940 | Ditto. |
| 102 | 953 | Sundurbans Bajcapti Mahal Choradanga. | Choradanga Buranpur, J. L. No. 50, P. S. Paikgachha. | 102 | 81 | 163 | 0 | 0 | 189 | 0 | 0 | 1925 | 1940 | Ditto. |
| 103 | 954 | Sundarbans Bajcapti Mahal Gobindapur. | Gobindapur, J. L. No. 99, P. S. Syamnagar, | 528 | 73 | 701 | 0 | 0 | 1,387 | 0 | 0 | 1925 | 1940 | Ditto. |
| 104 | 956 | Sundarbans Bajcapti Mahal Dighalia. | Dighalia, J. L. No. 164, P. S. Paikgachha. | 312 | 98 | 383 | 0 | 0 | 627 | 0 | 0 | 1925 | 1940 | Ditto. |
| 105 | 974 | Sundarbans Abadkari Mahal Laogalmura. | Nagaimura, J. L. No. 175, P. S. Dumuria. | 230 | 45 | 293 | 0 | 0 | 362 | 0 | 0 | 1925 | 1940 | , Ditto. |

APPENDIX K (b).

Temporarily-settled Private Estates of the Khulna Gollectorate under Resettlement of Land Revenue.

| Serial No. | Estate No. | Name of Mahal. | Name of thana with J. L. No. of mauzas in which the estate occurs. | Area in acres . | Pormer revenue. | Present revenue. | Period settlen | | Nature of settlement. |
|---------------|---------------|--|---|-----------------|--------------------|------------------------|----------------|--------------|----------------------------|
| i | 2 | 3 | 4 • | 5.e. | ď | 7 | 8 | 9 | 10 |
| | , , | | | á, d. | Rs. A. P. | Rs. A. P. | | | • |
| 1 | 777 | Maliki Mahal Char Phultala, | Char Phultala, J. L. No. 71, P. S. Kachua. | 431 57 | 1,166 0 0 | 1,485 0 0 | 1926 | 1941 | Proprietary settlement. |
| 2 | 778 | Mafiki Mahal Gachha Amratala. | Gachha, J. L. No. 24, P. S. Tala. | 81 88 | 50 0 0 | 105 0 0 | 1925 | 1940 | Ditto. |
| 3 | 780 | Sundarbans Abadkari Mahal Atlia. | Atlia, J. L. No. 107, P. S. Syamnagar. | 4,555 09 | 1,236 12 9 | 23,269 0 0 | 1926 | 1941 | Ditto, |
| 4 | 791 | Maliki Mahal Katipara | Katipara, J. L. No. 52, P. S. Paikgachha. | 267 06 | 518 12 9 | 531 0 0 | 1925 | 1940 | Ditto, |
| 5 | 793 | Maliki Mahal Char Kachua. | Char Kachua, J. L. No. 68, P. S. Kachua. | 19 70 | 58 13 6 | 133 0 0 | 1926 | 1941 | Ditto. |
| 6 | 827 | Bajeapti Mahal ('har Gimtakati. | Gimtakati, J. L. No. 58, P. S. Kachua. | 0 80 | 3 0 10 | 4 0 0 | 1926 | 1941 | € Ditto. |
| 7 | 849 | Maliki Mahai Tengra- mari. | 1. Tengramati, J. L. No. 154, P. S. Dumuria. 2. Kapalidanga, J. L. No. 155, P. S. Dumuria. | 85 (8 | 163 0 0 | 128 0 0 | 1925 | 1940 | Ditto, |
| 8 | 850 | Maliki Mahal Char Tengrakhali. | Tengrakhali, J. L. No. 69, P. S. Kachua. | 579 20 | 1,564-136 | 1,988 0 0 | 1926 | 1941 | Ditto. |
| 9 | 851 | Maliki Mahal Dakatia | Dakatia, J. L. No. 8, P. 8, Kachua. | 52 41 | 71 6 6 | 103 0 0 | 1926 | 1941 | Ditto, |
| 10 | 858 | Maliki Mahal Char Dhainagar. | Char Dhalnagar, J. L. No. 61, P. S. Kachua. | 73 06 | 117 10 3 | 280 0 0 | 1926 | 1941 | Ditto. |
| 11 | . 898 | Maliki Mahal Tultala | Taltala, J. L. No. 60. P. S. Khol ia. Gilatala, J. L. No. 59. P. S. Khulia. Fatchpur, J. L. No. 38, P. S. Khulia. | 18 94 | 21 15 6 | 19 0 0 | 1925 | 1940 | Ditto. |
| 12 | 899 | Maliki Mahal Bhairab Nadi Char. | Bhairab Nadi Char, J. L. No. 17, P. S. Fakirhat. | 7 03 10 | 136 2 8 | 283 0 0 | 1926 | 1941 | Ditto. |
| 13 | 901 | Maliki Mahal Char Kant- hali. | 1. Kanthali, J. L. No. No. 23, P. S. Bagerhat, 2. Sotal, J. L. No. 22, P. S. Bagerhat. | 31 90 | 50 0 0 | 123 0 0 | 1926 | 1941 | Ditto. |
| 14 | 903 | Maliki Mahal Char Sahebermet. | Sahebermet, J. L. No. 169, P. S. Rampal. | 80 58 | 22 0 0 | 206 0 0 | 1926 | 1941 | Ditto. |
| 15 | 909 | Bajcapti Mahal (har Malipatan, etc. | 1. Char Malipatan, J. L. No. 73, P. S. Kachua. 2. Dari Char Malipatan, J. L. No. 72, P. S. Kachua. | 274 67 | 788 2 0 | 1,072 0 0 | 1926 | 1941 | Ditto. |
| 16 | 937 | Maiiki Mahal Char Sona- kur. | Char Sonakur, J. L. No. 49, P. S. Kachua. | 1,072 32 | 1,873 5 0 | 3,143 0 0 3,291 0 0 | 1926 1931 | 1931 1941 | Ditto. |
| 17 | 938 | Diara Mahal Char Had- irabad II. | Char Hadirabad, J. L. No. 102, P. S. Baita- ghata. | 85 51 , | 217 11 3 | 466 0 0 | 1925 | 1940 | Ditto. |
| 18 | 948 | Maliki Mahal Char Hazrakhali. | Char Hazrakhali, J. L. No. 56, P. S. Kachua. | 137 23 | 338 8 0 | 383 0 0 | 1926 | 1941 | Ditto. |
| 19 | 975 | Diara Mahal Char Hadi- rabad. | Char Hadirabad, J. L. No. 102, P. S. Baita- ghata. | 131 58 | 207 10 6 | 385 0 0 | 1925 | 1940 | Ditto. |
| , 20 | 981 | Maliki Mahul Bagdia, etc. | 1. Bagdla, J. L. No. 35. P. S. Bagerhat, 2. Akhainagar, J. L. No. 37, P. S. Bagerhat. | 71 40 | 201 3 0 | 189 0 0 192 0 0 | 1926 1931 | 1931 1941 | Ditto. |
| 21 | 989 | Maliki Mahal Char Khonarmet. | 1. Khatali, J. L. No. 3, P. S. Dacope. 2. Khona, J. L. No. 6, P. S. Dacope. 3. Baruikhali, J. L. No. 5, P. S. Dacope. | 2,479 86 | 2,184 0 0 | 5,024 0 0 | 1925 | 1940 | Ditto. |
| 22 | 1027 | Maliki Mahai Char Pania, etc. | Pania, J. L. No. 168, P. S. Kaliganj. Bazargam Rahimpur, J. L. No. 56, P. S. Kaliganj. Mahatpur, J. L. No. 55, P. S. Kaliganj. Pirojuur (Chhota), J. L. No. 52, P. S. Kaliganj. Naraharikati, J. L. No. 167, P. S., Kaliganj. Paramanandakati, J. L. No. 166, P. S. Kaliganj. Jáchajhata, J. L. No. 4, P. S. Syamnagar. | 169 18 | 419 7 6 | 57 4 0 0 | 1925 | 1940 | Ditto. |

APPENDIX IX (b)—concld.

Temporarily-settled Private Estates of the Khuina Collectorate under Resettlement of Land Revenue-concl.t.

| serial No. | Estate No. | Name of Mahal. | Name of thang with J. L. No. of mauzas in which the estate occurs. | Area in acres. | Former revenue. | Present revenue. | Period of settlement. | Nature of settlement. |
|---------------|---------------|--|--|-----------------|----------------------|----------------------|-----------------------|---|
| | | | which the estate occurs. | | | | From To | |
| 1 | 2 | 3 | <u> </u> | 5 | 6 | 7 | 8 . 9 | 10 |
| 23 | 1030 | Maliki Mahai Char Sital- pur. | 1. Sitalpur, J. L. No. 40, P. S. Kaligaoj. 2. Chardaha, J. L. No. | A. D. 309 83 | Rs. A. P. 669 7 3 | Rs. A. P. 858 0 0 | 1925 1940 | Proprietary settlement. |
| • | | v | P. S. Kaliganj. Dija, J. L. No. 87. P. S. Kuliganj. Dudli, J. L. No. 120. P. S. Kaliganj. Khajidaria, J. L. No. 88, P. S. Kaliganj. Anantapar, J. L. No. 3, P. S. Syanonigar. Ichhakur, J. L. L. Chinakur, J. L. L. | | · | | • | |
| | • | | No. 9, P. S. Syam- tongar. 8. Bhurulia, J. L. No. 20, P. S. Syam ragar. 9. Nagbati, J. L. No. 10, P. S. Syam ungar. 10. Badghata, J. L. No. 27, P. S. Syammagar. 11. Majbat Anantapur. | | | | | |
| 24 | 1033 | Maliki Mahai Sonai | J. L. No. 2, P. 8, Symmagar, Char Sonaigharamir, J. | 47 75 | 149 4 6 | 200 0 0 | 1925 1940 | Ditto. |
| 25 | 1035 | Ghuramir Char. Maliki Mahal Char Majhat, etc. | L. No. 165, P. S. Kaliganj. L. Majhat Asantapar, J. L. No. 2, P. S. Syanmagar, | 35 09 | 83 1 0 | 107 0 0 | 1925 1940 | Ditto. |
| 26 | 1036 | Maliki Mahal Char Ray- pur, etc. | Badghata, J. L. No. 27, P. S. Syanmagar. Raypur, J. L. No. 163, P. S. Kaliganj. Chak Nityanandapav. J. L. No. 1, P. S. | 21 70 | 23 7 6 | 42 () () | 1925 1940 | Ditto. |
| 27 | 1037 | Maliki Mahal Chandipur | Syaningar. 1. Chandipur, J. L. No. 94, P. 8. Syaningar. 2. Hulbatpur, J. 1. No. 91, P. 8. 8y | 56 53 | 95 9 0 | 120 0 0 | 1925 1940 | Ditto. |
| 28 | 1039 | Maliki Mahal Ismailpur | ammagar. Ismailpur, J. L. No. 90, | 34 71 | 35 5 6 | 80 0 0 | 1925 1940 | Ditto. |
| 29 | 1040 | Maliki Mahai Char Mahm- | P. S. Syamnagar, Mahmudpar, J. L. No. | 69 61 | 154-14 0 | 200 0 0 | 1925 1940 | Ditto. |
| 30 | 1043 | ndpur. Maliki Mahai Char Ching- | 28, P. S. Syanmagar. Chingrakhali, J. L. No. | 14 94 | 7 3 0 | 21 0 0 | 1925 1940 | Ditto. |
| 31 | 1044 | rakhuli. Maliki Mahal Char Sat- | 42, P. S. Syammagar, Sathasu, J. L. No. 2, P. | 41 94 | 10 13 6 | 62 0 0 | 1925 1940 | Ditto. |
| 32 | 1130 | basu. Maliki Mahal Atlia, 11 | S. Kaliganj. Atlia, J. L. No. 107, P. | 25 88 | M | - 144 0 0 | 1926 1941 | Ditto. |
| 33 | 788 | Part. Maliki Mahal Kasba Mautala. | S. Syanmagar. 1. ichhakur J. L. No. 9 P. S. Syanmagar. 2. Katibarhal, J. L. No. 7, P. S. Syanmagay. | 17 69 | 25 14 n | 75 6 0 | 1925 1935 | Khas manage- ment on the recusance of proprietors. |
| 34 | 866 | Maliki Mahal Char Chandraganti. | Chandraganti, J. L. No. 19, P. S. Khuhua. | 0 49 | 2 10 0 | 2 1 0 | 1 1 | Ditto. |
| 35 | 900 | Maliki Mahai Char Srirampur. | Char Srirampur, J. No. 43, P. S. Khuthaa. Chandraganti, J. L. No. 19, P. S. Khutha. | 9 61 | 77 8 0 | 60 10 6 | 1925 1935 | Ditto. |
| 36 | 968 | Maliki Mahal Char Uthali Gopulpur. | 1. Uthali, J. L. No. 69, P. S. Tala, 2. Gopalpur, J. L. No. 91, P. S. Tala, | 66 75 | 49 14 0 | 89 9 0 | 1925 1935 | Ditto. |
| 37 | 976 | Diara Mahai Char Hadia- rabud 11. | Char Hadirabad, J. L. No. 102, P. S. Baita- ghata. | 4 13 | 840 | 14 0 0 | 1925 1935 | Ditto. |
| 38 | 982 | Maliki Mahal Char Sri- rampur. | Chur Srirampur, J. L. No. 43, P. S. Khulua. | 78 04 | 263 6 9 | 382 12 - 6 | 1025 1935 | Ditto. |
| 39 | 987 | Bajcapti Mahal Subla- raikati. | Subharajkati, J. L. No. 96, P. S. Morrellganj. | 81 07 | 369 0 6 | 38 5 0 | 1 1 | Ditto. |
| 40 | 1023 | Maliki Mahal Char Hog- lapasa. | Hoghipasa, J. L. No. 54, P. S. Morrellgani. | 359 44 | 920 0 0 | 1,790 2 0 | 1 1 | Ditto. |
| 41 | 1025 | Maliki Mahai Bazargram | 1. Bazargram, J. L. No. 42, P. S. Kaligabj. 2. Bhadrakhali, J. L. No. 54, P. S. Kali- | 6 66 | 11 12 0 | 11 4 0 | 1925 1935 | Intu. |
| • 42 | 1031 | Maliki Mahai Chuk Kunchrahati, etc. | ganj. 1. Kanchrahati Naudigram, J. L. No. 22. 2. Chalitaghata, J. L. No. 11, P. S. | 88 62 | 234 4 9 | 409 4 0 | 1925 1935 | Ditto. |
| • | | | Symmagar. 3. Kutibarhal, J. L. No. 7, P. S. Syam- nagar. | | | | 1001 | Disto |
| 48 | 1 | Hasankati. | Hasankati, J. L. No. 164, P. S. Kaliganj. | 2 14 | 1 14 6 | 5 6 0 | 1 1 | l l |
| 44 | 1041 | Maliki Mahai Char Ful- baria, etc. | P. S. Kaliganj. I. Fulbaria, J. L. No. 29, P. S. Syam- | 25 08 | 38 0 0 | 125 0 (| 1925 1935 | Ditw. |
| • | | | 2. Judabpur, J. L. No. 30, P. S. Syam- | | | | • | • |
| . 40 | 5 1042 | Maliki Mahal Char Bara Chingrakhall. | Chingrakhali, J. L. No 42, P. S. Syamnagar. | 106 50 | 62 11 0 | 196 13 | 1925 193 | 5 Ditto. |

APPENDIX X (c).

Government Estates of the Khuina Collectorate not under Settlement of Land Revenue.

| • | | | Name of thana with J. L. No. | | , 2 | Perio settle | | |
|---------------|---------------|--|---|----------------|---------------------|-----------------|----------|---|
| Serial No. | Estate No. | Name of Mahal. | of mauzas in which the estate occurs. | Area in acres. | Present revenue. | From | То | Nature of settlement. |
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | | 8 | 0 |
| | | | Ì | | Rs. A. P. | | | ٠. |
| 1 | 1001 | Khas Mahal Paschim Bajua. | Bajua, J. L. No. 19, P. S. Da- cope. | 1,335 · 79 | 750 0 0 | 1910-11 | 1929-30 | Held under large capita- list rules of 1879. |
| 2 | 1002 | t. Khas Mahal Paschim Dhopadihi. | Dhopadihi, J. L. No 21, P. S. Dacope. | 1,463-10 | 788 0 0 | 1910-11 | 1929-30 | Ditto. |
| 8 | 1003 | Khas Mahal Paschim Dacupi. | Dacupi, J. L. No. 20, P. S. Dacope. | 2,091 · 13 | 1,125 0 0 | 1910-11 | 1929-30 | Ditto. |
| 4 | 1004 | Khas Mahai Purba Dho- padihi. | Dhopadihi, J. L. No. 21, P. 8, Dacope. | 1,453.16 | 788 0 0 | 1910-11 | 1929-30 | Ditto. |
| 5 | 1005 | Khas Mahal Sundarbans 1st Khanda, Lot No. | Harintani, J. L. No. 23, P. S. Dacope. | 1,557-52 | 938 U U | 1912-13 | 1930-31 | Ditto. |
| 6 | 1006 | 225. Khas Mahal Sundarbans 2nd Khanda, Lot No. 225. | Laudubi, J. L. No. 24, P. S. Dacope, | 1,523 · 59 | 938 0 0 | 1912-13 | 1930-31 | C' Ditto. |
| 7 | 1007 | Sundarbans Abadkari Mahal Laudubi. | Laudubi, J. L. No. 24, P. S. Dacope. | 1,501 - 98 | 938 0 0 | 1912-13 | 1930-31 | Ditto. |
| 8 | 1008 | Sundarbans Abadkari Mahal Chila. | Chila, J. L. No.163, P. S. Ram- pal. | 1,618-37 | 1,406 0 0 | 1912-13 | 1930-31 | Ditto. |
| 9 | 1,009 | Ditto | Ditto | 1,377 · 58 | 1,406 0 0 | 1912-13 | 1931-32 | Ditto. |
| 10 | 1010 | Sundarbans Abadkari Mahal Jaymanirgol. | Jaymanirgol, J. L. No. 164, P. S. Rampal. | 1,477 - 39 | 1,350 0 0 | 1890-91 | 1931 -32 | Ditto. |
| 11 | 1011 | Sundarbans Abadkari Mahal Sutarkhali, 2nd | Sutarkhali, J. L. No. 14, P. S. Dacope. | 847-17 | 564 0 0 | 1911-12 | 1929-30 | Ditto. |
| 12 | 1012 | Part. Khas Mahal Sundarbans Lot No. 224, 3rd Part. | Kalabagi Sutarkhall, J. L. No. 13, P. S. Dacope. | 3,216-67 | 1,942 0 0 | 1911-12 | 1929-30 | Ditto. |
| 13 | 1013 | Khas Mahal Sundarbans Lot No. 224, 4th Part. | Nalian, J. L. No. 12, P. S. Da- cope. | 1,523 - 64 | 938 0 0 | 1911-12 | 1929-30 | Ditto. |
| 14 | 1014 | Sundarbans Abadkari Mahal Sutarkhali. | Sutarkhall, J. L. No. 14, P. S. Dacope. | 1,414.46 | 953 0 0 | 1912-13 | 1930-31 | Ditto. |
| 15 | 1016 | Sundarbans Abadkari Mahal Kailasganj. | Kailasganj, J. L. No. 22, P. S. Dacope. | 2,625 · 30 | 1,313 0 0 | 1916-17 | 1934-35 | Ditto. |
| · 16 | 1017 | Khas Mahal Sundarbans Lot No. 225, 5th Part. | Banisanta, J. L. No. 25, P. S. Dacope | 1,810 · 95 | 938 0 0 | 1895-16 | 1934-35 | Ditto. |
| 17 | 1018 | Khas Mahal Sundarbans Lot No. 225, 6th Part. | Banisanta, J. L. No. 25, P. S. Dacope. | 1,817 - 92 | 1.013 0 0 | 1895-96 | 1931-35 | Ditto. |
| 18 | 1019 | Sundarbans Abadkari Mahal Banisanta | Ditto | 2,510.85 | 1,406 0 0 | 1895-96 | 1934-35 | Ditto |
| 19 | 1021 | Sundarbans Abadkari Mahal Kalinchi. | Kalinchi, J. L. No. 114, P. S. Syannagar. | 475 · 88 | 300 0 0 | 1903-04 | 1942-43 | Ditto. |
| 20 | 1064 | Sundarbana Abadkari Mahal Bhetkhali. | Bhetkhall, J. L. No. 78, P. S. Syamnagar. | 2,011-58 | 1,200 0 0 | 1911-12 | 1940-41 | Ditto |
| 21 | 1065 | Mahal Kalkhali | Kaikhali, J. 1 No. 75, P. 8. Syamnagar. | 4,441-11 | 312 0 0 | 1911-12 | 1950-51 | Ditto. |
| 22 | 877 | Khas Mahal Boyarsinga Chak. | Boyarsinga, J. L. No. 103, P. S. Dumuria. | 4,042-36 | 9,168 II G | 1921-22 | 1935-36 | Ditto (Petty settlement.) |
| . 23 | 979 | Sundarbans Abadkari Mahal Baullaghata. | Baullaghata, J. L. No. 222, P. S. Palkgachha. | 185-89 | 250 0 0 | 1902 | 1931-32 | Held under small capita list rules of 1879. |
| 24 | 785 | Sundarbans Bajeapti Mahal Uttar Bagar- dair. | Uttar Bagardair, J. L. No 183, P. S. Dumuria. | 196-44 | 249 0 0 | 1908 | 1937-38 | Malguzari settlement. |
| 25 | 801 | Sundarbans Bajeapti Mahal Chak Kalia. | Kalia, J. L. No. 135, P. S. Rampal. | 803 · 21 | 1,440 0 0 | 1910 | 1929-30 | Ditto. |
| 50 | 833 | Sundarbans Bajeapti Mahal Mustafapur. | Mustafapur. J. L. No. 138, P. S. Rampal. | 1,089-81 | 1,695 0 0 | 1910-11 | 1929-30 | Ditto. |
| 27 | 834 | Myadi Ijara Gurnia Chak. | Ghurnia, J. L. No. 172, P. S. Dumuria. | 382 · 86 | 489 0 0 | 1908 | 1937-38 | Ditto. |
| 28 | 853 | Sundarbans Bajcapti Mahal Taltala Alakdi. | Taltala Alakdi, L. No. 117, P. S. Dumuria. | 372.75 | 450 O () | 1908 | 1937-38 | Ditto. |
| 29 | 795 | Sundarbans Bajcapti Mahal Kapalibandar, | Kapalibandar, J. L. No. 177, P. S. Bagerhat. | 449.00 | 320 13 () | 1892 | 1956-57 | Talukdari settlement. |
| 30 | 798 | Sundarbans Bajeapti Mahal Katamari. | Dakshin Katamari, J. L. No. 145, P. S. Paikgachha, | 164.70 | 285 0 0 | 1908 | 1937-38 | Ditto. |
| 31 | 810 | Sundarbans Bajcapti Mahal Kharaikhali. | Chak Kharaikhali, J. L. No. 8, P.S. Morreliganj. | 2,205 · 92 | 1,897 0 6 | 1860 | 1938-39 | Ditto. |
| | ł | | | | | | | |

173 APPENDX IX (c)—concld.

Government Estates of the Khuina Collectorate pot under Settlement of Land Revenue—concld.

| 1 | . 1 | | | | . 1 | Perio | d of | , |
|---------------|---------------|---|---|----------------|---------------------|-----------|---------|---|
| Serial No. | Estate No. | Name of Mahal. | Name of thana with J. L. No. of mauzas in which the estate occurs. • | Area in acres. | Present revenue. | settler | nent. | Nature of settlement. |
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 8 | From 7 | To 8 | 9 |
| | • | | | | Rs. A. P. | | | |
| 32 | 822 | Sundarbans Bajcapti Mahal Khonkarerber. | 1. Khonkarerber, J. L. No. 157, P. S. Rampal. | 6,552 · 77 | f.697 4 11 | 1856 | 1939-40 | Talukdari settlement. |
| | | | 2. Manik khola, J. L. No. 105, P. S. Morrellganj. | | | | | • |
| .83 | 824 | Sundarbans Bajcapti Mahal Gazalia. | 1. Gazalia, J. L. No. 12, P. S. Morrellganj. 2. Chak Bhatkhali, J. L. No. 13, P. S. Morrellganj. | 1,647+51 | 1 375 2 6 | 1860 | 1938-39 | Ditto. |
| 34 | 826 | Sundarbans Bajcapti Mahal Gazirhat Da- rlabad. | 1. Gazirghat, J. L. No. 14, P. S. Morrellganj. 2. Chapri, J. L. No. 21, P. S. Morrellganj. | 93 3·43 | 896 14 3 | 1858 | 1956-57 | Ditto. |
| 35 | 828 | Khas Mahai Gumantali | Gumantali, J. L. No. 111, P. S. Syanmagar. | 710-59 | 1,735 0 0 | 1908 | 1937-38 | Ditto. |
| 36 | 852 | Sundarbans Bajcapti Mahal Chak Dhul- gati, | Chak Dhuligati, J. L. No. 3, P. 8. Morrellganj. | 665+03 | 855 9 0 | 1863 | 1939-40 | Ditto. |
| 37 | 862 | Sundarbans Bajcapti Mahal Chak Narendra- pur. | Char Narendrapur, J. L. No. 81, P. S. Kachua. | 494 - 78 | 587 4 2 | 1858 | 1956-57 | Ditto, |
| 38 | 865 | Sundarbans Bajcapti Mahal Nazirdia Chak. | Banitali Nazirdla, J. L. No. 2, P. S. Merrellganj, | 145°23 | 112 5 0 | 1863 | 1939-40 | Ditto. |
| , 39 | 873 | Sundarbans Bajcapti Mahal Fakirertakia <i>alias</i> Baraikhali. | Fakirertakia, J. L. No. 98, P. S. Morrellganj. | 1,565+05 | 4,981 5 0 | 1908 | 1937-38 | Ditto. |
| 40 | 905 | Sundarbans Bajcapti Mahal Mahish Charani. | Chak Mahishcharani, J. L. No. 4, P. S. Morrellgani, | 639 - 08 | 337 14 5 | 1860 | 1938-39 | Ditto. |
| 41 | 908 | Sundarbans Bajcapti Mahal Madardia Chak. | Mandradia, J. L. No. 149, P. S. Rampal. | 624 - 23 | 661 1 0 | 1858 | 1956-57 | Ditto. |
| 42 | 936 | Sündarbans Bajcapti Mahal Sutalari Chak, | 1. Uttar Sutalari, J. L. No. 99, P. S. Morrellganj, 2. Dakshin Sutalari, J. L. No. 143, P. S. Morrellganj, | 5,397+98 | 1,553 5 0 | 1860 | 1938-30 | Ditto. |
| 43 | 940 | Sundarbans Bajcapti Mahal Sannyasi, | Sannyasi, J. L. No. 151, P. S. Rampal. | 3,070°34 | 3,278 0 10 | 1860 | 1958-59 | Ditto. |
| 44 | 945 | Sundarbans Bajcapti Mahal Chak Haragati, | Chak Haragati, J. L. No. 1, P. S. Morrellganj. | 560.73 | 443 1 0 | 1863 | 1939-40 | Ditto. |
| 45 | 789 | Sundarbans Bajcapti Mahai Patharghata. | Char Patharghata, J. L. No. 7, Pajkgachha. | 30+97 | 60 0 0 | | 1925-26 | Farming, Summary set- tlement. |
| 46 | 792 | Sundarbans Bajcapti Mahal Kalmibunia. | Kalmibunia, J. L. No. 70, P. 8. Paikgachia. | 210-45 | 246 0 0 | 1908 | 1937-38 | Farming. |
| 47 | 874 | Sundarbans Bajcapti Mahal Phulhata, etc. | Baharbunia, J. L. No. 100, P. S. Morrellganj. Uttar Phulhata, J. L. No. 101, P. S. Morrellganj. Ghasiakhali, J. L. No. 102, P. S. Morrellganj. Sanirjor, J. L. No. 903, P. S. Morrellganj. Dematala, J. L. No. 104, P. S. Morrellganj. Dakshin Phulhata, J. L. No. 106, P. S. Morrellganj. | 11,732+02 | 25,577 0 0 | 1909 | 1938-39 | Diţto. |
| 48 | 1061 | Mahal Island Char Ka- potakshi. | Char Kapotakshi, J. L. No. 237, P. S. Paikgachha. | 26 - 23 | 12 0 0 | 1924-25 | 1933-34 | Ditto. |
| 49 | 553 | Mahal Baikari | Bit Dadbhanga, subdivision Ba- sirhat district 24 Parganas. | 11-00 | 7 0 0 | | | Purchased by Govern- ment at a sale held un- der Act XI of 1859 on 22nd June 1938. |
| 50 | 277 | Mahal Khuskhali | Bil-balli, J. L. No. 162, P. S. Swarupnagar, district 24-Par- ganas. | 1.44 | 7 11 9 | | | Direct management from 1920-21. Summary settlement extended up to 1925-26. |
| | 61 | | | 1. | | 1 | | |

APPENDIX X (4).

Temporarily-settled Private Estates of the Khuina Collectorate not taken up for Resettlement of Land Revenue.

| Serial No. | Estate No. | Name of Mahal. | Name of thana with J. L. No. of mauzas in which the estate | Area in | Present revenue. | Perio settler | | Nature of settlement. |
|------------|---------------|--|---|-------------|---------------------|------------------|----------|-----------------------|
| No. | , | | occurs, | - | | From | To | |
| _1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | <u> </u> | <u> </u> |
| | | | L. | | Rs. A. P. | | | · |
| 1 | 796 | Sundarbans Abadkari Ta- luk Kauchiharunia. | Kanchiharania, J. L. No. 108, P. S. Syamuagar, | 514-87 | 138 0 0 | 1881-87 | 1934-35 | Under rules of 1858. |
| 2 | 817 | Sundarbans Abadkari Taink Jiudhara. | Jindhara, J. L. No. 109, P. S. Moorrelganj. Gdiisakhali, J. L. No. 110, P. S. Morrellganj. Paschim Chipa Baratkhali, J. L. No. 111, P. S. Morrellganj. Guatala, J. L. No. 112, P. S. Morrellganj. Bashandal, J. L. No. 114, P. S. Morrellganj. | 11,916.74 | 3,956-12-0 | 138)-90 | 1947-48 | Ditto. |
| 3 | 818 | Sundarbans Abadkari Taluk Khaulia, Barisal. | Amragachhia, J. L. No. 6, P. S. Sarankhola, Dakshin Rajapur, J. L. No. 7, P. S. Sarankholi, Khanda, J. L. No. 8, P. S. Sarankholi, Raenda, J. L. No. 9, P. S. Sarankhola. | 11,566+93 | 8,443-15-5 | 1907-08 | 1955-56 | Ditto. |
| 4 | 819 | Sundarbans Abadkari Taluk Khaulia Barisal, Lot No. 4. | Dhansagar, J. L. No. 1, P. S. Sarankhola. Rajapur, J. L. No. 2, P. S. Sarankhola. Nalbunia, J. L. No. 3, P. S. Sarankhola. Baniakhali, J. L. No. 4, P. S. Sarankhola. Morellabad, J. L. No. 5, P. S. Sarankhola. | 14,414-11 | 4,647 b 8 | 1898-99 | 1955-56 | Ditto. |
| 5 | 820 | 8underbans Abadkari Taluk Khaulia Barisal, Lot No. 6. | Sonatala, J. L. No. 10, P. S. Sarankhola, Sarankhola, J. L. No. 11, P. S. Sarankhola. | 7,633+05 | 2,474 10 3 | 1908-09 | 1955-56 | Ditto. |
| 6 | 823 | Sundarbans Abadkari Taluk Chak Gadardanga. | Uttar Kantamari, J. L. No. 154, P. S. Paikgachha. Gadardanga, J. L. No. 158, P. S. Paikgachha. | 1,021+88 | 344 6 0 | 1891 | 1939-40 | Ditto. |
| 7 | 845 | Sundarbans Abadkari Taluk Uttur Jindhara and others. | Uttar Jindhara, J. L. No. 107, P. S. Morrellganj. Dakshin Jindhara, J. L. No. 108, P. S. Morrellganj. | 4,458+13 | 1,239 0 0 | 1883 | 1961-62 | Ditto, |
| 8 | 848 | Sund (rbans - Abadkari Taluk Tautibunia - | Andharia, J. L. No. 158, P. S. Rampal. Mithakhali, J. L. No. 159, P. S. Rampal. Dattermet, J. L. No. 160, P. S. Rampal. Baldyamari, J. L. No. 165, P. S. Rampal. Banstala, J. L. No. 166, P. S. Rampal. Banstala, J. L. No. 167, P. S. Rampal. Kharma, J. L. No. 167, P. S. Rampal. Damerkhanda, J. L. No. 168, P. S. Rampal. Sahebermet, J. L. No. 169, P. S. Rampal. Bajikarkhanda, J. L. No. 170, P. S. Rampal. | 13,086 - 13 | 3,426 0 0 | 1891 | 1050-51 | Ditto. |
| 9 | 854 | Sunderbans Abadkarl Taluk Raja Baroda Kanta Roy, Lot No. 221. | Chak Batbunia, J. L. No. 8, P. S. Dacope. Garkhali, J. L. No. 9, P. S. Dacope. Chak Kaminibasi, J. L.*No. 10, P. S. Dacope. | 8,683+48 | 1,836 1 8 | 1856 | 1954-55 | Ditto. |
| 10 | 878 | Sundarbans Abadkar i Taluk Baharbunja. | · - | 1,02 /52 | 236 0 0 | 1893 | 1961-62 | Ditto. |
| 11 | 910 | Sundarbans Abadkari Taluk Chak Munkia. | Hanimunkla, J. I No. 163, P. S. Paikgachha | 1,729+83 | 460 0 0 | 1891 | 1939-40 | Ditto. |
| 12 | 910 | Sundarbans Abadkari Taluk Jhapa and others. | Jhapa, J. L. No. 118, P. S. Syamnagar. Padmapukur, J. L. No. 119, P. S. Sya bnagar. Garkumarpur, J. L. No. 120, Syannagar. Yatakhali, J. L. No. 121, P. S. Syamnagar. | 8,785 · 31 | 2,250 0 0 | 1906 | 1929-30 | Ditto. |

APPENDIX IX (d)—concld.

Temporarily-settled Private Estates of the Khulna Collectorate not taken up for Resettlement of Land Revonue -concld.

| 10 10 10 10 10 10 10 10 | Serial | Estate No. | Name of Mahal. | Name of thana with J. L. No. of manzas in which the estate | Area in | Present | Perio settle | d of ment. | Nature of settlement. |
|--|-------------|---------------|---|--|------------|--------------|-----------------|---------------|-------------------------|
| 18 | | | | • | • | | 1 | | |
| 18 18 18 18 18 18 18 18 | | | 3 | | 5 | | | | |
| Table Kontriban. | | | | | | Rs. a. p. | | | J |
| 10 922 Sundarbana Abadikari Syamoware Syamow | | 920 | | Khutikata, J. L. No. 119, P. S. Syamnagar, | 387-47 | 110 5 6 | 1884 | 1932-33 | Under rules of 1853, |
| Talik Kup and others Snammers Snamme | 14 | 921 | | | 481-80 | 140 7 3 | 1884 | 1932-33 | Ditto, |
| 17 924 Sundarlana Abadkari Syammagar. Syammagar. Syammagar. Sundarlana Abadkari Jabakkali, J. L. No. 112, P. S. 369 58 105 0 0 1892 1940-41 Ditto. D | | | Taluk Kupit and | Syambagar. 2. Porakatla, J. L. No. 115, P. S. Syambagar. 3. Buri Goalini, J. L. No. 116, P. S. Syambagar. 4. Talbaria, J. L. 117, P. S. | 9,329 · 60 | 2,668 0 0 | 1884 | 1052-53 | Ditto, |
| 18 | 16 | 923 | Taluk Kali Kinkar | Syannagar. | 379+36 | 107 0 0 • | 1867 | 1932-33 | Ditto. |
| 10 | 17 | 924 | Sund (rbans Abadkar) Tahuk Jabakhali, | | 369 - 58 | 105 0 0 | 1892 | 1940-41 | Ditto. |
| Taluk Khalisabunia | 18 | 925 | Taluk Gobra and | Syammazar, 2. Khalisabumin, J. L. No. 123, P. S. Syammagar, 3. Dunuria, J. L. No. 124, P. S. Syammagar, 4. Parsemari, J. L. No. 125, | 5,177-44 | 1,399 0 0 | 1854 | 1958-59 | Ditto. |
| Taluk Kalinchi. Syanuagar. 19 | 926 | Sundarbans Abadkar Taluk Khalisabunia. | P. S. Syamnagar. 2. Dimuria, J. L. No. 124. P. S. Syamnagar. 3. Parsenari, J. L. No. 125, | 3,728·87 | 890 10 O | 1901 | 1959-60 | Ditto. |
| Telisk Ettar Badkasi. P. S. Palkgachha. Dakshin Bedkasi. J. L. No. 236, p. S. 5.523-65 | 20 | 927 | | | 540+37 | 205 0 6 | 1884 | 1952-53 | Ditto. |
| Taluk Dakshin Bedkasi. P. S. Paikgachia. | 21 | 928 | Sundarbans Abadkari Teluk Uttar Badkasi. | | 4,916-35 | 1,465 0 0 | 1899 | 1957-58 | Ditto. |
| Taluk Koyra Bed-kasi. Taluk Haringhi-Pathan, Lot No. 219. 1. Sonakhali, J. L. No. 134, P. S. Pnikgachha. 1. Sonakhali, J. L. No. 135, P. S. Pnikgachha. Digha, J. L. No. 136, P. S. Palkgachha. Josepha, J. L. No. 136, P. S. Palkgachha. Josepha, J. L. No. 138, P. S. Palkgachha. Sonamukhi, J. L. No. 138, P. S. Palkgachha. J. No. 137, P. S. Palkgachha. Paschin Kammukhi, J. L. No. 138, P. S. Palkgachha. J. No. 130, P. S. Palkgachha. Soladamiki, J. L. No. 140, No. 131, J. L. No. 141, P. S. Palkgachha. Paschin Kammukhi, J. L. No. 141, P. S. Palkgachha. Paschin Kammukhi, J. L. No. 140, No. 131, J. No. 141, P. S. Palkgachha. Paschin Kammukhi, J. L. No. 141, P. S. Palkgachha. Paschin Kammukhi, J. L. No. 141, P. S. Palkgachha. Paschin Kammukhi, J. L. No. 141, P. S. Palkgachha. Paschin Kammukhi, J. L. No. 141, P. S. Palkgachha. Paranya J. L. No. 181, P. S. Palkgachha. Paranya J. L. No. 183, P. S. Palkgachha. Patha, J. L. No. 183, P. S. Palkgachha. Patha, J. L. No. 183, P. S. Palkgachha. Patha, J. L. No. 183, P. S. Palkgachha. Charlanda, J. L. No. 183, P. S. Palkgachha. Charlanda, J. L. No. 183, P. S. Palkgachha. Morreliganj. Morreliganj. Morreliganj. Maliki Mahal Char Islam- Islamkati, J. L. No. 61, P. S. 8-28 23 3 3 1915-16 1929-30 Khas management. | 22 | 929 | Taluk Dakshin Bed- | | 5,523 · 65 | 1,546 14 0 | 1899 | 1057-58 | Ditto. • |
| Taluk Haringhi-Pathan, Lot No. 219. P. S. Paikgachha. 2. Dighu, J. L. No. 135, P. S. Paikgachha. 3. Amurkata, J. L. No. 136, P. S. Paikgachha. 4. Dakshin Kammkhi, J. L. No. 138, P. S. Paikgachha. 5. Sonamukhi, J. L. No. 138, P. S. Paikgachha. 6. Paschin Kammkhi, J. L. No. 138, P. S. Paikgachha. 7. Soladana, J. L. No. 140, P. S. Paikgachha. 8. Harkhuli, J. L. No. 141, P. S. Paikgachha. 9. Boyarjhapa, J. L. No. 141, P. S. Paikgachha. 10. Par Boyarjhapa, J. L. No. 181, P. S. Paikgachha. 11. Patau, J. L. No. 183, P. S. Paikgachha. 12. Charbanda, J. L. No. 183, P. S. Paikgachha. 13. Betunia, J. L. No. 185, P. S. Paikgachha. 14. S. S. Paikgachha. 15. S. Paikgachha. 16. S. P. S. Paikgachha. 17. S. S. Paikgachha. 18. P. S. Paikgachha. 19. S. Paikgachha. 10. S. S. Paikgachha. 10. S. S. Paikgachha. 10. S. S. S. Paikgachha. 10. S. S. S. S. S. S. S. S. S. S. S. S. S. | 23 | 930 | Taluk Koyra Bed- | | 5,571 - 40 | 1,593-12-0 | 1908 | 1956-57 | Ditto. |
| maria Jola. Morreliganj. 26' 790 Maliki Mahal Char Islam- Islamikati, J. L. No. 61, P. S. 8-28 23 3 3 1015-16 1929-30 Khas management. | | 947 | Taluk Haringhi- | P. S. Paikgachha. 2. Digha, J. L. No. 135, P. S. Paikgachha. 3. Amurkata, J. L. No. 136, P. S. Paikgachha. 4. Dakshin Kammukhi, J. L. No. 137, P. S. Paikgachha. 5. Sonamukhi, J. L. No. 138, P. S. Paikgachha. 6. Paschim Kammukhi, J. L. No. 139, P. S. Paikgachha. 7. Soladana, J. L. No. 140, P. S. Paikgachha. 8. Harikhuli, J. L. No. 141, P. S. Paikgachha. 9. Boyarjiana, J. L. No. 181, P. S. Paikgachha. 10. Par Boyarjhapa, J. L. No. 182, P. S. Paikgachha. 11. Patau, J. L. No. 183, P. S. Paikgachha. 12. Charbanda, J. L. No. 183, P. S. Paikgachha. 13. Betunia, J. L. No. 185, P. | 7,057-89 | 2,993 3 3 | 1852 | 1951-52 | Ditto. |
| 100 sammi m 1 | •25 | 810 | | | 1,425.13 | 3,500 0 0 | 1908-09 | 1932-33 | Proprietary settlement. |
| | 26 ' | 790 | | | 8.28 | 23 3 3 | 1015-16 | 1929-30 | Khas management. |

APPENDIX X (6).

List of Estates borne on the Revenue Roll of the Jessere District taken up in Jamabandi by the Khulna Settlement.

| Serial | Estate | Name of Mahal. | Name of thina with J. L. No. of mauzas in which the estate | Atea in | · Present | | od of ment. | Nature of settlement. |
|--------|--------|-----------------------------------|---|----------|------------|------|----------------|--|
| No. | No. | | ocurs. | acres. | tevenue. | From | To | v |
| 1 | 2 . | 3 | 4 | <u> </u> | 6 | 7 | 8 | . 9 |
| | | | • | | RS. A. P. | | | |
| 1 | 4272 | Maliki Mahai Char Pan- churia. | Char Panchuria, J. L. No. 118, P. S. Mahammadpur, district Jessore. | 535 - 27 | 907-15 - 0 | 1911 | 1926 ; | Temporarily-settled pri- vate estate under khas management on the re- cusance of proprietors. |
| 2 | 4307 | Khas Mahal Char Chha- tiani . | 1. Char Chhatiani Paschim-khanda, J. L. No. 27, P. S. Mahamma'pur. 2. Char Chatian, Purba-khanda, J. L. No. 88, P. S. Mahammadpur, 3. Elenkhali, J. L. No. 87, P. S. Mahammadpur, district Jessore. 4. Char Chhatlani, J. L. No. 123, P. S. Bhushna, district Faridpur. | 333 - 72 | 690 0 0 | 1910 | 1025 ! | Government estate under khas management. |

APPENDIX IX (f).

List of Villages situated in the Bakarganj District but comprised in Khulna Estate and taken up during the present Operations.

| Serial No. | | Na | me of r | m witl thana. | L. No. | | Area in acres. | Tauzi No. |
|---------------|----------|------|---------|------------------|--------|-----------|----------------|--------------|
| 1 | | | | | | Nazirpur, | 488-22 | 978 |
| | district | Daka | ırganj | • • | • • | • • | 400.77 | 910 |

INDEX.

[This Index has been prepared with a view to supplementing rather than duplicating the detailed Table of Contents. Its object is to facilitate reference to all such topics as cannot be easily located from the Table of Contents, e.g., specific reference has only been made to Pargana names occurring outside action 67; the Table of Contents is sufficient guide to Pargana names occurring in that section.]

| | A | | • | PAGE. |
|--|---|----------------------|--|---------------------------------|
| | • | | Bangalpara—sce "Henckellgunj. | ** |
| Abadkar | | . 98 | Bankar | 116 2 t seq. |
| Abadkari Praja | ••. | 71 | Bansgari, Henckell's | 89 |
| Abadkari taluk—see "J | | | Bansipur | 89 |
| Abwab Acacia Arabica | •• | . 73, 74, 77 . 30 | Burstola Barapunga | 10 |
| Acanthus Ilicifolius—se | e " Harcoza | . 00 | Barasia | 10 |
| Acchar | | . 29 | Baraz | 36 |
| Act X1 of 1859 | | . 103, 122 | Bardal | 24 |
| Act XLH of 1850 | | 4.44 | Barsakati | 118 |
| Act VII of 1868 Adiganga | | • ' | Barthal Barui | 113, 114 28, 46 |
| Aegle Marmelos | • • • • | | Barui Basantia | 28.46 |
| Afra | | | Basharatpur | SHI |
| Akla Parguna | | . 55, 87, 116 | Batsarbandi leases | 72 |
| Akta—see "Jaighir." | | | Bawali | 32 |
| Alaipur Khal | • • | . 8, 10 . 14 | Beary Beltne | 9 |
| Alang Khali Alocasia Indica | | | Beltwo Belphulia Pargana | 29 53, 54, 64 |
| Alukdia | | 113 | Bengal Tenancy Amendment | |
| Amalnama | | | 1925 | 115 |
| Amaranta | | | Benincasa cerifera | 30 |
| - Amaranthus Gangeticus - Amendment—sce - " Be | | . 30 | Per tree | 29 |
| Amendment Act of 19 | | | Betel vine cultivation | 28 |
| Aman paddy | | 27, 00 | Betkata | 113 |
| Amins | | . 122 | Betra | 10, 15 |
| Amoora Cucullata | • • | | Bladra | [1, 12, 15 |
| Ampelidae Amur tree | • • | | Blugirathi | 1 1, 3, 6, 8, 10, 17, |
| Analys Scandens | • | | Bharab | 16, 22, 23 |
| Ananas Sativa | | | Bhairabangar | 2 |
| Animals | | | Bhaluka Pargana | 54 |
| Ardisia | • | | Blandarie | 5 |
| Area of District Area of Police Stations | • | | Bharanda (castor oil y lant) | 33 |
| Area of Reserved Forest | | | Blutti (bhati) | 87 |
| Area of Subdivisions | | | Biola | 13 |
| Arcca mit | | | Bhuias | 65 |
| Arpangasia | • | | Bhusna Chakla | 56 |
| Artocarpus integrifolia Arum | •• | | Bil area | 3, 4, 5, 6 117 |
| Asasuni Police Station | •• | | Birds | 6, 7, 8 |
| Asasuni Khal | •• | | Bishkhali | 13 |
| Asclepind plants | | | Blochmann | 54 |
| - Ascoli's Revenue History - Ashraf | | | Boal fish | 6 |
| Ashrat Asal Tumar Jama | • | | Boalia Khal Bombax Malabaricum | 30 |
| Asmatpur | | | Bornssus Flabelliformis | 29, 30 |
| Atai | | 10 | Borga, see "Produce rents" | |
| Atharobanki | • | | Boro puddy | 27, 31 |
| Atlia Atraf | • | 4 = | Boundary disputes Boundary of District—see | 120 under |
| Attestation | • | | "District Boundaries." | |
| Aus paddy | | 3.4 .5 4.5 | Boundary of Sunderbans-ce u | nder |
| Averrhoa Carambola | | 29 | "Sunderban Boundary." | 400 |
| Avicennia Officinalis | | 35, 42 | Boundary pillars Boyer-Singh | 83 80, 113 |
| | | | Boyer-Singh | 80, 113 |
| | _ | | Brahman | 46, 48 |
| | В | | Brahumputra | 2, 3, 14 |
| Babul tree | | 30 | Brahmottar | 65, sec also Rent |
| Balupur | | | Brata Khattriya | free tenures. |
| Badurgaccha | | | Brinjal | 30 |
| Bagerhat Police Station | • • | 4 | Bruguiera Gymnorhiza | 42 |
| Bagerhat Subdivision Bagerhat Town | | | Builment | 83 |
| Bain tree | | 35, 42 | Bundh Kharach—see "Embankm | ent cess" 78, 85 55, 87, 116 |
| Baishnobottar—see "Re | nt free tenure | | Bunjer Buran | 54 |
| Baitaghata Police Statio | | | • | • • • • |
| Bajitpur | • | | • | |
| Bakarganj Bakarganj Jamahandi | •• | | C | |
| - Bakarganj Jamabandi - Bakarganj Tenure syster | n | | Cæsalpinia | 7 |
| Baleswar | •• | 44 *44 *44 * 4 * 4 | Canals Act | 9, 19 |
| Ballabhpur | | 13, 90, 105 | Capitalist, Settlement with | 109, 111, 113 |
| Bamboos | | | Carapa obovata | 42 42 |
| Banchanagar | •• | 90 | Carapa Moluccensis | |
| | | | • | 24 |

| | PAGE. | I |
|--|------------------------|---|
| Carica Arborea | 29 | Dhaki Creek 11 |
| Castes | 46 | Dhan Karari—see "Produce rents." |
| Castor oil plant | 33 | Dhapa Land 101 |
| Ceriops Roxburghiana | 42 | Dhuliapur 54 Dhundhul 42 |
| Cess Chachan river | 74 | Dhunia 28 |
| Chagladaha | 12 | Dioscoracea 6 Diospuros 6 |
| Chaklas | 56 | Diospuros 6 Director of Land Records 123 |
| Chal Kumra | 30 | District Boundaries 82, 9, 15, 1 . |
| Chalna | 24 | Donelly's list of Sunderban Estates 97 |
| Chanchara Raj | 56 et seq. 46 * | Doob grass 8 Drawing Office 123 |
| Chandals Chandipur | 46 * | Dumuria Police Station |
| Chandkhali | 88, 89, 90 | Dumuria village 24 |
| | 11 | |
| Charge Officers Charcha tenancies | 123 | E |
| Chasi Kaibarttas—see "Kaibarttas." | | Economic conditions 49 et seq. |
| Chengutia | 54, 58 | Economic conditions |
| Chilla Chandpie | 13 | Eksona leases 72 |
| Chillies | 28 | Ellison's map of the Sunderbans |
| Chinese fishermen | 37 | Embankment allowances 104 et ceq. |
| C. 2021 C. 122 C | 12, 54 | Embankment cess 188, 197, 215 |
| Chittagong fishermen | 37 | Embankments |
| | 6, 11, 12, 15 13 | Embankment Survey |
| Cities and the contract of the | 48 | Eviction 71 |
| Chuknagar | 24 | Excocearia Agallocha |
| Ollulia talia | 11, 12 | Ex-parte decrees 77 |
| Circle Officers | 8 | , F |
| Citrus Decumana | 29 | 77.1 |
| Civet Cats Clearance conditions in Sunderbans | 6 107etseq.109 | Fakiran see "Rent free tenures" |
| | 7 | Fukirhat village 24 |
| Climate | 16 et seq. | Fullow area 26 |
| 00001111 | 29 | Famine 6, 18, 51 Faridpur 4 |
| 00000 = 1 = 1 = 1 | 123 | Farmer |
| Colocasia Antiquorum | 30 | Fathabad Sarkar 53 et seq. |
| Commissioner in the Sunderbans | 91, 114 19 et scq. | Fama 6 et seq. Fee simple grants 109 |
| Communications | 19 et scy. 108 | Felidae 6 |
| Commutation of Produce rent | 86 | Ficus 6 |
| Co-operative Societies | 52 | Financial results of operations 122 Fisheries 7, 24, 37 et seq. |
| Coriander—see "Dhunia." | 7 | 51, 116, 180 |
| Cotton | 28 | Flora 6 et seq. |
| Coupe system | 148 | Flying foxes |
| Crop distribution Cucumis Sativus | 26 et seq. 30 | seq. |
| Cucurbita Maxima | 30 | Fruit 29 |
| Cucurbita Pepo Cultivated area | 30 24 et seg. | Fruit trees 8 Fuel Coupe |
| Cultivating tenants | 69 et seq. | |
| Customary privilege | 69, 71 ot seq. | G G |
| Cut No. 1 | 77. 10 | · · |
| Cut No. 2 | 11, 22 | Ganges 1, 2, 3, 9, 10, 15. |
| Cyclones | 7, 17, et seq. 29 | Ganti 67 |
| Cynometra Ramiflora | 42 | Ganti 67 Gantidar 34 |
| | | Gastrell 3, 15 |
| D | | Gastrells' Survey—see "Revenue Survey and Revenue Survey of Sunderbans." |
| Dacaitia bil | 6 | Garjan tree 42 |
| Dacope Police Station | 1 | Gewa 42 |
| Daimi settlement | 89, 113 | Gingelly—see Til |
| Dale, Mr | 92 94 et seq. | Gokulnagar 13, 90 |
| Dams—see "Embankments." | • | Golghasia 10 |
| Dantbhanga bil | 6 | Goodlad's Khal 10 |
| Dantia Daratana | 54 | Goran 42 |
| Darganti | 67 | Gorai 1, 14, 15, 22 |
| Darpatni | 68 | Goria |
| Darun Mullick's Abad Date Palm | 113 29, 33 • | Govindapur 90 |
| Date sugar | 29 | Goya 35 |
| Daudkhali | 13 | Grant's Historical review 89, 116 Guava 29 |
| Daulatpur Police Station Dawals | 1, 6 32, 35, 44, 51 | Gulo-see "Produce rents." |
| Dawaliyas | 83 | Gutiakhali 9, 10, 22 |
| Debhata Municipality | 23 | Gutlakati 89 |
| Debhata Police Station Debottar—, see " Rent free tenures | 1, 6 | н. |
| Decennial Settlement | 89, 57 et seq. | 11.2 |
| Deforestation | 7, 122 | Habra 0 |
| Delta formation | 1 et seq. | Haftam 58 |
| • | | |

| | | | | PAGE ₂ | | | PAGE. |
|---------------------------------|-------------------|--------------|--------------|--------------------|---|---|----------------------------|
| lal hasila ten | ancies | • | | 73 | Kaibatta | | 46, 48 |
| | | • • | • • | 66, 67, 69, 112 | Kaimi maurashi | | , 68 |
| | • | | | 7 | Kaim karsha | | 69 |
| | | | • • | 108 | Kajibacha | • | 12 |
| faribhanga | | • • | • • | 9 | Kaker bil | •• | 13 |
| | • • | • • | • • | 10 117 | Kakrola Kakya Bombai | ••• | 30 28 |
| | • | • • | • • | 23 • | Kalai | •• | 27-28 |
| lateabandi . | | • • | • • | 33 | Kalaroa Hossenpur Parg | | 54 |
| • • | | | | 21 • | | •• | 1, 6 |
| laveli Khalife | atabad | | | 54 | Kalidaspur | | 90 |
| lawaladar | • | • | • • | 31 | Kaliganga river | • | 12 * 7 |
| 1.4 | • | • • | • • | 116, 119 | Kaliganj Police Station Kalindi | | 1, 6, 18 2, 9 |
| fènckellgunge fenckell's rec | | ·· | • • | 88, 90 88 | Kalindi Kalna | •• | 14 |
| ionekell's Tal | | »(:BIC-111() | • • | 88, 89, 113, 106 | 17 | | 29 > |
| | • | ••• | | 42 | 37 4 1: 7.1 | | 42 |
| lerpostes . | | | | 6 | Kankra | | 42, 118 |
| ferit iera mine | r | | | 41, 42, 87 | | •• | 83, 123 |
| | | | • • | 39 | | | 46, 48 |
| | | · ii | • • | 48 | Kapotakshi see 'Kobao | | 42 |
| lingalganj s lirst's Surve | | | :1 | • | Karanj tree Karela | • | 30 |
| survey of th | | | icati | , | Karigar | •• | 47 |
| todgés' maps | · Dummil | | | 95 | Karsha | | 66 |
| lodges' surve | y-see '1 | Damper Hoe | lges | i | Kayestha | | 46, 48 |
| survey." | • | • | ** | I | Kekshiali | | 10 |
| logia Pargani | | | • • | 12, 13, 54 | | •• | 13 |
| loglapasha . | | • • | • • | 68 | •• | •• | 7, 42, 118 28 |
| logia reed . Lanco | | • • | • • | 30, 54 42 | *** 1 . | •• | 107, 119 et seu |
| foney forse radish t | rece | | • • | 30 | *** 1' | •• | 108 |
| istac radion t | • • • | •• | • • | *** | 121 116 . 1 . 1 | | 53 et seq. |
| | | | | t | Khalispur | | 54 |
| | | 1.5 | | Į. | | | 55 |
| | | • | | | | •• | 83 |
| chhamati . | | • • | • • | 2, 8, 9, 15 | 121 11 73 1 1 | •• | 23. 11 |
| | | • • | • • | 54, 56 | | •• | 13, 17, 117 90 |
| jarudar see Hegal enhane | | | | 85 | *** ** * * * | | 50 57 |
| r . | ements | | | 58 | Kharma | •• | 13 |
| mmigration . | • | | • • | 44 | | 'Sultanpur.'' | |
| nception proj | osals | | | 110 | Khas alads | • • • • • • • • • • • • • • • • • • | 88, 90 |
| neidence of r | aiyats' ren | | | 75 76 | | • | 97 |
| nner bont rot | | | • • | 19, 21, 22 | | •• | 83 2, 10 |
| pomea Batat | | | ; : · | 30 | | | 2. 10 97 |
| safpur Estate | | • | | 54.58 | | | 72, 85, 86 |
| safpur parga smailpur | | • • | | 54, 58 89 | 444 1 701 | | I et passim. |
| | · • | | • • | 54 | | | 23 |
| | | | | | Khulna Police Station | | 1 |
| | | | | 1 | | | 1 |
| | | J | | i | | • | 30 103 et seg. |
| | | | | | | • | 80 et seq. |
| | | | | 29, 30 | | | 2, 6, 9, 15, 18, |
| | | • • | • • | 55, 65 | | | 6, 40 |
| alangi alkar sec "l | Kralingina '' | | • • | 10 | Kola bil | | 6 |
| | risheries. | | | 53 | Kol karsha—see " Under | -raiyat ". | |
| | · • | | | 54 | Korfa see under " raiya | ıt ``. | 1.1 |
| amuna | | | | 1, 6, 9 | Koyra | • | 11 28 |
| | ·· . | | | 84, 86 | | • | 13 |
| | | • • | | 58 | | | 31 |
| laliapur lautuk taluk | • • | • • | • • | 11 67 | • • | | |
| iautuk taiuk Jehangirnagai | • | • • | • • | 56 | | | |
| feradkhana | | • • | • • | 55, 87, 88, 116 | | L | |
| lessore chakla | | | • • | 56 | | | 20 |
| lessore Distri | | | • • | 10 | Lagenaria vulgaris | 1970 | 30 109 et s e q. |
| lhabjhabia | • • | | • • | 12 | Large Capitalist rules of Lathyrus Sativus | 1879 | 109 et seq. 28 |
| | • • | • • | • • | 30 | Lau | •• | 30 |
| • • | • • | • • | • • | 43 43 | Leases contravening sect | | - |
| mongra Iimba taluk | • • | • • | • • | 68 | Tenancy Act | | 85 |
| Jobe mati soi | 1 | • • | • • | 8 | Leca | | 18.1 |
| Jolaha | | •• | | 46, 47 | Lens esculenta | | *** |
| Jungle buri ti | | • • | | 65 | Lentil | • | |
| Junonia orith | • | | • • | 8 | Leopards Lime shell | | 4.00 |
| luto | • • | •• | • • | 6, 28, 33 | Lime shell Litchi | | 345 |
| | | | | | Lots in Sundarbans | | 4. t |
| | | | | | Luffa Acutangula | | 4.0 |
| | | K | | | | | |
| Kabuliyats in | Sunderba | ns estates | | 104 et seq. 105, | | | |
| | | | | 106 Appendix V | | M | |
| Kacchu | | | | (a) to V (c) 30 | Mandaripur Bil Route | | 4. |
| Nacciiu Kachipata—s | wo "kniibs | cha " | • • | UV | Madhudia | •• | 54, 12 |
| Kachua khas | | | | 88, 90 | Madhumati | | 1, 2, 8, 9, 13 |
| | | •• | | 11 | | • | seq. 15, 16, |
| Kachua Cut | | | | | 1 11 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 | | |
| Kachua Cut Kachua Polic | e Station | | | 1, 11 | Mahatran-see " Rent ! | irce tenures " | |

| | | | | PAGE. | • | | | PAGE. |
|---------------------------------------|-----------------------|-----------|-----|--------------------|--------------------------------------|---------------|-----|--------------------|
| lahinders | | | | 119 | Oil seeds | | • • | 8 |
| Iahomedaba | d . | | | 88, 90 | Ol Kacchu | | • • | 30 |
| laihatti | | | | 54 | Omitted areas | • • | • • | 80 • |
| | | | | 10 | Onion | • • | • • | 30 |
| lalai | • • | • • | • • | 54, 55, 58 | Ora | • • | • • | 7, 42 |
| lalguzar—80 | | | ar | | Osat nim haola | • • | ٠. | 66, 67, 69 |
| | Malguzar ". | • | | | Osat taluk | • • | ••• | 67 |
| lalik barati | • • | • • | • • | 70 | Outer boat route | • • | • • | 20, 21, 22 |
| lalo | • • | • • | • • | 46, 48 | Oysters | • • | • • | 43 |
| lango | •• | • • | • • | 29 | | | | |
| langla | • • | • • | • • | 13 | | | | |
| langifera | • • | • • | • • | 6 | | P | | |
| langroves | • • | • • | • • | 42 | | | | |
| lan kacchu | | • • | • • | 30 | Pabla bil | • • | • • | 6 |
| lanikkhola | | •; | • • | 13 | Padma | • • | | 1, 3 |
| laps, prelim | | CH | • • | 84 | Paddy cultivation | | • • | 30 ot seq. |
| larfat | • • | • • | • • | 70 | Paikhast tenants | • • | | 72, 86 |
| larichap | • • | • • | • • | 10 | Paikgachha Police Stati | on | | 18, 90 |
| larjata | • • | • • | • • | 11 | Palmyra palm | | • • | 29, 30 |
| lash kalai | • • | • • | • • | 28 | Pan—see "Betel". | | | |
| lasuri | • • | • • | • • | 28 | Panguchi | | | 11, 13 |
| latabhanga | • • | • • | • • | 9. 10 | Panjam | | | 58 |
| latar | • • | • • | • • | 27,28 | Papaya | • • | | 29 |
| Iaurushi | | • • | • • | 71 | Papilionide Hector | | | 8 |
| lauza—see | | | | 741 | Parganas | | | 53, et seq. 89 |
| lazkuri | • • | •• | • • | 56 20 | Parado xur us | • • | ٠. | 6 |
| fele grass | •• | • • | • • | 30 | Pargiter's History of the | e Sunderban | B | 108 (Appendix |
| felon | •• | • • | • • | 8, 29 | • | | | VIII) |
| lenus | • • • | • • | • • | 11, 22 | Partal | | | 82 |
| lerits of Offi | | •• | • • | 122 et seq. | Pasur river | • • | | 11 et seq. 15, 1 |
| linisterial O | | • • | • • | 123 | Pasur tree | • • | | 42, 118 |
| | • • | •• | • • | 68 | Patitabadi taluk | | | 88 |
| litha kumra | | • • | • • | 30 | Pathan | | | 46, 47 |
| litrasaeme s | | •• | • • | 8 | Patharis | | | 13 |
| litreola Old | | н | • • | 8 | Patla bil | . 5 | | 6 |
| dixed rents | | • • | • • | 73 | Patni taluk | • | | 45 , 68, 86 |
| Liyadi patni | | • • | • • | 68 | Pattai taluk | | | 68 |
| Joheswarpa: | sha | • • | • • | 54 | Pattanias | | | 32, 72 |
| lokarrari ra | iyats | • • | • • | 75 | Pea | | | 28 |
| lokarrari te | nures | | • • | 75 | Permanent leases to une | ler raivats | | 70,71 |
| lokimpur | • • | • • | • • | 4, 12, 14 51, 56 | Permanent Settlement | | | • • |
| Iollahat Pol | ice Station | • • | | 1, 6 | nial Settlement." | | | |
| folungi | | | | 119 | Permanent tenures | | | 74 |
| fom mahal | | | | 116 | Permit system | | | 118 |
| Momardica | | | | 30 | Phascolus mungo | | | 28 |
| Mongoose | • • | | • • | 6 | Phaseolus Radiatus | | | 28 |
| Morreliganj l | Police S tatio | n | | 1 | Phœnix Paludosus | | | 42 |
| Morrellganj l | | | | 24 | Phœnix Sylvestris | | | 29 |
| loringa Pter | | | • • | 30 | Phragmitis Karka | | | 30 |
| Morrison's su | irvey of Sui | idarbans | | 90 91, 94 | Phulheta | • • | | 13 |
| Mortgages | | | | 83 | Phultala Police Station | | | 6 |
| Auchi | • • | | • • | 46, 48 | Pincapple | | | 29 |
| | | • • | • • | 37 | Pisum arvense | | | 28 |
| iuhammada | ns | • • | • • | 47, 48 | Plantain | | | 29, 33 |
| Iunafa | • • | • • | • • | 70 | Pods | | | 46 |
| | | | | 28 | Police stations | | | 1 |
| Iunicipalitie | | | ٠. | 23 et seq. | Pomelo | | | 29 |
| | | | | 123 | Pongamia Glabra | | | 42 |
| luradkhana | | | • • | 55, 87, 88, 116 | Population, statistics of | | | 43 et seg. |
| Iurshidkuli . | Khan's asse | | • • | 56 | Port Canning Company | | | 115, 116 |
| lusa sapient | | | | 29 | Potato | •• | • • | 29 |
| lymensingh | | | | 5 | Potato, sweet | •• | | 6 |
| - | | | | | Potol | • • | • • | 30 |
| | | N | | | Praja | •• | • • | 66 |
| labaganga | | | | 14 | Pranour | | | 89, 108 |
| ianayanga Tagdan lease | | • • | | 72 | Pratapaditya | | | 9, 54, 56, 64, 6 |
| | | • • | | 30, 32 | Pratapaditya Pratapnagar | | | 2, 10 |
| | • • | | | 12 | Preliminary one inch me | 1DK | | 84 |
| amasudras | | | • • | 46 | Princep's Survey of Sun | | | 92, 95, 114 |
| iamasumas iarayunkhal | | | | 12 | Produce rent | | | 73, 76, 86 |
| iarayunkna: iapit | | | | 46, 48 | Proprietors, land in dire | ct possession | of | |
| iapir Tephelium L | | • • | | 29 | Proprietary right in Sun | | | 93, 94, 98 et s |
| light herons | | | | 7 | Protected forest | ·· | • • | 117 |
| tignt nerons Iimak khala | | | | 120 | | •• | • • | 29 |
| | | | | 66, 67, 69 | Public Land | | | 76 |
| umn a oia Vim Osat Ta | | | | 67 | Pulses See also "kalai | ,, | • • | i |
| linety-nine | venra' lengo. | of resume | , | ••• | Putimari | •• | | 13 |
| | years leaser | | | 106 | - te verseur # * * | | | |
| - estates Vipa Frutica | | | • • | 42 | | | | |
| upa rruuca Iishkar se e | un " Ront fra | | | | | _ | | |
| | | | • | 113,114 🐁 | | R | | |
| | • • | | | 24 | | | | OF 6: |
| | .f. seill | • • | • • | - | Raida paddy | • • | • • | 27, 31 |
| Votification o | or vinages | • • | • • | 115, 116, Appen- | Railways | • • | | 23 |
| Trans laborate of | | | | dix VJ1 (c) 120 | Rainfall | | • • | 18 |
| un khalasi | | •• | • • | | Raiyat—see also | " Cultivatii | ıg | |
| lunnagar | • • | • • | • • | 54 (| tenant " | | ••• | 66 |
| | • | ^ | | | Raiyatwari Settlement | • • | • • | 112, 113 |
| | | 0 | | | Rakdia | | • • | 54, 58 |
| • | | | | | Ramchandrapur | | | 54, 58 |
|) Dijections ur | nder section | 103A, Ben | gur | | T ACCULATION VALUE OF LANGE | • • | • • | |
|) Dijections ur Tenancy A | | | gar | 84 | Ramjannagar Rampal Police Station | •• | | 89, 108 1 |

| • | PAGHA. | 1 | PAGE. |
|---|---|--|-------------------------|
| Rangpur | 5 | Shikmi taluk Shingra Shrimp trade Shyamnagar Police Station Singhi fish Simul tree Sipsa Sitagunge Khal Sluices Smelts' enquiries in Sanderbans Small Capitalist Rule of 1879 Smyth's Survey | 65, 68, 99 |
| Raruli | 24 | Shingra | . 42 |
| Raruli Rasulpur | 58 9 | Shyampagar Volice Station | . 41 |
| Roclamation of Sunderlan land | 9 31ctspeg. | Singhi fish | 6 |
| Redeemed estates Redemption of existing revenue | | Simul tree | 30 |
| Reeds | 109 | Sitagunge Khal | 11, 10, 22 |
| Regulation 1 of 1793 | 59 | Sluices | 35 |
| 1 of 1824 | 120 | Smelts' enquiries in Sunderbans | 91 |
| H of 1819 HI of 1828 | 93 87, 93, 94, 116 • | Smail Capitanst Rule of 1879 Smyth's Survey -s - "Revenue st | rvev |
| • VII of 1822 | 93, 98 | of Sunderbans." | |
| VIII of 1819 IX of 1816 | 67:68, 85, 86 91 | Sobnali Soil | 9 |
| 1X of 1810 | 93 | Solanum Solemari | 30 |
| X1 of 1825 | 94 | Solemari | 12 |
| X1X of 1810 XX111 of 1817 | 158 | Sonkarari loasos | 28 72 |
| XXIII of 1817 XXIII of 1793 | 119 | Solanum Solemari Sonamung Sonkarari leases Sonneratia Acida Soya Special Commissioners | 42 |
| Religions Remell's maps | 48 | Sonneratia Apetala | 42 |
| Robai noo "Redcomedestates " | | Special Commissioners | 94 |
| Rent, determination of | 100, 101 | Spices Spondias Mangifira Srirampur bil | 28 |
| . Rent free raiyati holdings | 76 | Spondias Mangifira | 39 6 |
| Rent receipts | 77 | Status of Sunderban lessees | 98 et seq. |
| Rent free raiyati holdings Rent free raiyati holdings Rent free tenures Rent receipts Reserved forest | 1, 6, 7, 51, 52, | Steamer route | 19, 22, 23 |
| 45 445 4 46 # 1 1° 1 | | Status of Sunderban lessees Steamer route Steamer services Storms Sub-Deputy Collector Subdivisions Subinfeudation Subsidence, earlier Sugarcane Sujauddin Khan's assessment Sultan Shuja's assessment Sultanpur Kharoria Sunderban bigha Sunderban cultivation Sunderban malguzar Sunderbans, maps and records of Sunderbans, maps and records of | 22, 23 |
| Resumption Regulations | 57, 58, 64, 93, 94 | Sub-Deputy Collector | 123 |
| Resumptions in Sunderbans | | Subdivisions | 1 |
| Revenue and rent distinguished | seq. 102 et seq. | Subsidence, carlier | 1. 5 |
| | | Sugarcane | 28 |
| Revenue, determination of | 104, 110, 112 | Sujauddin Khan's assessment | 55 55 56 87 |
| Revenue, salt | 119, 120 | Sultanpur Kharoria | 54, 59, 63, 64 |
| Revenue Survey | 13, 15, 64 | Sunderban bigha | 91 |
| Revenue Survey of Sunderbans Ethizophora Conjugata | 114, 115 | Sunderban cultivation | 31 et seq. |
| Rhizophora Mucronata | 42 | Sunderbans, maps and records of | 121, 122 |
| Revenue, dates of payment of Revenue, determination of Revenue, forest Revenue, salt | | Sunderbans, maps and records of Sunderbans reclaimed area Sunderbans settlement Sunderbans Talukdar Sunderbans, archeology of Sunderbans, boundaties of Sunderbans, carly assessment of Sunderbans, etymology of Sunderbans, subsidence of Sunderbans, survey of Sunder | 7 |
| Rivers, area of see "water Rivers over three chains | 74, 76 8 et seq. 89 23, 76 74 | Sunderbans Talukdar | 98, 99 |
| River system | 8 et seq. | Sunderbans, archeology of | 57 |
| Rocke, Mr | 89 | Sunderbans, boundaries of | 86, 87, 88, 89, |
| Roads, property of State | 74 | Sunderbans, early assessment of | 88 et seq. |
| Rupsa Russell | | Sunderbans, etymology of | 87 |
| Russell | 88 | Sunderbans, subsidence of Sunderbans, survey of | 4 ct seq. |
| | | Sundri | 4, 42, 87, 117. |
| 8 | | Supari | 118 |
| Saccobranchus Fossilis | 6 . | Survey Act, interpretation of | 120.121 |
| Sadar Malguzar | 99 🔪 | Sutar Khali | 11 ' |
| Sadar Patni | 68 | Swarupkati Swatch of no ground | 3 |
| Sabrazpur see "Saprajpur." Sagina | 30 | Sweet potato | 30 |
| Sahos Pargana | 11, 54, 55, 58 | Syedpur estate | 57, 59 et seq - 8 85 |
| Saiyar Salami | 57 71, 68 | Syedpur pargana | 58 |
| Sale Laws | 58 | Symbolical possession | 84, 85 |
| Sale in execution of a decree | 84, 85 | | |
| Salt Samilat taluk | 116, 119, 120 65, 68 | т | |
| Sapium Indicum | 7, 42 | m | 1.3 |
| Saprajpur (Sabrajpur) Sarankhola Uolice Station | 54 17 | Tafalbari Tahirpore | 120 |
| Saraswati | 1 | Taksimi Taluk | 65, 68 |
| Sarkar | 53 et seq. | Tal | 33 |
| Sasa Satgaon | 30 53 et seg. | Tala Pargana | 1, 6 |
| Satgumbaz | 23 | Tala village | 24 |
| Satkhira Municipality Satkhira Police Station | 23 1, 6 | Talukdar also s e "Sunc Talukdar" | lerban 31 |
| Satkhira Subdivision | 1 | Tanks | 72 |
| Schalch's map | 15 | Technical Advisers | 123 |
| Section 48, Bengal Tenancy Act | 91 | Teliganti Temporary tenures | 13 74 |
| Section 340, Survey and Settl | ement | Tenure holders, land in direct p | oosses- |
| Manual | 102 | sion of | 74, 75, Appen fi - 1 |
| Seganti Selimabad | 67 12, 54, 55, 56, 65 | Tenure system | 64 et seq. |
| Senhati | 24 | Terakhada Police Station | 1. 6 |
| Sepatni Sesamum see "Til." | 68 | Thakbast | 120 |
| Shahapur bil | 6 | Tigers | 8 |
| Shakbaria | 11 | 1111 | 28 |
| Shark's fins Sheikh | 37 46, 47 | Timber Tobacco | 28 |
| | , | | |

| | | | PAGE. | | 1 | | PAGE. |
|--------------------------|------------|-----|-------------|------|---------------------------------|-----|---------|
| Todarmall's assessment | | | 53 | | w | | |
| Toddy cats | | | 6 | | · | | |
| Tongs | | | 33 | | Wallago Attu | | 6 . |
| Topographical Survey of | Sunderbans | ٠ | 4, 64, 115 | | Waste Land Rules of 1825 | | 106 |
| Training camp | | | 121 | | 1829-30 | | 107 |
| Traverse Survey | | | 80 | | 1853 | | 107-108 |
| Trees, tenants rights in | | | 91, 92 | | 1863 | ٠. | 109 |
| Trichosanthes Dioica | | | 30 | | 1874 | | 109 |
| Trigonometrical Survey | | | 64 | | 1879 | | 110 |
| Trimohini | | | 11 | • | 1919 | | 113 |
| Triphonium Trilobatum | | | 30 | | Water, area of | | 24, 76 |
| Turmeric • | | | 28 | | ,Wax | | 42 |
| Turnix Pugnax | | | 8 | | Westland's History of Jessore | | 14, 15 |
| 24'-Parganas | | | | | Working plan | | 118 |
| Twice cropped area | | | 26 | | Winter rice - see "aman paddy." | | |
| Typha •. | | ٠. | 3 0 | | | | |
| Umakanta Sen | U | | 108 | | γ | | |
| Umakanta Sen | | | 108 | | · · | | |
| Under raivats, occupancy | right of | | 70, 71, 75, | 84 | Young Men's Zamindari Co-opera | | |
| Union Boards | | | 24 | | Society | • • | 111 |
| Union Committees | | | 23 | | • | | |
| Utbandi | | | 72 et seq. | | | | |
| Uzirpur | | | 10 | | <i>'</i> | | |
| Uzirpur katakhal | | ٠. | 10 | | _ | | |
| • | | | | | ·. Z | | |
| | | | | : | Zamindari accounts | | 70 |
| | V | | | | | | |
| | V | | : | | Zizyphus Jajuba | • • | 24 |
| Vegetables | | | 29, 30 | | | | |
| Villages, formation of | • • | | 82 et seq. | 115. | the I | | |
| indeed in manual (1 | | • • | 416. | , | | | |
| Villages, types of | | | 24 | | | | |
| Viverra | | • • | | | | | |
| | | | - | | | | |

No. XXV/3—5785, dated Alipore, the 20th July 1927.

From—A. K. Jameson, Esq., i.c.s., Director of Land Records, Bengal,

To—The Secretary to the Government of Bengal, Revenue Department.

I have the honour to submit herewith the Final Report of the Survey and Settlement Operations which have been in progress in Khulna district since 1920-21. Mr. L. R. Fawcus, I.C.S. was Settlement Officer from the beginning until he went on long leave in March 1926, and he has written the report. It omits certain stages such as Diara Resumption, Recovery of Costs, Printing and Case-work done Final Publication which are still going on; these stages when they are concluded, together with an examination of the financial results of the operations, will form the subject of a short supplethought report. It was mentary desirable that the main topics which have to be dealt with in a final report should be handled by Mr. Fawcus himself while he was still in touch with the work—a course which has already been adopted in other settlement operations.

The district of Khulna was formed in 1882 out of two subdivisions of Jessore district and one of the 24-Parganas. The total area dealt with in the operations is 2.472 square miles, but there is in addition 2,200 square miles of reserved forest which plays a most important part in the economy of the district and about which much information is given in the report. The district has been formed entirely out of the alluvium brought down by the Ganges, especially through the Jamuna and the Bhairab (offshoots of Bhagirathi when that was the principal mouth of the Ganges), and the Madhumati or Baleswar, an offshoot of the Padma, which became the principal channel probably about the 16th century. Mr. Fawcus gives an interesting and lucid account of the processes of land formation in a delta and also gives reasons which appear to be convincing for holding that there has been considerable subsidence within the area which includes Khulna district; this has checked the extension of the land seawards: indeed, it appears to have receded since. Rennell's survey in the middle of the 18th century.

- The district is divided into four zones extending east and west, each with its special characteristics. In the north there is a narrow strip of high land where deltaic action is complete, marked by congested village sites and patches of heavy jungle. South of this a series of great bils runs right across the district, forming part of a depression that extends throughout the district of the 24-Parganas on the one side and Faridpur on the other. of this again is the reclaimed Sunderbans area consisting of vast treeless stretches of extremely fertile paddy interspersed with low-lying patches of jungle and reed--pockets where the deposit of silt has not been sufficient to raise the land above flood level. Beyond this again is the broad belt of reserved forest extending to the Bay of Bengal, an area of the greatest interest especially to the physiographer, the botanist and the zoologist.
- The river system of Khulna is of the utmost importance to its economic life, but a description of it is difficult on account of its complexity and the fact that the same river frequently. bears several different names in different parts of its course. In paragraphs 12 to 17 Mr. Fawcus gives a detailed account of the positions and inter-relations of the main channels. The important fact which emerges from this is that the main effluents of the sweet water of the Ganges have within recent historical times moved steadily eastwards in keeping with the easterly trend of the Ganges itself. The result has been that now only the Madhumati-Baleswar, which forms the eastern boundary of the district, carries Ganges water throughout the year. The rest of the rivers have, for the most part, lost their connection with the Ganges altogether and have ceased to play their part in the building up of the land. being at best merely channels for surface drainage and at worst conduits by which the saline water from the Bay is carried far into the interior.
- 5. Perhaps the most important point in this chapter—and it is one which receives illustration again and again in other sections of the report—

is the description of the effect of attempting to forestall nature by building embankments in order that land may be cultivated before it has been really fitted for cultivation by the action of natural forces. The problem in Khulna is very similar to that with which I dealt in the Final Report of the Midnapore Settlement Operations, and I note with interest that Mr. Fawcus has come to the same conclusions as I did. immediate effect of an embankment, whether designed to prevent a fresh water river from flooding low-lying land or to keep out saline water which at high tides penetrates far up the rivers of a delta, is to put a stop to the land. building process and to cause all the solid matter carried in suspension in water to be deposited in restricted space between the embankments on either side of the channel. The latter, thereupon, has its bed raised, with the result that on the one hand it gets choked with silt and ceases to function as an active river, and on the other hand the saline water brought by the tides being unable to spread itself laterally is forced further and further The ultimate result into the interior. is that the embankments have to be continually raised and strengthened to keep pace with the rise in the bed of the rivers until the latter cease to be able to carry off the drainage of the interior which, therefore, becomes water-logged, and if the embankments are broken the saline water ruins the crops wherever it penetrates, and makes cultivation impossible for some years until the salt has been fully washed out of the soil.

This process is plainly visible in Khulna. It is instructive to read the account reproduced in paragraph 44 of the process of reclamation as described by an observer in the year 1873, when apparently embankments of 2 feet in height were sufficient where now to be of any use they have to be 8 or 10 feet. That it has not yet had such serious results as in Midnapore is due partly to the fact that reclamation was begun much more recently in Khulna than in Midnapore and there has not yet been time for it to produce its full effect, and partly to the timely intervention of Government which, by preserving the belt of reserved forest, has provided an ample, if not completely adequate, spill area for the rivers and has interposed a barrier which protects the cultivated land from the worst effect of

- cyclones and tidal waves from the Bay. It is much to be regretted that a similar policy was not followed in the district of the 24-Parganas and, if the fate which is rapidly overtaking Midnapore is not to be repeated in that district, it is imperative that Government should rigorously prohibit any further encroachment on the already too scanty jungle areas between the Hooghly and the Haringhata.
- In Chapter II the employment of the land is analysed. It is noted that 8 per cent. of the area for which statistics were prepared is water. Mr. remarks. that Fawcus | Government derives no revenue from this and says that a proposal to realise jalkar from the fisheries in the Sunderbans was rejected by the Board of Revenue recently. I was Secretary to the Board of Revenue at the time the proposal came up, and I remember that it was rejected solely on the ground of difficulty of collection—not on principal. I have discussed the question with Mr. Fawcus, and he has a scheme by which collection would be made quite simple. He should, I think, send it up, and I am sure the Board of Revenue would be quite willing to consider it.
- Taking the land area alone 78 per cent, of it is cultivated and a further 14 per cent, is culturable, including in this category land out of cultivation owing to destruction of embank-Thus, only 8 per cent, is perments. manently useless for cultivation, which is the lowest figure of any district in Bengel which has so far come under settlement operations. These figures are almost identical with those for Midnapore district, excluding jungly western half. An analysis of the figures thana by thana, however, reveals considerable differences, general effect of which is to support the contention advanced in Chapter I that embanking of rivers leads ultimately to fatal results. The percentage of cultivated to total culturable area is lowest in Satkhira subdivision, due mainly to the influence of the saline water forced far up the dying rivers by the embankments on either side of them."
- 9. The twice cropped area is very small, only 3 per cent. of the total, and in this respect again Khulna is comparable with Midnapore which shows only 1.5 per cent., whereas Bakargani has 15 per cent. and Jessore 21 per cent. Of the total cropped area, rice occupies 89

per cent., which is the same as in Midnapore and is much larger thanein The explaany of the other districts. nation of these figures seems to be that reclaimed and prematurely embanked land is capable of bearing only one crop -paddy-probably because the very clayey soil of which it is composed, when deprived of an annual top dressing of fresh silt, bakes like brick as soon as the paddy is harvested, and is useless for any purpose until the next mon-If this is so, then the policy of embankments not only leads to ultimate disaster, but also restricts the yield of the soil from the very beginning. It is true that for some time the yield of paddy is magnificent—the report shows that 35 maunds per acre is a fair average for recently reclaimed Sunderbans land-The analogies but this does not last. which have been drawn above between Khulna and Midnapore are significant. The latter district in its eastern half must originally have been very like Khulna and its present condition is the result of the same policy as has been followed in Khulna; the main difference is that this policy has been in operation very much longer in Midnapore, so that it has had time to produce more unmistakeable results. I have not the slightest doubt, however, that ultimately Khulna will show exactly the same signs of exhaustion as Midnapore now shows and its abundant yield of paddy will gradually shrink to the 16 maunds or so an acre which is the average of Midnapore. There was clear evidence from the reports of previous ettlement operations in the Contai subdivision of that district that there had been a steady deterioration in the vield.

- 10. The sections that follow deal with the processes of agriculture and describe the system of embanking which alone renders cultivation possible. A valuable account is also given of the fisheries and the forest produce. Mr. Fawcus is peculiarly well suited to write such a description, as he is well acquainted with both botany and zoology and has devoted much time to the study of the animal and plant life, especially of the Sunderbahs. It is hoped that his researches may be of use to others in solving the economic problems of the district.
- 11. The report next deals with the statistics of population, and again the inter-relation of natural causes and their

- results in the human sphere is clearly ' brought out. A comparison is made between the figures for the six principal Ganges deltaic districts, and it is shown that increase of population is proportionate to the activity of the rivers; where this has been restricted by natural or artificial means, population tends to fall off. The same inference can be drawn from a study of the figures for the different thanas within Khulna district; in the western than as where the rivers are dying the increase since 1872 has been much smaller than in the eastern ones where the rivers are still active. The present density of population follows the same lines, and there is a rough agreement between this and the percentage of cultivated to culturable land; where the latter figure is high, the population is dense and rice versa.
- 12. The principal feature of interest in the figures of caste distribution is the large number of Namasudras and Pods who form 15.7 and 10.5 per cent. of the total. They were probably the original reclaimers of the soil, and it seems probable that the former entered along the line of the Bhairab and the latter along that of the Jamuna—the two main rivers in ancient times: 47 per cent. of the population are Muhammadans.
- 13. Khulna is to a greater extent even than the surrounding districts dependant on its agriculture. 84 per cent. of the population being directly connected with it as cultivators, receivers of rent or labourers, the figures for these three classes being 72 per cent., 5 per cent. and 7 per cent. respectively.
- 14. Mr. Fawcus has abandoned the practice usual in previous settlement reports of analysing the economic position of the cultivator. In my opinion. he is wise in doing so; the methods which had been adopted were faulty. and I place little reliance on the accuracy of the results. Moreover, as shown in the report, there are certain local features peculiar to Khulna would render any analysis on the old lines more than usually fallacious. But without going into details, he is able to assert from his personal knowledge and from such enquiries as were made, that the cultivator is probably better off and in a more secure economic position than in most of the other districts of Bengal. Mr. Fawcus is not so

much enamoured as some other Settlement Officers have been of the cooperative movement as a remedy for economic ills, and it is true that its success depends largely on the presence in each society of a man of sterling integrity and considerable force of character. His suggestions for improvement run on more materialistic lines such as hygiene, sanitation and prevention of malaria.

The fiscal history of Khulna is sharply divided into two-that of the area which was under cultivation at the time of the permanent settlement and that of the Sunderbans reclamations which came later. The latter has been postponed to a separate chapter in which all the problems of the Sunderbans have been treated together. The former is dealt with in Chapter IV. It does not present any features which mark it off particularly from that of most other Bengal districts. Nearly all the land then under cultivation was included in the estates of the Chanchra Raj which in 1731 had been divided into two, 12 annas constituting the Isafpur estate and the remaining 4 annas the Syedpur estate. The fate of these two was very different after the permanent settlement. The latter, being in the hands of an exceedingly capable woman, succeeded in weathering the storms of that distressful period and emerged intact and flourishing, to be transformed in 1806 into a trust estate still managed by the Collector of Khulna. The latter suffered the doom which overtook most of the estates on whom that inestimable boon descended, and after being split up into numerous fragments passed out of the hands of its former owners who were left in penury. reason is that the permanent settlement regulation displays one of the most glaring instances of neglect to take account of the nature of the people for whom it was designed of which any Government has been guilty. If all Bengali zamindars had been of the the calibre of the grand-daughter of the Ispahan merchant who owned the Syedpur estate, doubtless all would have been But being what they were, their ruin was inevitable and should have been foreseen by any Government not hopelessly befogged by doctrinaire ideas.

16. The existing system of land tenure in Khulna is fairly simple

Mr. Fawcus divides the district into thfee parts-first, that which was under cultivation at the time of the permanent settlement; second, the more recent reclamations in the south-west; and third, those reclamations in the south-The grades of tenants in all three are the same; but in the first division tenures are probably the result of interpolation between the zamindars and pre-existing cultivating raivats, whereas in the other two tenures were granted in the first instance by the zamindan for the purpose of reclamation and the tenure-holder inducted raiyats. In spite of the theoretically stronger position of the tenure-holder in the latter case, the cultivators all over have been able to secure all the privileges of the settled raivat of the Tenancy Act. But as a matter of fact the classifications of that Act are not really appropriate to the conditions in the Sunderbans by reason of their limitation of the status of settled raivat to one person only in the chain of subinfeudation, thereby forcing others-who in fact and according to the local custom are in precisely the same state—into the category either of tenure-holder or of under-raivat. The details of the process may be studied in the report and will repay perusal. The practical solution of the difficulty which was adopted was to give every underraiyat the customary right of occupancy which in fact he enjoys. But the exact connetation of that right is by no means certain, and it remains to be seen how the Civil Court will deal with it should it be ghallenged.

17. It is further to be noted that in the Sunderbans the raigats, and with them the under-raivats, have extensive privileges in the matter of digging tanks and of transferring their land on payment of an almost nominal salami. This was so also until comparatively recently even in the older settled areas, but now these rights are being gradually abrogated as a result of greater competition for land. It is probable that the Sunderbans of Khulna present conditions of tenure, rent and privilege which must have been universal in Bengal at one time and, if that is so. they afford some measure by which to judge the extent to which raiyats' privileges have been encroached upon by zamindars. It is to be hoped that the preparation of the record may desomething to agrest the process of degradation.

18. The following table which I have prepared from the final reports of a number of districts is of interest:—

Percentage of land held in direct possession by—

| | | Proprie- tors. | Tenure- holders. | Raiyats. | Under- raiyats. |
|-----------|-------|-------------------|---------------------|----------|--------------------|
| Khulna | . 4 | 2.6 | 14.0 | 70.5 | 12.9 |
| Jessore | | 2 · 4 | 9.5 | 61.0 | 27 · 1 |
| Faridpur | . • • | 2 · 9 | 8.5 | 79-5 | 9-1 |
| Bakarganj | | 5 | 41.5 | 51.0 | 7.0 |
| Midnapore | | 8.7 | 27.9 | 60 · 3 | 3.1 |

The high percentage for proprietors and tenure-holders in Midnapore is due to the existence of large jungles held khas by the zamindar or the patnidar, but as amongst the other districts the differences are more nominal than real and, as mentioned above, they are due to the necessity of fitting conditions into the rigid classifications of the Tenancy Act. Thus, a very large proportion of the tenure-holders in Bakarganj are really cultivators and a very large proportion of the under-raivats in Jessore have all the rights and privileges of raivats.

19. The average rate of rent of settled raivats in Khulna is Rs. 3-5-10 per acre. This is a good deal higher than that in Jessore, Rs. 2-7-5, or Faridpur, Rs. 2-10-6, but it compares favourably with the Rs. 4-8-10 of Bakarganj and Rs. 4 of the eastern half of Midnapore.

There is not much to be said about the actual operations. Survey in the Sunderbans mud is no pleasant task and bujharat in May in the treeless expanses of the reclaimed area is very try-But apart from these physical disabilities the difficulties met with were by no means so great as in many other districts, nor was there any trouble with people. The organisation always excellent, and the Settlement Officer infused his own spirit of energy and keenness into all grades. The result was that performance was always ahead of programme and the operations were conducted from start to finish with the greatest smoothness.

21. In Chapter II of Part II Mr. Fawcus gathers together the facts

relating to the past history of the Sunderbans, Government policy therein and the action taken during the present operations. As pointed out by him, there have always been two aspects of the problem—how to deal with land surreptitiously reclaimed by owners of neighbouring estates and how to encourage open and legitimate reclamation. It was not until 1828 that Government finally decided to assert complete proprietary right in the Sunderbans, and by that time a great deal of land which was jungle at the time of the decennial settlement and, therefore, was not included in the limits of permanently-settled estates had brought under cultivation. In 1829 a survey was made which accurately delimited the area still unreclaimed. but even after that date surreptitious cultivation went on. One of the chief duties of the Commissioner of the Sunderbans whose post had been created in 1816 was to resume these unauthorised accretions to permanently-settled estates and settle a revenue for them. The process went on spasmodically down to 1883 and in the course of time certain definite principles were evolved with regard to the status of the persons with settlement was made. These have been now crystallised in three forms. of lease—the talukdari, the malguzari and the farming-in descending order of importance, the conditions of which have been dealt with at length in the report.

In the present operations during which a large number of these resumed estates came under re-settlement, a number of other important questions. presented themselves for solution. were concerned chiefly with the rate of rent of raivats and valuation of the land in direct possession of lease-holders and subordinate tenure-holders, the distribution of the sanctioned percentage of profit among the different grades of tenure-holders, and the grant of embankment allowances. As regards rents, it was found possible to adopt uniform rates over considerable areas, but course each estate was carefully scrutinised in detail and the rate was adopted if it appeared to be fair. Following the precedent set in the Bakarganj settlement which is now embodied, in the rules of the Settlement Manual, the allowed percentage of profit was divided among all grades of tenureholders, although in many of the previous settlements of these estates each

grade had been allowed its own percentage on the assets of the grade below it. This aroused a certain amount of opposition, but the principle was upheld by me and by the Hon'ble Member in charge of the Revenue Department before whom a deputation of Khulna landlords appeared alleging hard treatment in respect of allowances. A concession was, however, made to them to this extent, that the percentage of profit—normally 20 per cent. for lessees in a Government estate—was increased whenever necessary, in order to secure that the actual amount of the profit in money should not be conspicuously less than what they had received at last settlement. Usually, of course, owing to enhancement of raivats' rents it was much more; but in a few estates in which for one reason or another the percentages granted at last settlement were very high, the reduction to 20 per cent. would have resulted As regards allowances for upkeep of embankments which had been freely granted in previous settlements, it was found that in practically no estate was the allowance devoted to the purpose for which it was granted, and that the maintenance was done by the tenants at their own labour and expense under the supervision of the landlords' The allowances were, therefore, withdrawn, but at the same time clauses were inserted in the leases placing responsibility for maintenance of the embankments on the lessee and providing that on failure by the lessee the Collector could have the work done and recover the cost from him. There is no doubt that by custom the tenants are made to do the actual work, but they certainly would not do so unless supervised and in fact compelled to do it the results of non-compulsion are lamentably evident in certain estates managed direct by Government—so that the practical responsibility rests with the lessee. A suit has, however, recently been filed in the Civil Court in which the lessee challenges the right of Government to insert this clause in his lease, and the question will no doubt be finally decided there.

23. The second branch of the Sunderbans administration has been concerned with encouragement of reclamation. Here the difficulty always has been to devise a form of lease which would be sufficiently favourable to attract capital and at the same time would secure a

reasonable revenue to Government. The attempts that have been made are many and various from the first lease by Tilman Henckell in 1783, through the revised forms of 1825 and 1830, to the ridiculously lenient terms of 1853 which gave away proprietary rights and caused great loss of revenue with no compensatory advantages. The offer in the rules of 1863 for redemption of revenue and outright purchase of land free of revenue was not accepted to any extent, and since the last set of rules for large and small capitalists in 1879 no further attempts have been made to induce reclamation in Khulna. For the creation in 1875 of the reserved forest area has. stopped the work, so that the raivatwari system of settlement which has been adopted since 1902 in Bakarganj and the 24-Parganas has no place in Khulna. history.

- 24. The chapter concludes with a short account of the administration of the reserved forest area and of the history of the manufacture of salt in the district.
- 25. One point emerges clearly from Mr. Fawcus's account of Sunderbans administration and that is, that since the abolition of the office of Sunderbans Commissioner the local officials in Khulna have paid very little attention to that most important branch of their work, and very great ignorance and confusion exist in the Collectorate with regard to it. I strongly support the recommendations made in paragraph 179 of the report, and would urge that a special effort be made to overhaul the administrative machinery now that Mr. Fawcus has shown the way.
- Khulna has proved to be one of the most interesting districts which have so far come under settlement operations in Bengal, because it is in many ways in a state of transition with regard alike to its physical aspect, to the conditions of its land tenure, and to the economic position of its cultivating classes. exhibits clearly the stages by which an area where river action and land building are still in progress passes into a condition such as that of Jessore and Nadia where they have practically ceased, and it affords a valuable opportunity of studying the intimate relation between natural forces, especially as modified by artificial processes such as that of embankments, and human prosperity. And similarly in the economic sphere it exhibits the stages by which

the actual cultivators of the soil, having obtained valuable privileges when it was necessary to attract them for the work of reclamation, gradually have these privileges encroached on and whittled away under the influence of competition caused by increasing demand for land on their part. The value of Mr. Faw. cus's report lies largely in the ability which he has shown in grasping the underlying principles which account for the transition and the clearness with which he has set them forth. He is to be congratulated on this no less than on the literary skill which is prominent throughout the report; it is full of felicitous phrases and has successfully. escaped that aridity which is the standing reproach of official reports. deserves, and I hope will obtain, careful study by all who are concerned with

physical and economic problems not only in Khulna but wherever conditions are at all similar.

Finally, I have great pleasure in associating myself with the words of commendation which he has bestowed on the staff who worked under him in general and, in particular, on those whose names he mentions in the last paragraph. I have been associated with the work in Khulna from its second year. and I can testify from my personal knowledge that the commendations have been thoroughly deserved. I trust that Government will take note of these names and see that these officers obtain the reward of their good work. I should add the name of Mr. Fawcus himself whose conduct of the operations has been most efficient.